इक प्रौढह इकह मुगधानं। दुहु लच्छन बंधे बंधानं ॥
इंछिनि प्रौढ पवित्र पुंआरी। मुगध संजोगिय पंग कुमारी ॥
छं० ॥ ५ ॥

दुविधि प्रीति राजन प्रति पारी। चतुरत्तन चिंत्यौ बर नारी ॥
म्है बरनी [1]बरुनि बर संच्यौ। विनयं वल पंगज [2]पति अंच्यौ ॥
॥छं० ॥ ६॥

मुख्य पटरानी इंछनी के हृदय में ईर्षा उत्पन्न हुई ॥

लिपि नेनं सु चिन्ह विनानं। बसि करि मोहि [3]सु मुष्प सयानं ॥
तिय परिमान तिया परि जानं। इहां अंदेस जु है कछु आनं ॥
छं० ॥ ७ ॥

मैं बिनया बिनया बर संच्यौ। कनवज्जनि बसि करि कर पंच्यौ॥
बान पंच धरि काम विनानं। धर धर धुक्कि परी सहि आनं ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ स्हरत [4]खन्नी धव धवनि। रमनि रमे रति रंग ॥
सम संजोगि आलिंगनह। भ्रमन चित्त अति अंग ॥ छं० ॥ ९ ॥

रानी इंछनी का अपने पालतू सुग्गे से दुःख कहना।

सुरिल्ल ॥ छिन छिन छिन किसलय तन तुट्टी। मन लोइन लोइन पर [5]सट्टी॥
अब्बु अ गढ़पति सुअ अति [6]संदुल। भोजन ताहि करावति तंदुल ॥
छं० ॥ १० ॥

त्रोटक ॥ भषि तंदुल मंजुलयं मुपयं। क्रमयं क्रम कीर कहै सुपयं ॥
तबं इंछिनि इंछिनियं [7]मिलयं। बसयं बस बासनयं अलियं॥
छं० ॥ ११ ॥

(१) ए. कृ. को.-बरुनी। (२) ए. कृ. को प्रभु। (३) मो -सम्मुख।
(४) ए. कृ. को -बरन्नी। (५) ए कृ. को.-मही। (६) मो -सुंदल।
(७) मो.-मिलनं-अलिनं।

म्रगया म्रग मद्दन पान नयं। घन सार निहारन आननयं॥
रसना रस रच्चित दूत्र चियं। रदनं छदनं पिन पीन पियं॥
छं०॥ १२॥

कवरी कुसुमं बिसरंत नयं। श्रुति कुंडल लाल दुगाजनयं॥
दुति मुत्तिय नासिकयं सुहयं। सुनि स्वामिनि स्वामि सुहं दुहयं॥
छं०॥ १३॥

सुग्गे का इंछनी की बातों पर रुष्ट हो जाना।

दूहा॥ सुष दुष इंछिनि सु दुज। मन मंडिय सुनि कान॥
मोसे बातैं बहुत किय। करों षबरि चहुआन॥ छं०॥ १४॥

पुनः सुग्गे का कहना कि तू मुझे एक रात्रि के लिये संयोगिता के शयनागार में पहुंचा दे।

कवित्त॥ सुक उचरंत सु कीय। इंछि पम्मारि पवित्तिय॥
जैत अनुजि अंजुलिय। सलष नंदनि अनुरत्तिय॥
समय असय भरतार। हार हरली उर जंपिय॥
असय उसय दुरजनिय। वास विस्तरि [1]कर कंपिय॥
विलसैन विसरि रस प्रिय प्रियनि। बिरह विसरजन अमन करि॥
हारम्य संजोगिय निसि निगम। महल मोह मंडिपहि धरि॥
छं०॥ १५॥

सौत बैर से संतप्त इंछनी का संयोगिता से संबंध बढ़ाना।

दूहा॥ धर चिय कर चिय निसि निगम। जास दुनिसि गई विति॥
सुक सुंदरि मंदिरनि मिल। [2]पंजुलि प्रसन प्रतीति॥ छं०॥१६॥
पिच घात सों मन मिलै। और बैर मिट जाइ॥
सौंति बैर अंतर जलनि। दिन प्रति ग्रीषम लाइ॥ छं०॥ १७॥
सुष मिट्ठी वित्तां करै। मन में देत सराप॥

(१) ए. कृ. कों करु। (२) ए कृ को.- पंगुलि।

बंटै प्रेम सु प्रीय कौ। अंतर दभ्भ्भै आप ॥ छं० ॥ १८ ॥

एक दिन संयोगिता का सब रानियों का न्योता करना।

एक दिवस संजोगि ग्रह। महमानिय सब सौति ॥
आनि सुष्प प्रगटन मछर। अधिक [1]सपतनी होति ॥ छं०॥१९॥
सौति सुहागिलि सुष्प दिषि। लग्गैं नैन अंगार ॥
ज्यों ज्यों वह छंदा करैं। त्यों त्यों करवत धार ॥ छं० ॥ २० ॥
* धन ग्रह बंढन सुत्ति नग। हेम पटंबर सार ॥
पुनि चिय प्रिय बंढन सुरति। लगै अधिक षग धार ॥छं० ॥ २१ ॥

सुग्गे की चातुरी का वर्णन।

लघुनराज ॥ अयं महे मयं जुरी। प्रसाद प्रेम मंजुरी ॥
उछंम पाट पानयं। सगुन्न कीर जानयं ॥ छं० ॥ २२ ॥
सनूर निद्ध वासयं। प्रतीति रीति दासयं ॥
करं जु बंद सुंदरी। नरम्म द्रष्टि मंजुरी ॥ छं० ॥ २३ ॥
निगम्म वेद बादयं। बरन्न आदि सादयं ॥
सु चातुरी चितं चढं। पुछंति कीरयं पढं ॥ छं० ॥ २४ ॥
निरम्म रूप निद्दयौ। तिलक्क सोर सद्दयौ ॥
जुवत्ति रीति जानयं। हरम्य तुष्ट मानयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

रानी इंछनी का पिंजरे को हाथ में लेकर संयोगिता के महल को जाना।

दूहा ॥ कर धर इंछनि कीर लिय। हीर मुत्ति जुत कंठ ॥
मन मंजुल तंडुल दधहि। प्रेम पुच्छ भ्रम नट्ठ ॥ ॥ छं० ॥ २६ ॥
दुज पंजर बहु भांति रचि। अरु [2]जरीय जर भूल ॥
आडंबर जग रच्चई। भट वेस्या भ्रत भूल ॥ छं० ॥ २७ ॥
मुरिल्ल ॥ सपि संकुल सावक्किति सद्दिय। [3]ग्रिह ग्रिहस राज सद्रिग बद्दिय ॥
दाहिम्मिय समदं मद्दिलानिय। संजोइय भुवनह संपानिय ॥
छं० ॥ २८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सपत्ती। * छन्द २१ मो. प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को नगीन। (३) ए कृ को -"ग्रह ग्रह राज सभा द्रग बद्दिय।

संयोगिता के महल का वर्णन।

वचनिका ॥ कचित् शृंगाराय। मुक्ति बंधन विहाराय ॥
नवन दृष्टि निहाराय। रंजनं घनसाराय ॥
मृगमदगंध उछाराय। अलि निवास उभाराय ॥
मृदु मंजरी रस सुराराय। एवं काम विहाराय ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का सब रानियों को उचित आदर देना।

सुरिल्ल ॥ द्रिग द्रिग सों रंजिय पंगानिय। आमन समरकंद दिय दानिय॥
जर जरीन चवरिय तिर चानिय। काजल कुंकुमयं क्रत पानिय॥
छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की दसों रानियों के नाम।

वचनिका ॥ प्रथम पुंडीर जादी। इंद्रावती राज सादी ॥
सुंदरी हमीर जानी। जवूं गिर इंछिनी मानी ॥
कूरम्भी पज्जून जाता। बलिभद्र नाम भ्राता ॥
कंजानी वड़ जन गज्जरी ज्ञाता। सदलासांमि राता ॥
हंस गमनी हंसावती सुजानी। दिवासी सरूपा सुमानी ॥
दाहिमी रूप रवनी। मत्त मातंग गमनी ॥
आदरं आदि राजा। बीनानं कंठ बाजा ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम का प्रभुत्व।

दूहा ॥ न्रप वर चामर सपि सरहि। वपु गुंजहि हर नच्छ ॥
कला केलि दिन दिन चढिय। सुक्षग सँजोई सिच्छ ॥ छं०॥३२ ॥
सुभ आदर रानिय सुपट। चरित चित्त चहुआन ॥
दुर दिन दाहिम्मिय महिल। किम किन्नौ पायान ॥ छं०॥ ३३ ॥
श्लोक ॥ सगुनं ज्येष्ठ जेष्ठानां। ज्येष्ठ रूपं सरूपिनां ॥
ज्येष्टं पितु मान राजानां। ज्येष्ठा[1] मान विलोकनी ॥ छं०॥३४॥

(१) का - ए.-जष्ट।

पृथ्वीराज का रनिवास में जाकर सब रानियों को देने के लिये वस्त्र आभूषण देना।

दूहा ॥ राजन उठि मन्निय महल। गहिलै गुरजन सथ्थ ॥
जु कछु चरित तिहि महिल किय। सुनहु सु बूझन कथ्थ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

नग मुत्तिय बंटन बसन। तात संजोइय दत्त ॥
सहस असंषिन लष्पियौ। गनि को कहै निरत्त ॥ छं० ॥ ३६ ॥

रसावला ॥ छबी छब्बि पट्टं, अनेकं [1]निघट्टं।
मनी मुत्ति बट्टं, नगं नेम तट्टं ॥ छं० ३७ ॥
सु गंधं सु घट्टं ...... संजोगि सु ग्रेहीं[2]।
उछंगं सु देहीं ...... ॥ छं० ॥ ३८ ॥
अलष्यंग नानं, सु कोरी प्रमानं, सची सोभ रागं। द्रुतं देव वागं॥
छं० ॥ ३९ ॥
अनंदं सु लागं, निसा कित्ति जागं।भुअं भान भागं, धुअं मत्त मागं॥
॥छं०॥४०॥
दिपंती सुहागं, [3]अवूरत्त रागं। * * * * ॥ छं० ॥४१ ॥

सब रानियों का परस्पर मिल कर अपनी अपनी विरह वेदना कहना।

दूहा ॥ अनु दिन सषि संकुल विकल। अकल केलि सुनि चंद ॥
बरष एक सषि सुष समझि। परपि प्रीति फुनि मंद ॥ छं०॥४२ ॥
परसप्पर मिलि बत्ति कहि। हम नहिं दिट्ठौ कंत ॥
बरष इक्क हम षम करौ। नह लद्धौ गति अंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
क्रम क्रम तट छंडै सरहि। वर छंडै रति जोर ॥
मति छंडै विरद्ध तनहा। गति पावस मति मोर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निहद। (२) ए. कृ. को.-सुग्रहे। (३) ए. कृ. को.-अनूरत्त।

अरिल्ल ॥ समइ न सब किसु लच्छिन पिम्महि। दहियन रोस सुधारति [1]नेमहि॥
रमिय न निज निज पति क्रीलां। बिन इंछिनि सब ग्रेह सुजानं॥
छं० ॥ ४५ ॥

रानी इंछनी का पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम की परीक्षा करने के लिये संयोगिता को अपना सुआ देना और संयोगिता का उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना।

इंछिनि इंछिय अच्छनि रष्पन। राज संजोइय प्रेम परष्पन॥
दुज दिय हथ्थ प्रजंक संजोइय। निसि गति मोहि कथा सुनि तोइय॥
छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ दिय पामारि पवित्र सुक। लिय संजोइय बंदि॥
पन प्रजंक टट्टन टरति। गति न कहै सुर सद्दि॥ छं० ॥ ४७ ॥

संयोगिता का सुग्गे को अपने महल में ले जाना। उसकी शोभा वर्णन।

चंद्रायन ॥ लीय सु दुज्ज संजोइय पत्तिय साल वर।
जहां आभास सुभासहि मनि मानिक्क जर॥
चित्र विचित्र विचित्र सु चित्तह रंजि रस।
थंभ सुरंग अनूप अलंकृत अंग तस॥ छं० ॥ ४८ ॥
विधि विधि वास तरंग अनंग उछाह अति।
मधु माधव किय वास सुभासित रंग रति॥
जर पंजर कल धौतन उत्त विराजि मनि॥
सुप आये पित ताम विरामित साल वनि॥ छं० ॥ ४९ ॥

आर्या ॥ मिलि सा सुष्प सयानं। मानि गानि अन्न उत्तिम विधानं॥
सत्त विहंग विहंगर वानं। मज्जन संजोगि रचि रहि ठानं॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-नेमह।

संयोगिता का स्नान करके नवीन वस्त्र आभूषण पहिनना। संयोगिता के अंगों का सौन्दर्य्य वर्णन।

मोतीदाम ॥ रचे सब मज्जन रज्जन ठान। निरंतर अंतर ग्रेह गुरान ॥
सजे सब भूषन पंगज अंग। कलेवर सानि सनेह सु ठंग ॥
छं० ॥ ५१ ॥

लहस्सिय कज्जल लोइन लोइ। अनंग उभार चढ्यौ तन तोई ॥
धरे बर पट्ट कनक्कस रूअ। करे बर पट्ट सु घट्टित दूअ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरोहिग पट्ट संजोगिय ताम। मनों सजि पट्टर तिज्जय काम ॥
अनेक सुगंध सुवासित बार। सवी सव आनि सु बंधिय धार ॥
छं० ॥ ५३ ॥

सनें हरि आनि सुधा रस बास। बहू बिध उस्वत अप्प सु राज ॥
जलष्षय वासन तज्जिय तिन्न। अरोहित पट्ट जिके चित चिन्ह ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सुगंध सु धूप अनोपम वास। अनेक सु भांति बिबिद्ध बिलास ॥
कनष्षय बुंद चुवै चर केस। तही भय तम्म सु रष्पहि रेस ॥
छं० ॥ ५५ ॥

उभै कुल उप्पर कच्च चुअंत। मनों मुति नागिनि संभु [1]युअंत ॥
कुचग्गलि केस सुभै सित लग्ग। सुधा सचि कुंभ सरष्प उरग्ग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

विराजित भंति अलक्क सु मुष्प। मनों हरि बीहरि सम्मिय रुष्प ॥
तिलक्क सभाल रची रचि रेष। मनों मय ग्रेह दुआरनि देष ॥
छं० ॥ ५७ ॥

घनं भुअ दूअ तिलक्कस रानि। जिते धर अद्धर सग्ग [2]सुतानि ॥
रचे जल कज्जल रेष सु भेप। मृषी भय काम जरे जनु एष ॥
छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) ए. को.-पुअंत। (२) मो सुजानि।

चलच्चल नेन सु नासिक रूत्र। कुसुम्मह मधि कलरै [1]अलि दूत्र॥
कटाच्छह सेत चलै सति बंक। नयै जनु बीर कचोल कनंक॥
छं० ॥ ५९ ॥

तिलक्क जरावध बद्दन बिंदु। सज्यौ रथ सारहि काम सु इंदु॥
जुत्रा भ्रु.त्र कंध धरे कच एन। तटंक्कह चक्र जिते तित्र तेन॥
छं० ॥ ६० ॥

चिबुक्कह बिंद असेत सु बानि। प्रसारित कंज अली सिसु ठानि॥
सुनैं जुरि आनि सु नग्ग सु घट्ट। जनों सजि काम जिते दुत्र पट्ट॥
छं० ॥ ६१ ॥

रोमावलि बान मनंमथ तान। करै कुच ओट द्रिगं भ्रिग[2]ठान॥
रची वर मानिक [3]षुद्रनि रुच्च। मनोहरि रास सबैं ग्रह सुच्च॥
छं० ॥ ६२ ॥

बने सब भूषन धारिय अत्ति। झनक्किय नूपुर घूघर गत्ति॥
मनों बजि बाजिन्न काम स भूप। बिजै कज बाज सबै पुर नूप[4]॥
छं० ॥ ६३ ॥

[5]तमो रसमो रस पूरिय मुष्य। बनै सब रास तजै भव दुष्य॥
अनोपम रूप सिंगार वितूल। धरै कवि मत्त रहे गति भूल॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का सेज पर जाना और सुग्गे को भी चित्रसारी में ले जाना।

चौपाई॥ रचि शृंगार अनोपम रूपं। चातुरता गति मति आनूपं॥
संगहि इष्ट सुकं मति गत्ती। बिधि परजंक [6]संजोगि संपत्ती॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा॥ गय गति इंछनि दीय दुज। लिय मन हरष सु जानि॥
इह चातुरता दूत है। कहन सुनन परिमान॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए कृ.कां-अति।
(२) ए.कृ.को-थानि।
(३) ए.कृ.को.-पुद्रनि, युद्रनि।
(४) मो.-नूर।
(५) मो.-"तमोर मपूरिय मोरि समुष्य"
(६) ए. कृ को-मजोइय।

शैय्या सुखमा।

विराज ॥ प्रजंकं सु जोई, तलप्पं सु सोई। प्रसूनं समोही, कुंज सुष्प सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

धुअ धूप रुद्धं, उअं मुक्कि गंधं। प्रसंसं प्रसूनं, फलं वासि पूनं॥
छं० ॥ ६८ ॥

चिषा तुष्ट कामं, रति देव धामं। दुजं स्वस्तिमंत्रं, निरष्यौ सुगंत्रं॥
छं० ॥ ६९ ॥

निसा दीप दानं। रतिं की प्रमानं। * * * ॥छं० ॥ ७०॥

रतिवर्णन।

कवित्त ॥ रस क्रीडत बिपरीत। चिंति दंपति दंपति रिति ॥
पंच पंच सुट्ठए। पंच लग्गेति पंच पति ॥
उठिय बाल सज्जिय दुकूल। सुक्क पंजर सु धाम चित ॥
हर हराट उप्पज्यौ। तजिय अक्कौट कान क्षत ॥
धरि यान कथ्थ सुक सौं कहिय। रहि न लज्ज लज्जी विलग ॥
जग पुब्ब भाव भांवरि सु वत। सुवर बाल उट्ठी सु द्रिग ॥
छं० ॥ ७१ ॥

[1]ससि रुन्नौ म्रग [2]बह्यौ। कह्यौ सुक सप्त दीप तन ॥
तम सु देव पुलि पंग। जोति संदीप छिनहि छिन ॥
हुई लज्ज अचलीय। कलिय मुद्ध गति जानं ॥
छिम छिम तमह रंतिपति। परसि पहु पंजलि यानं ॥
न्रप तुष्टि काम कमलारमन। भवन द्रष्टि रुचि रमन मन ॥
जिम जिम सु बिनय बिलसिय प्रबल। तिम तिम सुकवुड्डिय प्रमन॥
छं० ॥ ७२ ॥

दूसरी रात्रि का रति विलास वर्णन।

तारक ॥ * दुतिया दिन संझ बिजै कुल कम्म। सहचरि प्रौढ़ रमै रति रम्म॥
दुष्यम सुष पिम्म मनोहर रीति। बिलस्सिय आस भयं भव जोति॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) को.-ससि। (२) को.-हहयौ। * मो.-प्रति मे नहीं है।

युक्त ॥ आसीनी सज्जानी विग्यानी उल्लानी निरधानी ध्यानी उरग्यानी॥
वय न्यानी सम्मानी अलसंज तानी उद्दित न्यानी सषि आनी॥
पारस संजोइय मुष मुष मोहिय संतोहिय　* *
*　*　*　*　*　*　छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ संकल अंकुलयं विपथ । चष कंकन उन पान ॥
प्रथम रवन रवनिय मिलिय । रति गति राजन थान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

सुख सहवास का क्रमशः चाव और आनंद वर्णन ।

त्रोटक ॥ तन कंपन कुं पुनयं पुनयं । सनयं सनयं सिरयं धुनयं ॥
वलयं चलयं नकयं चकयं । अलि भारन मंजरियं भगयं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रियनं प्रियनेति पियूष पियं । धकयं धक छंडिन तोहि अयं ॥
लजनं रजनं भजनं भवनं । चतुरष्ट न तुष्ट रचै रवनं ॥छं०॥७७ ॥
कलिनं अलिनं ललिनं वयनं । सयनं [1]चलिनं चलिनं रचनं ॥
*　*　*　।　*　*　॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ सुनि संचल अंचिल रवनि । तन धर हरि दिढ कम्म ॥
सपि पारस [2]सारस व्रतन । नव कर बंधिलि अरम्भ ॥छं०॥७९॥

पारस ॥ नै व्रत सज्ज्या, जोवन पुञ्ज्या ।
..　...　....　....　छं० ॥ ८० ॥
सैसव माता, रम्मन कांता ॥
विलसिन तांता, सुर [3]तित आंता ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ अग्गिराज संजोगि सों । मानि चतुरभय चित्त ॥
एकादस पूरे अपंग । पंचम परसु सहित्त ॥ छं० ॥ ८२ ॥

एकम से लगा कर पूर्णिमा पर्य्यंत का रति वर्णन ।

त्रोटक ॥ हक्रितं हक्रितं क्रितयं क्रितयं । दह अंगुलि संमुषयं मितयं ॥
अमियं अपि वासन तं हितयं । मनं आप निषद्ध पतं चितयं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

[१) ए. कृ. को.-सलिनं ।　(२) मा.-पारस ।　(३) ए. क को.-सुरनिन ।

सुक द्रष्टिहि द्रष्टिनि छोह लजं। दिव दीपक अंचलयं जु भजं॥
दुतियं दिन केलि कला बरयं। त्रितयं त्रिप मंभि समावरयं॥
छं० ॥ ८४ ॥

उभयं दुति दीहनि चामरनं। दुति तीय दिनं मम तुष्ट रनं॥
षट षष्टिय लज्जि सु नीर दियं। सत सत्तय पौमिनि प्रेम प्रियं॥
छं० ॥ ८५ ॥

चवदून दिनं दिनयं दिनयं। निज नोमिय नौरसयं भनयं॥
दसमी दिसि छड्डिय प्रीति घनं। दस एकह एक सु एक मनं॥
छं० ॥ ८६ ॥

रति द्वादस द्वादस देवतियं। दस तीनि सिआर षिलो कलियं॥
दस च्यारि चयं सुकयं मुकयं। सुभ पूनिम इंछिनि सो भषयं॥
छं० ॥ ८७ ॥

रति के अंत में दंपति की प्रफुल्लता और शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ देषि बदन रति रहस। बुंद कन स्वेद सुभ्भ बर॥
चंद किरन मन मध्य। हथ्थ कुट्ठे जडु डुक्कर॥
सु कविचंद बरदाय। कहिय उप्पम श्रुति चालह॥
मनो मयंक मनमथ्थ। चंद पूज्यो सुत्ताहय॥
कर किरनि रहसि रति रंग दुति। प्रफुल्लि कली कलि सुंदरिय॥
सुक कहै सु किय इंछिनि सुनवि। पै पंगानिय सुंदरिय॥
छं० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ अप्रापत प्रापति सु पति। कर संजोइय काम॥
उर आनंदिय अप्प वर। ते चिय पुज्जिय वाम॥ छं० ॥ ८९ ॥
सुप मुप मंडिग रति रवन। सुभ इंछिनि प्रति प्रात॥
गुरजन गुर लज्या दवन। विपथ बिकंपन गात छं० ॥ ९० ॥

इंच्छनी का सुग्गे से संयोगिता का रतिरास पूछना।

लज्जन लप्पन जन सजन। कहु सुक संकुल पंथ॥
अनि रतु तु तन जंपनह। तं पिन षिन तं अप्पि॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-दीय। (२) मो.-अेद। (३) ए. कृ. को.-सुनहि।

सग्गे का कहना कि यद्यपि ऐसा करना पाप है परंतु कहता हूं सुन ।

हसन गुरज्जन सबकि मुष । दूषन मुगध बधूनि ॥
फिरि फिरि फिरि पंजर परनि । मंजरि कलि हरि धनि॥छं०॥९२॥

संयोगिता के मुख की शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ सुनि इंछिनि [1]पंगी जु रवन्नी । धपत राज सुभ लाज मवन्नी ॥
आननयं काननयं कन्नी । पूनिम पूरनयं सुक व्रन्नी ॥ छं०॥९३॥

सुग्गे का पृथ्वीराज और संयोगिता का अंतरंग रास वर्णन करना और सखियों सहित इंच्छनी का चित्त दे सुनना ।

बाधा ॥ छंदम छंदयलं सुक छंदं । मो मंजीरनयं सुर मंदं ॥
बर किंकिन पंकित पुकारं । हक्कित क्कित्त सुर मुर उच्चारं ॥
छं० ॥ ९४ ॥
विपन पनोकनु मंधरि धीरं । षंडन कल षल करि अति भीरं ॥
कच ग्रहि रति रिझ्झन रंग रोरं । पंपुलितं ललितं गति मोरं ॥
छं० ॥ ९५ ॥
काकज पाल नयं सब दंधी । भाष छ उच्चरियं [2]मन मुंधी ॥
अम्रतयं स्रतयं भ्रम राजं । तंदुल मंदुलयं करि साजं॥ छं०॥९६॥
भूषन दूषनयं करि दूरं । उम्मन चुम्मनयं करि पूरं ॥
जंजं लोचनयं छिन जूरं । तंतं उच्चरियं मुष मूरं ॥ छं०॥९७॥
हंहं हं कुलयं कल लज्जी । चरबर चंच पुटी सुर सज्जी ॥
... ... छं० ॥ ९८ ॥
[3]धर धर छत्तिय नच्छित लोलं । हर हर सावक्किय हसि बोलं ॥
दुंदुन मंदुनयं दुरि दुरियं । परिजय पंक पजंकनि सुरयं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

(१) ए. कृ. को. पगिनि । (२) मो. परि ।
(३) मो.-धर धर धर छतियन छिन लोलं ।

सरनं मारयनं प्रिय सरयं। तिथि बिधि पंच दसी दिन भरयं॥
इहि बिधि केलिनि पाइ जियन्नं। इति एकंत पुकारि पियन्नं॥
छं०॥१००॥

कवित्त॥ सुक्किय वक्र कटाछय। श्रवन लग्गत ओपम थपि॥
शिव कंद्रप द्रग कूप। श्रवन कन्या लेयन धुपि॥
दुति तरंग उल्हसहि। फेरि ता कूपन माही॥
तात रंग सागरह। पर्‍यौ मनु बुंद अथाही॥
सुक कहै सुकिय इंछनि सुनहि। भ्रम्म अनेकन छंडि तत॥
तारंग तंत तरुनी सु बर। सुबर बाल भ्रुट्टिय सुमति॥छं०॥१०१॥

दूहा॥ श्रुति राजन हुंक्रित हंसन। कुंचित हंसन नयन्न॥
चुटि चाटंकन भगन किय। नग बिनु रहन सवन्न॥छं०॥१०२॥

सुग्गे के दूतत्व की धृष्टता का कथन।

कुंडलिया॥ जो रस रसनन अनुदिनह। अधर दुराइ दुराइ॥
सो रस दुज कन कन कह्यौ। सषिन सुनाय सुनाइ॥
सषिन सुनाइ सुनाइ। हियै सुचि सुचि लज मन्नह॥
सुथल विथल थल कंपि। नेन नटकीय नहन्नह॥
जियन मरन मिलि मेंन। कह्यौ अदभुत प्रिय रस॥
ए रस अंतर भेद। प्रीय जानै त्रिय जौ रस॥छं०॥१०३॥

इंच्छनी का संयोगिता के गूढ अंगों के विषय में पूछना।

दूहा॥ फुनि पुच्छति इंछिनि सु कहि। सौति रूप मनि साल॥
तौ पुच्छौं कैसी कहै। अंतरंग सु बिसाल॥ छं०॥ १०४॥

सुग्गे का संयोगिता के प्रच्छन्न अंगों का वर्णन करना।

कवित्त॥ क्रिसल थूल सित असित। थान चव एक एक प्रति॥
पानि पाइ कटि कमल। मथल रंजे सुच्छिम अति॥
कुच मंडल भुज मूल। नितंब जंघा गुरुअत्तं॥
करज हास गोकन्न। मांग उज्जल सा उत्तं॥

कुच अग्र कच्च द्रिग मद्धि तिल । स्यामा अंग सब्बं गवन ॥
षोडस सिंगार सारूव सजि । सांइ रंजै संजोगि तन ॥छं०॥१०५॥

सुग्गे का सम्पूर्ण शृंगार सहित संयोगिता के नख शिख का वर्णन करना ।

पद्धरी ॥ संजोग जोग जय संत तंठ । आनंद गान जिन करिय कंठ ॥
बर रचिय केस विचि सुमन पंति । विच धरे जमन जल गंग कंति॥
छं० ॥ १०६ ॥

सिर मद्धि सीस फूलह सुभास । किय जमन अद्ध सुर गिरि प्रकास॥
कुंडली मंडि बंदन स, चंद । कसतूर ढिगह घनसार बिंद ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बर किरन भोम परसत प्रकार । मनों ग्रसित राह ससि सहित तार॥
ओपमा भूअ बेनी विसाल । नागिनी असित ससि सहत बाल ॥
छं० ॥ १०८ ॥

ओपमा भाव उच्चरि विदूष । मनुं ससी राह सित पष मजूष ॥
सैसब्ब मद्धि जोवन प्रवेस । देषियै नैन मग अति सुदेस ॥
छं० ॥ १०९ ॥

ओपम सु कब्वि बरदाय कीय । ज्यों ग्रेह उंच दिसि जल निदीय॥
सित असित सोभ द्रिग वर विसाल ।कै ससिज प्रगटि तम मद्धि बाल॥
छं० ॥ ११० ॥

ओपम्म चंद नासिक बिसाल । मनों अरै लरन रवि राह बाल ॥
ओपम्म अधर कवि कहि विदुष्य । उग्गरे अद्ध ससि चषि मजूष ॥
छं० ॥ १११ ॥

सोभै सुरंग दंतनि सु पंति । कदलीन केत कै मुत्ति कंति ॥
कै तरु सु बिंव लुंबी सुरंग । ससि भूम गंग जल सिंचि अनंग ॥
छं० ॥ ११२ ॥

मधु मधुर वानि कलयंठ रद्द । आनंग अनेव केवल सु सद्द ॥
तारक्क तेज नग जटि सुरंग । ओपम्म चंद तिन कहि सु अंग ॥
छं० ॥ ११३ ॥

[1]वित्ततह सत्त सब चित्र सूर। सेवहित सत ग्रह तप करूर ॥
नन धरै अरनि धारे सु तव्व। तिन मज्झि रहिग ससि कला सव्व॥
छं० ॥ ११४ ॥

कप्पोल कला कल नगज मीप। दुहं परी छोड़ मयुषं समीप ॥
चिवली सुरंग बिच पीति जोति। ओपम्म सुबर तित मज्झि होति॥
छं० ॥ ११५ ॥

उछराइ रेह गुरु जोज गम्म। परदष्पि देत ससि देपि हम्म ॥
मुतियन माल कुच विच सुरंग। प्रतिव्यंब फलकि मुष उदिम अंग॥
छं० ॥ ११६ ॥

ससि श्रंग मीन विद्रुमनि चाहि। ससि सहत कढत अहि गंग माँहि॥
[2]जगमगत कंठ सिर कंठ केस। मनु अट्ठ ग्रह चंपि ससि सीस बैसि॥
छं० ॥ ११७ ॥

नग माल लाल कुच पर विसाल। ओपम्म चंद चिंती सु माल॥
चिंतिय सु बैर बर सिंभ पुव्व। मनमथ्थ ऊक मुष फुंकि उच्च॥
छं० ॥ ११८ ॥

निक्करि सु माल उर बली भासि। ओपम्म चंद बरदाय तास ॥
बिय पंति सोम रचि अति सुलाह। ससि गहन चढत जनु न्नपति राह
छं ॥ ११९ ॥

सोभै चिमाल कुच तट तरंग। जनु तिथ्थराज मंडलौ अनंग ॥
सोभै सुरंग कुंचकी वाम। जनु संबरेह पटकुटी काम ॥छं०॥१२०॥
राजीव रोम राजै सु कंति। उत्तरन चढ़त पप्पील पंति ॥
चित लोभ भरिग ग्रहराज जंति। दिठि राह मेर परसरि सु पंति॥
छं० ॥ १२१ ॥

कटि तट्ट छुद्र घंटिय ररंत। जगमग सु नग्ग ओपम्म कंति ॥
कविचंद देषि ओपम्म भासि। ग्रह लगे चंपि जनु सिंघ रासि॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटि घाट निठ्ठ मुट्ठहि समाय। मनुं ग्रहन धनुप मनमथ्थ राय॥

(१) मो -विनतह। (२) मो -जगमत्त।

नितंव गरूश्र द्रप्पन कि काम। उदै अस्त भानु जनु पंति वाम॥
छं० ॥ १२३ ॥

बर जंघ रंभ विपरीत तंभ। कै पिंडि दिष्ट मनमथ्थ संभ॥
ओपम्म वीय कविचंद सादि। मनमथ्थ हथ्थ उत्तरि षरादि॥
छं० ॥ १२४॥

पिंडीय पग्ग ओपम्म यट्ट। कुंकुम कनक्क सम तेज घट्टि॥
नष न्नमल्ल तेज तारक्क मुत्ति। कंद्रप्प द्रप्प दिषि कार धुत्ति॥
छं०॥१२५॥

षोड़स सु सज्जि सजि मुत्ति बाल। घुध्घरन नग्ग जटि अति सुसाल॥
ग्रह अठ्ठ होड़ तजि होड़ हंस। सजि तेज भूलि गति भूलि तंस॥
छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के परस्पर प्रेम नेम और चाह का वर्णन ।

दूहा ॥ अह निसि सुधि जानै नहीं। अति गति प्रौढ़ सु रथ्य ॥
गुरु बंधव म्रित लोक सब। मन विपरीत सु गत्ति ॥छं० ॥ १२७ ॥
विज़ुरन मन चित्तै नहीं। मनो बसंत रिति अंग ॥
रस लोभी भ्रम भ्रम भ्रमे। विसराए सब अंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चोटक ॥ सगना जिहि च्यारि परंत गुरं। सोइ चोटक छंद प्रमान घरं॥
पय मत्त बनं बरनं बरनं। निय नाग कहै चष जा श्रवनं॥
छं० ॥ १२९ ॥

पवनं गति सीत सुगंध सु मंद। लगै भ्रम रीतन मन्न अनंद ॥
जगी जगि भ्रंग निभ्रंग निवार। सुनिद्दनि कंठिय कंठ सहार ॥
छं० ॥ १३० ॥

कुहुक्क,ह कांम सु धांम धमारि। उड़ै पिय पंप पराग सवार ॥
मुकल्लित मल्लित हल्लित पोंन। ननं कविचंद रसंमि सु मोंन ॥
छं० ॥ १३१ ॥

प्रथम्मह प्रेम दुवं सुष [1]लष्पि। उदै रवि रथ्थ मनों रथ मष्पि ॥
मुदै न लिनं अलिनं रहि मंभि। मधु व्रतमत्त बसो जिन संभ॥
छं० ॥ १३२ ॥

रहै गहि संपुट संपट नारि। सु पंष पराग हरै उन हारि ॥
रसं घन घुंटि गुलाल सु थाल। घटी घटि लग्गि फु निप्फ नि लाल॥
छं० ॥ १३३ ॥

बरब्बर वौर सिरी बर बौर। गिरै जिनि लग्गि पिया अलि और॥
मधू रस मिश्रित पाडर डार। वजे रव रंग उपंग सु मार ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु वेत सेवंति कुमक्कम काज। पिजै जिन [2]षीन अहो षगराज ॥
सु चंपक चारु वितामन कंध। दरस्सन देवि कियौ दल गंध ॥
छं० ॥ १३५ ॥

लगै अंग केतु कि पंग पराग। तुटै लगि कंठक कोइय भाग ॥
बन व्रत्त बेलि बिलंबहु बेलि। क्ररों दिन केक करन्निय केलि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

लबक्किय लग्ग लवंग निहार। मनों न सु गंध कुसम्म अपार ॥
सहै न बियोग बुरै सिर [3]गात। तजै तिन कंत बसंत प्रमात ॥
छं० ॥ १३७ ॥

अबस्सर प्रीति न मुक्कहि प्रान। [4]हँसै तिन नेह न वेन सुजानि ॥
इसी विधि कंत मधू मधु नारि। कहै मिसि धार बसंत बिचारि॥
छं० ॥ १३८ ॥

अली लगि कंत किमंध सु गंध। लगे न्रप काम पगानिय बंध॥
रते रति राग पराग बचन्न। रहै टग लग्गिय काइक मन्न ॥
छं० ॥ १३९ ॥

सवै षट रित्तुनि राज बसंत। भ्रमे भ्रमरावलि नाम सु कंत ॥
* * * ॥ * * * छं० ॥ १४० ॥

(१) ए- कृ. को -लगि अग्गि। (२) मो.-हीन। (३) मो.-मात।
(४) मो.-हमै तिन नैनह वेन सजान।

दंपति के रतिरस की रात्रि के युद्ध से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ लाज गढ्ढलोपंत । वह्निय रद सन ढक रज्जं ॥
अधर मधुर दंपतिय । लूटि अब दूँव परज्जं ॥
अरस प्ररस भर अंक । षेत परजंक पटक्किय ॥
भूषन टूटि कवच्च । रहै अध बीच लटक्किय ॥
नीसान थान नूपुर बजिय । हाक हास करषत चिहुर ॥
रति वाह समर सुनि इंछिनिय । कीर कहत बत्तिय गहर ॥ छं० ॥ १४१ ॥ *

कर कंकन मुद्रिका । छुद्र घंटिका कटि तट ॥
वसन जघन पहिराइ । भार वित्तयौ सघन थट ॥
कुच निहार कंचुकिय । भुजनि बंधे बाजू बंध ॥
पग तोड़र नूपुरिय । हरे रुपि अड़िग षेत मधि ॥
संग्राम काम जीतें भरनि । करिय रीझ्झ कनवज्जनिय ॥
तंबोल पान दीनो अधर । कीर कहत सुनि इंछिनिय ॥ छं० ॥ १४२ ॥ *

तम रस तीय सँजोगि । सुमन सहत्तीय बिसराइय ॥
पति कों नव रस भँवर । प्रीति पीमिनि सिरछाइय ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ । हंस सरह षग रज्जं ॥
नेह बीर बचननि पराग । लाज कोदिव सुष पज्जं ॥
जन जंत रुप लहरीति गुन । दुत्तिय थह थाहंसयन ॥
सकंत प्रेम उद्दित उदित । जर फुल्लित बर सुनि बयन ॥ छं० ॥ १४३ ॥

मदन बयट्ठौ राज । काज संचौ तिहि अग्गै ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ । भेद संचारि विलग्गैं ॥
काम कमलनी बनिय । चक्कनिय निय नित्यं भर ॥
मोह विहि पिक्खझति । प्रज्ज मो मनिय पिंड बर ॥
बीनीति मधुर तिहि लाभ बसि । बसि संजोग माया उरह ॥
ऊथपन मग्ग गहि अ गम गति । न्टप क्रम मह छुट्टिय बरह ॥ छं० ॥ १४४ ॥

---

* छन्द १४१ और १४२ मो.प्रति मे नहीं है ।

संयोगिता की समुद्र और पृथ्वीराज की हंस से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ दुहु दिसि बढिय सनेह सब । संजोगिय वर कंति ॥
जियन बार बिछुरत तरुनि । हंस जुगल विछुरंत ॥ छं० ॥ १४५ ॥
रूप समुंद तरंग दुति । नदि सब की मलि मानि ॥
गुन मुत्ताहल अप्पि कै । बस किन्नौ चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
गुर भ्रित चिय देपंन प्रिय । दुज मिटि दोन न वार ॥
निमुष रूप संजोग की । टरै न वार भतार ॥ छं० ॥ १४७ ॥

कुंडलिया ॥ उज्जल कहु संजोगि में । नेह स पुत्ती रूप ॥
कला सहित पूरन्न ससि । अहि अजीज मिलि भूप ॥
अहि [1]अजीज मिलि भूप । तिमर तोरेज पंग दल ॥
राह रूप सुरतान । लग्गि सु कीनी कीव वल ॥
* * * । तप विडंभूत न मुज्जल ॥
चकवा कहु जनंन। सुष अरपति अति उज्जल ॥ छं० ॥ १४८ ॥

दूहा ॥ दो इंछनि पुच्छै सषी । किहि वय किहि मति रूप ॥
किहि लच्छन उनिहार किहि । किम दच्छिन रचि रूप ॥
छं० ॥ १४९ ॥

संयोगिता के अंग प्रत्यंगों पर प्रतीयालंकार कथन।

कवित्त ॥ ससि रुन्नौ भ्रग वद्धौ । काम हीनौति भीन रति ॥
पंकज अलि दुम्मनौ । सुमन सुम्मनौ पयन पति ॥
पतंग दीप लग्गिय न । मीन दुम्मनो जीय नम ॥
सुकिय सषिय सुष दिष्ट । चितचिंतति नेह भ्रम ॥
सुष सक्ति हीन सो दान न्रप । हाव भाव विभ्रम श्रवन ॥
यों रति चरित्त मंगल गवन। सुनि इंछनि इंछनि रमन ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥

ऐरापति भय मानि । इंद गज वाग प्रहारं ॥
उर संजोगि रस मद्दि । रह्यौ दवि करत विहारं ॥

(१) मो.-अजीत।

कुच उच्च जनु प्रगट्टि । उकसि कुंभस्थल आइय ॥
तिहि ऊपर स्यामता । दान सोभा दरसाइय ॥
बिधिना निमंत मिट्टत कवन । कीर कहत सुनि इंछनिय ॥
मन मध्य समय प्रथिराज कर । करज कोस अंकुस बनिय ॥ छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ वै दुष चिय इंछिनि सुनिय । रूप प्रभूतन माहि ॥
चिसल तेज लग्गिय चिभू । संजोगी सुनि ताहि ॥ छं० ॥ १५२ ॥

संयोगिता की स्वाभाविक एवं सहज लुनाई का वर्णन ।

हनुफाल ॥ सुनि इंछिनीय सु जानि । रस करनि घरि सुनि कान ॥
लज देहु विटष सकाम । वर व्रन्न [1]दिष्पय वाम ॥ छं० ॥ १५३ ॥
मुष कइन कंत सु वत्त । तिय बदन धूम सरत्त ॥
सुनि कहत ओपम ताइ । मुष संम द्रप्पन झांइ ॥ छं० ॥ १५४ ॥
अति छीन वद्दल जेम । ससि तेज तरुनि कितेम ॥
सुनि इंछिनि वर जोइ । कर छुट्टि मैला होइ ॥ छं० ॥ १५५ ॥
वर रूप सागर वट्टि । मनमध्य मथि करि कट्टि ॥
भरि एक सकन निस्संक । पुन लभ्भ लोइन रंक ॥ छं० ॥ १५६ ॥
द्रिग सहित देषिय जोइ । तन चिविध ताप न होइ ॥
सुष वढै दिषि तजि दंद । ज्यों जाय सो नँद कंद ॥ छं० ॥ १५७ ॥
चतुरान देषिय रिष्य । सातुक्क भाव विसिष्य ॥
न्विप देषि बल्लिय सथ्य । वर बेन सम लै हथ्य ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गुन चवन सुनन न कोइ । कवि थके ओपम जोइ ॥
ससि सरद कहि हँस लोइ । श्रिवगंग बहरी होइ ॥ छं० ॥ १५९ ॥
चामीय करतिय जोग । सँजोगितासी जोग ॥
सुनि इंछिनी तजि रीस । लछिने वाल वतीस ॥ छं० ॥ १६० ॥
भय रूप शंकर पीय । होवै न चीय न वीय ॥
ससि पंचमिय घटि वट्टि । चिय देषि पह मुष चट्टि ॥ छं० ॥ १६१ ॥
सम नही इमिमती जोइ । छिन गरुअ छिन लघु होइ ॥
देषंत चीय सुरंग । तब भयौ काम अनंग ॥ छं० ॥ १६२ ॥

(१) मो.-दिप्पय ।

उप्पनौ देषि सु हंस । जौ लियौ बन कौ अंस ॥
सुनि कोकिला कलि गाव । भयौ बरन स्याम सुभाव ॥छं०॥१६३॥
ओपम्म दीजै आहि । सो नहीं ओपम चाहि ॥
बस चीय अह निसि प्रीय । जुमि जम्म सम्हो जीय ॥छं०॥१६४ ॥
सैसब वासी नारि । जो भइ पुब्ब संसार ॥
मति मान गरुअ समद्द । रति करी छवि वर रद्द ॥ छं० ॥ १६५॥
वह नहरि नारि न बीय । किहु नाइ रचि बुधि कीव ॥
सँजोगि मन कढ़ि ओइ । छिन बीय द्रप्पन होइ ॥ छं० ॥ १६६॥
सम्मान प्रीति विपंग । सो पुत्त चिय मन अंग ॥
* * * * ॥ * छं० ॥ १६७ ॥

संयोगिता के नेत्रों का वर्णन

दूहा ॥ बाला संभरि बलि बयन । सीत सीत रति रंग ॥
राह केत मंगल बिचें । जमुन सरसती गंग ॥ छं० ॥ १६८॥
मर बल अंबर बदन सौ । लोयन सो करपाइ ॥
ईह अपूरब चरि अरक। पंती अट्ट कलाइ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

सुग्गे की उक्त बातें सुन कर इंछिनी रानी का अत्यंत दुखित होना।

मुरिल्ल ॥ कल कल बानी सुक्क प्रगासै । इह बाल वे कौतिक भासै ॥
जौ को दीप दीह तो बालं । जंपी जेम तोहि तो कालं ॥
छं० ॥ १७० ॥

दूहा ॥ जं देही तौ दुप्पई । दुप्पह सुप्प सरीर ॥
दुप्प न अन्नं सुप्पतं । किय सो कंनि धरीर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
सतम बरस सज्जिय अरय । दीन छीन सैसब्ब ॥
इइ चीय अरु थिर अरथ । देह विधिनि लिपि देव ॥छं०॥१७२॥
राजन सुक पुच्छन विगति । भयो इँछिनि दुप राज ॥
हूं माया रस भुल्लयौ । नहु पायौ गुन काज ॥ छं० ॥ १७३ ॥

सुग्गे का इंछिनी को समझाना कि वृथा दुःख करने से क्या लाभ है।

गाथा ॥ जीवं वारित रंगं । आयासं नथ्थिवै दुष्प देहं ॥
भाविय भाविय गतनं । किं कारनं दुष्प बालायं ॥ छं०॥१७४ ॥

रानी इंछिनी का कहना कि सौत भाव का दुःख मैं भुला नहीं सकती।

दूहा ॥ सौत सोत चंचल भयं । भिरिग दोष अनुराग ॥
मनु चित नेन व्याहन चढ़े । दुज काननि पुछि भाग ॥छं०॥१७५॥
जौ पुच्छै सुष दुष्प मौ । तौ मौ एह अंदेस ॥
देषि कहै वर बत्त मैं । किहि गुन रचिय नरेस ॥ छं० ॥ १७६ ॥

सुग्गे का सलाह देना कि यदि तूं यह महल छोड़ दे तो तेरा दुःख आप घट जावे ।

सुनि बाला वर वेन मुहि । संच भेद बहु भेस ॥
जौ वंछै इंछिनि महल । तौ मेटै अंदेस ॥ छं० ॥ १७७ ॥

इंछिनी का महलों से निकल कर चलने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ सुक पंजर करि हेम । माल मोतीन मंच जरि ॥
धन सुगंध निकुरास । देस संष गुरिग हथ धरि ॥
दस हथ्थी इंछनि रसाल । माल बिय साल [1] उनंगी ॥
सेत रत्न वर सुमन । सुक्कि करि गंध सुरंगी ॥
नर भेष नारि कंचुकि सरस । दुइ दासी वर भज्जि मन ॥
क्रम चुकंति दुक्कति विकम । बयन दरसि सज्जल नयन॥छं०॥१७८॥

राजा का इंछिनी को रोकना और मान का कारण पूछना ।

अरिल्ल ॥ दस हथ्थी पंजर धर मुक्किय । दिसि संजोगि राज दिठि रुक्किय ॥
नन तुच्छौ न्वप पच्छिल रत्ती । ज्यों सर फुट्टै हंस प्रपत्ती ॥छं०॥१७९॥

(१) ए. कृ. को.-उनंगी ।

सुग्गे का कहना कि इस सब का कारण संयोगिता है।

दूहा ॥ वक्र दिष्ट संजोग की । सुक कहि न्रपहि सुनाय ॥
एक अचिज्ज इंछिनिय । मैं ग्रह दिठ्ठी राइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

मुरिल्ल ॥ गरजी तब ढोलक सघनं । बढ्ढि न घन नेह सयन्नं ॥
दोष आकोचन भोज पलायौ । अगि अंकुरिय बिरह पनायौ ॥
छं० ॥ १८१ ॥

राजा का कहना कि रे पक्षी तु ही ने भेद किया फिर ऊपर से बातें बनाता है।

दूहा ॥ कहै सुक्र फुनि फ,नि न लग । न्रिप सुनि कही न बत्त ॥
मंच भेद उप्पर करी । करत चित्त अनुरत्त ॥ छं० ॥ १८२ ॥

सुग्गे का इंछिनी से कहना अच्छा तुम दोनों निपट लो।

जब सुक न्रप कानंन ली । तब पुच्छयौ बर जोइ ॥
जो कछु कह्यौ सु कंत सौं । ज्यौं कह्यौ कंत जो होय॥छं०॥१८३॥

राजा के मनाने पर इंछिनी का मान जाना ।

पद्धरी ॥ मति मान रूप लच्छीय मान । जीवन सु पीव आनंद थान ॥
करवत्त दोष कप्पन कुंवारि । वर कंक दिन्न बर सब्ब रारि ॥
छं० ॥ १८४ ॥

धुम्मर बदन्न दुष दमित पाइ । ज्यौं आनंद जाइ कुमलाइ पाइ ॥
मंडित्त मत्त तिहि चाहुआन । मुष रुद्धि चीय नन रुद्धि प्रान ॥
छं० ॥ १८५ ॥

राजा पृथ्वीराज को रानी के मान करने का दुःख होना ।

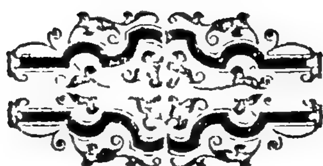
चौपाई ॥ न्रप पर दुष्ष अलप्प जु किन्नौ । ज्यौं बारि गयौ तरफै रहि मीनौ॥
दुष निद्रा निसि घट्टिय आई । तिहि न्रप सज्ज सपन्नौ पाई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रात्रि के राजा पृथ्वीराज का स्वप्न देखना । स्वप्न वर्णन ।

भावी गति आगम विगति । को मेटन समरथ्थ ॥
राम युधिष्ठिर और नल । तिन मैं परी अवथ्थ ॥ छं० ॥ १८७ ॥

मान करै मति हीन नर । जोवन धन तन रूप ॥
कौंन न दिन द्वै है गये । बिना ग्यान रस कूप ॥ छं० ॥ १८८ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके शुक विलास वर्णनो नाम बासठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६२ ॥



आषेट चष श्राप नाम प्रस्ताव ।

[तिरसठवां समय]

कन्नौज में समस्त सगे संबंधियों के मारे जाने से पृथ्वीराज का खिन्न मन होकर उद्विग्न होना ।

दूहा ॥ जिन बिन न्रप रहते न छिन । ते भट कटि कनवज्ज ॥
उर उप्पर रष्पत रहै । चढै न चित हित रज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ कटे कुटुंब मन मित्त । हितकारी का का भट ॥
कटे सूर सामंत । सजन दुज्जन दहंन ठट ॥
कटे सुसर सारे सहेत । मातुलह पछय फुनि ॥
कटे राज रजपूत । परम रंजन अवनी जन ॥
निसि दिन सुहाइ नह न्रपति कौं । उच्च सास छंडै गहै ॥
अंतरति अग्नि उद्देग अति । सगति सूल मालै सहै ॥
छं० ॥ २ ॥

राजा के मन बहलावे के लिये रानी इंछिनी का कहना कि हम लोगों को अहेर का रहस दिखाइए ।

दूहा ॥ तब सारे अंते उरह । कीनौ मनो विचारि ॥
न्रप अग्गैं उच्चार किय । धरि मुष अग्ग पंवारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
चरन लग्गि युग जोरि करि । कह्यौ सुनहु सहि इंद ॥
हमहि सिकार दिषाइये । मत्त म्रगादि मयंद ॥ छं० ॥ ४ ॥
क्यौं वराह वागुर रुकै । क्यौं बंधहि वर वानि ॥
क्यौं छुट्टैं छर डोरि कै । क्यौं जुट्टहि सक स्वान ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का कहना कि तुम लोग अपनी तय्यारी करो ।

विहसि बयन अलसित नयन । दिय इह उत्तर राय
गोठि करो गोरी सकल । तो आषेट षिलाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानियों का राजा की आज्ञा मानना।

कहिं परमान प्रनाम करि। रानिय मानिय बात॥
सकल षरच संजोगिता। साज सु जोवत प्रात॥ छं० ॥७॥

राज महल के प्रभात की आभा वर्णन।

पद्धरी॥ हुअ प्रात रात पति अस्त हुअ। उड़गन सु गए तजि बिना धूअ॥
पसरे पवंन तर वरन पान। जोगिंद जग्य पूरै विषान॥छं०॥८॥
झल्लरि झनंक भई देव द्वार। षुल्ले किनंकि ग्रह ग्रह किंवार॥
नर नारि वारि फिरि लाज कीन। झट झट झटक्कि पट कूल लीन॥
छं० ॥ ६ ॥
उठि प्रात गात दुजराज मंजि। पढि वेद मंच हरि देव रंजि॥
गर बंध धंध छुट्टिय सुधेन। लीनौ अछादि गौरै न गेन॥
छं० ॥ १० ॥
नौबति निसान दरबार बज्जि। रिफ रोर चोर गय कुहर भज्जि॥
सहनाइ सुरति कीनौ संचार। गायन ललित गरवर उचार॥
छं० ॥ ११ ॥
पावन प्रसाद षुल्लै पुरान। अविछन्न धार हर होत न्हान॥
सत सती पाठ पाठी करंत। जप ध्यान इक्क नव ग्रह धरंत॥
छं० ॥ १२ ॥

रानी संयोगी का शैय्या से उठ कर गोठ की तैयारी के लिये आज्ञा देना।

तिहि बार जागि रानी संजोइ। दिय हुक्क बोलि बड़वार दोय॥
झट लेहु साह झगरू बुलाइ। मागै सु द्रव्य दीजौ गिनाइ॥
छं० ॥ १३ ॥
करियो अनेक पकवान वानि। सक्कै न कोइ जिन जाति जानि॥
सौरंभ संवारि मिलह्ह अनेक। घन मार सार म्रग मद विवेक॥
छं० ॥ १४ ॥
एलचि लवंग संगति संवारि। स्यामा समेत सद सुट्ठि डारि॥

रा मठी रंग रचि मिरचि देहु । पुनि सकल भांति गोरसहु लेहु ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ लेहु सरस सक्कर पहिल । षांडी षंड अनंत ॥
विंजन बहु बनवाइयौ । लागे गहर गनंत ॥ छं० ॥ १६ ॥

पानि पंथ पहुंचाइयौ । सकल बाटिका बीच ॥
कीजहु बहु आचार सों । दरसन लहै न नीच ॥ छं० ॥ १७ ॥

रनिवास की कतिपय दासियों के नाम।

चोटक ॥ सुनि सद्द इतैं स्रुति स्वामिन के। नमि तुंग चले गज गामिन के॥
गुनवेलि सहेलनि बीच बड़ी । न्टप कैं चित जाचष कोर गड़ी ॥
छं० ॥ १८ ॥

मदनावति मालति मोहनियं । कमला विमला संग सोहनियं ॥
बुधिलाल लिलावति लाजमती । क्रम माल मराल गवन्न गती ॥
छं० ॥ १९ ॥

पठ मंजरि पंजरि नेन नगी । सुर हंसिय बंसिय पेम षगी ॥
ललिता कलिता चलिता सु सषी । रतनावलि रामगिरी निरषी ॥
छं० ॥ २० ॥

जमनी जिय वल्लभ जोति जगी । कुँज वेला जुही सु हिया अदगी॥
गुनकेलि गुलाल म्रनाल भुजा । कच लंबिन कोमल देह सुजा ॥
छं० ॥ २१ ॥

मधु माल तिमार सुमार सुषी । मुगधा मधु वेनि मयंक मुषी ॥
चित चोप चंवेलिय चंप कली । सब सेवति स्वामिनि भांति भली॥
छं० ॥ २२ ॥

धर माकर मानव नारंगियां । वलभा कलभा सुर सारंगियां ॥
हरदासिय रासिय रूप जिती । निकसी करि वेन प्रमान तिती ॥
छं० ॥ २३ ॥

जितनी सिष स्वामिनि पास लही । तितनी झगरू सहु जाय कही॥
छं० ॥ २४ ॥

झगरू कंचुकी का सब सामान ले जाकर पानीपत में गोठ का सामान रचना।

चौपाई ॥ झगरू साह साज सब लई। सो पहुंचाय नीरपथ दई ॥
बारी सघन वारि बहु जहां। बैठि गोठ विस्तारी तहां॥छं०॥२५॥

अग्नि कोण में रनिवास के डेरे लगना।

कवित्त ॥ सीत भीत आदीत। बास अगनेव कोन किय ॥
बगरि बारि वारिज्ज। जमि रहहि निसानिय ॥
सुष लुट्टहि संजोग। जुवति जे भोन भोन सुष ॥
विरह वियोगिनि अंग। अग्गि ज्वाला अस पि दुष ॥
चक्कीय चक्क चिंता विषम। दिघ्घ रैंन दारुन दहै ॥
जानै कि प्रान कै प्रान पति। आनि कानि कासों कहै॥छं०॥२६॥

डेरों पर तैयारी हो चुकने पर पृथ्वीराज का रानियों सहित पानीपत की यात्रा करना।

दूहा ॥ तिन रिति मन मृगया करिय। चढ़न कहत चहुआन ॥
आगैं आगैं अंगनां। पानीपंथ मिलान ॥ छं० ॥ २७ ॥
एक मास क्रीड़ा अवधि। करिय संभरी नाथ ॥
गोटि साज पहिलें पठय। चल्यौ रागिनी साथ ॥ छं० ॥ २८ ॥
सलष सुतादिक आदि दै। राज लोक लै सथ्थ ॥
पूजि प्रिया सगपन मिलै। चली सु पानीपथ्थ ॥ छं०॥ २९ ॥
लाल ढाल सुषपाल महि। डोला रथ्थ रसाल ॥
सावन सरित उमंडि ज्यौं। चलै चली त्यौं बाल ॥ छं० ॥ ३० ॥

संपूर्ण समारोह के साथ रनिवास की यात्रा।

मोतीदाम॥ किती गज ढालन[1]बाल चढाइ। किती चक डोल अमोल बैठाइ॥
किती सुषपाल विसाल अरोहि। सुषासन आसन षासन सोहि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बाज।

कितौ रलकी पलकि महि बैठि । कितौ मकना ढकना तन पैठि ॥
कितौ रथ पथ्थ चढी चलि मांन । मनों विबुधी अब रोहि बिमांन॥
छं० ॥ ३२ ॥

चिहूं दिसि भासिय दासिय सथ्थ । गहै सब साज सिंगारन बथ्थ॥
कितौ डिढडा बिड़ वाडिढ पाय । कुंपी इक कंध सुगंधनि ढाय॥
छं० ॥ ३३ ॥

डरैं उर स्वामिनि ते चल चूक । चलै लहू आतुर सीस सिंदूक ॥
कितौ छर छग्गर कंध न लीन । चलौ हय हंकि लचै कटि छीन ॥
छं० ॥ ३४ ॥

झनझझन [1]झंझ नसद्द सुनंत । घनं घन घुघ्घर घोर गुनंत॥
पनं पन कंकन बज्जि सुढार । गनं गन धावत जात न पार ॥
छं० ॥ ३५ ॥

जगंम जगेव जराव वसंन । डगं मन जानि अरून्न किरन्न ॥
सज्यौ मनु जच्छि प्रजापति जाग । चल्यौ सुर नारिन कौ जनु माग ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मनों मष मंडिय पंडव भूप । जुरे नर नारिन ब्रंद अनूप ॥
चल्यौ जलि षोजन कौ सथ संग । नह्यौ जिन कै सब अंग अनंग ॥
छं० ॥ ३७ ॥

लऐ कर कंचन लट्ठिय कद्दू । उठै झुकि क बहु बोलत तथ्थ ॥
चले तिन संग चढे गुर राम । बड़े बपु वेस बड़े गुनधाम ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चले दिन दिघ्घन जे रजपूत । चले चढि साहि सिरोमनि सूत ॥
चले कुल कायथ चौदह जान । भयौ इतमाम [2]करे जग कान ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सबैं सित उज्जल अंबर साजि । मनो निकले कल हंस विराज ॥
* * * * * * छं० ॥ ४० ॥

---

(१) मो.-झझ्झर ।　　(२) ए. कृ. को. भरे ।

रानियों का शिविर स्थान पर स्थानापन्न होना।

दूहा ॥ जथ्थ मंडि भगरू करिय। तथ्थ गयौ रनवास ॥
बाग बावरी बहु जहां। कूप ताल [1]पनिवास॥ छं० ॥ ४१ ॥
बारी में भारी बनिक। रच महल सुधराय ॥
मनों सोभ कैलास की। लीनी सोभ [2]छिंडाय ॥ छं० ॥ ४२ ॥
कहै रवनि प्रथिराज की। उर पुर धरि अनुराग ॥
चलौ बिलोकैं चिहू दिसा। पानि पंथ कौ बाग ॥ छं० ॥ ४३ ॥

शिविरस्थान के उपवन की शोभा वर्णन।

भुजंगी॥ बनी सुभ्भ बारे फले [3]वृष्य नेकं। रटै बैठि पंषी सु भाषा अनेकं॥
ठटे अंब नीबू सु जंबूव रोसं। लुटै भूमि [4]जूमी हरे हेरि होसं॥
छं० ॥ ४४ ॥
कहूं चंपकं चारु चेची चिनीयं। मनों दीपकं माल मनमध्य दीयं॥
कहूं नालि केलं रुवेलं बिदामं। सुकं सारिका टोल बोलंत तामं॥
छं० ॥ ४५ ॥
कहूं [5]पक्क डारं अनारं दरक्की। कहूं सोभ सारं सु तारं तरक्की ॥
कहूं कंछुहारी सुपारी निवारी। कहूं केवरा केतकी भौर भारी॥
छं० ॥ ४६ ॥
कहूं लाल जालं गुलालं सु पुंजं। कहूं जाति पंती भरं भोर गुंजं॥
करै केलि में केलि मोरं चकोरं। कहूं कंकरन्नी करन्नान ओरं ॥
छं० ॥ ४७ ॥
फलै फाल से फैलियं लौंग बल्ली। दलै द्रुष्य साषं सु दाषं प्रचल्ली॥
कहुं चंदनं कंदनं ताप तापं। जहां काम क्रीड़ा गहै बान चापं॥
छं० ॥ ४८ ॥
कहुं पंडुरं डार बैठे परेवा। कहूं बीज पूरी सिंदूरी करेवा ॥
कहुं सारनी फेरिकै बारि ल्यावै। कहूं नाग वल्लीन [6]कूं नीर प्यावै॥
छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) को कृ.-पतिवास। (२) ए. कृ. को.-छिनाय। (३) ए. कृ. को.-वृछ।
(४) मो झूमी। (५) मो.-कप्प। (६) मो.-कों।

कहूं घट्ट थट्टं रहट्टं चलावै। कहूं मालनी बाल माला बनावै ॥
कहूं ढेंकुरी ढारि कै बारि काढै। कहूं थान उंचो सचै नीर चाढ़ै॥
छं० ॥ ५० ॥

दूहा ॥ चरस सरस ढरि ढेंकुरी। रहट बहत बसु जाम ॥
वापी कूप तडाग तें। भरत चहवचा ताम ॥ छं० ॥ ५१ ॥
इहि विधि सब रनिवास नें। सुष पायौ लषि वागु ॥
जिन निरषिय तिन कहिय यों। आज हमारो भागु ॥ छं० ॥ ५२ ॥
बाग लषौ रनिवास नै। रानी आग्यौ लेय ॥
षान पान अरु सेज सुष। मुष मनुहारि करेय ॥ छं० ॥ ५३ ॥

रानियों के पानीपत पहुँच जाने पर पृथ्वीराज का कूच करना।

रानी पहुंची जानि कै। राजा चढ्यौ तुरंग ॥
पायन पेलै वाइज्यों। धाय न जाय कुरंग ॥ छं० ॥ ५४ ॥
न्नपति चढे सब चढि चले। जे भरवंक बिरद्द ॥
घर ढट्टे अरि दल दलन। जे कट्टैं गजरद्द ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामंतों का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चले अब्बुअ राव। सिर सेत छत्र सुभाव ॥
कूरंभ पंभ चमून। जम रूप जानि जमून ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सुह अग्र मोरिय बीर। न्निव्वान आनन नीर ॥
चढ़ि चले चंपि चंदेल। हय मुक्कि मंडित षेल॥ छं० ॥ ५७ ॥
तिन सिद्धि संभरि वार। जग मझ्झ एक जुझार ॥
उर साल साहि सहाव। मुष चंड मंडित काव ॥ छं० ॥ ५८ ॥
लिय संग रंगह स्वान। इक इक्क संग द्वै ज्वानि ॥
अनरोम के बहु रोम। इक मात नात न षोम ॥ छं०॥ ५९ ॥
मुष रत्त कोमल कान। द्रिग रत्त गति गुर रान ॥
जोगिंद निंद सु भाय। म्रग धाय जाइ न पाय ॥ छं० ॥ ६० ॥
पटकंत बाघ बराह। झटकंत रोझ अग्गाह ॥
पट जरैं जेव जराय। रज मंकरन दुरवाय ॥ छं० ॥ ६१ ॥
इक मंकही आरोह। इक पालिकी प्रति मोह ॥

रथ सथ्थ चीती वान। चष ढंकि पथ्थ पयान ॥ छं० ॥ ६२ ॥
जुर रारु बाज सिचान। तुरमती तेज उड़ान॥
पिठका कुही चष ढंकि। पुट चंच पदनष बंक॥ छं० ॥ ६३ ॥
फुनि लै फंदैत कुरंग। जिन अंग सोभ सुरंग॥
हुम संत हुंकत हेरि। दस कोस आवत फेरि ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ पानी पंथह राय। आय षेलत आषेटक॥
फिरि पहार उज्जार। देषि बंधा आगेटक॥
नै विहंड बन हंकि। संकि नव षंड मंड वर॥
मूर सूर वाधंत। बाज छांडत छंडि वर॥
बेधहि बराह उच्छाह मन। तानि इक्क सर इक लहै॥
पावै न जान सावज अबर। ऐन सैन मेलै गहै॥ छं० ॥ ६५ ॥
एक सत्त बाराह। बान बेंधे कि स्वान गहि॥
सावज अवरन हंसि। नंस कीनौ म्रगादि महि॥
पंछि पंछ पंछीन। मारि संघारि बहुत किय॥
सु से सृगाल को गिनै। छेद छिक्कार भार जिय॥
बीभच्छ बीर रस रुद्र मचि। करुन कासु पिष्षी न मन॥
पच्छलै जाम विश्राम कहु। फिर्‍यौ संग सामंत गन॥ ६६ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का मर्दन करवा कर यमुनाजी का स्नान करने जाना ।

डेरा न्रप आवंत। सुनत रानीन सुष्ष हुअ॥
सपजि रहे सब अन्न। धाय प्रथिराज सुद्धि दिय॥
सुनि मरदन कौ हुकम। होत मरदनी बोलि लिय॥
बय किसोर थन थोर। कच्छि अच्छरि समान त्रिय॥
तिन नेह देह मलि देहु सुष। बरषि मेह शंगार रस॥
जल जमुन उष्ण अस्नान करि। चल्यौ भूप संग विप्र दस॥
छं० ॥ ६७ ॥

राजा का स्नान कर के गोदान करना ।

कासमीर करि तिलक। श्राद्ध तर्पन अंजुलि दिय॥

देव सेव किय विप्र। अप्प दंडोत पंच किय॥
तुलसीदल हर अरपि। मृत्य असिवर की मंगिय॥
चरनोदक मुष धार। राज बैठ्यौ बजरंगिय॥
सत धेन शृंग सोवन्न मढि। षुर रज्जत राजंत अति॥
शृंगारि दत्त दिय दुज्जुन कंह। पठहि पाठ जे वेद प्रति॥छं०॥६८॥

कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करवा कर राजा का सब सामंतों सहित भोजन करने बैठना।

नव कन्या पहिराय। दान नवग्रह कौ कीनौ॥
इच्छा भोजन पूछि। सहस विप्रन कौ दीनौ॥
भोजन किय जिहि ठौर। सब्ब भर तहं पधराए॥
नित्य करम करि इतौ। तही अप्पन प्रभु आए॥
पांवरी पाय जूरौ सिरह। षीरोदक अरु पीतपट॥
कर माल जपत नंद लाल मुष। गुण विसाल संग विप्र थट॥
छं०॥६९॥

गो गोमय चोको। विचित्र चित्रे अति चावक॥
लीक धवल धर हरित। धरी सिगरी भरि पावक॥
कोमल आसन मंडि। मंडि बाजोठ अग्र सुष॥
तहां बैठ्यौ चहुआन। गंग सल्हौ उतर(१)रुष॥
सामंत सूर दष्षिन दिसा। पति मंडे सोभंत अति॥
संमुहो चंद बरदाय वर। सबै दिष्षि यहि दैव भति॥छं०॥७०॥

राजसी भोजन परोसे जाने का वर्णन।

ऊंकार पूरान। कियौ पंडित प्रवीन दुज॥
श्रीरघुनाथ चरित्र। गाथ भंजनह वीस भुज॥
नूत नूत पल्लव पसारि। पत्रावलि संडिय॥
धोय तोय विन छिद्र। धरे दोना ढिग(२)ठंडिय॥
कोविद उदार उज्जल दुजन। परुसन कौ आरंभ किय॥

(१) ए. कृ. को सुष। (२) ए. कृ. को.-गीटय।

भरि छाब काव को कबि कहै। प्रथम अनूपम पूप लिय ॥
छं० ॥ ७१ ॥

परस की विधि और जिनसों का वर्णन ।

दूहा ॥ पूप अनूप परूसि पुनि । पुरी सुष्प पुरि मेलि ॥
खखित लूचई लै चलै । [1]ऊँच रती विधि वेलि ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पकवान और मिठाई ।

मोतीदाम ॥ भरि [2]पीठि भींतर लोन सिलाय। कचौरिय मेलि चले दुजराय ॥
षरे निसराज सिषा जनु फेरि। धरे ढिग वातर भाँवर हेरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुते बर घेवर पैसल्ल पागि। लषै चष [3]फेरि गई उर आगि ॥
जलेबनि जेब कहै कवि कौन। महा मधु माठ मिटावन मौन ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सुधारस फेन कि फेनिय आय। तिनं पर बूर गरूर मिलाय ॥
करें कर सक्करपारे सुधार। महा दुति मुत्तिय सेव सिघारि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

वनी तिय नारि कसार भरित्त। कलपानिय वानिय पागि घिरत्त॥
करी सवनी सब ही महि सार। गिँदोरन और करै सब आर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

षरे षुरमा अरु पिंडषजूर। बिही अषरोट निही सुष पूर ॥
नय नसपातिय पैठै पकाय। दह्यौ रिय दीनिय भूषन गाय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पगे मधु पान पनंगह्ह वेलि। दए गुर सक्कर अम्रत ठेलि ॥
बिए पकवान धरे बहु भांति। धरे तिन ऊपर पापर आनि ॥
छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ आनि सँधाने सब धरे। मूल फूल फल कंद ॥
मैदा के पैदा करै। सुमन मेलि मकरंद ॥ छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए.कृ.को.-उंचरची। (२) ए.कृ को.-परि पिछिय। (३) ए.कृ.को.-परि ।

अचार वर्णन ।

बचनिका ॥ करि कंज पुंज धारे । रचि चंपकं सु धारे ॥
बहु बेलि है चंबेली । करनी कनैर केली ॥
बकलं बधूक आने । घनसार डार साने ॥
मचकुंद कुंद कीने । करि केवरे नवीने ॥
कल केतकी किति कौ । पुनि पाडरं जिति कौ ॥
जुहियं जंगत जैनी । भ्रम भूलि भोंर सेनी ॥ छं० ॥ ८० ॥

चरबन वर्णन ।

दूहा ॥ भांति भ्रांति चरबन रचै । चना चिरुंजी चारु ॥
चोंरा चाहत चेंन [1]चष । मिलि मृग मदु घन सार ॥छं० ॥ ८१ ॥
करे कसेरू करहरी । गोंद गटा ठट ठानि ॥
पय के बहु घटि कर करे । कर कपूर [2]पुट वानि ॥

तरकारियां और गोरस का वर्णन ।

भुजंगी ॥ परी षीर औटली करी षीर ताकी । बियौ जंपियै किं सुधादासि जाकी॥
महा सद्दि घृत घालि बूरा[3]मिनाई। सबैं सूर सामंत जीमैं सराई॥
छं० ॥ ८२ ॥
परे षट्ट पेरे रु षाटे जुड़ाने। वरा बिद्ध राका समं सोधि आने ॥
किते विंजनं वेसनं के बनाये। करन्ना करोंदी कि [4]किंदुरे गनाये॥
छं० ॥ ८३ ॥
नए नूत नींबू नए नालिकेरं । रची नारिंगी नासपाती सु मेलं ॥
करे अम्रतां कैथ सथ्यं बिजोरें। मनों डार तें पारिकें आनि मोरे॥
छं० ॥ ८४ ॥
करारं कढी मद्धि भींजी पकौरी। बरी मूंगरी [5]पाखरा षट्ट मोरी ॥
महा मद्दु मैदान की मेलि रोटी। कछू जामिनी नाथ ते जोति मोटी॥
छं० ॥ ८५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुख । (२) ए. कृ. को.-पुर । (३) ए. कृ. को.-बनाई ।
(४) ए. कृ. को.-किंदूरी । (५) ए. कृ. को.-मापकी ।

धरे भोजनं मंडनं आनि माँडै। भिगे सक्करा षीर सों सेन छाँडै॥
रवा केरु आमोदनं देव नाए। घने घृत्त अंगा करी षोभि लाए॥
छं० ॥ ८६ ॥

कढी कट्ट मैदा पिठी मेलि पाटी। बनी बेटई अंगुलीं पात चाटी॥
रची रोटियं मिश्रियं चैन पायौ। तहां सालनं आन रानी पठायौ॥
छं० ॥ ८७ ॥

लै लै विप्र दौरे सुरंधेर तारू। बने सूरनं वेगनं मेलि मारू॥
करी बानि बिंबा गथ्योरा परोसे। बरं लै धरे वीरजे वेस रोसे॥
छं० ॥ ८८ ॥

सदन सेमि सं मांच चंडा चलाए। ढका देत से टेढ साढं किधाए॥
कंकोरा करेला मुरेला सराहे। भली भांति भाड़ानि के ढंड चाहे॥
छं० ॥ ८९ ॥

रवा संफरी छोंकरी लैधरी ते। कली कच्चनारं भलीजे करीते॥
धिरत्तं भरत्तंभ टाको सुधारयो। नहीं बाकलं बिजूरा में पधारयो॥
छं० ॥ ९० ॥

रच्यौ राइ तौनाय तौ लोंग मिरचें। धना सुंठि लै राइ मिल्लाय सिरचें॥
परोसे नवीनं चनाके निमोना। मिरी भेलि नींबू धरे कोलि दोना॥
छं० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ अर उर कर परिकर लए। संभरिवै मुष माँगि॥
जनु [1]पटुता करि पांनिसों। षटरस राषे षाँगि॥ छं० ॥ ९२ ॥
सुर संधानौ सुर जनौ। धर्‍यौ दही सों सांधि॥
फूल फूल फल के जिते। तिते करे कर रांधि॥ छं० ॥ ९३ ॥

दाल भाजी और खटाई भरी पकौड़ियों का वर्णन।

चोटक ॥ सरसों सूआ के साक जिते। गिरिराज रुरायिय रांधि तिते॥
बथुआ बड़ साग बवोत बने। बरवाय बिरंग सवाद सने॥
छं० ॥ ९४ ॥

(१) ए. कृ. को.—वहुता।

चनकं अरु पोचिय चूक बन्यौ। तहां [1]सोंरिय त्यों रन जाय गन्यौ
लगि डाड पयाल पयाल कसौ। मघवा उतकै होय बालक सौ॥
छं०॥ ६५॥

दिव दारू सुदारु है साकन में। मुर बातिय में थिय पाकन में॥
नव पल्लव नीव रु नाय धरी। करई गति काढि सु दूरि करी॥
छं॥ ६६॥

भरि भाजन भात उलेंड इतौ। भर भीमन जेंइ सकंत जितौ॥
तबही [2]पसवायत भत्त लियं। सुकमार सपेद सुगंध कियं॥
छं०॥ ६७॥

अरुनं बरुनं पुनि पीत रच्यौ। इक इक्क सनंमुष कीच सच्यौ॥
मसुरी मुंग माष चना विधि चौ। दधि धोय [3]सुधारियदारि सुचौ॥
छं०॥ ६८॥

रसरा मठदै पुट केसर कौ। कछु आननही सनमे सरकौ॥
बरु बारि बराबर घृत्त लयौ। [4]सदसुभ्भित सोसुर भीन अयौ॥
छं०॥ ६६॥

कुसलं मुसलं समधार परै। अनषंडित मानहु गंग झरै॥
अपनी बटि वास तिमांस परे। हठिवास सुवासनि आभ भरै॥
छं०॥ १००॥

चकतार अपार सवा दल सै। बनि भूति अभूतिनि वंद गसे॥
सुहितं उर स्हल कयं परसं। द्रिगदेपि सरंबक सेत रसं॥
छं०॥ १०१॥

मधु मीन रचे पचि भंति इति। कनवज्जनियं कनवज्ज जिती॥
पन पंड मरग्गल सों सपजे। जिन वासन वानिक भ्रम्म तजे॥
छं०॥ १०२॥

पछावर की परस का वर्णन।

दूहा॥ जेंइ अघाने जठर पर। जलपिय फेरति पानि॥
तुच्छ छुधा पाछें रही। तव लई पछावरि वानि॥ छं०॥ १०३॥

(१)मो०-त्योंरिय। (२)ए.कृ.को.-पसकायत। (३)ए.कृ.का-सुवारमदारि। (४)ए.कृ.को.-दस।

मोतीदाम ॥ बढ़ी रुचि देषि कढी कर लेत। त्रिचैं मिरचैं मिलि लौंग समेत॥
बिकत्त तिकत्त सुषट्ट्रिय षार। लई सुष मंगि हूई मनुहार ॥ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

करिवां कठ पत्तनि की सब सानि। बंध्यौ दधि आनि धस्यौ ढिग छानि ॥
मट्ठा दधि छानि रुबानि बघारि। जहां मिलि जीर घनं घनमार॥
छं० ॥ १०५ ॥

पनं बहु जंबुअ अंबुल मेलि। निचोरिय दारिम दाष सुठेलि ॥
गऊ पय औटिय धार उभ्भांटि। धरे भरि भाजन मिस्रिय बांटि ॥
छं० ॥ १०६ ॥

मिली मधि जारक षारिक चूक। सवारिय झारि भए भष भूक ॥
भए चिपतें सब सामँत साथ। कहें मुष कित्ति रहे षचि हाथ ॥
छं० ॥ १०७॥

सँजोगिय स्वामिनि कौ परधान। पंषा गहि प्रीति करै सनमान ॥
कहै सब सथ्थ भई श्रम भीर। छमा करियौ चित चूक सधीर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

कहै सुष सामँत श्रीमुष राज। भए हम पूरन पावन आज ॥
तहां तप तो इक हथ्थ धुवाय। अरच्चिय दच्छि करंदम काय ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दए मुषवास कपूर भुआइ। मँडे अप अप्प मिलावन जाइ ॥
जिमावत ओसर यों रनिवास। इसी भँति राज रह्यौ इक मास ॥
छं० ॥ ११० ॥

भई चढती चढती मनुहारि। दिन प्रति हास बिनोद [1]उचारि ॥
छं० ॥ १११ ॥

आखरी दिन चलते समय राजा का शिकार करने की तैयारी करना और प्रोहित गुरुराम का मना करना।

दूहा ॥ चल्यौ अंत कै द्योस न्रिप। बरज्यौ प्रोहित राम ॥
कुसल भई अरु रस रह्यौ। क्यों न पधारहु धाम ॥ छं० ॥ ११२ ॥

(१ ए. कृ. को -उघारि।

मृगया सदा विगार हुअ। सुनौ कहूं समुझाय ॥
श्राप लह्यौ रषि राज पै। दसरथ पंडव राय ॥ छं० ॥ ११३ ॥

राजा का शिकार के लिये तैयारी का वर्णन।

हँसि नरिंद हय पर चढ्यौ। भई निसान धमंक ॥
सत्त समंद कलँमलै। संकर चित्त चमंक ॥ छं० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ चमकि रुद्र चग षुले। चमकि सिर ढुले सेस महि ॥
भरकि उठे दिगपाल। उरकि दिगपाल सोच रहि ॥
हलकि हले गिरि मेर। हलकि कुब्बेर संक हिय ॥
धरकि धरा धहराय। धरकि दिग्गजनि [1]कंप किय ॥
आषेट हेट प्रथिराज की। एक सुष्य कवि को कहै ॥
उड़ि धूरि पूरि [2]अंमर भर्‌यौ। रविन व्योम मंडल वहै ॥
छं० ॥ ११५ ॥

कंपं गंगन चिन्हं। चिन्हं नन घंनं सुझ्झै ॥
नद्द वद्द भरि कान। आननन तान सु बुझ्झै ॥
सहस सीरषा पुरुष। सहस द्रिग सहस हथ्थ की ॥
दलि तरु चक्कित छिन्न। भिन्न भइ अन्न अथ्थकी ॥
हय गय पयाद पायान मय। अकथ कथ्थ कविचंद कहि ॥
डगमगहि पिंड ब्रह्मंड की। आज राज प्रथिराज रहि ॥
छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ रह्यौ नहीं संभरि धनी। चढ्यौ चित्त अति चाव ॥
डगमगि पहुमि पयान भर। ज्यों जल रीती नाव ॥
छं० ॥ ११७ ॥

शिकारी सामान, वन की शोभा और बनैले जीव जन्तुओं का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढि चल्यौ चाह चहुआन भान। सुर नाग नरनि भूल्यौ वसान ॥
धमकी धरन्नि पुरतार भार। वढि संक लंक संसार सार॥छं०॥११८॥

(१) मो.-कंपि (२) ए. कृ. को.-अनर।

लिय डोरि डोरि संकरन खान। चढ़ि चले रथ्थ पथ चीतिवान॥
म्रगयस्त हस्त हुंकरत मुष्य। फँद बंध शृँग संग्राम रुप्य॥
छं० ॥ छं० ॥ ११९ ॥

जुर बाज कुही तुरमती धूत। को अन्य गनै पंषी अभूत॥
चहुआन गयौ उद्यान दूरि। गिरवर उतंग बन सघन पूरि॥
छं० ॥ १२० ॥

उज्जार जार सुझ्झै न मग्ग। भरि सकै कौन मर डक्कि डग्ग॥
सीस [1]पसि रस्स सामर सिंहारि। कहुं साल ताल सागोन सार॥
छं० ॥ १२१ ॥

कहुं झीक झुंड झिर हानि झार। कहुं वेलि वेर वेकल अपार॥
कचनारि कोह गिरि नारि आरि। गुरजैन गैन परसंत चारि॥
छं० ॥ १२२ ॥

अनछिद्र छांह सों करिय छोर। कयि कच्छ वेलि कपि त्याग ठौर॥
कूं परित रत्त करलै सरल्ल। घट तीन भार तरु तें तरल्ल॥
छं० ॥ १२३ ॥

फुलित फलित फबि चारु फेर। वसु जाम झाम पसु पंछि घेरि॥
कहुं मृगमयंद मातंग मत्त। सु सल्ले सियाल सूकर भिरत्त॥
छं० ॥ १२४ ॥

कहुं रीच्छ इच्छ सोवंत छांह। वंदर लंगूर कंगुरन मांहि॥
फूंकर फनिंद तर को तरन्नि। सब सकै कोन कोविद बरन्न॥
छं० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ हरि हरि हरि बन हरित महि। हरन पिष्पयै अंपि॥
सारँग रुकि सारँग हने। सारँग करनि करष्पि॥ छं० ॥ १२६ ॥

शिकारी पलुए जानवरों का कौतुक।

कवित्त ॥ आपेटक रसि राज। बाज जुर कुही छंडि कर॥
ऐन सेन बाराह। हनहि बरहक्कि तक्कि उर॥

(१) ए. कृ. को. परि।

बागुरी परि उरभंत। रोझ सांमर असंष सुस ॥
और जीव को कहै। उहै भेडलह ष्याल कस ॥
बन बीच कीच मचि ओन बहि। भनिन चंद परिमित लहै ॥
सोमेस नंद आनंद सर। क्रीड कोप जंतुन सहे ॥ छं० ॥ १२७॥

जंगली जानवरों की स्वच्छन्दता और उनके शिकार होने का वर्णन।

लघुनराज ॥ बाराह राह रोकयं। वधिक्कयं विलोकयं ॥
हस्ति दूब अंकुरं षनंत दड्ढ बंकुरं ॥ छं० ॥ १२८ ॥
पुरं अवन्नि[1] उप्परं। ललित्त बेलि बिष्परं ॥
कली कुसुंम मंजरं। अरुन्न नील पिंजरं॥ छं० ॥ १२९ ॥
तजंत ते मधुक्करं। करंत मुष्प हुंकरं।
रोमंच अग्ग उब्भरं। डरंत देषि सुब्भरं ॥ छं० ॥ १३० ॥
लचतं भूमि उद्दरं। बरन्न स्याम बद्दरं।
सपेद दंत कंतयं। सुजानि बग्ग [3]पंतयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
टगट्टगंत नेनयं। तारक्कजेम रेनयं।
अहार कंद सूलयं। भयौ सुकंध थूलयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥
डढाल चीय भूलियं। फिरंत नद्द कूलयं।
न्त्रिमल्ल नंद बीचयं। करंत लोटि कीचयं ॥ छं० ॥ १३३ ॥
सुनंत कूह सेनयं। लग्यो सुकान दैनयं।
चमक्कि चप्प पुल्लयं। इकल्ल उट्ठि चल्लियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भिरंत छंडि भज्जयं। निरत्ति दैन रज्जयं।
प्रपत्तयौ धनुद्धरी। सिकार भाल गुद्दरी ॥ छं० ॥ १३५ ॥
हरष्षि नाथ संभरी। ज्यों भोर मेघ डंबरी।
हलक्कि फौज उप्परी। दिसा दिमान विप्फुरी ॥छं०॥१३६॥
पंवार जैत बग्गरी। हते न्त्रपत्ति अग्गरी।
विकट्ट जाल जंगरी। अठार भार पंगरी ॥ छं॥ १३७ ॥

(१) मो.-नेत्रन। (२) मो.-उप्परं। (३) मो. पंतयं।

गये सुचूकि ढाहरं। बबक्कि उठि नाहरं ॥
*   *   *   *   *   *   ॥छं०॥ १३८ ॥

जैतराव का सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सोर घोर सुनि श्रवन। रवनि रवनीय मंद जगि ॥
निडर अंग ऐडाय। बाघमुख पग्गि क्रोध अगि ॥
अधर दंत खाटंत। चाटि हथ्थल हुस्यार हुअ ॥
पटक्कि पुंछ मच्छर दहारि। उच्छारि उछंग भुअ ॥
पऱ्यौ सुजैत धाराधिपति। अति सरीस पटक्यौ सुधर ॥
उठि हक्कि हाक ओझर हन्यौ। गयौ तुट्टि करिवार कर॥छं०॥१३९॥

बलिभद्र का सिंहनी को मारना।

सिंघ सँघाऱ्यौ पिष्पि। षिक्कि सिंघन ववकारिय ॥
सम्रुष राज प्रथिराज। निरखि आवत ललकारिय ॥
मनहु माघ केमास। मेघ कल बायनि बिस्तरि ॥
यों कंपै सह काय। हाय मुष उटहि न सत्तर ॥
वलिभद्र राय बलिवंड धपि। कर क्रपान बाही सु बर ॥
उछरंत लंक कटि अद्ध परि। अद्ध आय लग्यौ सु कर ॥छं०॥१४०॥

अध लग्यौ कर आय। ताहि जम दड्ड घाय किय ॥
भाल जाल महि हन्यौ। छेदि बेहाल ठेलि दिय ॥
घरौ च्यार सब सथ्थ। रह्यौ यहराइ लग्गि टग ॥
ग्रेह देह अरु नेह। गए भय भूलि मग्ग जग ॥
हँसि कहै राज कविचंद सों। ए भर अरि असुपत्ति सिर ॥
करतार लज्ज रष्षै कलह। काटे कन्ह से जंग थिर ॥ छं० ॥ १४१ ॥

राजा का गत घटना पर सोच करना परंतु कवि का भुलावा देकर उसे शिकार से फिराना।

कहै चंद कवि तथ्य। राज गत बत्तन सूचहु ॥
जुहै सु मानुह दिघ्घ।। सोग संतापन पूचहु ॥

धरहु मन्न अग चलहु । पग्ग पब्बय उज्झारहि ॥
बहु बराह रुकि राह । दाह बाहं बर मारहि ॥
भुल्लाय बत्त चहुआन कौं । चल्यौ भट्ट सुष अग्र धरि ॥
न्त्रप्यौ न मिटै न्त्रिम्मान कछु । तहां इक्क आइय षबरि ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कुछ सामंतों का राजा को एक सिंह की सूचना देना ।

सोलंषी संतोष दास । नंदन नारायन ॥
तुच्छ पटे पग दौरि । पवन बिन न्त्रिपति परायन ॥
आसा लगि धावंत । रहै दासा तन लीयै ॥
रेन दीह जानेन । रहै हिय हुकुम जु कियै ॥
तिन कह्यौ आय प्रथिराज सहुं । सिंघ एक भाल्यौ निकट ॥
निठुर निसंक कंदर मँझौ । बीज तेज लोचन बिकट ॥ छं० ॥ १४३ ॥

राजा का सूचना पाकर सिंह की खोज में चल पड़ना ।

गाथा ॥ यों सु न्त्रपति श्रवन्नं । गवनं कीन लीन कोवंडं ॥
कोमल पद संचारं । उच्चारं कोमलं भासं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
केभर अग्गं पच्छं । केभर वास दच्छिनं अंगं ॥
दारा ग्रं दुज राजं । ढारं तेन पारियं छोरं ॥ छं० ॥ १४५ ॥

होनहार की प्रभूति वर्णन ।

कवित्त ॥ जलधि जनक ससि तनौ । और अमृत्त तन (१)तातन ॥
बंधु धनंतर वैद । पोषि रष्यन वपु पातन ॥
लच्छि वहनि बुध वदै । विपागु बल्लभ वहिलेऊ ॥
भव भूषन किय भाल । कुटम उडुगन गन केऊ ॥
लग्यौ कलंक घटु जाइ घटि । इक्क निमा पूरन्न रहि ॥
प्राचीन कीन लग्यौ कठिन । सु क्यौं मिटै सिरजंत महि ॥
छं० ॥ १४६ ॥
हरि कर धरै पषान । देव निरवंसी रष्यै ॥
बलि दव्वे पाताल । अभष भष पावक भष्यै ॥

(१) ए. कृ. को.-तापन ।

ब्रह्मपूज पर हरी। रुद्र कापाल लगायौ ॥
इंद्र अंग भग भई। सुक्र रषि नैन भगायौ ॥
सतवती सीय दुष पाइ जिय। रसाताल गइ फट्टि भुत्र ॥
न्टप नघुष नागपन भुग्गयौ। नमो नमो सिरजंत तुत्र ॥
छं० १४७ ॥

बिछुरै नल दमयंति। रहे हरचंद नीच घर ॥
नारद नारी भए। स्राप पायौ दसरथ्थ भर ॥
राम बसे बनवास। पंडव अनषंड विपति सहि ॥
राह लगे विन राह। भयौ विय टूक चंद कहि ॥
बपु जरि अनंग हुत्र अंग बिन। नरग राज ककिला सु हुत्र ॥
गजमुष गनेस अजमुष दछिन। नमो नमो सिरजंत तुत्र ॥
छं० ॥ १४८ ॥

सायर षारत सह्यौ। शृंग रिषि सह्यौ शृंग सिर ॥
पग पंगुर सनि देव। पंग [1]हनमंत संत चिर ॥
जच्छि राज की अच्छि। पिंग इक भई सर्प पत।
षरमुष रावन राव। अंध कुर रावनं दिषत।
भगवंत भिक्ष कर तन तज्यौ। पारथ पुरषारथ गरयौ ॥
विक्रम नरिंद वायस भष्यौ। कासिर वारौ निव्व-यौ ॥ छं० ॥ १४९ ॥

सिंह के धोखे से कंदरा मे धुआं करवाया जाना।

दूहा ॥ कंदर अंदर धूम किय। सिंघ भरम प्रथिराज ॥
पुब्ब पुरान नहो सुन्यौ। अति गति होत अकाज ॥ छं० ॥ १५० ॥

धुआं होने पर कंदरा के अंदर स्थित मुनि को कष्ट होना और उसका घबड़ा कर बाहर आना।

पद्धरी ॥ चिन पच कट्ठ लगि उठी झार। गइ गुहा मंझ धसि धूम धार ॥
चट पट्ट सद्द सुनियै न कान। फट्टिय सु झाल छुट्टै औसान ॥
छं० ॥ १५१ ॥

(१) मो. हवंत।

सब जीय जंत भजि सैल तज्जि । धरराय झार पावक गरज्जि ॥
चष श्रवा संकि पारंत चीस । कलमलि मुनिंद मन भई रीस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कोमल सु कमल द्रग श्रवै नीर । रद चंपि अधर कंपत सरीर ॥
जट जूट छूटि उरझंत पाय । झग चरम परम नंष्यौ रिसाय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

तसि तोरि डारि दिय अच्छ माल । निकस्यौ रिपीस बेहाल हाल ॥
गहि दर्भ हस्त वर नीर लीन । प्रथिराज राज कहुं श्राप दीन ॥
छं० ॥ १५४ ॥

हस तप्प वप्पु साधंत साध । नर सूं विरुद्ध नाहिन अराध ॥
फल पत्र ग्रास पालंत प्रान । सब संग त्यागि सेवत उद्यान ॥
छं० ॥ १५५ ॥

कहुं रंक राइ जांचहि न जायि । नन जीव जंत आवै संताय ॥
निर वैर काल काटत कठिन्न । भव सिंधु मध्य तें भए भिन्न ॥
छं० ॥ १५६ ॥

नन इच्छ भछ्य वर भोग जोग । कहि चूक हमहि संतवत लोग ॥
कारू भरस भूस पञ्चय सलेत । सुपि सरित सिंधु रष्यौ वरेत ॥
छं० ॥ १५७ ॥

ना रपों चिन्ह पट तीन भार । तब होय चेत संसार सार ॥
. . .. । ....छं० ॥ १५८ ॥

ऋषि का शाप देने के लिये उद्यत होना ।

कुंडलिया । तव अचेत चेतै सुचित । जव लग्गै सिर मांहि ॥
इह कहि आपन कों भयौ । गही पुरष इक वांह ॥
गही पुरष इक वांह । गेंन ते उतरत तच्छिन ॥
कहै निरा अपराध । साध पीरेंन तम्मि चिन ॥
तमि चिन पत्तन तोरियै । विना संतापै सव्व ॥
तारि दंड विन देहु झुकि । जिहि दुष दीनौ तव्व ॥
छं० ॥ १५९ ॥

कवित्त ॥ सुरहि बच्छ मृगराज। छवा गजराज जथ्थ थल ॥
चित्रक हरिन बराह। राह पीवंत इक्क जल ॥
आष इष्षि चष अग्ग। घात मंजार न मंडै ॥
फन करि पवन भषंत। मोर पंनग नह पंडै ॥
परताप मध्य गुरु हथ्थ कौ। नको जीव जीवह भषै ॥
तिहि जियत आज रिषिराज कहि। कंदर बैसंनर धषै ॥
छं० ॥ १६० ॥

ऋषि का चुल्लू में जल लेकर शाप देना कि जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया वह शत्रु द्वारा अन्धा किया जाय।

गाथा ॥ इहि रिषि कहि बरबैनं। तजि संसार आपियं रायं ॥
मोद्रिग जिहि दुख दीनं। तास तुम चच्छ कढ्ढाइं ॥छं०॥१६१॥

कवित्त ॥ कं अंजुलि कुस पकरि। कहै रिषराज सुनहु सब ॥
जिहि मो द्रिग्ग दुष्षए। निरा अपराध आय अब ॥
ता जुग लोचन जोनु। अयनजुग बीतत कढ्ढय ॥
मन बयन्न नहि टरै। विप्र षिष्कि षिष्कियों रट्टय ॥
जितिक पीर हम भोगवैं। भूमि लोक अवलोक इहि ॥
सत गुनी विरधता होइ चष। चल्यो चाइ सुनि ईस कहि ॥
छं० ॥ १६२ ॥

ऋषि का शाप सुन कर पृथ्वीराज का भयभीत होना।

सुनिय बयन्न श्रवन्न। कंपि प्रथिराज थरथ्थर ॥
जिते सथ्थ सामंत। सूर उर चास धरद्धर ॥
गये वदन कुमिलाय। सक्कि अति अधर अद्ध उध ॥
बोलत बोल न बनै। [1]सनै संताप साप दध ॥
रिषि आप दाप कौ अंग में। को ठिल्लै पल एक लगि ॥
जंगलन जाइ नन जाइ घर। भरि न सक्कै भूप डग ॥
छं० ॥ १६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मनैं।

कविचंद का ऋषि के पैरो पर गिर कर क्षमा मांगना ।

तबहि चंद कवि दौरि । [1]विप्र पद रह्यौ विप्र गहि ॥
छमि स्वामी अपराध । साध मुनि फुनि उद्दार कहि ॥
तुम सु षंड ब्रह्मंड । षंड नव तुम तप चल्लहि ॥
तुम अंमन जीमूत । बरषि जीवन प्रति पल्लहि ॥
केहरि भरंम हम धूम किय । पायक बसिट्टय देव हुअ ॥
संकुचि नरिंद कंप्यो डरपि । थरपि हथ्थ सिर सोम सुअ ॥
छं० ॥ १६४ ॥

कविचंद का ऋषि से कहना कि यदि किसी से भूल में अपराध हो जाय तो माहात्मा लोग सहसा शाप नहीं देते ।

पिय व्रत ध्रुव के वंस । भूप जयवंत सिकारं ॥
मूल मंडि ग्रथि रोकि । बैठि दुरि जाल कटारं ॥
मुह अग्गै इक रिष्य । निकसि प्रावरि म्रग छालं ॥
भ्रम कुरंग हनि तक्कि । बान लगि उअर दुसालं ॥
क्रामंति जोग बल रष्यि तन । यप्पन मन तिन षिमा किय ॥
कविचंद कहत रिषि राज सुनि । पुनि कुपि आपन न्रपति दिय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

कुंडलिया ॥ करि सनमान न सकिय दुज । सिव पिष्षि चक्र चलाय ॥
सिर लग्गे पुप्परि उछटि । जानु चिहुंटिय जाय ॥
जानु चिहुंटिय जाय । हाथ आकर्षत छुट्टिन ॥
तीन कोडि हज्जार सठि । तीरथ करि अट्टन ॥
न्रावंत सरोवर दछिन महि । पातक पुट्टि विछुट्टि गय ॥
तीरथ कपाल मोचन तहां । नाम परठि परसन्न हुअ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

(१) " ए. को.-विप्र पदचित्त प्रग्ह्यौ गहि "

कवि का कहना कि हम स्वारथी और आप परमार्थी जीव हैं सो कृपा कर शाप के उद्धार का उपाय बतलाइए।

कवित्त ॥ तुम जप तप पर हेत। देत वपु रिषि दधीच परि ॥
तुम थुति श्रुति कहि सकै। तुम्ह पद चिन्ह धरै हरि ॥
हम स्वारथ लगि फिरहिं। इष्ट स्वारथ [1]आराधन ॥
हम संसारी जीव। हम सु अपराधह साधन ॥
नन सरन आन तुम सरन तजि। रष्षि सरन प्रथुराज हथु ॥
कट्टै सराप जा पुन्य करि। सो बताउ बरदान तिथु ॥ छं० ॥१६७॥

ऋषि का कवि से नाम ग्राम पूछना और कवि का अपना और राजा का परिचय देना।

[2]चंद बदन्न मुनिंद। कहै तुम नाम ठाम कहु ॥
तो मुष सबद रसाल। सुनत सुष होय हियै बहु ॥
तबहि भट्ट भाषंत। स्वामि मो नाम चंद कवि ॥
वह नरिंद प्रथिराज। लज्ज भरि रह्यौ देव दवि ॥
अब ह्वै क्रपाल प्रभु उच्चरहु। कछुक देऊ बरदान फिरि ॥
अप्पौ नरिंद फिरि उद्धरहु। जिहि पारंगत[3]होहि तिरि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

ऋषि का संकुचित होकर राजा का प्रबोध करना और कहना कि शहाबुद्दीन तेरे हाथ से मारा जायगा।

चौपाई ॥ हों बालक दुरवासा तनौ। सत्ति बात सब तोसौं भनौं ॥
इह न्नप तोहि दियौ बरदान। तेरे कर मरिहैं सुलतान ॥
छं० ॥ १६९ ॥

यों कहि रिषि अंतर सकुचान। मुह अग्गै न्नप मुष कुम्हिलान ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आधारन। (२) को.-चंद वदन्न मुन्निंद। मो.-चद वचन्न मुनिद।
(३) ए. कृ. को.-होत।

देषि दया उर भई मुनिंद । बोल्यौ रिजु दुज आउ नरिंद ॥
छं० ॥ १७० ॥

पुनः ऋषि बचन कि कवि राजा और शाह एक मुहूर्त में मरेंगे ।

दूहा ॥ न्रप चहुआन रु चंद कवि । अरु गोरी सुलतान ॥
इक्क महूरत में मरैं । इह हम दिय बरदान ॥ छं० ॥ १७१ ॥

ऋषि के बचन सुन कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ।

आनंद्यौ प्रथिराज सुनि । निञ मन करै विचार ॥
देहन दनु देवन रहै । साह सहित म्रत सार ॥ छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज का अंतरप्रबोध ज्ञान ।

कवित्त ॥ देह न देवनि रहै । रहै नह देव दान बनि ॥
देह न मुनि पैं रहै । देंह नह रहै मान बनि ॥
देह न नागन रहै । देह नह रहै नगन गन ॥
देह न जच्छन रहै । देह नह रहै पुन्य जन ॥
रहि है न देह गंध्रब्ब बर । गुभ्भिक्षक सिद्ध अबद्धि बस ॥
मन समक्ष कहै चहुआन चिरु । रहै लैन हारे सु जस ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का ऋषि के पैरों पड़ना और ऋषि का राजा का सिर स्पर्श करना ।

दूहा ॥ यों विचारि प्रथिराज उर । लग्यौ रिष्षि कै पाय ॥
मन सें सकुचि [1]मुनिंद कर । न्रप शिर लयौ उचाय ॥छं०॥१७४॥

कविचन्द और मुनि का प्रश्नोत्तर ।

(कवि वचन)

तव मुनिंद हौं चंद कवि । पूछत इह अंदेह ।
सवाल कुट वी लोक में । कोन सु सांचो नेह ॥ १७५ ॥

(१) मो. नरिंद ।

मुनि वचन।

पूरन सकल विलास रस। सरस पुत्र फल दान॥
अंत होइ [1]सहगामिनी। नेह नारि को मानि॥ १७६॥

कवि वचन।

गाथा॥ किं तन त्रिभुवन सारं। किं तन मध्य सार रिप ईसं॥
किं पुनर पिता मभ्भं। [2]सारं तत्त उत्तरं [3]देहुं॥ छं०॥ १७७॥

मुनि वचन।

नर तन नर पुरसारं। नर तन मद्धि सार तप सीयं॥
सहि देही महि सारं। बाचं इक बुध [4]बड्डाई॥ छं०॥ १७८॥

कवि वचन।

को दुज धरम कथेयं। को न्रप धरम परम संसारं॥
किं बनिकं धन धरमं। किं धरमं सूद्र सहायं॥छं०॥१७९॥

मुनि वचन।

श्रुति पठनं दुज धरमं। भू भुज धम्मं नित्त नित्तेयं॥
दया सुधम्मं बनिक्कं। सेवा ध्रम सुद्र सहाइ॥ छं०॥ १८०॥

कवि वचन।

दूहा॥ कोन नगन अंबर छतें। को ढंको बिन चीर॥
को हारै अंधो फिरै। को जीते तजि तीर॥ छं०॥ १८१॥

मुनि वचन।

जस हीनौ नागौ गिनहु। ढंक्यौ जग जसवान॥
लंपट हारै लोह छन। त्रिय जीतै बिन बान॥ छं०॥ १८२॥

कवि वचन।

राजरिद्धि [5]बाधंत क्यों। किहि मग राज बिलाय॥
[6]भूपेउ न्रप छंडै कहा। कहा भूष मं षाय॥ छं०॥ १८३॥

(१) मो -महचारिनी। (२) मो.-नारं। (३) ए. कृ. को.-देहि।
(४) मो -बरदाई। (५) ए.कृ.को -मेटे कवन। (६) ए. कृ. को -भूपो।

मुनि वचन।

रिषि पूजा लच्छी बढ़ै। रिषि अपमान विलाय॥
रिषि विभूति भूषै तजै। अनि वित भूषै षाइ॥ छं०॥ १८४॥

कवि वचन।

किंहि मग कंटक विकट है। को मग सरल सुभाइ॥
किन मग चलियै रैन दिन। किहि मग परै न पाई॥
छं०॥ १८५॥

मुनि वचन।

हरि विमुषें मग कंटकी। हरि मग सरल सुभाइ॥
हरि मारग निरभै सदा। अनि मग षोचौ षाइ॥ छं०॥ १८६॥

कवि वचन।

को मैलौ पट ऊजलौ। को उज्जल पट मैल॥
कौ भूल्यौ मारग लगै। को भूल्यौ ही गैल॥ छं०॥ १८७॥

मुनि वचन।

मन मैलौ मैलौ वहै। मन उज्जल सु पवित्त॥
हरि विमुषे भूले फिरै। भूलि न हरि जिन चित्त॥ छं०॥ १८८॥

कवि वचन।

भुगति मुगति किन निकट है। कातें दूरि दिषाइ॥
किन आवध जग जिति यहि। किन हारत जगजाइ॥छं०॥१८९॥

मुनि वचन।

समदरसी तें निकट है। भुगति मुगति भरपूर।
विषम दरस वा रन तें। सदा सरवदा दूरि॥ छं०॥ १९०॥
पर योमिनि परसै नहीं। ते जीते जग बीच॥
परतिय तक्कत रैन दिन। ते हारे जग नीच॥ छं०॥ १९१॥

सुजस बान जग में जिये। कुजसी मृतक समान ॥
दाता जागै रैन दिन। सोवै सूम अजान ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवि बचन।

को बैरागी ग्रेहही। को रागी बनवास ॥
को लूटै परलच्छि कों। काते लच्छि उदास ॥ छं० ॥ १९३ ॥

मुनि बचन।

निरलोभी वैराग ग्रह। लोभी वनहूं राग।
पटुभाषी परबत भषै। कटुभाषी तिय भाग ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कवि वचन।

किहि मुनि कोन अराधि है। विनही औसर देषि ॥
तुम बचननि सुष पाइयै। तुम दरसन सु विसेष ॥ छं० ॥ १९५ ॥

मुनि वचन।

सूप कार कवि बैद बरु। मरमी असिधर होइ ॥
बंदी जन धनवंत जड़। ए आराधी लोइ ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कविचंद और सब साथियों सहित राजा का डेरों को वापिस चलना।

इतनी सीष रिषीस की। सुनि पग बंदे चंद ॥
सम नरिंद असवार ह्वै। चलै दलै आनंद ॥ छं० ॥ १९७ ॥

सेन सुरन सहनाइ के। नहि निसान धुंकार ॥
चोधिन चमक चिराक की। नह बंदी हुंकार ॥ छं० ॥ १९८ ॥

विन वेरां डेरां गयौ। भूपति भयौ उदास ॥
मरन हान सें मग्गई। सुनिय सकल रनिवास ॥ छं० ॥ १९९ ॥

डेरां लगै डरावना। रह्यौ कटक सव मौन ॥
नर नारी नारी छतें। मनो प्रान किय गोन ॥ छं० ॥ २०० ॥

उक्त श्राप का संवाद पाकर रानी संयोगिता का दुःख करना।

चित्त चिंति संयोगिता । कौन कियौ मैं पाप ॥
भोग समें संयोग में । कंतह भयौ सराप ॥ छं० ॥ २०१ ॥

कवित्त ॥ कै मैं कट्टी [1]जाय । गाय चरती हक्कारी ॥
कै कांसौ पग छियौ । धूम मैं नागिनि मारी ॥
कै न्योति विप्र परहर्‍यौ । कर्‍यौ नन बैन सासु कौ ॥
तेल लोंन वर हेम । चोर घर धर्‍यौ कासु को ॥
कीनी न कानि कै जेठ की । कै बोलत ज्वाब न दयौ ॥
बुल्ल्यौ सराप रिषि कंत कौं । सती हारु कें हर लयौ ॥
छं० ॥ २०२ ॥

डेरों से चल कर दिल्ली आना और ब्राह्मण को दान देकर महलों में प्रवेश करना ।

दूहा ॥ दान दयौ रनिवास नें । अरु दिय दान नरेस ॥
अयन उभय में नयन डर । कियनिय महल प्रवेस ॥छं०॥२०३॥
गैर महल राजन भयौ । सहित संजोइय वाम ॥
पोरि न रष्यो पोरिया । जे इतबारी धाम ॥छं०॥ २०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेट चष श्राप नाम त्रिसठवौं प्रस्ताव संपूर्णम् ॥६३॥



(१) मो.-नाय पा माय ।

धीरपुंडीरनाम प्रस्ताव ॥

[चौसठवां समय ।]

संयोगिता व्याह के ढाई वर्ष बाद राजा पृथ्वीराज का अपनी सामंत मंडली के बल की परीक्षा करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सुष विलास संजोगि सम । विलसत नव नव नित्त ॥
इक दिन मन में उप्पनी । ऐ ऐ वित्त कवित्त ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास तीस दिन पंच । महिल मंझोज राजबर ॥
जुद्ध घटै सामंत । बैर सु विहीन सँबर पति ॥
सुभर सूर सामंत । उरह भुज पनबर जान्यो ॥
तीन मास तिय दिननि । तिनहि संसार सु मानौ ॥
तन तुंग तेक्ष वावन्न मन । तन तिहित्त उच्चौ न गिन ॥
वैसास बिना आमंत घटि । हुं जानत आभंग इन ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज से भागकर आने पर पछतावा करना ।

दूहा ॥ जुध अनेक सामंत करि । नहुं भाग्गौ कहुं ठौर ॥
हम भज्जन कनवज्ज मति । अब दिष्षौ भर और ॥ छं० ॥ ३ ॥
बबही पिट्ठि न से दई । अब लग्गी इह पौरि ॥
करौं परीछा सूर भर । जित्तौ असुर बहोरि ॥ छं० ॥ ४ ॥

बलिभद्रराय का राजा से कहना कि सामंतों की परीक्षा के लिये जैतखंभ बनवाया जाय ।

कवित्त ॥ तब कहै राव बलिभद्र । सत्त सामंत अभंगम ॥
इन बल घटै न राज । मंत घट्टै वर आगम ॥

एक सुबर सुर अंत। तीर बाहै बल मुक्कै।
पंष सबद संभरै। मद्द गजराजह चुक्कै॥
सामंत संगि प्रथिराज सुनि। जैत षंभ बर फोरियै॥
पारष्षि देषि चल वीर न्टप। औय संदेह न जोरियै॥छं०॥५॥

निगमबोध (तीर्थ) स्थान पर जैतखंभ का बनवाया जाना निश्चय होना।

दूहा॥ सुनिय मंच प्रथिराज बर। मनि परधान सुमान॥
जैत षंभ मंडन सु मति। निगम बोध बर थान॥ छं०॥ ६॥

मुरिल्ल॥ जिन दिन बल सामंत सु घट्टै। जानि मन्त्रि प्रथिराज सु यट्टै॥
बाल टद्ध जोबन बलकाजं। जैत षंभ चिंत्यौ प्रथिराजं॥ छं०॥७॥

श्रावण मास वर्णन।

कवित्त॥ श्रावन भावन भवन। रवन रवनी मिलि राजहि॥
सविता जेम समुद्द। धरनि धारा हर साजहि॥
पच्छिम पवन प्रसारि। धार जल हर धर हरयौ॥
षाल नाल भरि ताल। भरत जलनिधि जल भरयौ॥
परि मीर सोर उठि चोर जिय। जीवन जाचक औल गन॥
नर नारि चतुर वर चित्त कों। हरियालो सावन हरन॥छं०॥८॥

नवदुर्गा में सामंतों के पूजा पाठ और उनके उत्साह का वर्णन।

ग्यारह से बावना। मास आसोज विपष्षिय॥
नव दुग्गें नव दीय। नवल सामंत न रष्षिय॥
नव सत्त नव दीह। महिष जोगिनि झिल्लारहि॥
हवन मंच दुज पढहि। पूजि दुग्गा जग्गारहि॥
उच्छह उतंग तिहि राइ पर। जुरन तेग बंधहि न्टपति॥
संपदा चिंति चहुआन की। प्रथीराज तेजह तपति॥छं०॥ ९॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को जैत खंभ के निर्माण और अपनी आज्ञा की सूचना देना।

तट्टह अट्टह अट्ठ। अठै अगदीह सु मंडिय ॥
अट्ठ अट्ट प्रमान। सहर सिंगारि सिकंडिय ॥
आहुट्टं सै दून। राज अग्या भर मंडिय ॥
जैत षंभ जैतान। जोर जुड्डा जो षंडिय ॥
आनंद तेज अग्या सु भर। भूपर भूप भुअप्पतिय ॥
मानिक्क राइ कुल उद्धरन। प्रथीराज छत्रहपतिय ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज का जैत खंभ बनवाए जाने की आज्ञा देना।

एक समैं प्रथिराज। वत्त जंपिय भर सारनि ॥
अष्ट धात करि षंभ। सिंगि कट्टै बल पारन ॥
तिहि समान नहि बीर। विजय दसमी इह किज्जै ॥
अप्प अप्प बल तोकि। इष्टनिय जाप जपिज्जै ॥
सुनि सूर सजल आनंद मन। पुनित महल राजन उठ्यौ ॥
सुनि धरि जाइ जालंध दर। प्रसन करन कारन हठ्यौ ॥
छं० ॥ ११ ॥

चंद पुंडीर के पुत्र धीर पुंडीर का जालंधरी देवी की उपासना करना।

सगति भोग संसार। सगति कर जोग जुगति जग ॥
सगति सुगति बर दैन। सगति आधार नाग नग ॥
सगति महा सुख करन। सगति बिन सुष्य न पावै ॥
सगति राज निज काज। सगति नर सुर जय लावै ॥
इह जानि धीर मन ध्यान धरि। सगति उपास विचार वर ॥
आनंद कंद न्रप चंद सुअ। धीर जाप लीनौ सुधर ॥ छं०॥१२॥

सुभ असोज रवि मूल। सिद्धि जोगह सुप कारिय ॥
दुर्ग्ग साहि थापनो। धीर आराधि विचारिय ॥

धन सुलगन मुष गरुअ । धीर जालपा उपासै ॥
ग्रह सुथान मति मान । कनक दुति षोड़स भासै ॥
एकंग मंत सद्दै सुमन । भूमि सयन सुद्रह [1]व्रसन ॥
गो दुद्ध हार बर इक्कलै । व्रत उचार बोलन रसन ॥छं०॥१३॥

पूजन विधि, देवी का प्रसन्न होना और धीर पुंडीर का वर मांगना ।

पद्धरी ॥ सहि षाम छाय वासं सुसुभ्र । बासना उग्र कर पूर उभ्र ॥
अन्यन प्रवेस तिन ग्रह पवित्त । कारज्ज कज्ज हैं आइ मित्त ॥
॥ छं० ॥ १४ ॥

आसनह हेम त्रयकोन कुंड । कर सेत माल जपि उंच तुंड ॥
परिधान वस्त्र सारत्त रज्जि । अंबरह सेत उप्पर सु सज्जि ॥
छं० ॥ १५ ॥

आसन्न एज अग्गैं अनूप । स रजित तथ्य जालंध रूप ॥
तस अग्ग संग सेरह बतीस । धज धोम षग्ग अग्गै सु कीस ॥
छं० ॥ १६ ॥

सुध्यान जाप दस सहस होम । धरि ध्यान होम जज्जिय सु कोम ॥
धरि हींय ध्यान जालंध देवि । मन वच्च क्रम्म चिंतिय सु तेव ॥
छं० ॥ १७ ॥

त्रय पष्प वीच भय निसा जाम । आदिष्ट देवि बुल्लिय सु ताम ॥
मँगि मंगि मंगि नर बीर सत्ति । इछंत काज जो मुभ्भ मत्ति ॥
छं० ॥ १८ ॥

बुल्ल्यौ सु बीर जालंध माइ । सु प्रसन्न देवि जो मुभ्भ भाइ ॥
वर एक सुद्ध अप्पहु सु अम्ह । फुट्टैव संग मो जैत षंभ ॥
छं० ॥ १९ ॥

जंपै सु देवि रे धीर धीर । फुट्टैव जु षंभ मो सत्ति वीर ॥
राजन सु तोहि अप्पै पसाव । ग्रामह सु यान आदर सु भाव ॥
छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ.-सरन ।

आये सु जात मुझझह सु रंभ । फुट्टै सु संग तो जैत षंभ ॥
चिंतै सु चिंत मुझ जहां चित्त । जहं जहां संकट तो पास सत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

जंपै सु धीर जालंध मात । फुट्टै सु षंभ आंउ सु जात ॥
फुट्टै जु संग मो सकति तिष्प । भुंजों सु अन्न तो दरस दिष्षि॥
छं०.॥ २२ ॥

बरदान दियौ देवी सु धीर । नीसान प्रान बज्जै सु भीर ॥
संमरें धीर देवी सबद्द । छुट्टै सु दुष्प नर वै मरद्द ॥ छं०॥ २३ ॥

देवी का बरदान ।

कवित्त ॥ हेम दंडि सिर मंडि । मंच द्रिग आन मिलाइय ॥
धूप दीप साषा सु गंध । जंच अरु ध्यान जु पाइय ॥
नारिकेल फल सुफल । महिष पारंभ पंच बिय ॥
बिनै बिडि सारंत । करिय पूजा अनंद जिय ॥
बर धीर मिली मग्गी सुबर । प्रसन उमा परतष्प हुअ ॥
चर चित्त बीच करहि न कछू । षंभ फोरि जैपत्त तुअ॥छं०॥२४॥

धीर पुंडीर का कुमारी कुमारियों को भोजन करा कर उपारन करना ।

दूहा ॥ कुम्मारी कुम्मार सहु । बोलि सु भोजन दीन ॥
अनँत विप्र भोजन विविध । धीर सु पारन कीन ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आनंद सु धीर किय । भयौ स्तूर रस भास ॥
अनत विप्र भुंजे भगति । दिय सबद्द पिन तास ॥ छं० ॥ २६ ॥

जैतखंभ का वर्णन और सामंतों का नित्य प्रति अभ्यास करना ।

कवित्त ॥ जैत षंभ मंडयौ । स्वामि सामंत परष्पन ॥
अष्ट धात कर अष्ट । रेष गज अष्ट सु रष्पन ॥

अष्ट मुष्टि चा रूष्टि। वाहि कहुँ जु संगि वर ॥
इष्ट देव सत सील। संच आभंग रंग भर ॥
तारून्न तुंग सह सत्त भर। इस अभ्यास दिन प्रति करहि ॥
इक मुट्ठि दु मुट्ठि ति मुट्ठि लगि। किहुन सार दुअ अंग सरहि
छं० ॥ २७ ॥

धीर का जैतखंभ भेदने के लिये जाना।

चकित चित्त चहुआन। सूर सामंत न सुझ्झहि ॥
नर पष्पर भर भिरन। पंभ सों पिष्कि पिष्कि झुझ्झहि ॥
तीन पष्य दिन पंच। वीर नौसानन वज्जिय ॥
सबर बैर सुरतान। जाहि संमुह करि सज्जिय ॥
पुंडीरराय चंदह तनौ। धीर नांउ वै अंकुरिय ॥
रन सिंह कंध थप्परि तरकि। हेम तुल्य लिन्नौ तुरिय ॥छं०॥२८॥

धीर पुंडीर की अवस्था और बल का वर्णन।

नव बिय बरष प्रधान। तुंग लच्छिन उतंग तन ॥
चल्यौ सिंह सामंत। वीर पुंडीर धीर घन ॥
ताजी तुंग उतंग। बैस बीय पष अढारै ॥
मीरन रत्त सु गत्त। पियै जल अभ्भ क चारै ॥
बर चंद जंपि चंदह तनौ। विभर मेछ बत्र अंकुरिय ॥
तन पष्षि परष्षन न्रिपति बल। चढि तुरंग धंधरि परिय ॥
छं० ॥ २९ ॥

अश्व वर्णन।

विराज ॥ लियौ सेत ताजी, सुधा जीति साजी। तुला हेम तोलं, महालीन मोलं
छं० ॥ ३० ॥

अनूपं ऐराकी, सहै ना सुधाकी। दुअं गात उच्चं, सरूप सकुच्चं
छं० ॥ ३१ ॥

घड़ै पाल नालं, तगी लंघि तालं। भरै दान भारी, कहां पंषि कारी
छं० ॥ ३२ ॥

धीर का खंभ के पास पहुंचना ।

दूहा ॥ ध्यान उमा करि सुमन धरि । धीर बीर मन लाइ ॥
जैत षंभ फोरन सु बर । भौ जालंधर आइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य जैतखंभ पर जाना और धीर का आना ।

कवित्त ॥ विहँसि चल्यौ चहुआन । सूर सह सेन बुलायौ ॥
जैत षंभ रोपयौ । लोह मन तीस मिलायौ ॥
भयौ राइ आयेस । कुंअर सब विंझौ षेलहु ॥
सेंथि तीर तरवार । संग सरवर कर मेलहु ॥
चिहुटै न चोट दुअ अंगुरिय । उहित संग मध्यै धरिय ॥
अप्पी सुराइ तिहिं अप्प करि । भनहु सूर सह अहि उहिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ दिवस अट्ठ पुज्जिय सकति । नवल नवम्मिय दीह ॥
सिलह सुरंग सु मंडि किय । चल्यौ तुरंगम सींह ॥ छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ चल्यौ सिंह सामंत पुंडीर भारी । धरै कंध सोहै सकत्ती करारी ॥
जुरै जूह कालंग्रसै सार सारै । षिझै षंभ तेजी दुहूं अंग डारै ॥
छं० ॥ ३६ ॥

रुरी भेरि भंकार नीसान घाई । उठी वेद विप्रान विप्रान झाई ॥
तपै तेज वाही चिभागी ततारी । उनें धात में धात कढ्ढी निनारी ॥
छं० ॥ ३७ ॥

मिटै रेन रायां दिषो अंग चंडी । तुला सीर दंडी मनो षर्म मंठी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का आज्ञा देना और धीर का जैत खंभ भेदना ।

कवित्त ॥ हो रावत मंडली । कोरि मच्छर मन मंडहु ॥
तो तुरंग तन पिस्यौ । संग वाहिर गहि कढ्ढहु ॥

बंस कुली छत्तीस। करहु बस जावल भावै ॥
संगि न टारी टरै। जंतु पिन अद्ध डुलावै ॥
अप्पौ तुरंग चहुआन तब। बिहसि धीर पुंडीर लिय ॥
उप्परिय जैत षंभह सहित। तब पसाव प्रथिराज किय ॥
छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का धीर को सिरोपाव जागीर आदि देना।

भुजंगी ॥ कियौ राय परसाद पुंडीर जोटं। मही मंसु कामं जुहिं सारकोटं॥
दिये पंच हज्जार ग्रामं सु थानं। झंडा माहि वैरष्प पीलं निसानं॥
छं० ॥ ४० ॥

रष्पतं बष्पतं तुरंतं उचायौ। थप्यौ सब्ब सामंत पुंडीर जायौ ॥
तबै बोल बोले सु उच्चै अचाए। कहै राय चहुआन सों बोल चाए॥
छं० ॥ ४१ ॥

अबै मरन कै करन कै करहिं साई। बाधन कै गहन कै सुरतान घाई॥
छं० ॥ ४२ ॥

राजा का धीर पर अपनी पैज प्रगट करना।

कवित्त ॥ च्यारि वचन चहुआन। दिए बर धीर अचाये ॥
मरन काम चहुआन। करन अरि हरन बताये ॥
गहे धीर सुरतान। हथ्थ अप्पन चहुआनं ॥
जोध कोस धोषंत। करै सु बिह्नान प्रमानं ॥
जो धीर राइ इम उच्चरै। काम साम साक्रत करै ॥
प्रथिराज काय भंजन भिरन। धर भज्जत सम्हो मरै ॥ छं०॥४३॥

धीर का मस्तक नवा कर राजाज्ञा को स्वीकार करना।

आगें धीर सधीर। हथ्थ चहुआन मथ्थ दिय ॥
आगें सूर सद्दर। ताप उतराध तेज लिय ॥
आगें बर कैलास। ग्रहै पीनाक सु साजै ॥
आगें कंचन तेज। धरै नग तेज विराजै ॥

आगें सु धीर पुंडीर बर। अरू स्वामि हथ्थ वर मध्थ दिय ॥
सामंत जैत चामंड बर। मित्र हथ्थ दिस सयन किय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

चामंडराय का कहना कि धीर क्यों लड़कपन में आकर व्यर्थ की प्रतिज्ञा करते हो, दोनों पक्ष का बल तो तौलो।

हंसि बोले चामंड। धीर सुनि बात हमारी ॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है भारी ॥
घर बैठे अप्पनै। बोल तुम बहु बोलहु ॥
सेर भरन कहौ बथ्थ। सिंघ सम कुंजर तोलहु ॥
रे सुनहि सूर पुंडीर कुल। एतो झुट्ठ न तुम कहहु ॥
जिहि सात फेर हस्ती फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहु ॥
छं० ॥ ४५ ॥

दूहा ॥ घर सूरा सठ पंडिया। गाम गमारां गोठि ॥
पंच मझ्झ बोलत बयन। धूज बिछुट्टिय होठ ॥ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

गाथा ॥ अलसायं जे न सा पुरिषेण। जे अप्परास मुच्चरिया ॥
ते पथ्थर टंकि उकीरी अब्ब। कबही नह अनहा हुंती ॥
छं० ॥ ४७ ॥

रास हरडियं कु नरिंद भासियं। इयर लोय पड़ि वन्नं ॥
पुब्ब उठानय गुरुअं। पछालहु अंचलहु अंचं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सुर सिरि मूलं बड़ बीज पल्लवं। सुअन लोइ पड़ि वन्नं ॥
पुब्ब ठानय लहुअं। पछा गरुअंच गरुअंचं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धीर का कहना कि मैंने जो कहा है वही करूंगा।

कवित्त ॥ हौं पुंडीर नरेस। हौं सु झुझार सबर वर ॥
हौं सुत चंदह तनौ। ठिल्लि दल देहुं चिविध घर ॥
मोहि इष्ट बल सकति। मोहि बानै वर सज्जित ॥
मो सम अवर न वीर। माहि उप्पर दल गज्जित ॥

हौं सुनौ सच्च, दाहन दहन। हौं सुति नहिं तिन बर गनौ॥
बर बीर धीर इम उच्चरै। गहुं साहिब हमतौ हनौ॥छं०॥५०॥

धीर की बीर प्रतिज्ञा की चरचा का सर्वत्र फैल जाना।

दूहा॥ बढि अवाज ढिल्लिय नगर। धीर ग्रहन कह्यौ साहि॥
हँसिहि सूर सामंत ए। कुटिल दिष्ट मुष चाहि॥ छं०॥ ५१॥

एक महीने पांच दिन में यह समाचार उडता हुआ शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा।

कवित्त॥ मास एक दिन पंच। बत्त दिसि विदिसि न हुअं॥
चंद पुत्त कौ चाव। पेषि प्रगट्यौ जस धूअं॥
दिसि दष्यन पुब्बाह। रहस उत्तर पच्छाहं॥
गल्ह वान गल्हा करंत। चिहु चक्क सवाहं॥
अदभुत्त बत्त संसार सुनि। पुंडी राइ हरट्टिया॥
गज्जनै साहि साहाब दर। मुष मुष किंत्ति प्रगट्टिया॥ छं०॥ ५२॥

मंगि दोय बर मात। राज प्रथिराज महाभर॥
जैत षंभ जित्तनह। साहि बंधन आनन धर॥
तब तुट्टिय चवसट्ठि। दियौ बल षंभह फोड़न॥
अरु जु साहि बंधनह। ताहि बर बंक पधीरन॥
इह कहत मात दिन्नौ सु बच। सुनत साह अचरिज्ज हुअ॥
पिष्पह सु बीर बल कारनै। जैत षंभ आरंभ किय॥छं०॥५३॥

दूहा॥ बज्या नाम पुंडीर तुअ। लज्जा दान सु षग्ग॥
नित्त निहाई बत्तरी। किंत्ति दुहाई मग्ग॥ छं४॥ ५४॥

जैत प्रमार और चामंडराय के मन में धीर की ओर से डर पैदा होना।

पद्धरी॥ दुहुं मग्ग नाम पुंडीर धीर। नीसान प्रात बज्जंत धीर॥
पामार जैत चावंड राय। तिष्ठान राग लग्गे सि घाय॥छं०॥५५॥

कल मली चित्त बहु भंति आइ ।*　　*　　*
दीवान मान आदर अदब्ब । षिन षिन सुताय लग्गै सु गब्ब ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बलिभद्र वीर जामानि जद्द । षीचीय राव षिभ्भि कहिय सद्द ॥
बग्गरिय राव देवाधि देव । आजानबाह बोलंत मेव ॥
छं० ॥ ५७ ॥

रावन्न राम गुज्जरी तेह । लौहोन बत्त पुंडीर छेह ॥
उपगार चंद चिंत्यौ सु तभ्भ । रष्ष्यौ पूर चालुक्क मभ्भ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

तापंत राज सज्जी न बज्जि । फट्टंत तोन तम कवन कज्ज ॥
घटि बटित और गावार रंग । हर गाम धाम देसा दुरंग ॥
छं० ॥ ५९ ॥

ता मुनिय सत्त उद्धंत श्रित्त । जगि जलनि जानि सिंच्यौ सु घ्रत्त ॥
गांभी गमार पुंडीर सूर । तिहि जाइ तुट्टि सुरतान पूर ॥
छं० ॥ ६० ॥

दादुरति कोट जिहि भार सद्द । पुज्जै न कोइ कोकिलति बद्द ॥
आचरन सिंध जंबुक कुलाइ । भज्जैत प्रात मिलि सुगह ताय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

बंबर विरद्द बामा सु पानि । बंधे सु कोन वर सूर तान ॥
उद्धरे वीर चामंड राय । जिन वीय बंस सामंत पाइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

हम लज्ज सूर सामंत भार । प्रथिराज राज बल उद्ध सार ॥
अपराध बंध धरि धात पंभ । जानै न जुद्ध सुरतान गिंभ ॥
छं० ॥ ६३ ॥

प्रथिराज ताहि अप्पै सुलक्क । हिंसार कोट पट्टन पलक्कि ॥
गज बाज वीर बैरष्य सेत । नीमान मेघ रन पील नेत ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरजै न कोन सामंत राइ । इहि मुष्य अप्प रहनो न जाइ ॥

सुभ्‌भ्‌भौं न काम कोई प्रमान। चहुआन पचाऱ्यौ सकट स्वान ॥
छं० ॥ ६५ ॥

अरदास कायस्थ का शहाबुद्दीन को धीर की प्रतिज्ञा का सारा हाल लिखकर सूचना देना कि धीर सपरिवार जालंधरी देवी की पूजा करने जायगा।

कवित्त ॥ लिखि अरदास जुगत्ति। जैत सुरतान सुपट्टिय॥
कोतूहल गूजर गमार। मुखही मुख ठट्टिय ॥
नाना ही गोचर गियान। पांवार पुंडीरां ॥
राज छज्जि रवि देउ। सूह सज्जल मम्मीरां ॥
मभ्भ्‌भांह गुज्ज अंतर कियौ। बोलां हीरा बत्तियां ॥
सांइनौ संग बंछै मरन। सोहै साहस छत्तियां ॥ छं० ॥ ६६ ॥

बचनिका ॥ बज मांम हमंद ईन। सुलतान साहाब दीन ॥
तुरकमां ताज। गज्जने वीर बाज ॥
अरदास जैत काज। लिखी बंदगी साज ॥
तिन उनह कौ गुनाह। डिभूरू बिरद बाह ॥
बहुत कुल षंचना। देवी दिवाना ॥
दरवार हिंदवाना। गज्जने साहिपति साहिपनाह ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ इति अरदास लष दई। जैत गोरी सुबिहानं ॥
ग्रब्ब गमार पुंडीरी। सीस लग्गी असमानं ॥
अवसि मास आसोज। दैव अष्टमि गुरवारं।
पूजि मिसह जालंधि। संग सब्बै परिवारं ॥
इह घात साहि सुबिहान कों। नन्दै सुप बढ्ढिय कही ॥
बरजंक अचानक रच्चि बल। तबहि साह से सुष गही ॥छं०॥६८॥

आश्विन की नौ दुर्गा में धीर का देवी पूजने जाना।

गरजि मेघ निंबरिय। सरद सरवरिय अहन्निय॥
जल थल न्निम्मल निज। अकास वह वास अवन्निय॥

हंस बंस सारस सबद्द । कंकेलि कुकंदे ॥
सलित सरोवर मन । म्रजाद अमृत कर चंदे ॥
रति नइय नौमि जद्दह सुदिय । जल जलद्द पूजन बिहंसि ॥
सिद्धा न सिद्ध करि चंद सुभ्र । अंबह रिपु पारस परसि ॥
छं० ॥ ६९ ॥

धीर का ब्रत से पैदल चलना ।

दूहा ॥ सूर तेज अति सरद कौ । आगम चढ़े बिराज ॥
जालंधर वर परसनें । बोल पुबंतर काज ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ चल्ल्यौ लै निज भ्रत्त । जात जालप्प जलप्पिय ॥
पाय चलत उविहान । पान भोनह तजि तप्पिय ॥
पीर हार इक बार । भूमि संथाह सधारिय ॥
मोंन धारि जप सार । धूप दीपह पुज्जारिय ॥
सामंत असंतन जानि कै । सकै न दुष टारन दइय ॥
इह दुष्ट कष्ट निज सेव कहुं । जानि जननि प्रग्गट भइय ॥छं०॥७१॥

जालंधरी देवी का धीर को स्वप्न में सूचना देना कि शाह के भेजे हुए गुप्त दूत तुझे पकड़ने आरहे हैं।

निसा मद्धि मातंग । बोल समधीर सु वत्तिय ॥
चोंडराय पामार । साहि संमुह लिषि पत्तिय ॥
अट्ठ सहस गप्परी । धीर पकरन तो पठ्ठिय ॥
गुपत तेग गहि गोप । भेष कप्पर करि लठ्ठिय ॥
पय पय सु तुभ्भ संकट हरों । बोल बोल सानिध करों ॥
इम कहत देवि अप्रछन्न हो । तो प्रयज धा सम धरों ॥छं०॥७२॥

सप्तमी शुक्रवार को धीर का जलंधरी देवी के स्थान पर पहुंच कर पूजन और दान करना ।

दिन सुक्कर सत्तमिय । जाय जालंधर पत्तिय ॥
दान न्हान परमान । थान थानह करि अत्तिय ॥

तहं हिंदू वर मुसलमान । लष्प दिग्र सुआवहि ॥
जवनिक कुल छत्री । कुलाल षोड़स मिलि धावहि ॥
जानै न कोइ नर भर चपति । प्रवत लग्गि पारस पर्‌यौ ॥
कोटन सु कोट भंडार भरि । घन सु द्रव्य हाहुलि भर्‌यौ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

जैत प्रमार और हाडा हम्मीर की शाह प्रति सूचना ।

दूहा ॥ तब लिष्यौ कपट कग्गर करह । जैत पमार हमीर ॥
बोल्यौ बोल अचग्गरौ । तिन पकरायौ धीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

गहिय पानि कहि साहि इम । कोइ क्षर मीर मलिक्क ॥
धीरहि गहि आनै निजरि । साहब लह सो सक्क ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह के धीर के पकड़ लाने का बीडा रखना और गष्षर लोगों का बीड़ा उठाना ।

कवित्त ॥ दिए पान सुरतान । लिए आरिष्य हथ्थ धरि ॥
कहै साहि साहाब । जियत ल्यावहु सु बंधि कर ॥
अट्ठ सहस गष्परी । नेग गहि चढ़ तुरत्तह ॥
संक न मानौ जाइ । धीर बैठो बिन मत्तह ॥
संदेस कहो पुंडीर सों । चलि रावत नहिं संक जरि ॥
तब बेढलेउ चिहु पासु तें । लै आवहु बेसास करि ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उक्त गष्षरों का योगी के भेष में जालंधरी देवी के स्थान पर धीर के पास जाना ।

तक्यो साहि गज्जनै । धीर जालंधर जत्तह ॥
सहस अट्ठ गष्परिय । भेष करि कप्पर रत्तह ॥
गहि आनौ छल बल । पुंडीर राइ चंद कुम्मारह ॥
कर कगार लिखदिये । भेद राजैत पमारह ॥

तारन्न तुंग साधक सकल्ल । मनों मोन मूरत रचिय ॥
गुन गुपत हथ्थ गुपती धरिय । भुगति मंगि जोगिय हँसिय ॥
छं० ॥ ७७ ॥

छद्म वेषधारी योगियों का धीर से भिक्षा मांगना ।

दूहा ॥ धीर निकट ठाढे भये । कपट हेत महरूप ॥
जोरि हथ्थ तिन विन्नयो । भुगति देहि हम भूप ॥ छं० ७८ ॥

गष्षर लोगों का धीर को घेर का गजनी लेचलना ।

कवित्त ॥ सिंध विहथ्थें आव । नाव नगलि उत्तरिय ॥
आनि तथ्थ गजराज । ढाल मझ्झें बैसारिय ॥
अट्ठ सहस गष्परी । अट्ट दिसि सेवा सारत ॥
इम चावे भर धीर । रथ्थ बैठो जनु पारथ ॥
प्रजलोक देह देहह दुनी । दिष्षन भर धर उंमही ॥
जानै कि इन्द्र सुख विष्पनह । उलटि मोर नग उंमही ॥
छं० ॥ ७९ ॥

धीर का गजनी पहुंचना और नगर निवासियों का कौतुक से उसे देखना ।

पद्धरी ॥ आरोहि गज्ज पुंडीर धीर । लै चलै घेरि गष्षर गहीर ॥
गष्परी सहस अट्टह प्रमान । नाषिच विंटि सविता समान ॥
छं० ॥ ८० ॥

सुक्क विवाह चिन्हाव धाय । उत्तर्यो सिंध जोजन सवाय ॥
सब लोक सिंध मंडल्ल जु रेस । दिष्यनह धीर वीरत बरेस ॥
छं० ॥ ८१ ॥

द्वादसह भान सुप प्रगटि जोति । निय उंच यान वहु प्रात होत ॥
कै करै माहि हनि है कंधानि । टै है सु प्रगट कैं कहँ दान ॥
छं० ॥ ८२ ॥

इन भंति सहर गज्जन सपत्त। बंदियन विरद आसिष्प दत्त॥
संकरह हेम तोलह चिसत्त। निय पाय कढ़ि किय धीर दत्त॥
छं०॥ ८३॥

जसु दान डक्कि गज्जन सु देस। इम पत्त द्वार असुरह नरेस॥
उम्मरा मीर सब मिले आय। दिष्पनह धीर गैजह पराइ॥
छं०॥ ८४॥

जालीन मध्य देषै हुरम्म। दिपि रूप धीर सुक्कै सरम्म॥
पुंडीर आइ दरबार चाहि। गज्जनी लोक कौतिग नमाइ॥
छं०॥ ८५॥

राजद्वार पर दर्शकों की भारी भीड़ होना और गष्षर सरदार का शाह से धीर की गिरफ्तारी का हाल वर्णन करना।

कवित्त॥ गज्जन वासी लोक। केक पर दिष्पन आइय॥
चंद पुत्त मुष चंद। कुंद सष जानि सधाइय॥
मीर मलिक उंमरा। भीर मत्ती दरबारह॥
ठाम न लब्भै कोइ। ताहि पिष्पन भर भारह॥
अचरिज्ज भयौ सब सहर में। जब आयौ दरबार क्रम॥
पुच्छै जु साहि जब धीर सो। बै विरह लिन्ना विषम॥छं०॥८६॥

भुगति देन कहि भूप। इच्छ कप्परी जु तुम कहु॥
निसा आदि एक लौ। पूजि मूरति सब तुम कहु॥
बोलि मंगि सहु सिद्ध। फेरि दीनौ हुंकारौ॥
ठाम ठाम संग्रहिय। फेरि धरियौ धुत्तारौ॥
जो जनवि पंच उग्यौ अरक। तपत सिंधु सिंधि उत्तरिय॥
द्वादसी दिवस द्वादस सकल। साहि धीर इक्कत करिय॥छं०॥८७॥

धीर के पकड़े जाने का समाचार चारों ओर फैलना। धीर के षवास "वैजल" का अधीर होकर अन्न जल छोड़ देना॥

कुंडलिया॥ दह दह कोह दहत्त बिन। फिरि फट्टी पुकार॥
वर पवास लंघन करिय। पानी पन्न अहार॥

पानी पन्न अहार। धीर सुरतान थान गय॥
जाम देव गष्षरह। भइय आवाज साद भय॥
मिलिय पलक दरबार। दुनिम लग्गौ दर सोहं॥
गो सु पुरह गज्जनै। किरिति फट्टी दह कोहं॥ ८८॥

बैजल षवास का स्वप्न देखना।

कवित्त॥ घालि रष्यौ पुंडीर। धीर धीरत्ति न रुष्यं॥
पग पोलंत विहथ्थ। सिद्ध चोवद्दिसि दिष्यं॥
जाम देव गष्षह नरिंद। मंच छल सिर पटि नष्यं॥
तत्तारह पुंडीर। मेछ सिरदार न भष्यं॥
उप्पारि लियौ सुरतान पै। धीर न धीरत्तव डुलं॥
मनि हाम चंद चंदह तनौ। छल बिचारि षग्गन षुलं॥
छं० ॥ ८९॥

गहत धीर षावास। मंत चरननि अरि रुद्धी॥
तीन सहस बिच एक। सीस गुपती आलुद्धी॥
निसा मद्धि चमचमी। रीस झारी तन भग्गौ॥
कूट बज्र भष लुटि। धाय सह परवत लग्गौ॥
सत अद्ध कोस बाहत सुबर। फिरि पच्छौ आइय उकति॥
पावास चंद पुंडीर रषि। प्रात उड्ग्गन तजहि भति॥ छं० ॥ ९०॥

दूहा॥ विषय वास बेजल सुबर। तन सोइ दिषि भय भार॥
दिवि नरिंद लंघन करै। पानी पान अधार॥
छं० ॥ ९१॥

छम सहस्स ढिल्लिय सहर। गहन धीर सुरतान॥
जट्ट सुपन विपरीत तय। बडव बंद्ध कंधान॥ छं० ॥ ९२॥

तत्तारखां का धीर से कहना कि तूने यह क्या प्रतिज्ञा की।

कवित्त॥ मिलि पलक पान पट्टान। साह मभा भरि मंडे॥
तहं सुधीर पुंडीर। आय उत्तर कर छंडे॥
के मदान नादान। धात भजै धष लग्गो॥
जंग रंग चहुआन। हेम हेम घन लग्गो॥

गामी गमार पुंडीर कुल। वाप भलेरा पुत्र वट ॥
सुरतान षान दिट्टान दिट्ट। कित कुरान चिंतै [1]सुचट ॥छं०॥९३॥

शाह का सुपना।

सुनौ षान तत्तार। साह लद्धौ सुपनौ निसि ॥
है गै निधि चतुरंग। चिंति राजस तामस विधि ॥
बर बंधे गजपति नरिंद। बोल बहु उच्चारे ॥
वह वह करि उच्चरिय। षग्ग अरियन सिर झारे ॥
बिपरीत सुपन बानिक हुअ। कर बंधे न्रप वत्त वर ॥
सोचयौ सुपन अहि डिंभरू। वर बंधत छुट्टे वि भर ॥
छं० ॥ ९४ ॥

दर्शकों का बिचारना कि देखें हिन्दू कैदी को शाह क्या सजा देता है।

हरमहार सिंगार। गोष जाली दिसि जट्टे ॥
षलक षान उम्महिय। साहि हिंदू दुअ बद्दे ॥
कोतूहल आलम उदार। दल बद्दल उन्ने ॥
हनै कि छंडै साहि। चढी चिंता चित दूनै ॥
करतार जाहि रष्षै करां। ताहि रोम बट्टै कवन ॥
रहिमान राम बट्टै कछू। ताहि निमष रष्षै कवन ॥ छं०॥९५ ॥

कवि की उक्ति कि मारनेहारे से रखनेवाला बड़ा है।

दूहा ॥ मारै जाहि रमा सु बर। तिनह न रष्षै कोइ ॥
रष्पनहारो राम जिन। मारि न सक्कै कोइ ॥छं० ॥ ९६ ॥

एक आपत्तिग्रस्त हिरन की कथा।

कवित्त ॥ एन एक आरन्य। चरन पारद्धिय दिष्षिय ॥
ता पछ औसर पाई। फांद पारद्धिय षंचिय ॥

(१) ए. को. सुचंड।

दिस दच्छिन कूकरन। करत घुर घुरा सिंह सम ॥
उत्तर दिसा असाध। दंग लग्गौ करार दम ॥
चिहु दिसा रुक्कि आरिष्ट चव। कहां जान पावै हिरन ॥
तिहि वार एण इम उच्चऱ्यौ। मो गुपाल रष्पहु सरन ॥छं०॥९७॥

अनल उट्ठि आघात। अनल उड़ि फंद दहे तिन ॥
तब वलाह वरसंत। बुझ्यौ दावानल सो वन ॥
स्वान होत सनमुष्ष। धये जंबुक लगि पुट्ठं ॥
जात देषि मृगराज। रीस करि पारधि रुट्ठं ॥
तानंत धनुष गुन तुट्टयौ। चल्यौ एन बिन संक मन ॥
करुना निधान रष्षन करहि। ताहि मारि सक्कै कवन॥छं०॥९८॥

दूहा ॥ रष्पन हारो राम जिन करि राषै इहि भांति ॥
वधिक सिचाना बधि रषै। पारापति दंपत्ति ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कबि का कहना कि मरने वाले को कोई बचा नहीं सकता और इस विषय पर जयद्रथ की मृत्यु का प्रमाण।

भुजंगी ॥ नवं दून रष्यं जयं जैतरथ्यं। तहां अप्प अग्गया धरं तंत रथ्यं ।
नवं दून षोहं निषंडी अचीनी। मिले पंड कुरपेत जैजरथ रंनी॥
छं ॥ १०० ॥

करी पैज पारथ्थ जैजरथ बंधं। तिनं रष्पनं जाय जैजरथ सिंधं ॥
कियं अग्गिहारी दछिची छितानं। तियं पुट्ठि चोनं दिसा पूरि वानं॥
छं० ॥ १०१ ॥

भरं भूरि लरना रथं रथ्थ यानं। दरं दूस दुस्सासनं मुष्पि वानं ॥
गजं गाज जल सिंधुता पुट्टि ओपै। क्रतं जाम जुद्धं द्रतं लोक लोपै॥
छं० ॥ १०२ ॥

दिमी दिम्मि वानं समानं सुदेहं। मानों वाल प्रोढ़ा सुनारी सुनेहं ॥
अयं तथ्य मारथ्य देवक्कि पूतं। हनै जुद्ध जैजरथ उडि सीस वित्तं ॥
छं० ॥ १०३ ॥

इते पंषनी साजि जैजध्थ भष्षै । बधै देव कौ ताहि हरि देव रष्षै ॥
इतै वीर विश्वास करि धीर बोल्यौ । पछै पंपनी साथ जैजरथ तोल्यौ ॥
छं० ॥ १०४ ॥

शाह का धीर से कहना कि प्राण का मोह करने वाला क्षत्री सच्चा नहीं है।

दूहा ॥ मिले धीर पुंडीर वर । वर गोरी सुरतान ।
बोलि बीरवर धीर कों । चित सालै चहुआन ॥छं०॥१०५॥

कवित्त ॥ सें पुच्छै सुरतान । अवे तूं चंदह नंदन ॥
तोहि विरद इम कहै । अप्प बर बैर निकंदन ॥
अवसानह संकरै । जीव राबत जो वंचइ ॥
ता जननिय को दोस । मरत षत्री जौ संचइय ॥
इह जीभ हाड बाहिर पिसुन । एतौ झूठ न झंषियै ॥
कहुं धीर लाज कारन कवन । प्रान राषि पति मुक्कियै ॥
छं० ॥ १०६ ॥

धीर का उत्तर देना कि मेरा जीवन अपनी पैज निर्वाह के लिये है।

न में षग्ग संग्रहयौ । न मे सिगिंनि कर मंचिय ॥
नहुं टार्‍यौ टंकुर्‍यौ । पति लग्गत तन संचिय ॥
टर्‍यौ सु हूं जोगिंद्र जानि । धीर धीरं तन गहयौ ॥
चाव दिसि बिंटयौ । षुंदि षुंदहि मन रहयौ ॥
बुल्ल्यौ जु बोल चहुआन सों । सो न बोल छंडै हियौ ॥
गहि साहि हथ्थ अप्पन कह्यौ । ताहि पैल कारन जियौ ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बादशाह बचन।

पत्ति पैज संसही । पैज पति ही सों बंधी ॥
पत्ति सरन पति मरन । सूर पति पति सों संधी ॥

पति रत्तन संसार । गयौ पति हथ्थ न आवै ॥
कोटि बत्त जो करै । पत्ति लच्छी बल गावै ॥
पति गये मरन दीनै नही । सो पति तन किम संग्रहै ॥
आदर सु पत्ति दीजै जगत । ते पति रन संग्रहि रहै ॥छं०॥१०८॥

धीर पुंडीर बचन ।

है पत्ति पत्ति कुपत्ति । सही पति मो धीरह धरि ॥
धरी जु अधरी होंहि । सही पति तेह होइ नरि ॥
इही काज है पत्ति । धीर बोल्यौ परमानं ॥
कंक बंक करि साहि । कह्यौ बंधन चहुआनं ॥
रीस सम संम अच्छिर लिषी । में अरि बंधन साम उर ॥
करतार हथ्थ केती कला । तौ करौं पत्ति संची सु धर ॥छं०॥१०९॥

बादशाह बचन ।

सुनत आप सुरतान । धीर चंदो नहि चुक्कै ॥
जो दरोग पुंडीर । घाहि गोरी गहि मुक्कै ॥
सुइ जुइ संग्राम । षेत पुरसान पिसावहि ॥
ता दिन धार हिस्सार । कोट चंदह तन पावहि ॥
धीर नाम ता दिन लहौ । कहहि काम आपर कहहि ॥
राजान काज पुंडीर न्रप । च्यार दिसा बंध्यौ रहहि ॥छं०॥११०॥

धीर पुंडीर बचन ।

पैज काज पारथ्थ । नाथ दुरजोधन भंज्यौ ॥
पैज काज श्री राम । लंक दसकंधर गंज्यौ ॥
पैज काज श्री कृष्ण । कंस मथुरा महि मार्यौ ॥
पैज काज बलिराय । रूप वामन करि गार्यौ ॥
हुं पैज काज बंधन सहिस । तुम बंधन चप्पे नही ॥
ज्यों तेल्ल नीब वपु तिलछहो । ते साहि इसी वत्तो कही ॥छं०॥१११॥

बादशाह बचन ।

धीर नाम तुहि धरिग । धीर रन होय तो जानौ ॥
भरनि चंड धर संड । नयन दिट्ठ सुलतानौ ॥
नेज अग्र धज अग्र । अग्र वंवरि ढाहानी ॥
अग्र वान कम्मान । पंप विद्धहि दीवानी ॥
जंबूर नारि हथ नारि घन । धन अग्राज फुट्टै अगा ॥
हक्का हहक्क फुट्टै हिया । तव न कोय लग्गै सगा ॥छं०॥११२॥

धीर पुंडीर बचन ।

तं दीठी तिहि बेर । साहि तत्तार न सग्गा ॥
वजि अग्राज जंबूर । छोरि षुरसानी भग्गा ॥
अप्पानी घर वत्त । मत्त ओही तूं जानै ॥
जे दड्ढौ होंहि दूध । फूंकि सों मही असानै ॥
हों धीर धीर पग मंडिहौं । जो तुम परषन पग मंडिहौं ॥
मृगराज हाक ज्यौं मृग्गनिय । यों देषत सत छंडिहौं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

सोई सेर जिहि सेर । भरकि कुंभी कुँभ भंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । गाज अप्पन बल गंजै ॥
सोई सेर जिहि सेर । पुंछ पटकत धर कंपै ॥
सोई सेर जिहि सेर । देव दानव जिय चंपै ॥
सोइ सेर साहि गहिकार करन । अजापुत्त जिम आनिहों ॥
मुष बोल सास जो धीर हिय । तो पकरि लेउं सुरतान हों ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बादशाह बचन ।

फुनि जंपै सुलतान । धीर तैं झूठो बोल्यौ ॥
किन सायर थाहयौ । मेर किन हथ्यह ठेल्यौ ॥
किने सूर संग्रह्यौ । किने सपन धन पायौ ॥
कौन सिंघ सो छुच्छि । षेलि जीवत घर आयौ ॥

सुलतान दीन साहाब सों। एतो झूठत तूं कहहि ॥
जिहि सोत फेर हथ्थी फिरहि। किम सु साहि जीवत गहहि ॥
छं० ॥ ११५ ॥

धीर पुंडीर बचन।

जो विषधर विष अधिक। तौ गरूड़ सौं ग्रब्बस मंडय ॥
जो गल ग्रज्जै सिंघ। तौ कोरि कुंजर बन छंडय ॥
जो घन सघन मिलंत। तौ पवने परचंड निकंदय ॥
जो पसरहि रवि किरन। तौ कुह फट्टय धग बंदय ॥
जो राह चंपि चंदह गहहि। तो का ताराएन रप्पनौ ॥
जद्दिनह साहि चहुआन रन। तद्दिन धीर परष्पनौ ॥
छं० ॥ ११६ ॥

बादशाह बचन।

वे हिंदू के कुफर। बोल भी कुफरे कड्ढै ॥
गांसी गल्ह गमार। रोस अपनी ना छंडै ॥
बंधि लिया बलहीन। मरन को काहे चाहै।
जब उंदर जम ग्रहै। गुरब सों लत्ता वाहै ॥
पैज पटंतर सब सही। जब कछु देपि दिपाइयै ॥
हुं हूं वारंत अप्पन मुषै। रासभ ओपम पाइयै ॥
छं० ॥ ११७ ॥

धीर पुंडीर बचन।

रवि न उगै अथ्थवै। चंद चंदनो ना छंडै ॥
कोड़ करक्कै उढ़। वसुह वासग भरु छंडै ॥
पवन थक्कि थिर रहै। अरु जालधिहि जल पुट्टै ॥
मेर डरै डग मगै। धूअ तुट्टै रवि छुट्टै ॥
तौ ना जियत साहहिं गहौं। जौ न पग्ग पारौं रवरि ॥
तौ बोल धीर धरनी पिसै। दसै न हर अंगह गवरि ॥
छं० ॥ ११८ ॥

बादशाह बचन।

बे हिंदू नादान। साहि पावस पल्लान्यो ॥
है गै घंट निसान। नाग मुक्तिन घर जान्यौ ॥
हम हमीर हलबलै। करे द्रिगपाल दमों दिसि ॥
कमट विमट होय पिट्ठ। डिट्ठ ठढ कोल इला धसि ॥
हाकंत हक्क कंपै भवन। तहां तूं मो सम्हौ भिरै ॥
आदान बंध हिंदू सहर। गलहां करि मिट्ठे चरै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। बात संभरि इक मेरी ॥
तो अग्गें मैं बहुत। गल्ह अष्षी बहुतेरी ॥
बयना बल बंधिया। बयन रहसी संसारा ॥
तबहि हक्क बज्जसी। सब जानसी जहारा ॥
आवद्ध साहि सन्नाह कसि। षग्ग मार मचायहों ॥
गहि साहि आन चहुआन पै। बंदर जेम नचायहों ॥छं०॥१२०॥

बादशाह बचन।

तब गोरी सु विहान। धीर पुचछै सुमत्ति कल ॥
देव द्रष्ट बंधिहै। मंच बंधिहै कि संसल ॥
छलकि प्राण बंधिहै। सपन बंधै सुविहानं ॥
देव केव अवतार। हाम बंधन परमानं ॥
बंधिहै बंधि रसनह सुबल। सच बंधन जो छुट्टि है ॥
को मंच बीर आरिष्ट बल। कै भूत फिरस्ता घुट्टिहै ॥छं०॥१२१॥

धरी पुंडीर बचन।

उदर ताम उच्छरय। जाम वसि परि न बिलारह ॥
मच्छताम तरफरय। जा मनह रुध्य उजारह ॥
गंवर ताम गड्डवय। जा मनह केहरि गज्जय ॥
हिरन फालतां करय। जा मनहि चीतो सज्जय ॥

सुमेर ताम गरु अत्तनह। जब न हनू गह्न करि कटय॥
अस मस समूह दल तब्ब बल। जब न धीर पष्षर चढ़य॥
छं०॥ १२२॥

बादशाह वचन।

रे धीर झुंठ चिंतवत। सेस लभ्भै न अंनि पर॥
दस सत फंन समूह। जीह विय विंव बीय चर॥
मरद जु सुष्प उच्चरै। जु कछु मग्गै भर भीरं॥
तिनं साह कों थाप। डरै अब बंधन धीरं॥
हम कहुं अधर बट्टे वढग। बढिग मीर मीरां करसि॥
जम हथ्थ परै जो छुट्टिहो। तौ सामि बचन करिहौ परसि॥
छं०॥ १२३॥

धीर पुंडीर बचन।

कहै धीर सुलतान। आन जल्लाल साहितौ॥
जब ढाला ढौंचाल। माल उथाल देषिमौ॥
आषाढां डंडूर। तुट्टि तरवर तन पत्तिय॥
उड्डि सेन जल जेम। रेनि घल्लो गल वध्थिय॥
जिहि तेज तुंग लोगहि तरनि। जनु अयास फट्टै किरनि॥
दैवाह द्रुग्ग मत्तह भिरन। जन विसासि हिंदू नरन॥
छं०॥ १२४॥

बादशाह बचन।

ढिल्लिय ढाहि अवास। पकरि चहुआनह दंडौं॥
मोरों मत्त गयंद। सज्जि सब सेन विहंडौं॥
चौरासी मंडली वंधि। अप्पन घर आनौ॥
बैरावत सुनि वात। पैज अप्पन परवानौ॥
सुरतान कहै सारोव दी। पिनक गुसामन महि धरों॥
गढ़ भूमि बंक तौ ढाहि करि। रनवासौ घर घर करौं॥
छं०॥ १२५॥

धीर पुंडीर बचन।

गज्जि लेउं गज्जनौ। सार सुरतान विहंडौं॥
मारों मेछ ससद। टेक मनमहि नहिं छंडौं॥
करों जंग जल्लाल। हाल देषै तुहि अप्पिनि॥
नचहि बीर बेताल। छुद्र पूरों पसु पंपिनि॥
बद्धों जु पहुमि पंजर पलन। बलह अप्प कह मुप कहौं॥
इह सच्च रंच झुट्ठिय नहीं। तौ पति सुपंच मझझह लहौं॥
छं०॥ १२६॥

बादशाह बचन।

गर जंजीर संकरिय। पाय बेरी को कट्टइ॥
षनि न गड्डि गड्डियहि। तेज बल सबें निघट्टइ॥
तुहि धीरंतन नाम। पान पीपर लो डुल्लहि॥
लज्जहीन हिन लज्ज। बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि॥
जितौंब काल्हि ढिल्लिय नयर। समर न को संमुह रहय॥
सुरतान कहै साहाब दी। तब पयज्ज किम न्रिब्बहय॥छं०॥१२७॥

धीर पुंडीर बचन।

तोरों तरपि जंजीर। थाट मोरों साहन तुअ॥
मोहि वचन नहिं टरहि। गंग नहिं बहै अटल धुअ॥
कीर भार उच्चरहि। सात सायरनि दिगंतर॥
बदन वयन पिट्टियहि। काल पिष्पियहि निरंतर॥
पुंडीर धीर इम उच्चरय। कौंन झूठ झंषै वयन॥
गहि पातिसाहि राजन अपों। इह चरिच पिष्पों नयन॥
छं०॥ १२८॥

बादशाह बचन।

वे हिंदू नादान। बोल बोलै सिर पष्पै॥
कौं ढंवै असमान। कौंन सायर मुष भष्पै॥
किनें पवन झिल्लिया। किनें गहि बासग नथ्था॥

किन जमरा जित्तिया । किनें कंद्रप्प सुमथ्था ॥
वडा जु बोल मुषन्ह निया । इता बोल सिर पर धरैं ॥
सुलतान कहै पुंडीर सुनि । इह क्यों ही पूरी परै ॥

छं० ॥ १२९ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

घन अंबर ढंकिया । अस्ति सायर सुष पिन्ना ॥
योग पवन झल्लिया । किसन गहि बासग लिन्ना ॥
गोरष जम जित्तिया ।हनू कंद्रप्प न लग्गा ॥
हुवि अग्गै सुलितान । भिड़े कोई दिन भग्गा ॥
चहुआन साहि दिनई समर । सजि चतुरंगम चढ्ढयौ ॥
अथ्थाह नीर ढीमर जिमें । सुमीन तनी परि कढ्ढयौ ॥

छं० ॥ १३० ॥

बादशाह वचन ।

हालैं हसम हमीर । कीट हिंदू दल षुदों ॥
आन साहि जल्लाल । जोर जोगिनिपुर रुद्दों ॥
बेकुसाब आसा गमार । गरुअत्तन गामिय ॥
बोलांही रावत्त । थंभ फुट्टै वहु नामिय ॥
आवत्त घात आसिप्प जिम । ग्रामी ग्रब कट्टों रसें ॥
मति नसै प्रान रष्षै पुरिस । छची छल छंडै हसैं ॥

छं० ॥ १३१ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

छल छंडै सुरतान । वलनु छंडयौ जिंहि बंधौ ॥
जीय रष्यौ पतिसाह । जियत पति साहह संधौ ॥
तन रष्यो तजि टेक । तेग रष्यो पुदि आलन ॥
जद ढंकों करिवार । ढाल लग्गो सुप लालन ।
छल जात घात रष्षै जलै । दूध विनट्टौ दूध न्हिद ।
गज्जनीय साहि गज्जन सनह । धीर पदंपै अरद विद ॥छं० ॥ १३२ ॥

धीर पुंडीर बचन ।

गज्जि लेउं गज्जनी । सार सुरतान विहंडौं ॥
मारौं म्लेछ ससद । टेक मनमहि नहिं छंडौं ॥
करौं जंग जल्लाल । हाल देपे तुहि अप्पिनि ॥
नचहि बीर बेताल । छुद्र पूरौं पसु पंपिनि ॥
बट्ठौं जु पहुसि पंजर पलन । बलह अप्प कह मुष कहौं ॥
इह सख रंच ऋुट्ठिय नहीं । तौ पत्ति सुपंच मभझ्झह लहौं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

बादशाह बचन ।

गर जंजीर संकरिय । पाय बेरी को कट्टइ ॥
षनि न गड्डि गड्डियहि । तेज बल सबें निघट्टइ ॥
तुहि धीरंतन नाम । पान पीपर लो डुल्लहि ॥
लज्जहीन हिन लज्ज । बचन फुनि फुनि कहि बुल्लहि ॥
जितौंब कालिह ढिल्लिय नयर । समर न को संमुह रहय ॥
सुरतान कहै साहाब दी । तब पयज्ज किम न्त्रिब्बहय ॥छं०॥१२७॥

धीर पुंडीर बचन ।

तोरौं तरपि जंजीर । याट मोरौं साहन तुअ ॥
मोहि वचन नहिं टरहि । गंग नहिं बहै अटल धुअ ॥
कीर भार उच्चरहि । सात सायरनि दिगंतर ॥
बरन्न वयन्न पिट्टियहि । काल पिष्पियहि निरंतर ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरय । कौंन झूठ झंषै वयन ॥
गहि पातिसाहि राजन अपौं । इह चरित्त पिष्षौं नयन ॥
छं० ॥ १२८ ॥

बादशाह बचन ।

वे हिंदू नादान । बोल बोलै सिर पष्पै ॥
कों ढंकै असमान । कौंन सायर मुष भष्पै ॥
किनें पवन झिल्लिया । किनें गहि बासग नथ्था ॥

किन जमरा जित्तिया । किनें कंद्रप्प सुसघ्या ॥
वडा जु बोल सुषन्ह निया । इता बोल सिर पर धरैं ॥
सुलतान कहै पुंडीर सुनि । इह क्यों ही पूरी परै ॥
छं० ॥ १२९ ॥

धीर पुंडीर वचन ।

घन अंबर ढंकिया । अस्ति सायर सुप पिन्ना ॥
योग पवन झल्लिया । किसन गहि वासग लिन्ना ॥
गोरष जम जित्तिया । हनू कंद्रप्प न लग्गा ॥
हुवि अग्गै सुलितान । भिड़े कोई दिन भग्गा ॥
चहुआन साहि दिनई समर । सजि चतुरंगम चढ्ढयौ ॥
अथ्याह नीर ढीमर जिमें । सुमीन तनी परि कढ्ढयौ ॥
छं० ॥ १३० ॥

बादशाह वचन ।

हालै हसम हमीर । कीट हिंदू दल षुदों ॥
आन साहि जल्लाल । जोर जोगिनिपुर रुद्दों ॥
वेकुसाव आसा गमार । गरुअत्तन गामिय ॥
बोलांही रावत्त । थंभ फुट्टै बहु नामिय ॥
आवत्त घात आसिप्प जिम । ग्रामी ग्रब कट्टों रसें ॥
मति नसै प्रान रष्षै पुरिस । छत्री छल छंडै हसैं ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धीर पुंडीर बचन ।

छल छंडै सुरतान । वलनु छंडयौ जिंहि बंधौ ॥
जीय रष्यौ पतिसाह । जियत पति साह्ह संधौ ॥
तन रष्यो तजि टेक । तेग रष्यो षुदि आलम ॥
जब ढंकों करिवार । ढोल लग्गौ सुप लालन ।
जल जात घात रष्पै जलै । दूध विनट्टौ दूध छिय ॥
लजनीय साहि गज्जन मनह । धीर पयंपै अरथ विय ॥ छं० ॥ १३२ ॥

बादशाह बचन।

जे दरिया उत्तरिग। षलह षडुरे न कल्लय॥
जोगिनि वर गंजरिग। पवन पन्नरे न हल्लय॥
जिन भैरूं भरमंत। ते डरें डंकनी न डक्कं॥
जिन पंचाइन धक्क। ते जाहिं जंबुक्क न हक्कं॥
हों गोरी नरिंद दैवान गति। नंद पुंडीर न चंद सुअ॥
सामंत लाष सथ्थं मिलय। सहै न साहस अम्म सुअ॥छं०॥१३३॥

धीर पुंडीर वचन।

सोई पारथ भारथी। नमें निकस्यौ मुष का वनि॥
सोइ किस्न करतार। दुक्यौ स निडर गलहावनि॥
सोई सूर बलसूर। राह गलि जाय गहंतह॥
सोई ग्राह गजराज। चक्र करि हन्यौ स्रिकंतह॥
मति करै साहि मन गर्व तुअ। छिति नाम जोहै छचिय॥
निर बीर पहुमि कबहू नहीं। वडां बडेरी बसु मतिय॥
छं०॥१३४॥

बोल बोलि चहुआन। वचन सों वचन पलट्टों॥
फुनि हम चढ्ढि पुंडीर। तोरि तासह नहि मिट्टों॥
तीन लाष उमराव। सहस संभरि सत्तरि वै॥
इह जानि जोनि यान। करै सरहन सब नर वै॥
गज अगंज भूपति सरन। गोरी सयन निघट्टिहों॥
इम कहै धीर सुरतान सौं। बाउ बहंतो कढ्ढिहों॥छं०॥१३५॥

हों दरोग जो कहौं। सूर उग्गै पच्छिम दिसि॥
हों दरोग जो कहौं। ईंद उग्गमे कुहु निसि॥
हों दरोग जो कहौं। बयन चुक्कै दुरवासा॥
हौं दरोग जो कहौं। बोल बोलै बिन सासा॥
बोलै सुधीर जो बोल मुष। तो पाहन रेषा सरिस॥
पतिसाह हथ्थ साहौं नहीं। तौ चंद पुत्त जायौ न अस॥
छं०॥१३६॥

बादशाह बचन ।

इह दरोग बोलंत । परै दो जिग चंदानी ॥
इह दरोग बोलंत । सेन हंसिहै सुलतानी ॥
इह दरोग बोलंत । लाज छुट्टै पति घट्टै ॥
इह दरोग बसि जीह । लीह षंचै सब सट्टै ॥
बड्डा न बोल बड्डा कहै । चाड परंतह जानियै ॥
धावंत धीर से धावनौ । ते रावत बष्पानियै ॥ छं० ॥ १३७ ॥

धीर की बातें सुनकर तत्तार खां का तलवार की मूठ पर हाथ रखना ।

सुनै बोल सुलतान । धीर संमु जे मद्दिय ॥
वे काजे हाजुर । गमार नाजुर द्दै वद्दिय ॥
तपित षान तत्तार । मुट्ठि तत्तार सु संगिय ॥
षंचि क्रन्न आवरन । दिट्ठ सुरतान जु ढिग्गिय ॥
विय करै दरस आलम चरित । मुहि सु[1]चच्च बच्चा बगसि ॥
आनंद चंद वच्चा इहां । मुनि सु गल्ह लग्गै रहसि ॥
छं० ॥ १३८ ॥

तत्तार खां बचन ।

एही गल्ह सुनंत । गाल फारी लगि क्रन्ना ॥
एही गल्ह सुनंत । षाल कड्ढी दुहु दन्ना ॥
एही गल्ह सुनंत । प्रान कड्ढौ अप्पानिय ॥
एह रम्य आरम्य । द्रोह लग्गै सु विहानिय ॥
आदिट्ठ पिट्ठ हिंदू अहं । कै छुरान गड्ढी गलां ॥
चढ़ि तुरकवान हिंदुवान दिसि । हल सहाय कीजै हलां ॥
छं० ॥ १३९ ॥

(१) ए.-सच्च ।

धीर पुंडीर वचन ।

वे कायर बल हीन । पकरि सिंगिनि क्या तोलैं ॥
वे ततार गामी गमार । साहि अग्गैं क्यौं बोलैं ॥
अग्गैं आउ मेदान । ज्वान मरदुन सुप जोरहि ॥
जानि अजा गहि सिंघ । हाड़ पवनं तन तोरहि ॥
कोतिग्ग साहि आलम निजर । षेत भंजि भूकौ करौं ॥
दस षान और तुम दक्खिलैं । में चंद बचा तुमतें डरौं ॥छं०॥१४०॥

तत्तारखां वचन ।

अरे धीर नादान । बोल बोले वरवंके ॥
चढ़त साहि साहाब । दीन तीनो पुर मंके ॥
तुम पतंग जड़ जीव । क्यों सुदिग पालन मोरे ॥
अति सूरौ जो चना । होइ पब्बय फुनि फोरे ॥
बोलियहि बोल अप्पां सरिस । बे मजाद बचनह न कहि ॥
करि रहम साहि रष्यै तुम्है । नतरु षबरि अबही लहहि ॥छं०॥१४१॥

धीर पुंडीर वचन ।

कहै धीर तत्तार । षान सुनि बत्त हमारी ॥
चढत साहि साहाब । दीन को सहै सहारी ॥
हों सुधीर पुंडीर । एक लष्षा दह जानों ॥
तुम देखत हरि साहि । सेन समुह सु भानौ ॥
तुम तुरक मान हिन्दुअ सु हम । हम तुम पटंतर कहौं ॥
हम परत स्वामि परहथ परें । तुम परहथ जीवत रहौं ॥छं०॥१४२॥

तत्तार खां का कुपित होकर धीर पर तलवार उठाना और शाह का हाथ धर लेना ।

हाला हल किय नेंन । हथ्य तत्तार पयारह ॥
छीन लिये सुरतान । रोस देपंत अपारह ॥

या बुढ्ढें या वुड्ढ । याहि छंडै जु वड़ाइय ॥
पुछैं पां षुरसाल । अंग औसाफ चढ़ाइय ॥
आदांन बंध हिंदू इहां । म्झुट्टाई सच्चा करहु ॥
पट्टाय चंद वच्चा घरां । पच्छैही चंपौ धरहु ॥

छं० ॥ १४३ ॥

धीर पुंडीर बचन ।

जे जीवहि अंग मैं । सही ते जमहि न भग्गै ॥
जे कामहि मह महे । लहकि ते कुलहि न लग्गै ॥
जे स्वारथ संदेस । देह दप्पै न परप्पै ॥
जे जोगह जंगमैं । नेह नारी न निरप्पै ॥
डऱ्यौ न साहि डंबर डरनि अंमर लगि हक्कों सयन ॥
सो धीर नाम ब्रह्मह धरिग । चंद पुत्त जम्मह भय न ॥

छं० ॥ १४४ ॥

बादशाह का धीर के वल की परीक्षा के लिये उसे उत्कर्ष देना और धीर का वृक्ष उखाड़ना ।

साहिवदी सुरतान । कहत पुंडीर धीर सुनि ॥
धात षंभ नें संग । फोरि तैसो बल करि फुनि ॥
मुह अग्गै दरखत । षान इहि बंधत हथ्थिय ॥
सो नंषो ऊपारि । जोर दिष्पै सब सथ्थिय ॥
हनुमान लंक जिम चंदसुत । बढि गुमान हिमगिरि सिखर ॥
धक धूनि वथ्थ भरि हथ्थ गहि । जर समेत षेजर उषरि ॥

छं० ॥ १४५ ॥

शाह का धीर से कहना कि मांग जो मांगना हो ।

दूहा ॥ पूब पूब सुरतान कहि । पूब धीर बल तुम्झ ॥
मंगि मंगि जो मंगना । सोब समप्पौं तुम्झ ॥

छं० ॥ १४६ ॥

स्लोक ॥ यावत् दरिद्री सोपि। यावत् साहि न द्रष्टया ॥
लिलाट लिखितं धाता। दारिद्रनो पलायते ॥ छं० ॥ १४७ ॥

धीर का कहना कि मुझे किसी बात की भूख नहीं केवल तुझे पकडना चाहता हूं।

कवित्त ॥ ज दिन जननि हों जनिग। त दिन बाजे बहु बज्जिग ॥
तद्दिन बंस पुंडीर। विरद बानै मुहि सज्जिग ॥
तद्दिन मान महंत। तद्दिन पट्टो लिपि हथ्थह ॥
तद्दिन गाम कुट्ठार। राव रावत मुहि सथ्थह ॥
असपत्ति सेन दल गंजि हों। धीर नाम तादिन लहौं ॥
बासन पसाव तादिन लहों। जबहि साहि जीवत गहौं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

बादशाह बचन।

चंद नंद मति मंद। तोहि परतीत हियै यह ॥
आसानी असपत्ति। जुद्ध करि कै लैहूं गहि ॥
जुद्ध करत जौ मुओ। मोज इह किन कों दिज्जै ॥
इह संसार निरास। आस छिनहू नह किज्जै ॥
न्रपनंद निद्धि न विगड जड। सो जल की जल मे रहिय ॥
करतार मौज रोजी करत। इह मनुष हथ्थह नहिय ॥
छं० ॥ १४९ ॥

धीर पुंडीर बचन।

जब लगि पंजर सास। आस तब लगि ना छंडौं ॥
जब लगि हियै हुंकार। साहि दल बल करि षंडौं ॥
जब लगि कर पग जोर। मानि मच्छर नह मेलौं ॥
जो काया कायंम। ठाट साहिब क्रम टेलौं ॥
सुलतान षान उमराव सह। गह गहिये गुर गाहिहौं ॥
इहि हस्त हथ्थि भंजे हलक। सही साहि तो साहिहौं ॥
छं० ॥ १५० ॥

शाह का धीर को सिरोपाव और निज का घोड़ा देना।

तब हँसिय साहि सुरतान। उंच सिरपाव मँगायौ ॥
जो सुरतानह पाट। तुरिय सोई पल्ल नायौ ॥
राग वाग पष्पर समेत। तहीं तुरत निवाज्यौ ॥
पर्‍यौ निसानन घाव। जानि विय भद्रव गाज्यौ ॥
चौदह सै गैंवर गुरहि। सहजहि सेन समूह दल ॥
सुरतान कहै साहाबदी। अब किन सज्जसि आव बल ॥
छं० ॥ १५१ ॥

धीर का घोड़े पर चढ़ कर कहना कि इसी घोड़े पर से तुझे पकड़ूंगा।

जपौ तुरी चढ़ि मंच। बीर चवदह सें सथ्थह ॥
मन ग्रब्ब पुंडीर। साहि ग्रहिहों से हथ्थह ॥
विह्वारी गज जूह। सुंड मुंडन महि पिट्टों ॥
तीन लष्प सत्तरि। सहस करिवर वर कट्टों ॥
जित्तव अब्ब हिंदू तुरक। भिरों बहक्कि पचारि रन ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। मम संकहि सुरतान मन ॥ छं०॥१५२॥

शाह का कहना कि तू चल मैं भी तेरे पीछे आया।

तेक दीन कव्वाय। तुंग तेजीं दह वाहिय॥
जर जीना संजोइ। रेसरय सनमुष छाइय ॥
लै हिंदू आदान। जाय चंगा पब्बाइय॥
हों आयो तो पच्छ। लष्प लोहा सम्हाइय ॥
सल्लाम आलि आलंम करि। सामंता सब्बां कहौ ॥
जंगाह राज बज्जै भरां। तुम राकी कानी रहौ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

धीर पुंडीर वचन।

जेते जिते कवाइ। साहि मोंदी में हथ्थहि ॥
वे हिंदुअ वे मुसलमान। कथ्थ्यां वे कथ्थहि ॥

से झुट्ठा सच्चाव। साहि जो जंग न नंचा॥
जो जंग न नंचिया। तो साहि झुट्ठा में सच्चा॥
अप्पाह बोल वप्पां हलै। अप्पां बोल सु हथ्थिया॥
चंगोह चंद वच्चा वचन। इह सलाम करि कथ्थिया॥छं०॥१५४॥

धीर पुंडीर को पान देकर बिदा करने के बाद शाह का देश देश को परवाने भेज कर सहायक बुलाना और चढ़ाई की तैयारी करना।

धीर हथ्थ दिय पान। पान षुरसान निसानह॥
कदलि वास कैलास। रोह ठ्ठै फरमानह॥
हबस रूम गष्परिय। भोज भष्पर भर भारिय॥
अंग कुलंग तिलंग। देस नंदन निरवारिय॥
जल्लाल दीन नंदन नवल। सुनि अवाज इहि निज रुकिय॥
पुंडीर धीर पच्छै पहर। मिलि मिलान जोजंन दिय॥छं०॥१५५॥

धीर हथ्थ दिय पान। पच्छ निसान जु सद्दे॥
षान तेग तत्तार। तरपि कास उप्पर बद्दे॥
दह दीहा आलंम। गंभ गंभीर उपट्टे॥
जाने बद्दल उत्तरा। देस दच्छिन पुर छुट्टे॥
आडंड षंड जोगिन पुरां। धरि लग्गी संभरि धरा॥
प्रथिराज देव उप्परि दपत। इह हल्ली यह वेघरा॥छं०॥ १५६॥

शाह की सुसज्जित सेना की चैत्रमास से उपमा वर्णन।

सज्जि फौज सुरतान। अग्ग माधव रिति जानिय॥
पत्र लता वैरष्प। पहुप जंडा सनमानिय॥
छत्र नूत मंजरि समान। ढाल नव ब्रष्प पवन हलि॥
गज्जि गहर नीसान। जोर जल्लाल उमड़ि चलि॥
सजि फौज संत गरजंत अग। मनहु पवन बद्दल हलिय॥
कहि चंद वंद बरदाइ बर। देषि धीर मन भइ रलिय॥छं०॥१५७॥

घरीय तीन रवि चढ़िय। चढ्यौ गोरी नरिंद बल॥
रत्त डंड सदूक। रत्त धज चोर साहि पर॥
रत्त गजनि गज झंप। रत्त वैरष वर टोपं॥
अग्गै षान रती सनाह। रंग रनवी पर ओपं॥
ओपम एह कविचंद कहि। देषि सुबर सुलितान वर॥
षह जीत राह रवि सरस हुअ। मनों जत्त किय भोम बर॥
छं० ॥ १५८ ॥

शाही सेना का आतंक वर्णन।

चलत रेन रवि लुक्कि। चक्क चक्की चष ढरयौ॥
सेस भार कलमल्यौ। कुंभ आरंभरि डरयौ॥
सरिता जल मुक्कयौ। नीर साहन नहि पुरयौ॥
हय हय हय उचरंत। चक्क चक्को विसु चरयौ॥
अंधियार भयौ वासुर असत। दिसा विदिसि सुभ्भै न तह॥
साहाबदीन चालंत दल। डरहि राय स्रत मंडलह ॥ छं० ॥ १५९ ॥

शाह के कूच के समय अशकुन होना और तत्तार खां का कूच बंद करने को कहना।

भुजंगी॥ चढ्यौ साहि आलम तें चित्त दूनी। मिली वाट वाराह नौडार सूनी॥
रयं मिच नीचं फिकारंत फेकी। उडी ग्रद्ध पच्छं मनों मोन केकी॥
छं० ॥ १६० ॥

लरी मग्ग मंजार द्वै सहस जनी। परी बूंद आकास तें श्रोन दूनी॥
चढ्यौ उंट फेकौ फिकारंत केसं। सितं चौर नारी सु मुष्षं उद्देसं॥
छं० ॥ १६१ ॥

पयौ पंजरी कोक पूके पुरानं। जरी लोह भट्ठी सुदेखी सुरानं॥
गही वग्ग फेरी ततारं सुभाई। रहो आज दीहं जमाराति सांई॥
छं० ॥ १६२ ॥

पठं पै जपै गँवरां निवारी। कहै देव देवंग रब्बं पहारी॥
मनं मति छंडी विमासं अधारी। रच्यौ षेल मंडी सु क्रीला विहारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

दहं रोज रोजं करौ बंध बंधी। लरैं गैन चहुआन सो स्वामि सद्दी॥
इला एक अल्ला तनी आलि छंडौ। दई एक देहं तनौ तौन पंडौ॥
छं० ॥ १६४ ॥

शाह का कहना कि वह परवरदिगार सब जगह पर है फिर शकुन अशकुन क्या?

कवित्त॥ सुनौ षान तत्तार। तेग सद्दै सुष सद्दा॥
जो कर इक्क तनीय। रोजगारी नफजंदा॥
वली अली आदंम। पैन पैगंबर कीनो॥
वे भूले तुम जान। किसव जिन तेग न लीनो॥
पल्लटे भेष छंडौ दुनी। परस पीर हाजुर निजर॥
गज नेज साह गोरी घरां। करि निवाज बंदहु सफर॥छं०॥१६५॥

जहां पीर पर सिद्ध। बंग जिहि ठाम न दिज्जिय॥
जहां मुसाफ नह पठय। कतेब कुतवा नव चिज्जय॥
जहां सुनाहि कुरान। नही महजिद धर पर किन॥
परै न गाय लिज्जै। षुदाय रेजा करि वारन॥
जहां हुकम नाहिं काजी करत। तुरकनि षनि गड्डिय जहां॥
सुरतान कहै साहाबदी। सो जिहान हमकों कहां॥छं०१६६॥

शाह का मीरा शाह के समय की घटना का प्रमाण देना एवं मीरा शाह का संवाद वर्णन।

रोसन अली फकीर। गसा रमता अजमेरं॥
दही मोल ले चषत। हुआ षट्टा दिय फेरं॥
गुज्जरियां पुक्कार। जाय दरबार सितावं॥
हडी भिंटी गुनहि। काटि अंगुरि बिन ज्वावं॥
मक्कां सु जाइ फिरियाद करि। मीरां सैद हुसेन अग॥
नीयति षुदाय मद्यत करन। इह अप्पिय मन धरि उमग॥
॥ छं० ॥ १६७ ॥

दूहा ॥ मरना जाना हक्क है । जुग रहैगी गल्हां ॥
सा पुरसों का जीवना । थोड़ाई है भल्लां ॥ छं० ॥ १६८ ॥

मुसल्मानी लश्कर का सौदागरों के भेष में अजमेर आना ।

भुजंगी ॥ कहै दीन कज्ज परस्सै कुरानं । करों रद्द मद्दं सबैं हिंदवानं ॥
नमै पीर पैगंबरें थान मक्कां । रहा बन्न नामं जुगं च्यार चक्का ॥
॥ छं० ॥ १६९ ॥

दिनं सत्त हूते सु बीवाह अड्डे । करं कंकनं सेहरा बंधि चड्डै ॥
तनं मंन एकं चोआलीस यारं । चले संग सौदागिरं रूप धारं ॥
॥ छं० ॥ १७० ॥

जलं पंथ के अठ्ठ अच्छे उतंगा । पुलै नाव ज्यों तीर वेगं विहंगा ॥
दरब्बाफ जरदोज जरकस्स झूलं । रहै नेंक चष्षं ढकै मष्षतूलं ॥
॥ छं० ॥ १७१ ॥

इसे अश्व लीयें धरा हिंदवानं । दियौ आय डेरा अजम्मेर थानं ॥
दरब्बार जाए कह्यौ मीर षोरं । सनंमुष्ष उभ्भै रहे हथ्थ जोरं ॥
॥ छं० ॥ १७२ ॥

हयं हेरि ल्यायौ षंधाई सुगड्ढं । रवी अर्थ कै कन्ह दधि मध्यि कढ्ढं ॥
सुनै कन्न आना महीपत्ति आयं । सबे छोरि फेरैं तुरंगा दिषाय ॥
॥ छं० ॥ १७३ ॥

षुरी ए वियांचा वकी राह गीरं । रहव्वाल चल्लै न हल्लै सरीरं ॥
दमानंक कूदंत नाचंत थालं । निरष्षे परष्षे हरष्षे भुआलं ॥
॥ छं० ॥ १७४ ॥

मुहं मंगि दामं करे कौल्ल वोल्लं । लिहे पंच सें हैवरं हेरि मोल्लं ॥
जमा जोरि मंडै सवा लष्ष दामं । लिये कागदं कायथं अंक तामं ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

करे छाप आपं वुलाए हजूरं । सनंमान चहुआन रष्षै गरूरं ॥
गयो संभरीनाथ दै हथ्थ बीरा । करे चूक सक्यौ नहीं तथ्थ मीरा ॥
॥ छं० ॥ १७६ ॥

अजैपाल जोगी करामात अग्गं । उठे हथ्थ नाही मनोंकीनि नग्गं ॥
निवाजं गुदारे दियं बंग जब्बं । गये देव हिंदून के भज्जि तब्बं ॥
॥ छं० ॥ १७७ ॥

करं काफरं जो इहां मौत दीजै । मसूरत्ति कीनी दही पीर छौजै ॥
तिन कारनं अप्पने हथ्थ अप्पं । कटे सीस बेगं चलो पुट्टि थप्पं ॥
॥ छं० ॥ १७८ ॥

इलल्ला महमंद रस्सूल इल्ला । कलम्मा पढ़ै जोर किन्नो सुकील्ला ॥
मिले आप मेसं मुषं दस्त चूमें । इसे सेर ज्वानं भपै दोइ घुम्मैं ॥
॥ छं० ॥ १७९ ॥

तिनं षिज्जि बिज्जू जिसी तेग कढ्ढीं । चमक्के घरंको चरं सहस अढ्ढी ॥
॥ छं० ॥ १८० ॥

कवित्त ॥ चौआलीसों यार । कढ्ढि नंगी समसेरं ॥
कर कढ्ढे सिर अप्प । चढें बिंटली सुरमेरं ॥
हिंदू मूसलमान । जुरत हय गय घन पायल ॥
चहुआन आना नरिंद । जीति उभ्भौ अजरायल ॥
कटि लीन भिन्न होइ मीर परि । अमर रषिऔ साफ धर ॥
तहि थान आय दरबेस इक । ढवोज मोंनदी बंधि घर ॥
॥ छं० ॥ १८१ ॥

सवासेर दिन मान । आनि तहं पुहप उछारत ॥
रज कंकर करि दूर । धूर हड्डियां बुहारत ॥
जमाराति दै सुपन । मीर इह कौन हुकंमं ॥
तुम ऊपर चढ्ढि है । सवामन सदा कुसमं ॥
अजमेर पीर तुम प्रगट हो । कितक दिवस के अंतरै ॥
हिँदवान पान घटिहै अबनि । इहन कोल हम परत रै ॥छं०॥१८२॥

उक्त संबाद सुनाकर शाह का कहना कि दिल को मजबूत करो और चलो ।

दूहा ॥ इहसु कथा कहि साहि सों । फुनि अप्पिय तत्तार ॥
कायर पन मन छंडि दै । धीर पकरि गहि सार ॥ छं० ॥ १८३ ॥

तत्तार का सोरचे बंदी से आगे कूच करना और एक पड़ाव के फासले से बराबर धीर के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ तू आतुर पतसाहि। हाम हिंदू सासंतां ॥
जोरा सों ज्यौ जक्क। बघघ छंडै धावंतां ॥
मे संतां सुलतान। मुभ्भ्भ सुलताना मेला ॥
करि भेला भंडार। जंग होइहै सुष षेला।
टिल्ला पहार ठट्ठा टिला। वट्ट निहट्टा बड्डियै ॥
कोटाह कोट सा सिंधु तिय। इम हिन्दू दल सिड्डियै ॥
॥ छं० ॥ १८४ ॥

जल जोबन साहाब। दीन सुलतान दुरंगे ॥
किए कूच पर कूच। कुरंग तारीय कुरंगे ॥
जथ्थ रेनि रहै धीर। दीह तहां सोहसु अच्छै ॥
वर वेल्ली पुंडीर। साहि फल पच्छै पच्छै ॥
आवौज वज्जि दिल्ली सहर। यह पुकार पहक्किया ॥
राजोह माम पंचो दिहां। ग्रहां धीर गहक्किया ॥ छं० ॥ १८५ ॥

धीर पुंडीर के वापिस आने की खबर दिल्ली में होना दर्शकों की भीड़ होना और धीर को देखकर राजा का प्रसन्न होना।

ग्रह आप्पनां छंडि। राजग्रह धीर धवंदा ॥
ढा ढिल्ली रा लोय। ताहि देखन आवंदा ॥
निय नीचानी नेन। वमन उच्चा उच्चारां ॥
जा लग्गानी अग्गि। जीह जंपी पुक्कारां ॥
दरबार राज भर भीर घन। मन उलास भेघ्यो धनी ॥
भुअ भंग दुःष दुःषांह गत। जनो कि नाग लद्धी मनी ॥
छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ सासंता मंतां अमत। का चिंता इत वारि ॥
उट्ठि न सिर संमुह सहय। लज्जा विरहां भार ॥ छं० ॥ १८७ ॥

भुजंगी ॥ पाधरे दीह सा चाहुआनं । सिरं उच्च वज्जे सु भेरी निसानं ॥
सितं छत्र रत्तं रषत्तं निसुभ्भं । इला एक राजंग ते सुभ्भ उभ्भं ॥
छं० ॥ १८८ ॥

धीर पुंडीर के आने का समाचार सुन कर रानी पुंडीरनी और इंछनी का उत्सव मनाना।

कवित्त ॥ सा इंछिनि पामारि । राज वज्जे वज्जायौ ॥
धा धंषानी छंडि । प्रौढ जोवन लज्जायौ ॥
अरि अनंद चंदाह । चंद जाया जनु अज्जा ॥
हेम चीर हम्मेल । मेल नग आरति कज्जा ॥
उछंग अंग राजन दरां । राज काज सब सुद्धरै ॥
सा धान साहि देषंतही । आज हिन्दु दिन पद्धरै ॥ छं०॥१८९॥
प्रथीराज चहुआन । विलसि वसुधा सह उप्पर ॥
डंड भरइ चक्कवै । पिसुन पीलै कोलू धर ॥
सहहि न कोइ संग्राम । पुब्ब पच्छिम रुद छिंन ॥
इह अपुब्ब पिष्पयौ । गौर गाजनै ततच्छिंन ॥
रहि न कोइ सुनतै अवन । जहं जहं सिंघ पुकारयौ ॥
आकंप भयौ सब सतुर मैं ॥ जब सुरतांन हुंकारयौ ॥छं०॥१९०॥

धीर का पृथ्वीराज से मिलाप।

दूहा ॥ भुज भिंटलो संभरि धनी । नयन बयन मिटि चाहि ॥
ऊचै न सीस समुत सुहर । लज्ज विरद मइ ताहि ॥ छं॥ १९१ ॥

धीर से राजा का पूछना कि तू गिरफतार कैसे और क्यों हुआ।

कवित्त ॥ हेट हेट गजंन गयंद । वरनि यहि सूर सुत्र ॥
अग्ग मग्ग पुंडीर । मीर रावत्त न लीह तुत्र ॥
तू अलंग जुरि जंग । पग्ग पचिनि वहु अड्डो ॥
सु क्यौ गयौ गज्जन । गयंद मोहि अचरज वड्डो ॥

संभरि वै इम उच्चरइ। रिपु गरिष्ट कुंजर जवह ॥
कहि भीर धीर पूरस बदन। जीवत्त गह्यौ कारन कवन ॥
छं० ॥ १९२ ॥

चामंडराय और जैतराय का धीर को धिक्कारना।

हँसिय चोंड राजैत। सामंत अभंगे ॥
षंभ फोरि गारबयौ। चंद गभरू सूचंगे ॥
मुष नन्हा आदान। बोल बड्डा बहि लग्गा ॥
ग्रब गमार पुंडीर। साहि बंधै बल भग्गा ॥
सुलतान दीन सिल स्वामि सिर। भरिन जियन आसुर कऱ्यौ ॥
वर बरन सूर इम उच्चरहि। धीर जननि ग्रभ न गऱ्यौ ॥ छं० ॥ १९३ ॥

दूहा ॥ गल्यौ न ग्रब पुंडीर तुअ। जिन लज्जाई माय ॥
वंचि प्रष्टि राजन तनी। कही सुनाय सुनाय ॥ छं० ॥ १९४ ॥

धीर का पृथ्वीराज से एकान्त में सब बीतक कहना।

कवित्त ॥ समौ जानि सहि रह्यौ। धीर संमुह बोलाही ॥
अधसि होय संग्रास। दिठ्ठ चावंड जिताही ॥
राज मझि मरजाद। समुद हद लीप नग्गौ ॥
पहुप वार पुंडीर। दाहि दाहिम भर भग्गौ ॥
षिज सार धार पुंडीर पर। सिलह बंधि संमुष नही ॥
एकथ्य जथ्य प्रथिराज न्रप। तहां विवरि बत्त चंदह कही ॥
छं० ॥ १९५ ॥

धीर का भरे दरबार में पुनः प्रतिज्ञा करना।

आज लियौं गज्जनौ। आज तुरकाइन डंडों ॥
मोरों आज गयंद। आज सब सेन विहंडों ॥
आज जीति गोरी। समूह पर दल वित्तारों ॥
आज चंद की आन। आज जन स्वामि उबारों ॥
सोइ आज पैज वरदाय भनि। संभरि धनी सुधारिहौं ॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। आज मेछ दल मारिहौं ॥ छं० ॥ १९६ ॥

चामंड का कहना कि बात कहकर पछलना वीरों के लिये लज्जा की बात है और धीर का शपथ करके कहना कि वही करूंगा जो कहा है।

कहै राव चामंड। धीर बत्तां अविचारी॥
पातिसाह दल विषम। तुरी अगनित है मारी॥
तीन लष्य तोषार। घालि पष्पर घूंमावै॥
मीर मलिक उमराव। काहु साव ग न आवै॥
अति जुरत नयन षंडै षलन। फिरि पच्छौ संका करै॥
ता जननि दोस दुरजन हँसै। जो बोल बोलि पच्छै टरै॥छं०॥१९७॥

धूर गाज विज्जल षिसय। बोल सा पुरिस न षुट्टौ॥
वह न्निब्बहै नियान। सो न हो अंत अहुट्टौ॥
करै पैज पुंडीर। षग्ग षिचिन षिसि भज्जइ॥
सिरन तुट्टि धर परय। जननि जामंत न लज्जय॥
पुंडीर धीर इम उच्चरै। हो न बयन बोलों घनौ॥
हैवर मलिक्क हथ्थह हनौ। तब सुधीर चंदह तनौ॥ छं०॥१९८॥

चामंडराय का बचन।

चंदा बसै अकास। करह कितनौ रन पाइय॥
कनै लंक दधि मंझ। कोइ कंचन लै आइय॥
को केहरि कच ग्रहै। पाय को प्रब्बत ठेलै॥
को दरिया दुस्तरै। अनिल को अंकम झेलै॥
रावत्त राव सब संभरइ। चामंडराइ इम उच्चरै॥
साजै विसेन [1]आसम असम। अब सुधीर तुअ किम लरै॥
छं०॥१९९॥

धीर पुंडीर का बचन।

जब लगि सिर अरु मास। जीभ मुष यक्कय[2]॥

(१) ए.-आलम। (२) कों.-चक्कय।

जब लगि हियै हुकार । मुच्छ मुष मच्छर फरकय ॥
जब लगि कर करिवार । गहिव गज्जनवै गंजौं ॥
ढाल ढोल नेजा पराइ । संभरि वै रंजौं ॥
जब लग्गि सीस इहि कंध पर । पवन मेघ वरसंत घन ॥
इम कहत धीर चावंड सों । पैज पनट्टय प्रान बिन ॥छं०॥२००॥

धीर का घर जाना और सब कुटुम्बियों का उससे सहर्ष मिलना ।

निज ग्रह पत्तौ धीर । राज दरबारह संतौ ॥
अति उछाह आनंद । बिरद भर भारव हंत्तौ ॥
मिले अब्ब पुंडीर । आय चय राय ब्रग्ग बर ॥
अति सुमान दिय दान । व्रन्न जिहि आनि मंडि कर ॥
जै जया सबद जंपै जगत । बाल व्रद्ध उच्छव तरन ॥
अति प्रेम सहित अंतर मिले । रस सुमाह रज्जे करन ॥छं०॥२०१॥

धीर के कुटुम्बियों का उसकी गिरफ्तारी पर लज्जा और शोक प्रगट करना ।

एक महूरत मिलिय । सब्ब संबोध सत्त किय ॥
ता पच्छै एकंत । बोलि भर बध्य अप्पजिय ॥
रंघर राव विरंम । सिंघ सागर पुंडीरह ॥
साहि षान सुम्मान । रामहरि राव हमीरह ॥
मालहन सु महर पति मत्त मन । कमधज केल्हन जाम पति ॥
वैठे सु चित्त चिंता सु चित । बिरद लाज लग्गी सु अति ॥
छं० ॥ २०२ ॥

धीर का अपना बीतक कहना और सबका प्रबोध करना ।

पद्धरी ॥ जंपै सु धीर पुंडीर ताम । निज व्रग्ग चित्त चिंता विराम ॥
मौ बोलि वचन न्रप अग्ग उंच । कंधैव तुम सोमान सुंच ॥
छं० ॥ २०३ ॥

नाष मै जैत चामंड राय। सुरतान सरिस किय बंध दाइ ॥
बंधयो कपट करिहों जु बंधि । बुझयौ न कोय क्रित दुष्ट संधि॥
छं० ॥ २०४ ॥

लै गये साहि संमीप मोहि । संमिलिय सु दल दरवार वोहि॥
हन हनौ सद्द जंपै सु सब्ब । सवदो हमीर गंभीर ग्रब्ब ॥
छं० ॥ २०५ ॥

परब्रह्म कर्म चिंते विचित्त । आवरे ग्यान आहित्त हित्त ॥
तत्तार तन्न अप्पै विअप्पि । पंपिनिय सुफल जैद्रष्य सप्पि ॥
छं० ॥ २०६ ॥

छंड्यौ जु साहि गुरु गव्ह काज । चिंते सु चिंति अति आजि साज॥
चढ्यौ जु साहि दल बल असंषि । लग्गौ जु काम कारज्ज धंषि॥
छं० ॥ २०७ ॥

चामंडराय पामार जैत । आहित्त चित्त जंपै उद्दैत ॥
सो चिंति चिंति षिंतौ सु काज । न्रप होइ जैत वढ्ढै सु लाज ॥
छं० ॥ २०८ ॥

धीर के कुटुंवियों के बचन ।

कवित्त ॥ तव जंपै हरिराव । सरिस सारंग पुंडीरह ॥
कहिय धीर सा सुनिय । बात आभत्त सुहीरह ॥
जंपै रंघर राव हित्त । कह मत्त विचारह ॥
सीस काज सम धरौ । सूर सम गव्ह गुंजारह ॥
सजि चढौ अप्प सेना सकल । करो बंध अप्पान भर ॥
पढ्ढरे षेत पतिसाह सों । करहु झार उभझार झर ॥
छं० ॥ २०९ ॥

धीर पुंडीर का बचन ।

तब तमि जंपै धीर । जुद्ध सामंत कंध तुम ॥
सजे सुभर अप्पान । प्रान अप्पौ सुझ्झ दम ॥
राज काज राजंग । अंग बढ्ढहि सु अप्प जस ॥
कै जीतै उध लोक । सुजस आवरहि छोभि तस ॥

इम कहै सथ्थ सज्जै सुनिज । एक चित्त आश्चित्त सव ॥
तजि मोह सोह संसार सुष । जग्यौ भोर अभ्भीर तव ॥
छं० ॥ २१० ॥

धीर का शिकार खेलने की तैयारी करना खदाइयों का आना और धीर का घोड़े मोल लेना ।

उभै पष्प सुर मास । रोज तीसह रमि[1] मंडल ॥
म्रगया करत अभ्यास । राग रंग रास सुपंढल ॥
सत्त सहस सथ सुभट । साठि दस सिंधुर सज्जिय ॥
बंदुक बानह जोर । वेद दल नौबसि बज्जिय ॥
पुंडीर धीर चंदह तनौ । अति गुमान विरदां बहै ॥
ऐराक तुरिय से पंच लै । सोदागर ईसप कहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

किय हुकंम वज्जीर । मोलि लियै ऐराकिय ॥
दियै दांम दस लष्प । पंच लष्पह रहि बाकिय ॥
संझ समै करि महल । सवै बगसे रावत्तां ॥
प्रात समै चढ़ि धीर । भये सुभ सगुन अवत्तां ॥
तव जैतराव चावंड मिलि । सोदागर ईसफ कहिय ॥
घर जाह जिंद लै जीवतौ । तुम धीर घत्त घल्लै सहिय ॥छं०॥२१२॥

चामंडराय का सौदागरों का धीर पर घात करने को उसकाना और सोदागरों को अपने में मंत्र विचारना ।

मिलि विचित्र इक ठौर । बुद्धि आलोच विचारिय ॥
दांम जिंद अरु लाज । वड़े बिय थोह सुहारिय ॥
तव चीमन उच्चरिय । धीर महिमान सु संडह ॥
षान पान विधि विवह । एक चित ह्वै षग षंडह ॥
मांनी सु मत्त सव मंत मिलि । धीर प्रान इन विधि हरौ ॥
प्रगटै सु वात सामंत सुनि । हुऐ गहर सब्बै मरौ ॥ छं०॥२१३ ॥

(१) ए.-रवि ।

ईसफ मियां का धीर के दरबार में जाना, दरबार का वर्णन।

दूहा॥ करि निवाज ईसफ मियां। गयौ तहां दरबार॥
महमानी ईसफ करै। धीर होइ असवार॥ छं०॥ २१४॥

कवित्त॥ चित्रसारि कच ढारि। पान मोवन जिरि रच्चिय॥
लाल पंच पीरोज। घने सघनं करि पच्चिय॥
दिवस तेज परि मंद। अरक द्वादस करि जग्गिय॥
तारक तेज फटिक्क। सघन चुनि तारन लग्गिय॥
सामंत विलास सुष रहसि तहं। हिंदु लाट हीरां जरै॥
संगीत राग सरसै रवन। पात्र न्त्रित्य अग्गै षरै॥
छं०॥ २१५॥

धीर का सौदागरों के डेरे पर जाना।

दूहा॥ इह ईसफ अरदास करि। मिल्लिक देस को जोय॥
महमानी मीयां करै। धीर पधारौ पाय॥ छं०॥ २१६॥

धीर का नित्य कृत्य वर्णन।

कवित्त॥ पंच सेर फुल्लैल। षट्ट जन मरदत तासह॥
बाहु दंड परचंड। भीम आकार सु रंगह॥
सहस कलस भरि नीर। इक्क विच कलस गंगाजल॥
करि सनान पवित्त। कीय पंच गौ महाबल्ल॥
आमान साठि सजता वहै। पंच मुहुर सोहन्न मय॥
इम नित्य धीर चंदह तनौ। षलक षग्ग वंदै सुजय॥छं०॥२१७॥

दूहा॥ सुचि रुचि सेवा सगति रुचि। सरचि चरचि तरवारि॥
फुनि आसन कीनौ असन। भोजन साल पधारि॥छं०॥२१८॥
तहां सुभर लीने सवनि। सचि सुआर करि साद॥
षटरस भोजन भांति व। तिन महि चित्त सवाद॥ छं०॥२१९॥

धीर पुंडीर के कलेऊ का वर्णन ।

कवित्त ॥ पै अग्ग दग्ग मन तीन । सत्त सेरह विच सक्कर ॥
पंद्र सेर रद्द भोग । एक सीरावन बक्कर ॥
सत्त सेर रोगांन । सेर पंचह कढ़ि लुच्चिय ॥
घ्रित पावक वहु अवर । करत उभै दुज सुच्चिय ॥
पहति और पच स्वादु । जोग राज मढको सुभरि ॥
च्यार घटिय दिन बानतें । सीरामन सामंत करि ॥छं०॥२२०॥

शाह का सिंधु तट पर पहुंचना और धीर का अपनी सेना सहित तैयार होना ।

अरिल्ल ॥ साजत सयन सद्द पुंडीरह । तब आये तट सिंध हमीरह ॥
साजि निकट आयौ सुरतानह । है गै भार साज सब बानह ॥
छं० ॥ २२१ ॥

सुनिय वत्त सा दिल्लि नरेसं । गाजे गेंन वेंन असहेसं ॥
चल्यौ धीर साजै निज सथ्यह । सूर धीर संग्राम समथ्यह ॥
छं० ॥ २२२ ॥

पुंडीर वंशी योद्धाओं का वर्णन ।

कवित्त ॥ सहस तीन पुंडीर । धीर बर बचन अचाए ॥
छियन वसिन वसि द्रव्य । बसु अबहु मोह गमाए ॥
मंझ मेलि सामंत । रयन अद्धी ते जग्गा ॥
सुनि अवाज सुरतान । रंक धन जानि विलग्गा ॥
दुअ घटिय सोम दिन पानि पथ । सहस सट्ट सेना चली ॥
अनभंग जैत अग्या अगर । विच चमंड बज्जह वली ॥
छं० ॥ २२३ ॥

अयुत एक पुंडीर । धीर सम लोह लरन कहि ॥
वरकि वीर तम संत । सिंघ भष पान लहि ॥
दुअन पष्प वीरंग । जुरे जिन जंग वहुत किय ॥
झूझि जम्म वहु सस्च । इष्ट वल सकति वहुनि जिय ॥

तन तुरंग तिन नेह तजि। अजिय मरन चित एक करि ॥
बढ़ि लोह छोह छुट्टै जुरन। अरन वत्त कविचंद धरि ॥
छं० ॥ २२४ ॥

आठ हजार सेना सहित जैतराव और चामंडराय का आगे बढ़ना।

सहस एक देवंग। भेरि नफ्फेरि पंच सैं ॥
सहस तीन अंबकीम। ढोल बंदिन सु अट्ट सैं ॥
सौ सुगंध जोति किय। अट्ट ग्रेहं सुभ छंदं ॥
दिसा सूर मुष मिच्छ। बोलि वरदाइय चंदं ॥
घट घटिय लगन जुज्झह तनी। पहर तीन वित्तिग विषम ॥
उपरंत सेन साजै जुरहि। तब सु साहि साजी सुषम ॥
छं० ॥ २२५ ॥

सुलतान के आने की खबर होना और सबका सलाह करना कि अब क्या करना चाहिए।

जब ग्रह आयौ धीर। पुट्ठि सुरतान संपत्तौ ॥
सुनिय राय चामंड। जैत सम मन्न मिलंतौ ॥
सज्जिग हय गय साहि। सिंधु आयौ यह उप्पर ॥
धीर तेन छंडयौ। पच्छ चंपौ दल दुस्तर ॥
क्यांह एह अप्पन करिय। अब्ब कहौ कहा किज्जियै ॥
भज्जै जराज सुलतान रन। तौ इन मति अप्पन छिज्जियै ॥
छं० ॥ २२६ ॥

जेन बल न जै होइ। तेह झुझ्झे कनवज्जां ॥
सोइ मंत सुद्धरै। जैन जित्ते रन रज्जां ॥
सत्त मंत सुभ चरिय। जैत चामंड सु उट्टिय ॥
गये सजन निज ग्रेह। आय सब सथ्थ स पुट्टिय ॥
चामंड गज्ज मंग्यौ चढन। सम वेरी दाहिम्म बर ॥
आयौ सु चंद वरदाय तिहि। खेत सु बुल्ल्यौ गुझ्झ गुर ॥
छं० ॥ २२७ ॥

कविचन्द का चामंडराय के घर जाकर उससे बेड़ी उतार कर युद्ध मे चलने के लिये कहना और चामंड का कविचंद की बात मान लेना।

पद्धरी ॥ जंपहि सु तथ्य भट चंद कथ्य। तुम रची बुद्धि सब्बह समथ्य ॥
स्वामित्त ध्रंम तुम रत्त राह। बेरी सु धरौ अग्याह राह ॥
छं० ॥ २२८ ॥

दल मेलि साहि आयौ असंषि। देषहु सु जुद्ध तुम उभय अंषि॥
बेरी सु कढ्ढि तुम जुरो जुद्ध। जानौ सु सब्ब गुर घात क्रुद्ध ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कढ्ढौ सुमंत बेरी सुपाय। जै होइ जेम चहुआन राय ॥
चहुआन कन्ह गोयंद राज। कमधज्ज राइ लिहु रह लाज ॥
छं० ॥ २३० ॥

पज्जून राय बंधव बरुन्न। कनवज्ज अग्र सुझ्झो सुरन्न ॥
ढिल्लीय अवर दिष्यो न राज। जिहिँ होइ आज चहुआन लाज ॥
छं० ॥ २३१ ॥

जिम जुरौ षेत षल विषम घाइ। तुम तजौ बीर बेरी सु पाइ ॥
मन्यौ सुमंत चामंड चंद। मन भए सुभ्र उछाह अनंद ॥
छं० ॥ २३२ ॥

पय तरह लोह कढ्ढै सु ताम। संगरह जानि इभ्भह विराम ॥
मंगयौ कनक वाजी सु एह। जातिहि जुगंम अति सुभ्र देह ॥
छं० ॥ २३३ ॥

पष्षरह चमर गज गाह रज्जि। सोव्रंन मुद्र सुभ तेज सज्जि ॥
आवड्ढ बंधि सब सक्र भाजि। सोभंत जानि भीषम समाजि ॥
छं० ॥ २३४ ॥

षावंड रोहि वाजी सु अप्प। जंप्पौ सुमंच निज इष्ट जप्प ॥
सजि चल्यौ सब्ब दाहिम्म सथ्थ। द्वै सहस सूर गरुअत्त हथ्थ ॥
छं० ॥ २३५ ॥

सम चढ्यौ जैत निज सेन साजि। सारह सहस सेना सुगाजि॥
चढ़ि चलिय उभय घन वज्ज बाज। तब चढ्यौ अप्प प्रथिराज राज॥

छं० ॥ २३६ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुन कर कुपित होना और लोहाना को भेजकर चामंड को पुनः बेड़ी पहनवाना।

कवित्त ॥ गाजि गरुअ चहुआन। सुनत अप ग्रेह सपत्तौ॥
दीन उतर ता पछै। बोलि लोहान सु तत्तौ॥
तुम बेरी ले जाहु। पाय चावंड सु घत्तौ॥
इन हम अग्या तजी। अप्प बल राह उमत्तौ॥
हम करत लाज कैमास की। अरु सगपन सन मंध घन॥
आक्रस्सि मन्न हम क्रोध घन। मभ्‌झें गहि रष्यौ सुमन॥

छं० ॥ २३७ ॥

ले बेरी लोहान। ग्रेह चावंड सपत्तौ॥
धरि अग्गैं चावंड। देषि प्रज्जरि चित चिंत्यौ॥
कहै राय चावंड। सुनौ लोहाना तुम बर॥
न्रिप अग्या सिर सज्जों। नतरू जानहु तुम हित हर॥
निज स्वामि ध्रंम षंडो नहीं। हिय अरोहिय सहि हर॥
बेरी सुलीन चावंड विहंसि। पय आरोहिय अप्प कर॥

छं० ॥ २३८ ॥

शाही सेना की सजावट वर्णन।

मोतीदाम॥ षट दूनति साह सजे सुरतान। जहं छत्र मुजी कनजीक निसान॥
गज ढालनि मालि चिहूं दिसि फेरि। तहां रन सद्द महग्गज भेरि॥

छं० ॥ २३९ ॥

अर कंमर तोजह मेलति कंठ। तहां लष्ष फरी धर पाइक गंठ॥
तहां छत्र मौज अदब्ब सुभार। तहां विज्जल नाय भ्रमै असवार॥

छं० ॥ २४० ॥

तहां घन डंबर अंबर रेन । तहां अन जेवन कीवन
तहां पार सिपै रसना रस बोल । तहां आरस के जम
छं० ।

तहां ढल्लनि मल्लनि कीज प्रवेस । तहां द्वादस फौज
तहां तज्जिय अज्जिय गज्जन राव । तहं बज्जय सिंग म
छं० ।

हव ढड्डिय उड्डिय मुक्कन केस । रही चक चौंरनि मौ
तहां दिष्षिहि फौज सु धीरन कोज । मनो चव चम्म कु
छं० ।

रवि जानि डपौ दुअ वद्दल मंझ । कलकूह कुलाहल ब
उड़ि रेन रही दल दुंदभि षंग । फिरि फौज पुंडीर
छं० ।

बजी सहनाइ निसान गुंडीर । सुलतान घरां मिलि
छं० ।

पृथ्वीराज का अपनी सेना का मोर व्यूह रच चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ देषि फौज सुरतान दल । मति मंडे रन साज ॥
मोर व्यूह मति मंडि कै । तब सज्ज्यौ प्रथिराज ॥
छं० ।

व्यूह वर्णन ।

कवित्त ॥ आरध वेस नरिंद । छच वर मुक्क कहि गड्डै ॥
सवै सेन प्रथिराज । मोर व्यूहं रचि छड्डै ॥
चोंच राव चालंड । जैत द्रिग बंधि प्रमानं ॥
नप पिंडी पुंडीर । सेन उभ्भौ सुरतानं ॥
वर कंध वंध वंधी न्रिपति । पुंछ वीर कूरंभ रचि
अरनेव उदै उद्दित सुभ्भर । महन रंभ दोउ दीन म
छं० ।

पष्षराज प्रथिराज। जाम जद्दो घट भद्दों ॥
रीछ मोर पष्परी। स्यांम चमरनि गज मद्दों ॥
स्याम ढाल ढलकंत। स्याम गजपंति विराजै ॥
स्याम धजा झलकंत। मेघ पंतिय दुति लाजै ॥
बर नेज च्यार तहँ उज्जले। दुति सु बग्ग पंकनि बढ्यौ ॥
मोर सह बीर सुरतान मुष। जिम कुरंग सम्हौ चढ्यौ ॥
छं० ॥ २४८ ॥

दूहा ॥ चले दिष्ट संभौ मरद। पीन नीर रस पान ॥
उंच दिष्ट के असुर वर। चढ़ि तक्कत चहुआन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

कवित्त ॥ मद गयंद झरि कीच। बीच मुत्तिय झलकंतिय ॥
मनों मेघ विज्जुलिय। बनें सा नैननिर्दतिय ॥
सुभर सूर वर साजि। अप्प अप्पन धर चल्लिय ॥
एक एक अग्गरे। जानि भद्रव घट हल्लिय ॥
आभरन दान बुंदनि बरषि। सक सद्दाव उप्पर ढलकि ॥
जद्दव सुजाम देषिय न्त्रपति। समनजैत बढ्ढिय किलकि ॥
छं० ॥ २५० ॥

चाहुआन सेना की श्रेणीबद्ध दरेसी और चाल का क्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ किलक्कंत फौजं सु मौजं दिठंनी। बने हेम जेजंम रंजं मथंनी॥
अगे तिष्ष पाइक्क घाइक्क कूदै। करं कंनरं भाल ग्रीवं स ऊदै ॥
छं० ॥ २५१ ॥

उड़े डंबरं अंमरं रेन पूरी। किये कूक पुत्तारिका हक्क मूरी ॥
परै भीर कंबी रनं जैत रुट्ठी। परें बंध कंधं हयं नार छुट्टी ॥
छं० ॥ २५२ ॥

धरै आवधं उग्गि सज्जै विमानं। तिनं नाम लीजै बरद्दाय जानं।
सुभे सुभ्भ बाने समाने दिठाने। तहां कव्विचंदं उपंम बषाने ॥
छं० ॥ २५३ ॥

हिमामं हिमारी हलै हेम चारी। तियं तीस जना सपरि जुद्ध भारी।
गजंगाह उग्गाह दुग्गाह कच्छै। मुसल्ली मुरल्ली अरब्बी उलच्छै॥
छं०॥ २५४॥

सनेतं सकेतं समेतं पताषी। पपं मोर सिंधोर दामं उचाषी॥
निलं नील सम्मील उम्मील पीलं। रनक्की घनक्की[१]सचौरंति नीलं।
छं०॥ २५५॥

महा मीर माही उमाहं उचंनी। परी पाट डोरी सकोरी दिठंनी॥
तरंतार झांडे सषं सब्ब अंसं। उडै देषि धीरज्ज मीरज्ज हंसं॥
छं०॥ २५६॥

नयौ ताप आदब्ब सों जुद्धि कीजै। इसी बुद्धि भग्गै नतौ लोह लीजै॥
इसी फौज जादब्ब कूरंभ सज्जी। नयौ ग्रब्ब गौरी सु ग्रब्बानि लज्जी॥
छं०॥ २५७॥

दिषे षान षुरसान तत्तार दिट्टी। छुट्यौ भ्रम्म धीरज्ज रहि निट्ठ निट्टी॥
मुरे षान षानं स लाजी अहारैं। भये अट्ट हज्जार हय तज्जि तारैं॥
छं०॥ २५८॥

पहर तीन तिन सों तिनं लोह तुट्यौ। मनों संझरी जानि घरियार कुट्यौ॥
छं०॥ २५९॥

दूहा॥ बजी कूह सम्मोह वर। फिरि गजराज प्रमान॥
चाहुआन वर भग्गतें। चंपि सेन सुलतान॥ छं०॥ २६०॥

मुसलमानी सेना की ओर से हाथियों का झुकाया जाना और राजपूत पैदल सेना का हाथियों को विडार देना।

कवित्त॥ रन तत्तार टट्टरैं। सेंन चंपी चतुरंगिय॥
हस्तकाल बल राज। उठे गज झंपि मुषंगिय॥
पीलवान रा एन। हस्त अंकुस गजमध्यं॥
सवर संगि उम्भरी। झरी झारिय झरि हथ्यं॥

(१) ए-सतौरं।

उस्सडे मीर अग्गा अगर। क्रूह काहर पच्छे फिरिग॥
सामंत कोइ अप्पै अपन। अप्प सेन ऊपर परिग॥
छं० ॥ २६१ ॥

हाथियों का विचला कर अपनी फौज कुचलना और शाही सेना का छिन्न भिन्न होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
अस्स सहित असवार। मेर उच्छारि डारि धर॥
सर संमुह परि पीलवान। मिट्टी मामं घन॥
तहां चंपि हाजी। हुजाब देषंत तस्स घन॥
सब सेन बीर भर हरि गई। गज ऊपर गज वर परै॥
बिय बंटि रिड्डि बंछौ विषम। धाइ बीर सम्हौ लरै॥
छं० ॥ २६२ ॥

हाथियों के बिड़र जाने पर पृथ्वीराज का तिरछे रुख से धावा करके मार काट करना।

दूहा॥ छंड़ि बीर गजराज मुष। तिरछौ परि सुरतान॥
भौ टमंक दिसि विदिसि डुलि। रन रुंध्यौ चह,आन॥
छं० ॥ २६३ ॥

युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ करं काल डौंरू किय सिंघ नद्दं। सयं सक्कति वादी वरदाय चंदं॥
सिर स्याम सन्नाह वाहंमि चक्कं। धरे अग्र वानं सुदुर्गामि वक्कं॥
छं० ॥ २६४ ॥

गलै राग गावंत सिंधू सगिंधू। गलै माल जा स्तूल कन्नै र बंधू॥
अगे षेचरं षेतपालं बेतालं। तहां भैरवं नद्द जोगीह कालं॥
छं० ॥ २६५ ॥

दोउ कन्न जोग्यंन कर पच संडे। तिनं दर्सनं देषि साहस्स षंडे॥
फिरै तिष्षि निष्षी पताका तिरत्ती। लुवं जानी लागी सुग्रीषम्म तत्ती॥
छं० ॥ २६६ ॥

टगं टग्ग लग्गी सुषं सुच्छ मोहै। वजी तीन तारी सिरे स्याम सोहै ॥
लई कढ्ढि वूकी विभूती उड़ाई। भए दीह चहुआन साजे सषाई॥
छं० ॥ २६७ ॥

ह्लिसं अग्ग वढ्ढी सु चढ्ढी पुकारै। लिये लक्करी सेन गोरी निकारै ॥
लियं लष्य सेना सुरत्तान सद्धी। रनं राह वाराह वरदाइ वद्धी ॥
छं० ॥ २६८ ॥

हँसै सब्ब सामंत सम राज भट्टं। भइ वारही फौज एकं सुवट्टं ॥
वड़े षंड पुंडीर सै तीन अष्यं। तिन मंडलाजी तुरंगी जनष्यं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

उड़ी लोह अग्गी जर गिद्ध पंषी। भरी देषि करदाय वरदाय सष्षी ॥
परे रुंड संडं भरं भूमि सोहै। पियै स्रोन पंचारि वारिक्क डोहै ॥
छं० ॥ २७० ॥

चलै राह वै राह वैकुंठ भारी। घरी सत्त रवि मंडलं छिद्र कारी ॥
चयं जाम रन धाम भिरि भूप वित्ते। बछै धीर सों भीर सुरतान कित्ते॥
छं० ॥ २७१ ॥

कवित्त ॥ तीरब्रह्म चामंड। झंड हेमानि दंड करि ॥
रजक पत्त सिर मंडि। फौज आषंड मंडि सिर ॥
उभ्र अवाज नीसान। कान वीय सेन निसाननि ॥
पर पहार उत्तंग। थंभ थंथरि परि थनानि ॥
नक्केरि भेरि सहनाइ सुर। मुर कपाट वज्जिय रवरि ॥
अग्गाम जैत चामंड दल। सिंध सहाव सुप्परि दवरि ॥
छं० ॥ २७२ ॥

शाही सेना के दो हजार योद्धा मारे गए, राजपूत सेना की जीत रही।

भुजंगी ॥ धमी सेन आलम्म की कूक फट्टी। जरं जंच गोरा वरं मट्ठि छुट्टी ॥
करं कुट्टि कम्मान वानं सनक्की। मनों लोर वासन्न आसन्न नक्की ॥
छं० ॥ २७३ ॥

धरं अद्ध अद्धं रनं धार धारं। करं धाम धामं मुषं मार मारं॥
गलं बथ्थ भिट्टे सनेही सनेहं। उभै सूर जुट्टें मनों एक देहं॥
छं० ॥ २७४ ॥
उनै श्रोन घुंम्यौ सु ऊनै उनाही। भए दीन दूनं सु सज्जे मषाही॥
घटं एक को एक घुट्टै सु पुट्टै। नई गंठि मुंडा वली जोग छुट्टै॥
छं० ॥ २७५ ॥
इसो जुद्ध दीठौ न सुन्यौ कहांई। मिलै जैत षामंड सुरतान घाई॥
परै सहस द्वै षान भिरि चाहुआनं। वढी जेत पिथ्थी सु वज्जै निसानं॥
छं० ॥ २७६ ॥

धीर के भाई और कविचन्द के पुत्र का मारा जाना।

दूहा ॥ षेत परिग कविचंद सुत। परिग बंध धर धीर॥
गहिय मद्द षिलची षरे। पसरत अठ्ठ अमीर॥ छं० ॥ २७७ ॥
श्लोक ॥ मानवानां च नागं च, कौरवानां न पांडवं।
गोरीयं जुद्ध हिंदूनां, न भूतो न भविष्यति॥
छं० ॥ २७८ ॥

संध्या होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम लेना।

कवित्त ॥ भइय संझ दुहु बेर। षेत दुहु दीन न ढुंढिय॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। हथ्थ चव पंचय चढ्ढिय॥
बरन मेछ बर हिंदु। श्रोन सुभयंन सुभ्भरन॥
इन अभंग घट भंग। चित्त भग्गौ जु जुद्ध रन॥
पुंडीर सत्त रन सत्त किय। वरन बीर रंभा वरी॥
अष्टमी जुद्ध मंगलन कौ। घरी अद्ध बिय सब टरिय॥
छं० ॥ २७९ ॥

दूसरे दिवस का प्रातःकाल होना और दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ कायर चोर चकोर बर। निसि घट तें ललचात॥
सूर चकुर अरु बाल बधु। ए वछे वर प्रात॥ छं० ॥ २८० ॥

कवित्त ॥ सूर आव घर सूर। चढ़िग सामंत तुल्य धन ॥
सस्रिय तार उड़गन सु। द्रग्ग वीर नंचंत फिरइ गन ॥
हाहा हूहू गंध्रब्ब। रंभ आरंभ अरुन अघ ॥
अति आतुर रन चित्त। जंम जम्मन कग्गह नघ ॥
बर जोग लग्ग जोती तनं। सस्त्र वाय बर डोलई ॥
बर पंच पंच लई सुबर। सुगति बंध बर पोलई ॥
छं०॥ २८१ ॥

अरुन तरुन उदयंन। फौज पच्छै सुलतानी ॥
मिलन सूर सामंत। रेन अड्डी सम्मानी ॥
तास तुंग ववरि हि। मांस नेजे उड़ि मंडिय ॥
रवि झिंगुर झुंसुषिय। हींस हींसा रव छंडिय ॥
मंडिय प्रभात नारद सवद। दोऊ सेन सज्जत रहिय ॥
इक वार वीर वीरह तनो। किल किलक्कि जोगिनि कहिय ॥
छं० ॥ २८२ ॥

युद्धवर्णन। राजपूत सेना का जोर पकड़ना और मुसलमान सेना का मनहार होना।

भुजंगी॥ वजे लोह कोहं सुकोहं दु दीनं। लई नाग बीरंग ते स्रोन भीनं ॥
झनक्कंत सारं किनक्कंत ताजी। मनों नट्टिवी नट्टि नागिन्न बाजी ॥
छं० ॥ २८३ ॥

वुलै घाय अघ्घाय सा स्रोत बुंदं। उठै तार झंकार ज्यों तार दुंदं ॥
उठै धींग धक्कै गजं ढाल मालं। मनों पन्न डंडूर आषाढ़ कालं ॥
छं० ॥ २८४ ॥

चंपी सेन आलंम जुरि तीन जामं। भए फौज अट्टं चवं एक ठामं ॥
परे सहस सोरह उभै हिंदु पानं। गजं वाज हज्जार तीनं सुजानं ॥
छं० ॥ २८५ ॥

समं सोमवारं सु कारंति थानं। चले लष्प दोपाल हथ्थे हथानं ॥
फिरें एकठे लष्प फिरि चंद नंदं। परे वाज लाजी तिनें तासकंदं ॥
छं० ॥ २८६ ॥

मथी सेन आलम्म की है हिलोरं। पॅगी जानि पारिष्प दरिया हिलोरं॥
असी अब्ब सेना थकी हथ्थ बथ्थं। रहे षेत सूरं मुरे क्रूर तथ्थं॥
छं० ॥ २८७ ॥

मिले मभ्झ पुंडीर हिंदू तुरक्की। मुरै मुष्प नाही सुधारै मुरक्की॥
सजे सूर सन्नाह ते हिंदु मेछं। तिके जानियै बीर जोगिंद वेछं॥
छं० ॥ २८८ ॥

कढे लोह हक्की सु बक्की हवाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई॥
लिए हथ्थ नेजा उनंके उनाही। रहे हल्लि नेजा न हल्लै हलाही॥
छं० ॥ २८९ ॥

सतं अड्ड अट्टं कमट्टं म उट्टै। जिनें मोह माया रसं बंधि छुट्टै॥
भषै जंबुकं गिद्धि सीवंत हस्सै। फुटी सांग हथ्थं तिरच्छं सु लस्सै॥
छं० ॥ २९० ॥

कहै हक्क बाजी विराजी सु गाजी। घटं कंध तुट्टै किनं कै सु ताजी॥
उड़ी श्रोन छिंछी छबी लग्गि बिंदू। दहै दाह अग्गौ मनो दार निंदू॥
छं० ॥२९१ ॥

कढी तेग तेगं जु तेगं चमंकी। तहां तब्बरं तुंद मीरं दमंकी॥
तजे दीन दीनं दुहुं अंस भारी। मिले बंध बधं सु जोधं करारी॥
छं० ॥ २९२ ॥

ततथ्थे ततथ्थी करै थंग थंगं। नरै रंग भैरो बितालं उतंगं॥
कढे रुद्र रद्दी विरुद्धं विचारी। रुरै दंत दंती विकस्संत सारी॥
छं० ॥ २९३ ॥

बजे घाय आवरत सावरत रुक्कै। मनों चच्चरी डिंभरू तार चुक्कै॥
नचे बंधं कंधं कबंधं सवानं। मनों सस्सि भेषं पल्ली चौज कानं॥
छं० ॥ २९४ ॥

स्वरं तंज दीसें परंतं न दीसं। मनों भूतमाया कुरी जोग ईसं॥
इकै सांग बाही इकै तेग साजी। मनों नग्गनी जीह झुकि रत्तकाजी॥
छं० ॥ २९५ ॥

कढी एक सथ्थं उचं हथ्थ उंचं। झलक्कै सु षग्गं महातेज संचं॥
तिनकी उपम्मा कही चंद वक्कं। दिसी पच्छमी जानि उगयो अरक्कं॥
छं० ॥ २९६ ॥

लई षीझि कम्मान सुरतान गोरी । फ,टै पष्परा अस्स,भै विभ्भ जोरी॥
परे सब्ब षानं महामीरबानं । मनों प्रात तारै दिषै थान थानं॥
छं० ॥ २९७ ॥

महारुद्र बीरं भयानक्क दीसं । लगे जोगिनी रीस तादंत पीसं ॥
[1]रसं साहि गोरी अदं बुद्ध कंदं । भयौ सूर प्रथिराज परभात चंदं॥
छं० ॥ २९८ ॥

धीर पुंडीर का धावा करना ।

षुले टोप लोलंत बोलंत सूरं । लिये चोर तोरं मरोरंत मूरं ॥
पर्‍यौ धाइ पुंडीर तेजी पटाढ़ी । जिने बोल षुच्चै मुषं मुच्छ डाढी॥
छं ॥ २९९ ॥

इसौ चंद बचा विरच्च्यौ सु तामं । करी अट्ठ चव फौज एकं सुठामं॥
चंप्यौ जानि कें जम्म सुरतान साहे। कह्यौ षान जादे कुमादे कुसादे॥
छं० ॥ ३०० ॥

कह्यौ छंडि ताजी सु को बोल पीलं। बह्यौ बाय बेगं मनो धूम झोलं॥
मिली चारि अंषी अनी दिट्ठ दीनौ। उनें हथ्थ ठिल्ल्यौ इनै सिंहलीनौ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

दुहं हथ्थ षुल्लै हलक्कै सु बथ्थै । कहै देव देवन्न जोगिन्न सथ्थे ॥
महाचंद पुत्तं सबीरं लुहानं । कहै तेन बोलंत आबं सुहानं ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

झुँडा माह वैरक्क दिट्ठी सुरानं । हँसै सब्ब सामंत पुंडीर मानं॥
उनै उत्त मंड्यौ जु पंभं प्रमानं । लियौ सिंह ताजी सु हेमं समानं॥
छं० ३०३ ॥

उतें मंडली मेछ जोरी सु साजं । इतें हिंदू साजे प्राथीराज काजं॥
कहै सिंघ सामंत सूरं लुहानं । परै अप्पनै काम कनवज्ज थानं॥
छं० ॥ ३०४ ॥

दियं च्यार देसं सु पुंडीर रायं । कह्यौ अप्प पतिसाह धीरं सुनायं॥
छं० ॥ ३०५ ॥

(१) ए. समं ।

धीर की सहायता के लिये पिशाच मंडली सहित देवी का आना।

कवित्त ॥ चवदह सें बर बीर। भए भर धीर सहाई ॥
जालंधर जगमात। जैत करिवे को आई ॥
भैरव भूत भयंक। भए तहां आनि मपाई ॥
ईस सीस कारनै। दई तहां आनि दिपाई ॥
सुचि चंद जेम न्नप चंद सुअ। घट घट प्रति प्रति व्यंब हुअ ॥
सामंत स्हूर इम उच्चरै। बलि बलि वीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

महादेव का पारबती को गजमुक्ता देकर कहना कि वीर धीर को धन्य है।

दूहा ॥ ईस सीस लिय माल कजि। गौरा कजि गज मुक्ति ॥
पिया समंपति मुक्ति पिय। चिय प्रिय पुच्छत वत्त ॥ छं०॥३०७॥
सीस सदा सिवल्यावते। मुक्ति लहै कहों आदि ॥
कोन धीर पहिरो असन। धीर वीर सु प्रसाद ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

पारबती का धीर के विषय में पूछना।

पारबती कह्यौ कोन सुत। कहा पराक्रम कौन ॥
पाट पुंडीर सुचंद सुअ। ब्रह्म रूप परवीन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

धीर की बीरता का वर्णन।

कवित्त ॥ इसौ धीर बर वीर। जिसौ पारथ भारथ्यह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ पारथ सारथ्यह ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ जोधा दुरजोधन ॥
इसौ धीर बर बीर। जिसौ हनमंत बलिय मन ॥
सुतचंद दंद दारुन दुअन। अग्गिरूप चिन सत्रु जन ॥
मन मोह रोह माया रहित। अंगद जिम अंग धीर तन ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पारवती का प्रश्न कि क्षत्री जीवन का मोह क्यों नहीं करते ।

दूहा ॥ जिहि जीवन कारन जगत । बंछै लोक विचार ॥
करै सुध्रम्म सुक्रम्म अति । किम तजि छचिय सार ॥
छं० ॥ ३११ ॥

शिव का बचन कि क्षत्रियों का यह कुल धर्म है।

गाथा ॥ तापस नष्ट अतोषो । संतोषो नष्ट नरपति ।
लज्जा नष्टति गनिका । अनलज्जा नष्ट कुल जाया ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

दूहा ॥ धरा सहित नंषै सु धर । सीस जाय धर जीय ॥
मरन सीस लीनै वहै । कुला क्रम षत्रीय ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

जीवन मरन की व्याख्या ।

कोन मरै जीयै कवन । कोन कहां विरमाय ॥
प्रानी वपु तरु पंषिया । तरु तजि अन तरु जाय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
ज्यों जीरन परधान तजि । नर जन धरत नवीन ॥
यों प्रानी तजि कायपुर । और धरे वपु भीन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
कबहूं जीव मरै नहीं । पंचतत्व मिलि भेद ॥
पंचौ पंचन में समें । जीव अछेद अभेद ॥ छं० ॥ ३१६ ॥

आत्मा की व्याख्या ।

मोतीदाम ॥ अछेद अभेद अषेद अपार । अजीत अभीत अप्रीत अमार ॥
अमोल अभोल अतोल अमंग । अकंज अगंज अलुंज अभंग ॥
छं० ॥ ३१७ ॥
असेष अभेष अलेप अबीह । अरेप अमेष अदेष कवीह ॥
अमान अभान अजान अलिप्त । अचान असान अवान असिप्त ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

संसार में कर्म मुख्य है कर्म से जन्म होता है ।

गाथा ॥ कर्म वस्य नरं जीवं जं कर्मं क्रियतं सो प्राप्ति ॥
कर्मं सुभं च असुभं । कर्मं जीव प्रेरकं प्रानी ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

श्लोक ॥ नमे न बध्यते कर्मं । कर्मेन बंध प्राप्तिकः ॥
यं कर्मं क्रियते प्रानी । सो प्रानी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ ३२० ॥

दूहा ॥ औसरि दुअ जुट्टे सुरन । अत सोभत इन भंति ॥
अगर भंज जनु द्वै भिरै । मय मत्तें मय मंत ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

शूर वीरों की वीरता और उनका तुमल युद्ध वर्णन ।

विराज ॥ मयमत्त भिरे, फिरि जुद्ध घिरे । तरवारि तरै, तकि घाव करै ॥
छं० ॥ ३२२ ॥

जमदट्ठ जुरै, तिय नीति मुरै । पन सूर मुषं, न मुरंत नषं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥

इस भत्य इसें, जमरूप जिसें । नर मध्य नचै, हरहार रचें ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

धर उट्टि धरं, सजतें समरं । भभकै भभकं, रुधिकै लुभकं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

जुगिनी जितनी, किलकें तितनी । ततथे ततथे, नचि बीर नथे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

गुरगात भरं, कच उंच करं । तिन कढ्ढि तनं, बढि रंभ बनं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दंत ऐंच दंती, कटि सूर कत्ती । भिरि एम भरं, जनु सिंघ जुरं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ जुद्ध करंते जोधं । जै जै जंपि असुर ससुरानं ॥
कुट्टै इम किरवानं । लोहं लोहार कुट्टै घन एनं ॥छं०॥३२९ ॥

धीर की विलक्षण हस्तलाघवता ।

दंडक ॥ धीरकर धरिकै किरवानह । धाप धपै धपतौ वर वानह ॥
थाट विथाट करं दल ठेलत । घाट कुघाट किए घट षेलत ॥
छं० ॥ ३३० ॥

बाटनि बाट करी अति भीतर। लोटत लोटत ज्यों बन बिंतर ॥
बाढ़नि बोढ़ दिए तरवारनि। बालर बाढत भील पहारनि ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

सीसन पीस किये सिरदारन। पी भज भाजन चीलषि जारन ॥
सेलन मेल सनमुष मंडहि। झेल विझेल करा झर झंडहि ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

ढेरत हथ्थ उधेरत पंजर। षंडत पग्ग षसे रत षंजर ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़ा छोड़ कर हाथी पर सवार होना।

कवित्त ॥ ऐ सहाब सुलतान · तुरिय छंडवि गज चढ्यौ ॥
धीर बीर सम्मूह। रोस संमुह बर बढ्यौ ॥
है समेत असवार। हक्कि पुंडीर सु चंपै ॥
जिमि सुष्षह जमरोज। चंद नंदन नह कंपै ॥
कढि कटार गज तोलि हित। राह अधम रवि जुद्ध लरि ॥
कट्टार नंषि पग्गह कढ्यौ। करिय सीस सिर लोह झरि ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

धीर का हाथी को मारना और शाह का जमीन पर गिर पड़ना और धीर का शाह को पकड़ लेना।

उडिग रेन गय नंग। साहि संमुह गजि पिल्ल्यौ ॥
धनिव धीर पुंडीर। साहि सनमुष असि मिल्ल्यौ ॥
दसन तुंड किय दोन। मुंड छंडिय सुंडाहल ॥
गिरत भूमि सुरतान। षाँन कीनो कोलाहल ॥
झक झोरि तोरि अवझरि उजरि। गहि हमेल हम्मीर लिय ॥
हय कंध डारि अड्डौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

धीर का तलवार चलाते हुए शाह के हाथी तक पहुंचना।

षग कढ्ढत सुरतान। अप्प मनि भय हय चढ्ढिय ॥
धर ततार इक पंचि। सिंगि रंगिय रुधि मंडिय ॥
हनिव हथ्थ पुंडीर। धीर धर फट्टि सनाह्हिय ॥
जनु कि प्रात आवत्त। ब्रह्मपुर पंच समाह्हिय ॥
उर फुट्टि पंच टट्टर करह। बर बिडुरि पग्गह डरिय ॥
गहि दंत मंत सुनि सुनि सुनिय। झमकि झमकि विजुरिय झरिय॥
छं० ॥ ३३६ ॥

शाह के अंग रक्षक योद्धाओं का शाह को बचाना।

साहि पास सो मीर। दुहूं उभ्भै दुहुं पासं ॥
उभ्भै अग्ग सु विहान। बान अरजुन प्रति मासं ॥
कंजानी कम्मान। बान सु विहान तोन तिय ॥
तेही वेर हुसेन। दिष्ट देषी घुरि अत्तिय ॥
तब साहि हथ्थ कम्मान लै। षिंझि करि कुंडलि क्रन्न बर ॥
तन फुट्टि लुट्टि हुस्सेन पर। रोस परिग परि मीर धर ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

मुसलमान योद्धाओं का पराक्रम और हुसेन सुविहान (सुभान) का मारा जाना।

एक बान सुबिहान। षान हूसेन चढ़ाइय ॥
दूजै बान तकंत। बंध धीरह टाराहिय ॥
तक्कि बान तिय साहि। भरकि भग्गौ हिंदवानं ॥
सकल सूर सामंत। करै अस्तुति सु विहानं ॥
पट बान कमान जु नंषि करि। अरि दिसि हरि चक्कह चलिय ॥
कढि तेग मुट्ठि छुट्टै नहीं। दिन पलट्यो सु विहान जिय ॥
छं० ॥ ३३८ ॥

ढारि जंग जुरि जूह। जूह गजराज ढंढोरिय ॥
ढाल मद्धि ढंढोरि। बीर अविहरि दल मौरिय ॥

दल मोरे षुरसान। षान षुरसान बहोरिय ॥
बहुरि धीर जंजाल। करन वाहिर बहुतेरिय ॥
तेरिय सु वीर चतुरंग वर। वीर वीर वीरं कहिय ॥
अच्छरी वीर रस भर सुभरि। भेद भेद न छच रहिय ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

गुन रन मूंदे सेस। छंद सुम्भर आलिय भुत्र ॥
दुष सुष मया विमोह। क्रोध रँग वीर सकल हुत्र ॥
अहहं हंती हंत। रंत दंतन धरि दंती ॥
मनु मराल लै चित्त। दंत मुरलाल रुलंती ॥
धर बोल परै सुरतान नग। पूज पुट्टि तें पुट्टि बर ॥
दल ढुंढि फिरावन एक दल। ग्रह्यौ सोहि गोरीहु श्भर ॥
छं० ॥ ३४० ॥

पुंडीर की पैज का पूरा होना।

धीर वचन सुनि साहि। दिष्ट मरदां बिष जोरन ॥
धीर तक्कि सुरतान। साहि तक्के उन तोरन ॥
ठेल्लि गज्ज हय पत्ति। अश्व ठेल्यौ पुंडीरं ॥
कढ्ढि वंक सो तेग। हन्यौ गज सीस सु बीरं ॥
निह टीव बींज वद्दल विहर गज्ज परिग गजपति कहिय ॥
हय कंध डारि अह्यौ असुर। पैज पुंडीर प्रमान किय ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

पुंडीर के पैज निर्वाह की बधाई।

भुजंगी ॥ गह्यौ साहि हथ्थें जु पुंडीर रानं। कहै स्हर सामंत पैजंप्रमानं॥
हन्यौ एक गज जूह कोटं प्रमानं। कहै देव देवं जु भारथ्थ जानं॥
छं० ॥ ३४२ ॥

कहै चंद वत्तं समंदं रहानं। तहां चंद स्हरज्ज कित्ती भपानं ॥
अश्वनी कुमारान वासी कहानं। जिसो पथ्थ पंडीर जोधं रचानं॥
छं० ॥ ३४३ ॥

कहै चंद कित्ती सु वेली भपानं। रहै झिल्लि मेच्छं सुरत्तान सानं॥
जिते राव चावंड सद्दी अभानं। अहो धीर पुंडीर पैजं वखानं॥
छं० ॥ ३४४ ॥

उवं षंड हथ्थं रुधी धार पानं। हिसं जा समानं जु सीहं पलानं।
कियौ स्वामि कै काज पैजं प्रमानं। * * छं०॥३४५॥

कवित्त ॥ नव सें जहां सिलार। पास ठट्टे हंमीरह ॥
एक लाष साहन समुंद। चवकोदह भीरह ॥
बेद लष्प तरवारि। सघन नेजा पसरंतह ॥
अट्ठ लष्प गुर धार। मेघ जिम भ्भरवर संतह ॥
पुंडीर राय कालह सरिस। भिन भुअंग चित्तह भन्यौ ॥
बीरंग वंस चंदह तनौ। साहि गह्यौ हथ्थी हन्यौ ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

शाही सेना का सब रखत छोड़ कर भागना।

सिंधु सहाव उप्परह। जैत संग्रास धाम रन ॥
छच दंड वर चमर। दंड छंडिग सु गंध घन ॥
तुरस तोरि मवरिय सरोरि। रवरिय दल वद्दल ॥
जनु निदंत दच्छिलिय। पाइ ठिल्लिग सुभट्ट पल ॥
मुनि नयन गयन लग्गिय अगनि। पल पलाय गोरिय सयन ॥
सो सद्द वद्द दस दिसा हुअ। गह्यौ गह्यौ बुल्लिय बयन ॥छं०॥३४७॥

शहाबुद्दीन के खवास सेरन का घर पहुंचना और उस की स्त्री का उसे धिक्कारना।

बिय षवास सेरन सु नाम। गोरिय गयंद कुल ॥
तिहि सु सत्त जोरू सु व्रत। रोचि निय भ्रम्म बल ॥
सय सिंदू कुल परह। ताहि दिट्ठो गज कन्ना ॥
एंन पानि पति साहि। हाथ असहा वह बन्ना ॥
उच्चार भार बुल्लिय बयन। निय जुबद्दि पति साह तहां ॥
आअमहार कुच भारवर। सुनित स्वामि संसार कहां[1] ॥
छं० ॥ ३४८ ॥

(१) ए.-कज-कृ.-कय।

सेरन का उत्तर देना कि मैं तेरे मारे लौट आया हूं अच्छा अब शाह को छुड़ा कर तब रहूंगा ।

से पावस अभ्भरिय । गिरिय घेरिय जलु सुक्के ॥
स्वासि संच वरषंत । फेरि हिंदुत्र दल लक्के ॥
तुव लेहिय देहिय निवाह । किं जास कोह दह ॥
पुनि मुद्दौ सुलतान । हाउ जहां भाउ ग्रास ठह ॥
संजाह लाज सक्रक्कह स्वनि । स्वन सुष्प देषै सरद ॥
कास तरुनि करुनिय करन । उज उड़ाय सुक्किय गरद ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

पुनः स्त्री का कहना कि स्वामी को सांकरे से छोड़ कर घर का स्नेह करने वाले सेवक का जीवन धिक है ।

ताइय तुह कामिय सु काम । कामनिय काम रत ॥
अप्प ध्रंस तजि स्वामि । ध्रंस छंडौ सनेह हित ॥
आय देह संदेह । देव देवन संचारहि ॥
आय धार वजि सार । मार मारन मन हारहि ॥
अंजिसिय हंलिय अंतर गलिय । ससिय सद्द उद्दर धसिय ॥
सासुद्द दुद्द दोजिगन चलि । उर अंकुस फेरिय रसिय ॥
छं० ॥ ३५० ॥

सेरन का युद्ध की विषमता का वर्णन करना ।

कर क्कस कारिवार । सूर वद्दल दुति छुट्टिय ॥
परत भोमि रोसनिय । सस्च पुट्ठी अलह फुट्टिय ॥
स्वरि दवरि हिंदुअ । नरिंद अत धरयं सुरतानह ॥
परि पारस पुंडीर । हथ्थ देपिय सु विहानह ॥
हहकारि हक्कि वोल्यौ सु वर । सु सत्र मुंकि सुरदार भय ॥
उन देव धीर चंदह ननौ । मनों सिंघ दष्यौ जु चय ॥
छं० ॥ ३५१ ॥

सेरन का कहना कि शाह के छुड़ाने का भार वैजल खवास पर है।

चष दिष्पिय सक्क सिंघ। सेर अंमह सुरतानह ॥
कर कढ्ढिय जमदढ्ढ। वढ्ढ वढ्ढन तुरकानह ॥
सवन उंच तिहि नेज। सेज उच्छंग उछारिय ॥
जनु कि सिंघ सावंग। उढ्ढ डंमर उप्पारिय ॥
उर करिर सुट्ठि दिट्ठौ दुअन। सम छुट्टत सुरतान कह ॥
विज्जल षवास छप्पर गलसु। गलग ढलगि भूमिय सु वह ॥
छं० ॥ ३५२ ॥

किन्न कंक चहुआन। कंक महमंद सवन्निय ॥
ठिल्लिग ठट्ट उट्ठाय। कोट बज्जे बर बन्निय ॥
परे सत्त सें मंत। दंत अंतिय आल,झिझय ॥
जनु कि केलि बिन पोन। बेलि बंकिय बलि वुझि,झय ॥
संग्राम धाम धुंधर धरनि। धरनि पहर बज्जिय लहरि ॥
ता पच्छ जाम जद्दों सुरन। अवसि मेव उत्तरि विवरि ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

उत्तर वै सुरतान। बंधि धीरह धर नंषिय ॥
सुर नर गन गंध्रब्ब। चंद बंदिय सद भष्पिय ॥
भग्गा भर सुरतान। आनि बरतिय चहुआनं ॥
कासमीर ढिल्ला पहार। ठट्टा मुलतानं ॥
जित्ता जुवान सोजेस सुअ। दुमसि बज्जि बज्जे इहां ॥
जै जया सद्द आयास भो। सु कविचंद छंदे जिहां ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

नीसानी ॥ नेजे नंनौं सेरवान धरधार उपन्ना।
तिस का हथ्थ विहथ्थ वान बघघां बर जन्ना ॥
तिस कै कुंडल चष्पवान नहि दिठ रहन्ना।
पाई पूना धंप देह दुहरी भर यन्ना ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

जालै छुट्टा इक्क माइ बोरह विरुझंना।
दूनै झूझ अलूझ्झि झया हिंदू तुरकन्ना॥
विरष बोल उठ्ठाइआ जाने थुतिकंना।
हो अलिधीर दुराइया सेरन बर बन्ना॥ छं०॥ ३५६॥

जैतराव और तत्तारखां का युद्ध। तत्तार खां का मारा जाना।

कवित्त॥ घरिय पंच पामार। जैत जग हथ्थ उहन्ना॥
है सो है गै सो गयंद। नरों नर हथ्थ निहन्ना॥
निहसि निहसि झन झनिय। षग्ग षग्गा षग भग्गा॥
कट्टारिय कट्टारि। मार छुलिका छुलि जग्गा॥
है कंप हक्क जूटा सु घट। कुघट कटार कटंत घट॥
तत्तार षान जुरि जैत सों। निहसि नियाहि निहंद हट॥
छं०॥ ३५७॥

परयौ षेत तत्तार। षेत जैतह गल लग्गिय॥
उभय सहस पट्ठान। सहस पामार स भग्गिय॥
चंपि राव चामंड। अगि अगिवांन उचाये॥
जादों षान उभारि। वाय बादल उट्ठाये॥
षंगिय सु पद्य दाहर तनौ। घर विरद्द छज्जै मदह॥
दाहंत दाह दुल्लह मरन। जिहि सु हिंदु रष्षीह दह॥
छं०॥ ३५८॥

विजय की सुकीर्ति के भाग।

पंच भाग पामार। भाग चामंडराय तिय॥
उभय भाग जद्दों जुवान। जैपत्त हथ्थ लिय॥
एक भाग प्रथिराज। अद्ध भागह वरदाइय॥
पाव भाग पज्जून। राव मंडी मरदाइय॥

भग्गाह अट्ट पुंडीर सुज । जिहि सु साहि सद्ध्यौ समर ॥
धस्सो जयंत विस आध अध । लिखि कवित्त छद्ध्यौ अमर ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

दूहा ॥ राय पुंडीर सु झूझ जिति । ग्रिह आयौ प्रथिराज ॥
डोला पंच पचीस रजि विय आदीत विराज ॥ छं० ॥ ३६० ॥

कवित्त ॥ गहिव साहि करि पैज । जुद्ध जित विग्रह पत्तौ ॥
षेटति पब पाषंड । षेद सामंत निघत्तौ ॥
रिन रवद्द जित्तिग । नरिंद बाजे वज्जाने ॥
नछि हिंदू कढ़ितेग । सद्द वज्जे सहाने ॥
दिष्पहि न राज सुरतान कहुं । सक सहाव षुरसान पति ॥
पूंछत बत्त भग्गो भिरा । रह्यौ न जुध रोह्यो [१]रुसति ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

मल्लिक षान षुरसान । हनिग लष षग्ग धीर वर ॥
गज मै मत्त संघारि । दबटि दल मथ्यौ सवलकर ॥
लियौ साहि गहि हथ्थ । सथ्थ देषत सुरतानो ॥
षां ततार रुस्तमां । सीस धूनहि विलषानो ॥
पुंडीर सहस तिय षेत रहि । गह्यौ साहि गयौ धीर घर ॥
पुंडीर चंद नंदन रनह । मेछ गह्यौ चालित धर ॥
छं० ॥ ३६२ ॥

दूहा ॥ सहिय संगि सनमुष्प सर । पानि ढरि सुलतान ॥
जैत पत्त रावत्त हुअ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

वैजल का धीर से कहना कि शाह को छुडा दो और धीर का उत्तर देना कि पांच दिन ठहरो ।

चामर छच रपत्त रन । ए लुट्टे सब कोय ॥

(१) को. हसति ।

वर षवास वैजल कह्यौ। धीर निहोरैं तोहि ॥ छं० ॥ ३६४ ॥

कहै धीर बैजल्ल सुनि। पंच दिवस नल कथ्य ॥
गुदरो मति राजान सों। साहि ग्रहन सें हथ्य ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

गुरि न गयौ गोरी घरह। पत्यौ न षेत प्रमान ॥
उकति बंधि प्रथिराज चित। धीर ग्रह्यौ सुरतान ॥
॥ छं० ॥ ३६६ ॥

बैजल का पृथ्वीराज से शाह के छोड़ जाने की विनती करना।

करि मालम बैजलि सु तब। समह राज चहुआन ॥
पुरिन गयौ गोरी घरह। धीर पकरि सुरतान ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

चौपाई ॥ इह सुनि राज अप्प ग्रह आइय। कहिय धीर सों बेजल धाइय ॥
पंडौ काटि आय षावासह। तबें बेजला बोल्यौ तासह ॥
॥ छं० ॥ ३६८ ॥

धीर का कुपित होकर बैजल का मारने के लिये दपटना।

इह सुनि क्रोध धत्यौ मन धीरह। बरजी बत्त कही क्यों हीरह ॥
मारन असि कड्ढी षावासं। प्रथीराज बरज्यौ तब तासं ॥
॥ छं० ॥ ३६९ ॥

पृथ्वीराज का धीर की वीरता की प्रशंसा करके उसे समझाना।

कवित्त ॥ गरजे बे संभरि नरेस। अरि विग्रह संज्यौ ॥
पुरनि ऐह ल,क्यौ। अभ्भ अभनी जु छंज्यौ ॥
चंद तनौ पूरन सु चंद। तिहि ठां संचरयौ ॥
मारे सत्त मयंद। धनि सु धनि धनि तहां करयौ ॥
दुहु दलन वीच मच्छर कह्यौ। हाक्यौ हन्यौ पचारयौ ॥
सुरतान साहि साहाव दी। गहिव धीर रन पारयौ ॥ छं० ॥ ३७० ॥

सुंडा डंड प्रचंड। मुंड षंडनौ परक्यौ॥
सिल्लारां असि तेज। वीज उज्जलौ झलक्यौ॥
गहि गोरी गंजयौ। गहिव भुञ बल उप्पार्यौ॥
राय सरिस सामंत। पूरि धर रुहिर पषार्यौ॥
झगरौ जु प्रभन्न्यौ जेत करि। तातन टट्टर अभय हुअ॥
सौ असिवर सज्जत वे जलहि। धीर लज्ज लग्गै न तुअ॥छं०॥३७१॥

धीर का कहना कि इसने मेरे मना करने पर भी क्यों कहा।

स्वामि बचन बिन सुनै। कान लगि कहि इह वत्तिय॥
तूं पामर बरजयौ। पंच दिन कथ्थ न कथ्थिय॥
जैतराव चामंड। राव जद्दव जामानिय॥
कूरंभा पज्जून। गरुअ गुज्जर रा मानिय॥
सनमान राज चहुआन दल। भरत विनोद मंडत रसन॥
तिहि रीस सीस पामर पिसुन। करौं षग्ग मग्गह असन॥
छं० ३७२॥

पृथ्वीराज का पुनः धीर का समाधान करना।

चिपति न किय तो षग्ग। हनत कर करिय चन्दसुअ॥
चिपति न भय गोरिय। नरिंद सुलतान मंत धुअ॥
चिपति न ढल्ले लाल। मल्लवाहन उब्भारत॥
चिपति न गज गुरइंद। बिंत उप्पर उप्पारत॥
चिपतौ न तुअ पुंडीर मुअ। सुरतानह बंधत बसन॥
बंगिय बखान वैजल विजल। न करि बग्ग मग्गा असन॥
छं०॥ ३७३॥

षग्गझार परिया। चंद वत्ता हसि सद्दे॥
में बरजिय दिन पंच। पीय पामर कह बद्दे॥
पाउ लागि प्रथिराज। वाह दीनी प्रथराजं॥
दसहजार है वरव। दंडि छंडिय सुलतानं॥

दिट्ठाह दिट्ठ ऊंची करी। गय गोरी ग्रब्बह गरिय॥
आसन मुछंडि उभ्भै हुऐ। करि दुवास चंदह धरिय।

छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शाह को छोड़ देना और शाह का लज्जित होकर राजा को धन्यवाद देना।

दंड सीस सुलतान। तीस गजराज मत्त मद॥
पंच सत्त एराक। सुतर लष तीन उनंमद॥
वहु विभूति चतुरंग। डंड मान्यौ पुरसानी॥
वर गोरीं सुलतान। बंधि मुक्यौ चहुआनी॥
आजान बाह संगह न्नपति। दंड काज सथ्यह दियौ॥
षुरसान षान गोरी न्नपति। सुबर साहि सथ्यह लियौ॥

छं० ॥ ३७३ ॥

पाय घालि प्रथिराज। बांह दीनी सुलतानं॥
करि सलाम तिहुं बार। धरिय अंगुरिय तुरकानं॥
तुम उमाह दुग्गाह। बार बारह चढ़ि आवहु॥
वज्रहीन दुअदीन। किया अप्पना सु पावहु॥
नन करहु सह जुग्गिनिपुरह। बांधि सामंतह मुक्किया॥
वारह सुवार आवंत इहां। जाय सुषासन सुष्पिया॥

छं० ॥ ३७४ ॥

शाह को छोड़कर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ रस रंग में प्रवृत्त होना।

पकरि छंडि सुलतान। दंड पुंडीर समप्पिय॥
ता पच्छै प्रथिराज। केऊ दिन तप्पन तप्पिय॥
आनी पंग कुंआर। रूप धरनी धर धारह॥
जिन लीने सामंत। नाथ वरूनि बरवारह॥
मत्तान पत्त सूता रहें। पच लिहंदे देव दिन॥
उग्राह वाह कविचंद कहि। सत सु छुट्टै स्वामि रिन॥

छं० ॥ ३७५ ॥

सामंतों और पृथ्वीराज का धीर से कहना कि तुम शाह को छोड़ दो।

छनुफाल ॥ प्रथिराज सामंत सब्ब । पुंडीर धीरज्ज तब्ब ॥
तू छंडि गोरी साहि । मो इहै बोल निबाहि ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

तूं सर्ब सामँत सूर । प्रथिराज थप्पिस पूर ॥
तूं करै सब दिन पान । मन धुर मिष्ट बानि ॥ छं० ॥ ३७७ ॥

उञ दिष्टि मंडिय राज । कनवज्ज देषन काज ॥
उन राज काज सुभग्ग। कलहंत कास समग्ग ॥ छं ॥ ३७८ ॥

तुञ छंडि मंडि सुभेद । हिंसार कोट सुभेद ॥
पुंडीर छंड्यौ साहि । प्रथिराज सामँत मांहि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

षंद राज सुमंडि । चौवार पहुमि सुषंड ॥
उञ मंच राज विनास । कलियंग छत्त सुतास ॥
छं० ॥ ३८० ॥

इय मंडि कीरति चंद । तिहि गज्जनै सुत चंद ॥
चिहुं चक्र दे सजि धक्कि । जिहि चन्द सूरज सष्य ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

जिहि पातिसाह सुसाहि । तो धीर धन्नि सुमाय ॥
* * * * * * * ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुमने शाह को किस तरह पकड़ा॥

कवित्त ॥ असिञ लष्य साहन ससुह । दस्स सै गयंदह ॥
धरनि धसय उड्डसय । बोल नहि गुर सुर छंदह ॥
तहां तिमीर झंमंभि । गोल हबसिय हय हंकहि ॥
तहां धानुक पाइक्क । अप्प अप्पन पय तक्किहि ॥
तहांति मेह गज्जहि असुभ । मनो घोरि पावस रह्यो॥
इम कहत साह पुंडीर सों । किम सुसाहितें संग्रह्यौ ॥
छं० ॥ ३८३ ॥

धीर का रण का सब हाल कहना और पृथ्वीराज का शाह को सिरोपाव पहिनाकर सादर गजनी को विदा करना।

चोटक ॥ जहां हिंदुअ साहि लरंत रिनं। तहां बान परै बरसा सुधनं ॥
जु करै किरिवारिय हिंदु अमेछ। लहंगिय बालक षेलहि एछ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

परे गुरजे रिन गाजरि सूर। सजे रन साहि सुहिंदुअ पूर ॥
तेहँकि हमीर किए इक टौर। गयंदह्हि साहि गयौ गजि जोर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

यहीं परिढिल्लिय साहि करी। करिवार कुंभस्यल बीज भरी ॥
तबही धर धुक्कि गयंद गयं। लिय साहि गयंदति षोचि लियं ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

इय लाज प्रताप तें राज रही। गजनेस असंभिय ईस गही ॥
विकसे प्रथिराज पुंडीर हियं। अदभूत पराक्रम धीर कियं ॥
छं ॥ ३८७ ॥

इम जंग जहां रन सोर हुअं। नह आवन पास लहे सुतुअं ॥
तब जंपिय धीर धरन्नि धुअं। न्त्रिप संभरि जंग प्रताप तुअं ॥
छं० ॥३८८॥

तब साहि हजूर पुंडीर कियं। भरि अंक प्रथीपति मेछलियं ॥
बहु पुच्छिय प्रीति समाजि तदं। तुअ दिष्पत हिन्दुअ सुष्प हदं ॥
छं० ॥३८९॥

पहिरावनि साहि करीं प्रथिराज। दिये तब अंबक बाजन बाजि ॥
दिये सत तीन तुरंग सुरंग। करिवार कटार जरे हिम नंग ॥
छं० ॥३९०॥

पहिराइय साहि दिवंगम वस्त्र। दिए पटतीस अनूपम सस्त्र ॥
षट भोजन भाव सुभष्य लियं। जु सुगंध अनेकति पूर कियं ॥
छं० ॥ ३९१ ॥

इमयं सहि मानिय पुर भयं। पहचाइय कोस इकं न्रपयं॥
इस जित्तिय जंग सुदिल्लि नरेस। सामंतन मद्धि पुंडीर थपेस॥
छं० ॥ ३९२॥
करै सुष राज बिलास सँजोग। हिमवंत महारिति भोगहि भोग॥
* * * * * * छं० ॥ ३९३॥

कबित्त॥ धनि सुधीर तुअ मात। साहि गजनी गहिय कर॥
गयपानी मुलतान। आनि संभरि ढिल्लियधर॥
उतरि अहं चावंड। राउ जैत सीस मह सब॥
बढे उरह बल राज। कुसुम सर चंद कित्ति तवि॥
जंपिय सु राज प्रथिराज तब। बोल धरी जस पावयौ॥
फिरि चलत मग्ग गज्जन पुरह। राज साहि पहरावियौ॥
छं० ॥ ३९४॥

जैतराव और चामंडराय का पृथ्वीराज से कहना कि धीर को शाह के पकड़ने से बड़ा गर्व हो गया है।

साहि डंड डंडयौ। दंड पुंडीर समप्पिय॥
साहि समंदन मंगि। मुष्प राजनतं अप्पिय॥
गज्जनेस गोधीर। गयौ चावंड जैत लषि॥
हास अग्र किय राज। वक्र मुष भौंह नंचि चष॥
असपत्ति सेन भंजिय न्रपति। गहन ग्रब्ब धीरह वढै॥
चलि सकट मग्ग नीचें भषन। वहन भार गरुअत बढै॥
छं० ॥ ३९५॥

पृथ्वीराज का धीर सहित समस्त पुंडीर वंश को देश निकाले की आज्ञा देना।

करिय रीस प्रथिराज। धीर सुअ नयर निकारिय॥
बाल वृद्ध पुंडीर। छंडि नयरह नर नारिय॥
सहस पंच पुंडीर। जाय लाहौर सपत्त॥

सहनिवास तह सजिय । मंडि सबदिन बलि मत्त ॥
पट्टइय दूत धीरह दिसा । लिपिय पत्र कागद करह ॥
सुनि बत्त चित्त धीरह धनी । गयौ सिंधु साहिब दरह ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

देश निकाले की आज्ञा पाकर धीर का राजाओं की रीति नीति को धिक्कारना ।

दूहा ॥ मन चिंतन धीरह करै । इह न्रप पुब्बह रीति ॥
कोटि जतन जौ जोरिय । न्रपति न होवै मीत ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

क्लीव हीक बंधि रज्जनह । मद्दि पान तत चिंत ॥
तिय को काम न उपसमै । न्रिपति न काहू मीत ॥ छं०॥३९८॥

अहि पय पान पिवाइये । जतन करे नित नित्त ॥
जब पग चंपै तब डसै । त्यों न्रप अवगुन चिंत ॥छं०॥३९९॥

कवित्त ॥ सइसव तें न्रप सेर । करत वेलानह लग्गै ॥
जो भ्रित सेवा करै । न्रपति कै पहुरै जग्गै ॥
अप्प राज न्रिप ताहि । रीझि धन धान्य समप्पै ॥
सांमि ध्रम्म धन धरै । काज पर सीसहि अप्पै ॥
यों करत वरत दुज्जन विचें । फारि फोरि दस दिसि करै ॥
संजुत्यौ कुलफ मिलि कुंचिका । त्यों न्रप मन जू जू परै ॥
छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ राज वेश्या अगनि जम । अतिथि सु जाचक वाल ॥
पर दुष ए पावे नहीं । वहुरि गांव कुठवाल ॥
छं० ॥ ४०१ ॥

सेठ सुद्रस्सन मुक्रमनि । ए न्रप राजन थंभ ॥
जौ न्रप इनके ना भए । राप नवन के अंभ ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

अरिल्ल ॥ समौ विचारि वोलिये वानि । दिट्ठी करिय अदिट्ठी छान ॥
अप्प अधीर ग्रह गमनम कीजै । हीर भगें न्रप के न रहीजै ॥
छं० ॥ ४०३ ॥

दूहा ॥ साँप सिंह न्रप सुंदरी। जौ अपनै वसि होइ ॥
तौ पन इनकौं अप्प मन। करो विसास न कोइ ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
कबहूँ वक्र अवक्र कब। कब पंडौ कब अस्त ॥
राजा गति दुजराज सम। प्रकति निवाहन सस्त ॥ छं० ॥४०५॥
न्रप अंदर सोचै नहीं। कह्यौ सुनै सदभाव ॥
दुरजन हित जाने नहीं। अपनै अपनै दाव ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
औगुन भ्रत अप्पै मनै। न्रप के भाषें नांहि ॥
सो न्रप भ्रम बेदन कह्यौ। न्रप परमेसर आहि ॥छं०॥४०७॥
बिष्प घुटी माता दियै। बेंचि पिता लै दाम ॥
राजा जो सरवसु हरै। नहिं सरनागत ठाम ॥ छं० ॥ ४०८ ॥
माता सरन न मुक्कियै। पिता सरन मन मानि ॥
सेवक औरह चिंतइ। विना सरन राजानि ॥ ४०९ ॥

यह समाचार पाकर शाह का धीर को जागीर का पट्टा देना और धीर का उसे अस्वीकार करना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त सुलतान। धीर पट्टौ लिषि तथ्थह ॥
सहस अट्ठ ग्रामह सुदेस। धाभ देसह दह पत्तह ॥
सहस पान सुलतान। धीर निज हथ्थ समप्पत ॥
कही धीर सुनि साहि। राज प्रथिराज सु तप्पत ॥
जो अबर पंच सीसह धरौं। ईस कहां उजो अवर।
उग्गमै दिवाइर पच्छिमह। सौ सेसह छंडे सु धर ॥
छं० ॥ ४१० ॥

शाह का धीर को ढिल्ला की बैठक देना और धीर के कुटुंबियों का लाहौर लूट लेना।

धीर निवेसन साहि। दयौ ढिल्ला पहरत्तव ॥
अरु है ठट्टा ठाम। कियौ आदर अनंत सव ॥
तब सु पत्र लिषि धीर। सोइ कर दूत समप्पिय ॥
तबहिं दूत लाहौर। पत्र पावस कर अप्पिय ॥

बंचिय सु पच पुंडीर तब। लूटि सहर छंड्यौ सु बर॥
पट कूर कनक केसरि अगर। हय कपूर नग मुत्तिनर॥
छं० ॥ ४११ ॥

दूहा॥ हीर चीर करपूर हय। मानिक मुत्ति अमोल॥
लुटि लाहौर पुंडीरियां। उढ़ि कंचन वैमोर॥ छं० ॥ ४१२ ॥

सब पुंडीरों का ढिल्ला को जाना और धीर का उनको लाहौर लूटने के लिये धिक्कारना।

कवित्त॥ हरिय रिद्धि बर नयर। जाय ढिल्ला सापत्तं॥
तहां निवास निज करिय। सब्ब पुंडीर समथ्थे॥
आयौ तथ्थह धीर। सुज्यौ लाहौर सु लुथ्यौ॥
करि पावस समकोय। अप्प हथ्थह हिय कुथ्यौ॥
उथ्यौ सु कोपि करिवार सजि। बीर भद्र पुंडीर लषि॥
रन सिंघ सूर धीरन धरहि। कोप समायौ तीयरषि॥
छं० ॥ ४१३ ॥

दूहा॥ तहां निवेस पुंडीर किय। है गै सथ्थ समथ्थ॥
तहां निवेसह अट्ट दिन। मास सत्त मुग तथ्थ॥ छं०॥४१४॥

पृथ्वीराज का धीर को बुलाने का पत्र भेजना।

तब धीरह कग्गर लिष्यौ। प्रथीराज चहुआन॥
हम धर आगर धीर तूं। आनौ तुम करि मान॥
छं० ॥ ४१५ ॥

धीर का राजाज्ञा को स्वीकार करना।

वंचि धीर कग्गर न्नपति। सिर धरि करि तसलीम॥
औछव आदर वहुत किय। उपजि हरष सम सीम॥
छं० ॥ ४१६ ॥

कवित्त॥ करन साज मन चिंति। चल्यौ हय लेन पुंडीरह॥
कछुक सोन सामानि। हुए तव चिंतै धीरह॥
भावी गति होइ है। कहा वह वुद्धि विचारं॥

हुं पहुँचो न्वप पाय। तौ अप्प मनों चित सारं ॥
सेँ अट्ठ अश्व चहुआन घौ। और पुंडीर न बढ्ढिहो ॥
पै लग्गि राज अपराध पमि। पाय पराक्रम सिढ्ढिहो ॥
छं० ॥ ४१७ ॥

चल्यौ धीर कंगुर दिसह। उर धरि जालप जत्त ॥
जैतराव चामंड मिलि। कही राज सोँ वत्त ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

धीर का सौदागरों के घोड़े खरीदना।

कवित्त ॥ सहस अट्ठ है सथ्थ। सहस पंचह सौदागर ॥
आय सपत्ते तथ्थ। धीर दीनौ आदर वर ॥
मास एक है परषि। सहस दूनह हय रष्षै ॥
और देस में अश्व। लिए अपजानि परष्षै ॥
दीए सु द्रव्य मुह मंगि बर। जाति भांति लष्षन सहित ॥
रवि रथ्थ जानि उच्चिश्रवा। कै अमोल मोलनि ग्रहति ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घोड़ों की उत्तमत्ता का वर्णन।

इसे अश्व अंमोल। लिऐ पुंडीर चंद कहि ॥
ग्रम्भ जंच अन चढ़े। जिसे दिए बह्म जग्य महि ॥
मिच सेन गंधर्व। लिये अंतेवर प्रब्बल ॥
नदिव नास झूलंत। आय ऊपर पंडव चलि ॥
अनभूत जुद्ध अन चिंति परि। पथ गँध्रब कों बंधि कसि ॥
छंडाय जुधिष्ठिर पंचसय। लय पवंग ते पेस कसि ॥
छं० ॥ ४२० ॥

उन्हीं सौदागरों का गजनी घोडे लेकर जाना और उक्त समाचार सुन कर शाह का कुपित होना।

सौदागर गज्जन सपत्त। गोरी सहोब मिलि ॥
हय निरषत पतिसाह। सोइ रष्षे जु अप्प कलि ॥

मिलि ततार षुरसान। सज्जि ममरेज सु मत्तिय ॥
सुनौ साहि साहाब। सु बर है धीर सपत्तिय ॥
कुप्पयो साहि इह वेन सुनि। सब सौदागर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

दूहा ॥ अर्द्ध साथ दै सथ्थ हय। बहुराए पुंडीर ॥
अस्व अमोलक राज कों। लेन चल्यौ अग्रधीर ॥ छं० ॥ ४२२ ॥

कवित्त ॥ अस्व लैन गय धीर। अटक उत्तरि जाहँनवि ॥
अद्ध साथ पुंडीर। सथ्थ लै सव्व षान नव ॥
ढुंढि थान षुरसान। तुंग ताजी बहु लिन्नौ ॥
भैरू षान बलोच। भेद षुरसान सु दिन्नौ ॥
लग्गाए दूत गोरी सुबर। बर पुंडीर सु यट्टयौ ॥
बर भेष साजि सौदागिरह। गोरी सेन परट्ठयौ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

शाह का सौदागरों के घोड़े छीन लेना और उनका भाग कर धीर की शरन लेना।

लै सोदागिर द्रव्य। जाय गज्जनै सपत्ते ॥
मिले साहि साहाब। बत्त कहि कहि बिव रत्ते ॥
मिले ततार षुरसान। जागि ममरेज सु मत्तिय ॥
कह्यौ साहि सों जाय। धीर दे है सुधि पत्तिय ॥
कोपियो साहि साहाब सुनि। सब सौदागिर गहन किय ॥
सुनि बत्त भग्गि सौदागरह। जाय धीर सब सरन लिय ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

धीर का शाह को पत्र लिखना।

दूहा ॥ धीर सु लिष्यौ साहि सों। सरन मुझ्झ सब आइ ॥
देहु द्रव्य सु है सहस। न्याय रीति सब राइ ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
तुम इन के है मोल ले। अरु ताकें ग्रह बंधि ॥
ऐसी तुम्है न बूझियै। वेद कुराननि संधि ॥ छं० ॥ ४२६ ॥

शाह का मीरा खोखंद के हाथे घोड़ों की कीमत भेज देना और धीर का सौदागरों को राजी करना।

मीरां षोद मसंद अलि। तिन हथ्थह दिय द्रव्य ॥
पठए साह सु धीर सम। कनक बज्ज है सब ॥ ४२७ ॥

अली मसंद ससप्पि सह। द्रव्य धीर हथ मोइ ॥
धीर समीप बुलाइ दिय। दांम सौदागर दोय ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

आदर धीर सु भीर किय। सब सौदागर सथ्थ।
कालन मीर सु धीर सम। कहिय साहि सब कथ्थ ॥
छं० ॥ ४२९ ॥

गजनी के राज्य मांत्रियों का धीर पर कूर चक्र रचना।

राषि धीर सौदागरह। उभय मास गय जान ॥
तब षुरसान ततार मिलि। कियौ मतौ कहि सामि ॥ छं०॥४३०॥

सौदागरों को लिख भेजना कि धीर तुम्हें मार कर तुम्हारा द्रव्य छीन लेगा॥

करि सुमंत कग्गर लिषिय। पठयौ कालन मीर ॥
अरे मूढ़ तुम द्रव्य कज। हनन सुन्यौ है धीर ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

जो हम तुस एकंत मिल। तो मारहिं पुंडीर ॥
दीन कौल पैगंबरी। हम तुम बंधै धीर ॥ छं० ॥ ४३२ ॥

सौदागरों का शंकित हो कर परस्पर सलाह करना।

मालन मीर कमाल कर। दियौ सु कग्गर दूत ॥
बंचि सुभर भय भीत भय। मंत परट्ठिय नूत ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सौदागरों में यह मंत्र पक्का होना कि धीर को मार डाला जाय।

कवित्त ॥ कालन मीर कमाल। मियां मनसूर सु मन्निय ॥
सेपन सूब निजांम। फते मषत्यार सु पन्निय ॥

सबै मंचि मिलि रचिय। धीर अप्पां सह मारै ॥
ता पहिले आपन्न। सबै धीरहि संघारै ॥
सुद्धरै काम अप्पां सुबर। साहि सुबर मिलि मारियौ ॥
संघार करै सब्बैं सुभर। जो जुध धीर हँकारियौ ॥ छं० ॥४३४॥

सौदागरों का अपनी मदत के लिये शाह को अर्जी भेजना।

दूहा ॥ मंत प्रपंच जु किज्जियै। लिषि भेजै करि धीर ॥
अटक उतर तेँ सद्धियै। तो नहि विज्जै मीर ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

तब साजिय षुरसान षां। मंत मानि सजि भीर ॥
षां गुज्जर भष्षर अली। षां बहाव चलि मीर ॥ छं० ॥ ४३६ ।

लै कग्गर पतिसाह पै। गुदराई सब बत्त ॥
सौदागर बंदे तुमहि। मिलि भेज्यौ कर पत्त ॥ छं० ॥ ४३७ ॥

शाही सेना के सिपाहियों का गुप्त रूप से सौदागरों के काफले में आ मिलना।

कवित्त ॥ बर सौदागर एक। षान पीरोज सँपत्ते ॥
मिलि आये पुंडीर। हय सु लै करि उनमत्ते ॥
दाग भंजि सुरतान। अटक उत्तरि पुंडीरं ॥
हम वंदे सविहान। साहि हम सज्जय बीरं ॥
सुरतान सुबर चौकी विहर। घात बंधि अप उत्तरै ॥
तो मरन आय दै सथ्थ हम। सुबर सुभट हम उच्चरै ॥
छं० ॥ ४३८ ॥

दूहा ॥ दियौ हुकम गुज्जर भषर। बर बंधे करि तोन ॥
जाय मिलै सोदागिरह। ग्रही आस मिसि मोन ॥ छं० ॥४३९॥

एक वुद्धि करियै जु इह। मत लै वैठहि धीर ॥
चूक करहि सद्दै चलत। तेक सजे करि मीर ॥ छं० ॥ ४४० ॥

सौदागरों का धीर को डेरे पर बुला कर एकान्त में सलाह करना और कालन कमाल का पीछे से पुंडीर का सिर धड़ से अलग कर देना।

कवित्त ॥ तब सज्जिय पट्टान। साहि बड़वत्त उड़ायिय ॥
कालन मीर कमाल। बोल धीरह लै आइय ॥
लै बैठे एकंत। साहि वत्तो भय बुझ्झै ॥
हम आये तो सरन। अबैं गुह्यां कह गुह्ये ॥
उच्चर्यौ धीर गरुअत्तनह। कोय साहि मो सरन हय ॥
नह डरो आज रष्यों तुमहि। जो जम आवै तुम्म जय ॥
छं० ॥ ४४१ ॥

अद्व रयन पल्लानि। अटक सब सथ्थ संपत्तौ ॥
मेछवान करि पंति। धीर रुंध्यौ वल मतौ ॥
चूक चूक संभरी। सब्ब पुंडीर समाही ॥
सबैं सेन आहुट्टि। धीर हुं धीरज साही ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। घाइ पुंडीर अहुट्टि घट ॥
धनि धनि नरिंद बर सद्द हुअ। जिहि पति रष भंजी विघट ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

तब कालन करि कूर। कह्यौ तुम सरन बयट्ठौ ॥
असि लै कालन उट्ठि। आय षिन पुट्ठि निहट्टौ ॥
कढ्ढि तेग असि झारि। सीस उर्ध्यौ धर तुर्यौ ॥
उवै तेक असमाँन। सीस गय सूर न षुर्यौ ॥
निझ्झारि तेक धर ढारि धर। हय कमाल कालन न दुर ॥
सयदून सहि पट्टान रन। इह अचिज्ज अष्पै अमर ॥ छं० ॥ ४४३ ॥

सौदागरों का धीर की लाश गजनी को भेज देना।

पत्ति पहर पुंडीर। जीय पति कै सथ मुक्यौ ॥
धीर धारि ढंढोरि। धार धारनि तन चुक्यौ ॥
जो जानत चहुआन। सोपि कीनो पुंडीरं ॥
तिन दंतिन वर षंडि। जुद्व धर धर करि मीरं ॥

संग्रही लुथ्थि सुरतान पर । सब आहट्टिय राज भर ॥
गोरी नरिंद बाजे बजग । सुबर बीर ढिल्लिय सुधर ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

धीर के बध की खबर पाकर पावस पुंडीर का धावा करना, पठानों और पुंडीरों का युद्ध, पठानों का भागना, पुंडीरों का जयी होना ।

सहस च्यारि पट्ठान । मेलि पुंडीर धारि धर ॥
तत पावस पुंडीर । सुनी बत्तह चवि हरहर ॥
सजि पावस पुंडीर । चढ्यौ कंधहे सुक रष्षै ॥
बीर भद्र नरसिंघ । तेज पुंडीर तरष्षै ॥
लषमसी सेन लष्षांह भरी । रंघर राघ समथ्थरिन ॥
संक्रमे सेल बंधे सुभर । पष्षर सिंघ सुसाजतन ॥ छं० ४४५ ॥

दूहा ॥ अति आतुर पावस गयौ । धाय संपत्तौ तथ्थ ॥
मनों पवन पावस घुरै । झरि लायौ षग हथ्थ ॥ छं० ४४६ ॥

कवित्त ॥ आय संपत्ते सोय । साज ठटे पट्ठानह ॥
हक्कि धक्कि हय नंषि । असंष असिबर उट्ठानह ॥
तेग तार झक्कस करार । कहै मुष मार मार सुर ॥
भगि पठान उसमानि । विमुष जिम झारि हारि भर ॥
सें अट्ठ पट्ठ धर ढर धरिग । जित्ते बर पुंडीर रन ॥
जै जया सद्द आयास हुअ । धंनि धीर धौरष्ष तन ॥ छं० ४४७॥

दूहा ॥ आए पछ्छ पुंडीर सब । मिल्ले भीर लष धीर ॥
विनै सीस सब दून वहि । बधि धर रष्षन धीर ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

जिहि असिवर झरगय ढरिग । जिन रन सध्यौ साहि ॥
सो सध्यौ सोदागिरह । करों ग्रब्ब जिन काय ॥ छं० ॥ ४४९ ॥

धीर की मृत्यु पर पृथ्वीराज का शोक करना ।

चूक तेक तुष्यौ सुसिर । उठि कबंध वेवंग ॥
मिलि चवसह सें मारियौ । गय प्रथिराजह रंग ॥छं०॥४५०॥

बँची पत्र प्रथिराज नृप । मन मंन्यो बहु सोक
हम धर अग्गर धीर हौ । सो पत्तौ सुरलोक ॥ छं० ॥ ४५१ ॥

धीर की मृत्यु का तिथि वार ।

अरिल्ल ॥ भादों सेत चतुद्दसि भारी । बर बर धीर गयौ सुपकारी ॥
मानैं महल ब्रषा रिति राजन । करै न महल भृत्त भर काजन ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

तदन्तर राजा का राज्य काज छोड़ कर संयोगिता के साथ रस विलास में रत होना ।

दूहा ॥ बरषा रिति राजन बिलसि । मिले जानि रति मैंन ॥
देस भूमि भर छंडि दिय । खबरि न है दिन रैंन ॥ छं० ॥४५३ ॥

इति श्री कविचन्दविरचिते प्रथीराजरासके धीर-पुंडीर पातिसाहग्रहनमोषन धीर बंधनो नाम चौसठमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ६४ ॥



विवाह सम्यो लिष्यते ।

[पैंसठवां समय ।]

———:o:———

पृथ्वीराज की रानियों के नाम ।

कवित्त ॥ प्रथम परनि परिहारि । राइ नाहर की जाइय ॥
जा पाछै इंछनीय । सलष की सुता बताइय ॥
जा पाछै दाहिमी । राय डाहर की कन्या ॥
राय कुँअरि अति रीत । सुता हंमीर सुमन्या ॥
राम साह की नंदिनी । बडगुज्जरि बानी बरनि ॥
ता पाछै पद्मावती । जादवनी जोरी परनि ॥ छं० ॥ १ ॥

राय धन की कुंअरि । दुति जमुगीरी सुकहियै ॥
कछवाही पज्जूनि । भ्रात बलिभद्र सुलहियै ॥
जा पाछै पुंडीरि । चंद नंदनी सुगायव ॥
ससि वरना सुंदरी । अवर हंसावति पायव ॥
देवासी सोलंकनी । सारंग की पुत्री प्रगट ॥
पंगानी संजोगता । इतें राज महिला सुपट ॥ छं० ॥ २ ॥

भिन्न भिन्न रानियों से विवाह करने के वर्ष ।

पद्धरी ॥ ग्यारहै वरस प्रथिराज तांम । परनियै जाय परिहार ठांम ॥
पुहकर सुथान जोरी सुकिन्न । नाहर सुषेत परिसुता लिन्न ॥
छं० ॥ ३ ॥

वारमै वरस रा सलख सोय । दिन्नी सुआय इंछनी लोय ॥
आबू सुतोरि चालुक्क गंज्जि । किन्नौ सुव्याह परिभाव भंजि ॥
छं० ॥ ४ ॥

तेरहें बरस दाहिमी व्यहि । दिन्नी सुवहिन चामंड चाय ॥
चवदमै बरस प्रिथिराज लोय । व्याही सुसुता हम्मीर सोय ॥
छं० ॥ ५ ॥

हाहुलि हमीर सुतिलक्क दिन्न । कन्या सुव्याहि उद्धार किन्न ॥
पन्द्रमै वरस चहुआन वीर । बडगुज्जरि परने अति गहीर ॥
छं० ॥ ६ ॥

राम साहि की सुता जानि ; व्याहे सुन्नपति अति हेत मानि ॥
सोलहैं बरस सूबा सपेस । व्याहे सुजाय पूरब्ब देस ॥
छं० ॥ ७ ॥

गढ़ समद सिषर जादव पजाय । लिन्नी सुतारूनि विहंसेन षाय
सत्तमै वरस हुआन साजि । राय धन की सुता गिरदेव गाजि ॥
छं० ॥ ८ ॥

अठारमैं बरस चहुआन चाहि । कछवाह वीर पज्जून व्याहि।
इक मात उदर धनिगरभ सोय । वलिभद्र कुंअर जापैं सदोय ॥
छं० ॥ ९ ॥

बरसें गुनीस पुंडीरि व्याहि । चन्द की सुता सुष चन्द चाहि ॥
बीसमें बरस चहुआन धारि । ससिबरता ल्याये बल बकारि ॥
छं० ॥ १० ॥

इकइमें बरस संभरि नरेस । हंसावति ल्याये गंजि देस ॥
बाईसैं बरस प्रिथीराज पूर । सारंग सुता व्याहे सुसूर ॥
छं० ॥ ११ ॥

छत्तीस बरस षट मास लोय । पंगानि सुता ल्याये सुसोय ॥
रट्ठौरि ल्याय चौसठि मराय । पंचास लाष अरिदल षपाय ॥
छं० ॥ १२ ॥

इति श्रीकविचन्दविरचिते पृथ्वीराजरासके प्रथिराज विवाह नाम पैंसाठमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६५ ॥

बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

[छाछठवां समय]

रावल समर सिंह जी का स्वप्न में एक सुन्दरी को देख कर उससे पूछना कि तू कौन है और उसका उत्तर देना कि मैं दिल्लीराज्य की राजश्री हूं ।

दूहा ॥ विलसत सुष दिन प्रति नवल । चित्रकोट चतुरंग ॥
सुपनंतर लषि सुन्दरी । सेत वस्त्र मन भंग ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ प्रथा कंत करि प्रेम । जाम इक रही रजन्निय ॥
निद्रा रावर समर । पेषि चहुआन अवन्निय ॥
उज्जल वस्त्र पवित्र । षिनक रोवै षिन गावै ॥
षिनक लियै भर भीर । षिनक अप्पह संतावै ॥
नरलोइ देव देवंगना । तू रंभा कहि कित रहै ॥
पहु अच्छ बधू वीरहतनी । को तन गोरी संग्रहै ॥
छं० ॥ २ ॥

रावलजी का पृथा से कहना कि अब पृथ्वीराज पकड़ा जायगा और दिल्ली पर मुसलमानों का राज्य स्थापित होगा ।

तब जग्गयौ पृथनाथ । सुपन लद्धौ सु विचारिय ॥
कह्यौ प्रिया एकंत । सुपन पायौ अकरारिय ॥
दिल्लौ पति गज्जनेस। करे कंदल धर सट्टै ॥
पकरै जब प्रथिराज । तबह गोरी तन तुट्टै ॥

जोगिनी ग्रहै भंजै सुधर। रेनसीह साको करै ॥
म्लेछांह म्लेछ धर भोगवै। इह निहंच इम उच्चरै ॥
छं० ॥ ३ ॥

रावल जी का अपने पुत्र रतनसिंह को राज्य देकर निगम बोध की यात्रा के लिये तयार होना।

दूहा ॥ सभा करी रावर समर। बैठे सूर सवान ॥
निगम बोध भेटन सुतिथ। चलियै दिल्ली थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ पट्ट काज। रावल पुत्र रतंन ॥
नित्रु सु रष्पिय हठ्ठ करि। घन प्रमोधि परिजंन ॥
छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ निज पट्ट। थप्पि रावल रतंनं ॥
दोहित्तौ सोलेस। अनष भरि कुंभ करन्नं ॥
दष्षिन दिसि संक्रमिय। मिल्लि यह बसी पति साहं ॥
बिडुर नयर दिय पटें। रहिय अनुचरि तिहि ठाहं ॥
वीराधि बीर बज्जाय षग। हनिय वन्न तन करि उतन ॥
इह सुपन रयनि लहि चंद कहि। चलि षुमानगढ क ॥
छं० ॥ ६ ॥

रावल जी का अपने मातहत रावतों को इकट्ठा करके देवराज को गढ रक्षा पर छोड़ना और पृथा सहित आप निगम बोध को कूच करना।

दूहा ॥ सुरज कोट गढ पौलि सजि। नालि गोलि चिहुं दीस ॥
तीरंदाज अभूल भर। रषि चोकी अहनीस ॥
छं० ॥ ७ ॥

षटकोस परिमान गढ। जरध प्रयुलंबाव ॥
सजल सरोवर कुंड भरि। झिरना झरन सुहाव ॥
छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ तिहि बेरां तिहि काल। फटे कग्गर चावद्दिसि ॥
अब्बू गढ जालौर। गए आमद बूंदी दिसि ॥
डूँडर गढ गोडवारि। धरा उज्जेन धरज्जिय ॥
रिनथंभोर हराइ। सांढि चढि तेरह तज्जिय ॥
पष्षेर जीनि सिलहैं पवंग। साज बाज सब दिष्षियै ॥
नीसान घाव बज्जे निहसि। कोंन चितौरह रष्षियै ॥
छं० ॥ ९ ॥

रष्षि थान देवराज। गढ़ चित्रकोट भलायौ ॥
सत्त सहस असवार। अट्ठ ग्रह जाप करायौ ॥
किय डेरा दश कोस। प्रिथा लीनी अप सथ्थह ॥
स्वाति सुकल पष तीज। चल्यौ रावर सलु पथ्थह ॥
हय सहस सथ्थ असवार हुअ। प्रस्थानौ अप्पन कस्यौ ॥
दस दिवस रष्षि प्रस्थान तें। करे फौजैं रह संचन्यौ ॥
छं० ॥ १० ॥

रावल जी की तैयारी और उनकी सेना के हाथी घोड़ों की सजावट का वर्णन।

पद्धरी। सजि चल्यो कटक रावर नरिंद। मानो कि पथ्थ दुरजोध द्वंद ॥
पंचास हात्ति सुंडाल सथ्थ। मैंमत्त चलैं जनु इन्द्र पथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥
उम्भारि सुंड क्रीडंत तेह। मानों कि नाग वन मरुत लेह ॥
गढ़ पारि झारि पाहोर गंम। गुंजरे भौंर पठ रत्ति झुम्म ॥
छं० ॥ १२ ॥
पगथंभ फवै तन मेर रूप। सुंडास सेस तिन चढे भूप ॥
उप्पंम चंद किरनाल जोति। नव जटित नवग्रह जानि द्योति ॥
छं० ॥ १३ ॥
गिर झरन जा मद स्रवत जात। धज नेज झुल्ल घुग्घर घुरात ॥
पट डोरि कसन गजवाग साहि। उपरस्स झूल झमकंत ताहि ॥
छं० ॥ १४ ॥

ढाखैं सिंदूर सीसह सुलाल। मनु स्याम कूट डारी गुलाल।
तिन देषि श्रघु छोवत विहाल। अरियट्ट भंजनह रूप काल ॥
छं० ॥ १५ ॥

आतस चरित्त अनभंग थान। गज थट्ट थट्ट गिरि चले जानि ॥
तिन पुट्टि तुरी पष्षर समेत। रथ सूर जानि आने सुहेत ॥
छं० ॥ १६ ॥

उंचास भास परबत समान। ढिल्लै पहार छत्तिय प्रमान ॥
षरगोस मधय पुट्टीं सरोज। आछादि वस्त्र अन्नेक मौज ॥
छं० ॥ १७ ॥

घरि एक पलक पल प्रान पील। नाचंत नट मानौं असील ॥
हाकंत सबद छुट्टंत वाय। हुंकरत तेज मुट्ठी समाय ॥
छं० ॥ १८ ॥

[1]अपंम जरित नग जीन जोति। मानों कि सिद्ध उर प्रगटि द्योत ॥
पष्षर सजत जगमग पलान। मानों कि सघन महि डग्गि भान ॥
छं० ॥ १९ ॥

तुरकी ऐराक कच्छी बँगाल। हबसीय गोल नाचंत झाल ॥
ताजी सँग्राम ते धुंधमार। पुज्जै न वान मानै न सार ॥
छं० ॥ २० ॥

अन्नेक जाति अन्नेक रूप। तिन चढ़े दिग्गवर जाति भूप ॥
मानौं समंद सरिता हिलोर। मिलि आय जानि बरषा सजोर ॥
छं० ॥ २१ ॥

सजि समर फौज अप्पह समान। मानह, अषाढ जलहर प्रमान ॥
* * * * * * * * छं० ॥२२॥

कवित्त ॥ हे षुररज उच्छलिय। तिमिर विफुरिय [illegible] पर
तरनि रंग रस मिलिय। घोर घुघ्घरिय रुहिर सर ॥
चष्ष जुअल संजरिय। कमल उल्लसिय विमल जल ॥
पथिक पयंबल लटिय। मथन घस नेह तुझझ दल ॥

(१) को.—उपंम।

जोवंति सिंघ अरिदल दमन। नह सुभ्भै करमाल कर ॥
टल टलिय परिय कंपिय सघन। समर पयाना रंभ भर ॥
छं० ॥ २३ ॥

रावलजी का आंबेर में डेरा डालना और जुव्वन गढ़ के रावत रनधीर का रावलजी का लश्कर लूटने को धावा करना।

कूच कूच करि पैर। प्रथा डोला दोइ सथ्थह ॥
सत्त एक वाजिच। चले उमराव समथ्थह ॥
किय डेरा आंमेर। कोस दोइ उप्पर कढ्ढिय ॥
सहस तीस दोइ सथ्थ। जुव्वन गढ़ रायां हट्ठिय ॥
किन कही वत्त रावर समर। इह राजा चीतौर पति।
तव कही बत्त रन धीर भर। इह अलोच किज्जै सुमति ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ रावर न्रपति। कटक लैह सब घेरि ॥
जो सद्दी चीतोर पति। तो डेरा आंबेर ॥ छं० ॥ २५ ॥
हुई हूह हलहल्ल हुई। छुटि गयंद मै मत्त ॥
मानों प्रब्बत [२]धन सिषर। चले फौज अनुरत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥

विराज ॥ चढ्यौ संगि बाजं। रिनं धीर राजं ॥
करी फौज अग्गं। इला मग्ग भग्गं ॥ छं० ॥ २७ ॥
अनंमी जुवानं। पंचै तोन बानं ॥
हुए हीस बाजं। चवंदिस्सि गाजं ॥ छं० ॥ २८ ॥
मनों अग्ग होरी। दिसा संधि धोरी ॥
चढै अप्प अप्पं। मनों सिद्ध दप्पं ॥ छं० ॥ २९ ॥
बजे पग्ग रालं। उडै दब्बि नालं ॥
मनों तुट्टि तारं। लग्यौ सेस भारं ॥ छं० ॥ ३० ॥
पहं लग्गि बानं। दब्यौ धूरि भारं ॥
बजे सूर साजं। गयनं सु गाजं ॥ छं० ॥ ३१ ॥

(१) मो. कूह। (२) क ए.-घन।

करे फौज तीनं । अगं चित्त दीनं ॥
घटा बंधि फौजं । धरा लेन मौजं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

उक्त समाचार पाकर रावलजी का निज सेना सम्हालना।

दूहा ॥ षबरि भई रावर समर । दोर्‌यौ पट्टन राय ॥
सङ्गौ पहु प्रथिराज की । ज्यौं चित्रकोट सुभाइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कह्यौ आइ रावर समर । तब सिर लग्गी झार ॥
को रनधीरह बप्पुरौ । मो सौं मंडै आल ॥ छं० ॥ ३४ ॥
फौज फौज मिलहीं सजी ।। षह गज्जे घनघोर ॥
कुरिय अप्प रावर चल्यौ । भयौ कुलाहल सोर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
छुट्टे षंभू थान ते । चले मत्त गजराज ॥
दधि फटक्कि फट्टक्कि गगन । उलटि सुभट जुध साज ॥ छं० ॥३६॥

रनधीर का अपनी सेना को चक्रव्यूह रच कर रावलजी की सेना को घेर लेना ।

कवित्त ॥ चक्रव्यूह रन धीर । सहस दस बीस दोय सजि ॥
आडंबर बहु करिय । मनों पल्लव भद्रव गजि ॥
दंति सहस बर मत्त । फिरै चावद्दिसि विंध्यौ ॥
चित्रकोट कन्हा नरिंद । जानि जस सौं जम जुध्यौ ॥
दंताल देत लग्गा भिरन । मानो कट्ट कबार किय ॥
बिच फौज रुक्कि रनधीर मुष । जानि बाज तीतर परिय ॥
छं० ॥ ३७ ॥

रावलमीर रनधीर का युद्ध, रनधीर का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ उठे वीर (१) बद्दे बके थान थानं । जगी जोग माया सुरं अप्प मानं ॥
जगे भूत वेताल भूसाल पद्दं । भिरे एक जामं विहद्दं सु हद्दं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
बजे तार रनतूर षग्गं उनंगं । तिनं वेर कन्हं रमै रोस रंगं ॥
षलक्कंत श्रोनं बहै रत्त धारं । सिरं हथ्थ ईसं उड़ै तुट्टि सारं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.- बद्द ।

हहक्कंत कूदंत नंचै कमंधं। कडक्कंत बज्जंत छुट्टंत संधं ॥
[1]लहक्कंत लूटंत तूटंत भूभं। झुकंते धुकंते दोऊ बथ्थ झूमं ॥
छं० ॥ ४० ॥

दडक्कंत दीसंत पीसंत दंतं। करी कन्ह केली परे सूर पंतं ॥
गयौ कन्ह चालुक्क अग्गें उतंगं। रिनं धीर वाही लगे कंध षग्गं॥
छं० ॥ ४१ ॥

लगी नाग सुष्षी छती पुट्टि फारे। पर्‌यौ धीर षेतं सु चंदं उचारे॥
परे सेन चालुक्क सथ्थं समथ्थं। भरें अच्छरी आनि अन्नेक रथ्थं
छं० ॥ ४२ ॥

कँहा आय सुर्छा लग्यौ धार भारं। षरे सत्त तोषार चिंतोर सारं॥
परे चालुकं सेन थट्टं सुघट्टं। परे सत्त तीनं बियं पानि लुट्टं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥ पर्‌यौ सथ्थ रनधीर। भंजि सेना चालुक्की ॥
तीन सत्त धर परे। जानि लग्गी तन भूकी ॥
सौध्यौ रन सीसोद। कन्ह पट्टे बंधायं ॥
प्रथा कंत हुअ जैत। सषी मुगतान बंधायं ॥
दैदास सथ्थ अप्पन सुपर। बीस रोज मुक्काम किय ॥
जिन घाव अंग लग्गे भरन। तिनह सीष चित्रकोट दिय ॥
छं० ॥ ४४ ॥

संयोगिता के प्रधान का रावलजी को दस कोस की पेशवाई देकर लेना और निगम बोध पर डेरा देना।

कन्ह लयौ अपसथ्थ। चले दरकूच महाभर ॥
कुसल हुई सव सथ्थ। गयौ जोगिन प्रथ्थावर ॥
संजोगिता प्रधान। आय संमुह दस कोसह ॥
कोस पंच सामंत। पुच्छि परिगह आलोचह ॥

(१) ए. कृ. को.-हलक्कान।

डेरा कराय तीरघ्य तट। निगम बोध मेंल्यौ तवह ॥
मुत्तिय बधायौ थाल भरि। करि आनंद ईंछिनि जवह ॥
छं० ॥ ४५ ॥

रावलजी का सब आदर सत्कार होना परंतु पृथ्वीराज तक उनकी अवाई की खबर तक न होना।

लई प्रथा मधि राज। सुधि न पाई प्रथिराजह ॥
तीन सत्त सुभ नारि। सषी मनमुत्ति सु साजह ॥
संजोगित परधान। दियौ सौधौ उमरावह ॥
सत्त तीन भरि छाब। चली कनवज्जनि धावह ॥
चौडोल केक रथके अरुहि। बहिल केक तुरियन चढिय ॥
मानों कि देव इंद्रानि लै। रूप भाग सवगुन बढिय ॥
छं० ॥ ४६ ॥

संयोगिता के यहां से दासियों का रावलजी के डेरे पर भोजन पान लेकर जाना।

दूहा ॥ करि मंजन रंजन बहल। सुरंग अगर घन सार ॥
नवला अंजित नयन जुग। कनक षंभ मनितार ॥ छं० ॥४७॥
बस्त्र अनेक सुरंग तन। दमनक [1]साथह लाय ॥
जरि जेहरि पाइन जरिय। सजि भूषन षोड़साय ॥ छं० ॥ ४८ ॥
लघु,नराज॥ रजंत भूषनं तनं। अलक्क छुट्टयं मनं ॥
सुचंद मुष्ष रागिनी। मनो बदन्न नागिनी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
उवट्टनं स उज्जलं। सुरंग रत्ति मज्जलं ॥
सुधा सुसेत दिष्षही। सु रोमराइ पिष्षही ॥ छं० ॥ ५० ॥

(१) ए. कृ. को.-सापह।

मनों कि गंग भारथी। सुभान चक्र सारथी॥
अभूषन विराजयं। ग्रहंत रत्ति साजयं॥ छं०॥ ५१॥
पगं जराइ जेहरं। मनों कि भद्द मेहरं॥
गढीस लग्ग सथ्थही। सुपिंड पानि रथ्थही॥ छं०॥ ५२॥
सुमेषला सु कट्टयं। अगं सु राज घट्टयं॥
ग्रहं नषिच मंडयं। दुकेत राह छंडयं॥ छं०॥ ५३॥
जुहार कंठ सुभ्भई। सु मेर गंग षुभ्भई॥
बैरष्य बाहु बंधयं। सु साष सेस गंधयं॥ छं०॥ ५४॥
जरित्त चूरि फुंदिनी। सुमेर ज्यौं फुनंदिनी॥
विराज कंठ दोवरं। कि गंग मेर औवरं॥ छं०॥ ५५॥
सुहथ्थ गुंथि वेनियं। कि दीपमाल रेनियं॥
वरष्य अट्ट अट्टयं। सवक्क हंस तट्टयं॥ छं०॥ ५६॥
चढी चौडोल अंबरं। मनों कि मेघ घुम्मरं॥
चली सु अग्ग पच्छयं। इँद्रानि जानि कच्छयं॥ छं०॥ ५७॥
पचीस छाव अंवरं। असीस मुक्कली भरं॥
मिष्टान छाव सट्टयं। अनेक रंग मिट्ठयं॥ छं०॥ ५८॥
वतीस भांति मंसयं। सु सादि सुद्ध अंसयं॥
सुरंभ तीस कट्टयं। कपूर भार पट्टयं॥ छं०॥ ५९॥
जवादि केसरं सुरं। पलं सु सत्त अंतरं॥
हजार तीन हूनयं। वतीस छाव दूनयं॥ छं०॥ ६०॥
पँचास सत्त छप्पियं। कपूर पान डब्बियं॥
जराव जेव सट्टयं। जैचंद पुत्ति पट्टयं॥ छं०॥ ६१॥

दासियों का रावल जी से संयोगिता की असीस और शिष्टाचार कहना।

दूहा॥ सषी सकल उत्तरि चली। पंकति करि सव सथ्थ॥
छत्र धर्‌यौ चित्तोर पति। आय षडी रहि तथ्थ॥ छं०॥ ६२॥

गाथा॥ संजोगिता असीसं। मुकलियं राज चित्रकोटं॥
अति सनमान जगीसं। आइयं भाग अम्हाई॥ छं०॥ ६३॥

रावलजी का सखियों का आदर करना और उनसे पृथ्वीराज का हाल चाल पूछना ।

दूहा ॥ आदर सषी अनंत किय । कही दिल्लियपति वत्त ॥
च्यार मास संजोगि ग्रह । [1]सुष विलसै नित प्रत्त ॥ छं० ॥ ६४ ॥

सखियों का रावलजी को मितीवार सब बीतक सुनाना।

कवित्त ॥ हाव भाव वग्गुरि वियार । विनय षुंटी अति ढुक्किय ॥
कुचतरिया दुहु पष्ष । मूल चष्ष हरती छुट्टिय ॥
[2]हांकी अहर सुरत्त । लियौ संभर पति घेरिय ॥
छुट्टे सब परिवार । कहै संभरि पति चेरिय ॥
संभलै वत्त रावर समर । है हथ्थी परिगह सुभर ॥
दरबार राज भय भीति दिषि । बहु [3]लिही पतिसाह धर॥छं०॥६५॥
धर लीनी भेहरा । परयौ वंधह पम्मारह ॥
लूटि सहर लाहौर । गए द्रब कोरि अपारह ॥
ग्रह कीनी पुंडीर । हयौ सौदागिर धीरह ॥
बेरी चावंड राय । राउ भोंहा गँग तीरह ॥
माल दे मौति देवराज गय । हाहुलि फिरि बैठो हियै॥
जादवन सेन संभी भिरै । दिल्लसर मध्धे हुवै ॥ छं० ॥ ६६ ॥
जे विपरीतह देषि । हुए राजान समथ्थं ॥
जे गिरिवर न छिपंति । हुए धरपति सिर छत्त ॥
जे डरि देते दंड । तेन फिरि दंड नगौरह ॥
बलोची बल राए । ढुरै सिर उप्पर चौंरह ॥
गोरी नरिंद दस लष्ष हय । संभरि पति सल्लै हियै ॥
पंचास दून दोबीस घटि । सो कनवज्ज भझाइयै ॥ छं० ॥ ६७॥
हयौ बान कैमास । सूर कनवज्ज भझाये ॥
चौ अग्गानिय सठ्ठि । सट्ठ पंगानी ल्याये ॥
पतिकुल पिता संघारि । म्लेच्छ सुष हुऔ ततच्छिन ॥
मतै गयौ कैमास । सुहौ दिल्लिय धर रष्षन ॥

(१) मो.-सुख विलसत हुअ नित्त । (२) ए. कृ. को. कहा । (३) मो. लिन्निय ।

दरबान नहीं सिर [1]लच्छियां। मरद भेष मिहरी रहै ॥
सैतान भाग अग्रह ग्रहै। धर गोरी छत्ती दहै ॥ छं० ॥ ६८॥
चावंड वेरी घांत्त। कित्ति षोई रस लड्डौ ॥
थट्टा पंगुर देस। साहि कोरी धर षड्डौ ॥
रजनी ठग दिन ठग्ग। सुचित दुचिता संसारह ॥
इह गोरी तन रत्त। ग्रही गोरी धर नारह ॥
अवधूत धूत नागिनि डस्यौ। विष लग्गौ लोरै लवन ॥
रहते सु अंसु रष्यौ नहीं। भई बत्त तीनो भुअन ॥ छं० ॥ ६९ ॥

उक्त समाचार सुनकर रावलजी का शोक प्रगट करना।

दूहा ॥ सिर धुन्यौ रावर समर। दई सीष सब नारि ॥
पानि कपूर सु हथ्थ दिय। कहि संजोग जुहार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथा का रानी इंछनी के साथ रहना और जैतराव का रावलजी की खातिरदारी करना।

प्रथा रनत इंछिनि महल। सुख विलास मिलि जोग ॥
भ्रात चरित्तह दिष्षि सब। लग्यौ मन्न सँयोग ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ जैतराय पम्मार। करिय मनुहार चित्रपति ॥
मधुर सु मेवा अनत। मंस मिष्टान अजब भति ॥
सीघौ मन सें पंच। साक पल्लव तैला अम ॥
दही दूध अनपाह। घृत मन असी अनोपम ॥
ऐराक वंस जीनह जरे। भरी छाव विधि विधि भली ॥
पहुंचाय निगम रावर समर। हुई जैत अप्पन वली ॥
छं० ॥ ७२ ॥

कुमार रेणसीजी का सब सामंतों सहित रावलजी के लिये गोठ रचना।

दाहिम्मै चावंड। करी मनुहारि सबन भर ॥
एक पुरंगम अच्छ। फेरि मुह अग्गै रावर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लट्ठिया।

बलिभद्रह कूरंभ। इन ऐसो अट्टारै॥
जर उजवक हय एक। ढिल्लि अंठ,नि गिरि डारै॥
रामदे राव षीची प्रसंग। जामानी जद्दव बलिय॥
पम्मार सिंघ इत्ते सुभर। इन सु गोठि छत्रपति कलिय॥
छं०॥ ७३॥

दूहा॥ [1]रेन कुंअर गोठह रचिय। त्रिविधि भांति सब नूप॥
सुरंभ घृत सीधो सघन। कीनो जीमन भूप॥ छं०॥ ७४॥

गुरुराम का रावलजी को आशीर्वाद देना और कविचंद का विरदावली पढ़ना।

पद्धरी॥ सामंत सबन मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन॥
हर सिद्ध-दिस बरदान भट्ट। उच्चर्यौ चंद पेषै सुथट्ट॥
छं०॥ ७५॥

दुह, पष्ष चवर सिर धरिय छत्र। बरदाय देत आसीस तत्र॥
उट्ठयौ सिंघ बरदाइ देषि। बोलंत बिरद बहु,विधि विसेषि॥
छं०॥ ७६॥

चीतौरराइ काइम्म कीन। षुम्मान पाट पग अचल्ल दीन॥
मेरगिरि सरि चित्तौर मानि। किरनाल तेज बट्टै षुमान॥
छं०॥ ७७॥

जैचंद समह जिन जुद्ध कीन। मांनो कि गुरग [2]तनु मोर पीन॥
कलकियां राय केदारराय। कब देत बिरद मनु उमँग चाय॥
छं०॥ ७८॥

पापियां राइ प्राग्वट समान। कप्पन दरिद्र करतार जान॥
हित्यार राइ कासी अभंग। मदुआन राइ गंगा उतंग॥
छं०॥ ७९॥

सुरतान मलन बंधन समोष। हिंदून राइ टालंन दोष॥
उज्जेन राइ बंधन समथ्थ। आचार राइ [3]जुष्टरह वथ्थ॥
छं०॥ ८०॥

(१) मो.-रेनं कुवरं गोठ सुकरिय। (२) ए. कृ. को.-जनु। (३) मो.-युजिष्टरह।

भीमंग राइ भंजन सुषेत । जस लयौ धवल राजिंद जैत ॥
रिनथंभ राइ सिर दंड कीन । अबु,आ राइ गढ़ लेइ दीन ॥
छं० ॥ ८१ ॥

उथ्थाप राइ थापन समथ्थ । सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दष्षनी साहि भंजन अलग्ग । चंदेरि लिद्धि किय नाम जग्ग ॥
छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ जग ऊपर जगदीस गनि । मृत्तलोक दिल्लेस ॥
कै तूं फुनि चिचंग पति । आह,हमो नरेस ॥ छं० ॥ ८३ * ॥

रनधीर को परास्त करने के लिये कवि का कन्हा को भी बधाई देना ।

गाथा । कंन्हा दिया आसीसं । सध्यौ रनधीर षेत षैरंडै ॥
अट्ठा अट्ठावीसं । षग्गं तेजाय तेजरं तुठ्ठं ॥ छं० ॥ ८४ ॥
असि गह महदर बारे । भारं सेसाइ सेस फनि इंदं ॥
विस्भूतं अनपारं । समवर करसार समर रावरयं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

रावलजी का कविचंद से चंद्रवंश की उत्पत्ति पूछना और कवि का इला और बुध का इतिहास कहना ।

कवित्त ॥ रावर पुच्छिय समर । सोम रवि वंस प्रकारं ॥
वरनि कहिय कविचंद । कथा मंडे विसतारं ॥
एक समय बन षंड । सपतरिषि गये रमंते ॥
उमया शंकर तहां । देषि रसकेलि करंते ॥
लाजंत उअर मुनिवर फिरिय । श्राप दियौ सिव मन कुरषि ॥
ह्वजियौ सहित आवत इहां । मेंदी मोविन अनि पुरष ॥ छं० ॥ ८६ ॥
मारतंड सुत मंड । जग्य मंडाय पुचकजि ॥
राजलोक परछन । देत आहुति सों कि दुज ॥
प्रगट कुंड कन्यका । देषि वाचिष्टति वारं ॥
फेरि मंच तप जोर । करिय दसमन्न कुमारं ॥

* छं० ८३ मो. प्रति में नहीं है ।

षेलत सिकार इक दिवस वह। महादेव कौवन गयौ ॥
कहि चन्द आप मेटै कवन। पुरषा तन तें त्रिय भयौ ॥छं०॥८७॥
काम लुब्धहि बुद्धि। देषि त्रयि रुप छल्लि घर ॥
संभलि रिषि वाचिष्ट। बहुत करि अस्तुति शंकर ॥
प्रसंन होइ बर दियौ। पिता घर होय कुआरं ॥
फिरि तिय की तिय होय। बुद्ध घर जाय जिवारं ॥
इक इक मास की अवधि करि। दुअसु पतंगा रष्पि हम॥छं०॥८८॥
बुध अंस चद्र बंसह भयौ। दस मन सूरज वंस क्रम।

रजपूत शब्द की उत्पत्ति।

दस हजार ग्रभवंत। रिषि त्रिय ढंकि धरची ॥
फरसराम कौ करत। वार इक वीर न षिची ॥
कासिप को ले दियौ। उदकि सारौ महि मंडल ॥
तपन तात पन छंडि। गयौ मन ग्रहै कमंडल ॥
वसुधा विचार तब कहि। निज रक्षा कारन थपिय ॥
उतपन्न सुतन तिन के सरज। दिष्षि नाम '[1]रजपूज दिय॥
छं॥ ८९ ॥

रावळ जी का कवि चन्द को दान देना॥

मैदा मन पंचास। वीस मन वेसन दीनौ ॥
मंस जाति बहु भंति। जमन तट भोजन कीनौ ॥
आटा ध्रत्त अप्पार। षंड गुर सक्कर भंती ॥
जैयोषान जिहान। दई हथ्थनी इक तत्ती ॥
मनुहारि परग्गह सवन करि। भांति भांति आदर करिय ॥
पहुंचाइ समर रावर सुबर। अप्प घरघर विथ्थ,रिय ॥छं०॥९०॥
दो हथ्थिय तरिवार। तुरिय एराक अच्च गल्ल ॥
कंचन जरित पलान। एक जोजन मभ्भ पल्ल ॥
हथ्थी संघल दीप। एक जमदट्ट अमोलं ॥
जर जर कसि सिर पाव। साज साकत्ति समोलं ॥

(१) ए.-को.-रजपूत।

पहुचाय चंद भट्टह सुबर । कीरति कलिजुग बिस्तरिय ॥
चित्रकोट राव दीनौ इतौ । रही कलिज्जुग [1]वत्तरिय ॥छं०॥६१॥

बनवीर का कवि को एक हथनी और दो मुंदरी देना ।

दूहा ॥ बनबीरह परिहार दिय । हथिनी एक सुरंग ॥
मोती माला सघन जल । द्वै मुंदरी सुचंग ॥ छं० ॥ ६२ ॥

रावलजी का शंक्रांति पर गुरुराम को एक गांव देना ।

सूरजि भई संक्राति जब । प्रोहित दीनी राम ॥
लष्षह न किसनारपन । दिय कारुंडौ ग्राम ॥ छं० ॥ ६३ ॥
गाथा ॥ दिन प्रति दीजै दानं । सठंह्र नाय षरचयं कज्जं ॥
दोय पहर मिलि थट्टं । गह मह दरबार भट्ट चारनयं ॥
छं० ॥ ६४ ॥
इह रावर उनमानं । भानं उग्गाइ दिज्जियै दानं ॥
दिन प्रति दीजै धानं । इह दिट्ठं न कथयं कब्बी ॥ छं० ॥ ६५ ॥
दूहा ॥ [2]भुंजाई रावर समर । आवै बरन अठार ॥
नह को पूछै अप्प पर । दिज्जै अन्न अपार ॥ छं० ॥ ६६ ॥

रावलजी का इक्कीस दिन निगमबोध स्थान पर बास करना ।

निगमबोध रिध बासकिय । रावर समर नरिंद ॥
हुए द्योस इकईस तहां । पंच सहस भर हुंद ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथा का महलों से रावलजी के डेरों पर आना ।

दिवस चपथ्थै राव रह । आवै प्रथा इकंत ॥
वासुर दोइ वासै रहै । परी भ्रान्त मन चिंति ॥छं० ॥ ६८ ॥
अति सुख सकुंल बरस तिय । रित रितिए आचार ॥
बिलसत दिन ग्रीषम अधर । सुपनौ राजन वार ॥ छं० ॥ ६९ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक सुंदरी को देखना ।

कवित्त ॥ निसा एक माधव सु मास । ग्रीषम रिति आगम ॥
निसा जाम पच्छलौ । सुपन राजा [3]लहि जागम ॥

(१) ए. छ. को.-विस्तरिय । (२) ए. कृ. को.-भोजाई । (३) ए. कृ. को-माहि ।

सेत चीर छौनी। पवित्र आभ्रंन अलंकिय ॥
मुँकत बंध चाटंक। बंध बेनी अवलंकिय ॥
निज बैरि धारि कज्जल नयन। हर हराह सद्दह करिय ॥
मानिक्क राइ वंसह विषम। रष्षि रष्षि धरनी [1]धरिय ॥छं०॥१००॥

राजा का पूछना कि तू क्या चाहती है। सुन्दरी का उत्तर देना कि "वीर पुरुष" ॥

साटक ॥ का तूं सुंदरि हुंधरा किमहिता इच्छा परा वांछिता ॥
को वांछा बर राज कोवर रूची दाताग्य रूपानिवा ॥
नं नं नं न्रप जान दानरुचयं रूपं न विद्दी त्रयं ॥
षड गंधार सुमार दुत्तर अरी सो मे वरं सुंदरं ॥ छं० ॥ १०१॥
दूहा ॥ इम वसुधा सुपनंत दिय। रजगति रजन विचार ॥
विलसत दिन ग्रीषम अरध। सुधपिय पंग कुआरि ॥छं०॥१०२॥
रष्षि रष्षि उच्चार बर। गति सिंघल अतिरूप ॥
सुपनंतर चहुआन सों। चलन कहत इल भूप ॥ छं० ॥ १०३॥

उसी समय पृथ्वीराज की नींद खुलना और देखना कि प्रभात हो गया है।

धरकि चित्त जोगिनि न्रपति। दिषि प्रभात दुति गान ॥
भान किरन दिसि दिसि फटी। तम घटि तमचर गान ॥
छं० ॥ १०४ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को स्वप्न का हाल सुनाना।

कवित्त ॥ जग्गि जलनि प्रथिराज। जग्गि संजोग सुपनि कहि ॥
सो सपनंतर जंपि। पत्ति दिट्ठी जु रत्ति महि ॥
सेत वस्त्र उत्तंग। चित्त हरनी कुटिला गति ॥
बैसम गुन गुर दुत्ति। दुत्ति उजलंत कुटीरति ॥
ऊंचै बचन्न बर कठिनह। घन कुलटा गति चलन कहि ॥
भव भविस गत्ति न्निम्मान कहि। नन जानै भव गतिय बहि ॥
छं० ॥ १०५ ॥

(१) मो.-ढरिय।

संयोगिता का उत्तर देना कि यह सब हुआ ही करता है।

सुनि सुकंत धरइंद। जोय दिल्ली जुग्गिनि गति॥
पुत्त मित्त दारा न बंध। रोकन पितुरनि पति॥
दिष्टमान रोके प्रमान। चच्छि अंछान लच्छि कुछी[1]॥
भोग बिना बंधि जगत। अस्सवय जग चय तुछी॥
मायाति नट्ट संसारनिय। न्त्रिप नच्चवि मुक्के जगत॥
जीवन्न प्रान प्रापति जबसु। तब लग इह भावी बिगति॥
छं०॥ १०६॥

पुनः दंपति का केलिक्रीडा में प्रवृत्त होना।

मुरिल्ल॥ हँसि आलिंगन दै चहुआनं। पिय मयूष दंपति रसपानं॥
सुरत सुरत मंनं बर मत्तं। करहि सार संसार सुरत्तं॥ छं०॥ १०७॥

रसकेलि वर्णन।

हनुफाल॥ वर सुरत रत्त सुचंद। दुहुं बढे आनँद कंद॥
इह बुल्लि रससुष बाल। बर कहत ओपम साल॥ छं०॥ १०८॥
ससिभास काढ्ढी रीस। मनु उदित भय ससि सीस॥
सुपस्वेद विंद बिराज। कविराज ओपम साज॥ छं०॥ १०९॥
कै किरन उल्लससि कुट्टि। कै ठौर मनमथ छुट्टि॥
कसि कासमीर बिबंध। वर अग्र आठ सुचंद॥ छं०॥ ११०॥
वर चिंत उपम बिसाल। उडि चलन मंगल बाल॥
कुच अग्र लग्ग मद बिंद। रस बढे आनँद कंद॥ छं०॥ १११॥
[2]सुकि कमल बैससि बाल। अलि लै उडी जनु बाल॥
कुच छुट्टि छुट्टि सुमग्ग। कुसलेष सीष बिलग्ग॥ छं०॥ ११२॥
दुति होत कबिन झकोर। बग उड़ै घन जलु कोर॥
पिय सेन लेन सुरत्त। तिन मक्षिक बाल सुगत्त॥ छं०॥ ११३॥
प्रति ब्यंब ओपम मीय। जनु सीय से हसि दीय॥
रति निद्र रतिवर वीर। रति रयन रयन समीर॥ छं०॥ ११४॥

(१) मो.-कुछ, तुछ।
(२) ए कृ० को०—सुका कमल बैस विसाल

अरिल्ल ॥ अवसर प्रीति बढ़ी रसपानं। कहि वर दूत सुनी सुलतानं ॥
सुनि वर गोरिय साहि नरिंदं। भईय गत्ति ढिल्लिय छिन मंदं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

पृथ्वीराज की इस दशा का समाचार पाकर शहाबुद्दीन का अपने सरदारों से सलाह करना।

दूहा ॥ मति छीनी ढिल्लिय तनी। सुनिय साहि चहुआन॥
दाव न चुक्कै अप्पनौ। दुअन सौति उरगान॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ बोलि षान षुरसान। बोलि गोरि ततार वर ॥
षां रुस्तम पीरोज। सेन ढिल्ली चरिच वर।
बार बेर गहि मुक्कि। दीन में दीन कहायौ ॥
चहुआना जुरि नीर। मन्न मंती गह छायौ ॥
जौ होइ गोर गोरी अहां। तौ तोसल नन भग्गही ॥
चहुआन बँधे बंधन जुरां। सो दिन पंथ तु लग्गही ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥

यह सलाह पक्की होंना कि दिल्ली को दूत भेजकर पूरा हाल जान लिया जाय तब चढाई की तैयारी की जाय।

सुमति सुरत्ती साहि। धाइ बंध्यो चहुआनं ॥
सोई मता किज्जियै। बोल पच्छै नत आनं ॥
सुभ्रम निभ्रम बीर। षोलि विभ्रम परिवानं ॥
फेर मुकति सुलतान। जहां ढिल्ली परधानं ॥
तत मत्त बत्त बर संग्रहै। अरु हिरदै भेदै छिनह ॥
इन कहै साहि चतुरंग सजि। तब अरि ग्रहन विचार कह ॥
छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली को गुप्त चर भेजना।

तब सु साहि गज्जनै। दूत ढिल्लीय पठाए ॥

जु कछु तंत कौ मंत। [1]अंत कहि कहि समुझाए ॥
लै आवहु जंगल नरेस। पब्बरि सब सुद्धिय ॥
राज काज चहुआन। सकल सामंत सुबुद्धिय ॥
फुरमान साहि सिर धरि लियौ। भेष कियौ सोफी तिनह ॥
उभै पष्ष क्रम पंथह चलै। कागर काइथ [2]कर दिनह ॥ छं०॥११९॥

दूत की व्याख्या।

दूहा ॥ साम दान अरु भेद दँड। ए च्यारौं बिधि आइ ॥
जान पनै सोइ दुत कहि। काम करै सुषदाइ ॥ छं० ॥ १२० ॥

दूतों का दिल्ली पहुँच कर धर्मायन के द्वारा सब भेद लेना।

गाथा ॥ चर वर विवरित सुद्धं। लिद्धं चहुआन राजधानीयं ॥
सह दूतं पंथानं। गोरीयं जघ्य जानामि ॥छं० ॥ १२१ ॥

बचनिका ॥ ध्रम्माइन कायथ पै षबरि पाए। तबहिं दुत गज्जन कौं आए ॥
तिहि दिन सुरतान आराम करि आनि षरे रहै। ततार षां सो बातैं कहै॥
बहुत रोज कहु और न आई। कछु दिल्ली की षबरि न पाई ॥
तब तत्तार षान कहत है। पातिसाह कछु बात षूब है ॥

बहुत दिनों तक दूतों के वापिस न आने पर शाह का चिंता करना।

मुरिल्ल ॥ चर चर चित्त चहुआनं। हाम बित्ति ढिल्लीय चहुआनं ॥
बुल्ले साहि ततार बुलाई। अजहूं दूत गज्जन न आई ॥
छं० ॥ १२२ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना कि दूत के लिये देर होना ही शुभसूचक है।

श्लोक ॥ चिरं जोगीश्च सिद्धं। चिरं वंध प्रधानकं ॥
चिरं सेवक साधर्म। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

(१) ए. कृ. को.—कंत। (२) ए. कृ. को-दिन करह।

चिरं तपो फलं दाता। चिरं राज फलं प्रभो ॥
चिरं नाम धनी दाता। चिरं दूतस्य लक्षणं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ इन खच्छिन तसकर सुलभ। तस पर दूत वसीठ ॥
रति दूग द्दंदग कुसल भल। कर वंधेन घसीट ॥ छं० ॥१२५॥

नीति राव कुटवार का सब समाचार शाह को लिख भेजना।

नीति राव कुटवार दर। तहि निवसै उन रीति ॥
सुमिलि साहि कागद दियै। लिषि दरबारह नीति ॥छं०॥१२६॥

प्रथम दून का दिल्ली का समाचार कहना।

ए गरहाँ सुरतान सौं। कहि पिन षान ततार ॥
प्रथम पहुर संभ्रम सुचर[1]। दर बोल्यो कुटवार ॥छं०॥ १२७ ॥

बचनिका ॥ प्रथम पहर बह्या, संभ्रम दूत आप षड़ा रह्या।
सलाम लह्या, दिल्ली के चरित्र कह्या ॥
पातिसाह पहिलौं सैंतान बड़ै, राजा हुआ रति चढ़े ॥
छं० ॥ १२८ ॥

गाथा ॥ षैरी दं सुलतानं। दुसमन दैवान महलह षानं ॥
भर सहरत्त बिरत्ता। आघातं गोरियं साहिं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

कबित्त ॥ एक समै हम्मीर राइ। दरबार सपन्नौ ॥
पिथ्थौरा चहुआन। हथ्थ संजोगि बिकन्नौ ॥
नथ्थि बाज गजराज। सुनर भेषह बर नारिय ॥
मार मार उच्चार। लहरि लक्करि सिर रारिय ॥
हाइ हाय दिसि सब्बे[2] हुअ। धुअ समान सुम्भर धुरह ॥
हरि द्रुग्ग द्रुग्ग सुप उच्चरिय। जिन दगेग गंठे डरह ॥छं०॥ १३० ॥

दूहा ॥ इह चरित्र पिष्षै सुचर[3]। लग्गो गज्जन राह ॥
नाम सुसंभ्रम सुमग ते। कही सहि सौं जाह ॥ छं० ॥ १३१ ॥

---

(१) मो.-वर।
(२) ए. कृ. को. हुअ सब्ब। (३) ए. कृ. को-देषे बिचर।

भर अबंध अङ्गिय महल । रति बढ़ि घटि महिसार ॥
विप्परीति दिल्लिय सहर । न्रपति अलुभ्यौ मार[1] ॥ छं० । १३२ ॥

दूसरे दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ दूजा पहर वह्या । विभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या । दिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते कहा चरित्र ॥
गाथा ॥ भग्गीवा सुर संधी । बंधे पेमाइ लज्जलो पानां ॥
अप्पा पर न गनिज्जै । जानिज्जै राज भंजाई[2] ॥
। छं० ॥ १३३ ॥

कवित्त ॥ जानिज्जै सुविहान । राज भज्जै राजानी ॥
दर है गै भर नथ्थ । तेज भग्गी चहुआनी ॥
वासर संधि विसंधि । नीति भग्गी ढिल्ली वै ॥
जानिज्जै सु बिहान । होइ हिंदवान सुहै वै ॥
लज भगी प्रेम बद्धे बरह । दइ दुज्जन महलैं ग्रसै ॥
चहुआन चरन सेवन सुबर । नीति राव अप्पन बसै ॥
छं० ॥ १३४ ॥

तीसरे दूत का समाचार ।

वचनिका ॥ तीजा पहर वह्या । निभ्रम दूत आय परा रह्या ॥
सलाम लह्या ॥ दिल्ली का चरित्र कह्या । ते केहा चरित्र ॥
गाथा ॥ हिन्दू सयन सुदुष्षं । सुष्षं साहाब गोरियं साहिं ॥
राजन बिषम चरित्रं । सामंता रोजनं रोज ॥
छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ रोज रोज सु बिहान । घेर सामंत ग्रेह घन ।
सामि निंद उच्चरै । सामि निन्दा न सुनै क्रन ॥
भर अरत्त साईं । विरत्त गोरी सुलतानं ॥
संभ रूप संजागि । गिल्यौ चहुआन सुभानं ॥
विपरीति वत्त ढिल्लिय सहर । राज नीति भग्गी रसं ॥

(१) मो.-उलझ्यौ नार। (२) ए. कृ. को. भउजाई।

पंजाब पंच पंचै सुपथ । चिंति तप्प गोरी वसं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

चौथे दूत का समाचार ।

बचनिका ॥ चौथा पहर बह्या । बिलास दूत आइ पग रह्या ॥
सलाम कह्या । ढिल्ली का चरित्र कह्या ॥ ते केहा चरित्र ॥
गाथा ॥ गाडंडूर उडंडा । जोरु गरुवार मरद हरु अंदा ॥
धुनि धुनि सह सामंता । चावंडं वेरियं बधे ॥ छं० ॥१३७ ॥
दूहा ॥ चिया राज बसिवौ नहो । बसिवौ नह बहुराज ॥
बालराज बसिवौ नही । कहै घर घघर आज ॥ छं ॥ १३८ ॥
कवित्त ॥ जिन कंधै ढिल्ली नरेस । कंध जिनके ढिल्लिय पुर ॥
जिन कंधै लगि राज । अग्ग अब्बुझ बहुन धर ॥
मान तुंग बर अग्ग । भिरिग कनवज्ज जुझाए ॥
चौंसट्ठिन मुक्कि कै । भागि जोगिनि पुर आए ॥
चहुआन सुबर जानै न्रपति । सो बल भग्गौ साहि सुनि ॥
चादर सु अप्पि गोरी सुबर । पंच देस पंजाब धुनि ॥छं०॥ १३९ ॥

शाह का पीर को चादर चढाकर दुआ मांगना ।

बचनिका ॥ जमा सुविहानं । शाहब दी सुलतान ॥
पैगंबर परवर दिगार । इलाह करीम कवार ॥
सुलतांन जलाल सिकंदर जाया । सुलतान साहबदीन अलह उपाया ॥
मुसलमान महति । दीन भीमहति ॥
इतनी कही कहन लागे । पातिसाह साहाबदीन आगे ॥
अपर पराये टरे । सैतान परवरे ॥
सानंत मन जरे । चावंड राइ भी वेरी यौं भरैं ॥
कूरंम कुल संकोड़ा । परिगह पास छोड़ा ॥
पांमार परि गनाई । हाहुलि परिहांम जनाई ॥
राउ जैतसी पास भेहरा छुट्टा । पुंडीरों लाहौर लुट्टा ॥
राउ भोंहा दुनिया मुक्की । राउ माल दे मौत चुक्की ॥

देव रांव दीवान छंडया। जादवों वैर मंडया ॥
षलक आलम आलोई। जीवतै चहुआन वोई ॥
दसोंही दीसा जीती। कनवज्जैं कहर वीती ॥
हजरत षुदाइ षेल। असि मरदांन मेल ॥
वरन वरन धेरी। बद्दलों पंति नेरी ॥
धु आसाहि साहाब साहि। दिजियै चादर उचाय ॥

शहाबुद्दीन का चढ़ाई के लिये देश देश को परवाने या पत्र भेजना।

दूहा ॥ चर चर वत्तति सिद्ध किय। झकि किय घाव निसान ॥
सत्त सहस कग्गर फटे। देस देस सुरतान ॥ छं० ॥ १४० ॥

बचनिका॥इतने मुलकन कों फुरमान फाट्टे। नीवी सदा ठौर ठौर बैठक ठट्टे
फुरमान पेस कदलिवास। कैलास देस रोह षंधार ॥
गष्पर गिरवान षुरासान मुलतान। भटनैर भष्परवान ॥

शहाबुद्दीन के चढ़ाई करने का समाचार दिल्ली में पहुंचना और प्रजा वर्ग का अत्यंत व्याकुल होना।

दुहा ॥ फट्टिय वत्त प्रचार चर। घर घर ढिल्लिय यान ॥
चढ्यौ साहि चहुआन पर। चढ़ि हय गय असमान ॥छं०॥१४१॥
वढि आवत ढिल्ली सहर। चढ्यौ साहि सुरतान ॥
घर अंगन मंगन हरिग। सुनत सूर अकुलान ॥ छं० ॥ १४२ ॥
ग्रह बंभन ग्रहवान नर। ग्रह छची छह हन्न ॥
भई वाति नर नारि मुष। सब लग्गै सन सन्न ॥ छं० ॥ १४३ ॥

कवित्त ॥ सुक्रम साहि वानैत। आय गज्जन संपत्ते ॥
तिन कग्गर हथवार। आइ उत्ते इत तत्ते ॥
सेत दुती रविवार। वार गुरु तेरह तत्ते ।
चढ्यौ साहि साहाब। जोध है गै सनि मत्ते ॥
जिन करहु, ग्रब्ब गोरी सुपहु। जानि पुरानौ सेन सह ॥
सज्जयौ सूर साहाब पुर। आयौ आतुर उप्परह ॥ छं० ॥ १४४ ॥

मुरिल्ल ॥ सुनि कग्गर दुज्जर दिल्ली धर । भूमि कंप जिम कंप नरव्वर' ॥
बाल वृद्ध नर नारि समानह । लगी धक्कपकी चिंत चिंतानह ॥
छं० ॥ १४५ ॥

प्रजा के महाजनों का मिलकर नगर सेठ के यहां जाना।

भै लग्गौ दिल्लिय पुर जामह । नगर सेठ पहि गय प्रजतामह ॥
मिल्लिय सकल एकंत महाजन । किम बुज्झैं रतिवंतौ राजन ॥
॥ छं० ॥ १४६ ॥

नगरसेठ श्रीमंत के यहां जुडने वाले सब महाजनों के नाम ग्राम और उनकी धन पात्रता वर्णन ।

पद्धरी । प्रज मिल्लिय नाम विचार कीन । बुल्लाय बुद्धि जन सेठ लीन ॥
श्रीवंत साह सब नयर सेठ । मति वत बुद्धि गुर गुन निहेठि ॥
छं० ॥ १४७ ॥

बर सिंह साह हंकारि अप्प । भोगवै विनौ लच्छी सु तप्प ॥
श्रीधर सुनाम सुंदरह दास । श्री करन जसोधर संक तास ॥
॥ छं० ॥ १४८ ॥

सोमन्न साहि केलन्न साहि । धन सागर आगर सगर ताह ॥
सोवन्न साह साजन्न बोलि । गरुअत्त गाज सुभ तेज तोलि ॥
॥ छं० ॥ १४९ ॥

अमरसी अगर ईसरह दास । करमसी उदैसिंघ राम आस ॥
केसर कपूर षेतसी नाम । गनपति गनेस गौरसी स्याम ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥

घड़सीह धनू नेतसी साह । चेतन्न चतुरभुज मिले माह ॥
छाजू अरु छीतर छविल आइ । जोधा जैसिंघ झांझन बुलाइ ॥
॥ छं० ॥ १५१ ॥

टोडर मल टी लाठ कुरसीह । चलि गए सांप डरपंत लीह ॥
डुंगर सी ढाला तुरत बेग । व्यापार धरम चालै सुनेग ॥
॥ छं० ॥ १५२ ॥

(१) मो.—नरव्वर ।

थानि गथ्थिरा दामा दयाल। धनराज धींग भोगी भुआल ॥
परबत्त पदारथ पदमसींह। फांदूरु फलाबर सिंघ ईस ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

भांमो अरु भोजो मेघराज। मोहन मथूरो जा बड़ बिराज ॥
रनधीर लषमसी बीर दास। सेषो सिंघौ हेमंग हास ॥
॥ छं० ॥ १५४ ॥

आये अनेक महाजन्न सब्ब। संकरहदास षची सुग्रब्ब ॥
बहु भम्म धरन अति तप्पतार। अति उंच उंच क्रति क्रमसकार ॥
छं० ॥ १५५ ॥

नन लहैं घाम छाया प्रचार। कोमलह गात लच्छी न पार ॥
बोलंत सास चालंत थूल। अति वध्धौ उदर चढि ग्रीव मूल ॥
छं० ॥ १५६ ॥

पहिरंत वस्त्र ढीले सु उंच। ग्रिह दै कपाट मुररंत मुंछ ॥
लेषिनी कान लेषौ करंत। हरि ब्रह्म रूप ताहू छरंत ॥छं०॥१५७॥

आहंत कोप भीरंत मुट्ट। पीसंत दसन उट्टंत निट्ट ॥
दाता दयाल ऐसो न और। बरजंत पाप क्रम ठौर ठौर ॥
छं० ॥ १५८ ॥

प्रव दान ग्यान तीरथ विनान। सोभंत साह दै अन्न पान ॥
सोभंत नगर जिहि वड़े साहि। लष कोट द्रव्य जिन हट्ट माह ॥
छं० ॥ १५९ ॥

ए मिले साह श्रीवंत ग्रेह। आये सु चिंतातुर चिंति तेह ॥
सुत सुतिय क्रम्म परिवार व्रिद्ध। घरवार भरे भंडार निद्धि ॥
छं० ॥ १६० ॥

कोटीस धज्ज वंदहि अनेक। वर धवल ताम मंडो विवेक ॥
उंच उंच भोमि साजै विलास। वर गोष अनत लग भाल आस॥
छं० ॥१६१ ॥

प्रज्जंक विवध साजे अनूप। वासंसि विवह गुन गंठि भूप ॥
आए सुलब्ब ग्रह नयर साह। आसन्न दिद्ध सम मन्नि ठाह ॥
छं० ॥ १६२ ॥

श्रीमंत साह का सब सेठ महाजनों का आदर सत्कार करना और सब महाजनों का अपनी विपति कथा सुनाना।

दूहा॥ मानि साह श्रीवंत घन। सब प्रति आदर दीन॥
अप्प नाम गुन उच्चरिय। सब संबोधन कीन॥ छं०॥ १६३॥
प्रथुक संबोधित साहि सव। चंदन चरचि कुसम्म॥
कस्तूरी करपूर युत। बीर सुगंध सुरम्म॥ छं०॥ १६४॥
आदर करि सब प्रज पसरि। दिय बैठन सुभ ठाइ॥
मति प्रमान जिहि पुच्छियै। बोलि सुगुझ्झ गुराइ॥ छं०॥ १६५॥

कवित्त॥ मंच बयट्ठे साहि। जिके बहु गुन आगर॥
सुष सरूप भोग बन। सजल लच्छी बुधि सागर॥
सुतन मंत चिंतवै। चित चिंतै न कोइ नर॥
रतिमत्तौ राजान को। सुगुदरै दुष अन्दर॥
सामंत सब्ब अच्छै विरत। राचा वंड वेरिय भर्यौ॥
कैमास सग्ग[1] जातह सकल। सुवर मत्त[2] सथ्यह सह्यौ॥
छं०॥ १६६॥

यामारी पर चित्त। विरत किन्नौ चहुआनह॥
जो बुझ्झै सम विषम। ग्यान अप्पनौ परानह॥
मधू साह परधान। सोय दरबार न दिष्षहि॥
रयन कुमर सामंत। सोंह सोइ पित न परष्षहि॥
अनि तरुनि नेह छंड्यौ तमकि। कोइ न सुधि न्रप वर कहै॥
संजोगि नेह रत्तौ नपति। मनमत्तौ निस दिन रहै॥
छं०॥ १६७॥

पुच्चिय रा कमधज्ज। सोइ जुब्बन गुन मत्तौ॥
रूप द्रव्य सिंगार। नेह उर चौजन रत्तौ॥
नह बुझ्झै पर अप्प। तैन रस राजन बंध्यौ॥

(१) ए. को.-सुर्ग (२) ए. कृ. को.- तत्त

जिम अलियज अंबुजहि। गई बासुर निसि संध्यौ॥
चित्रंग राह आयौ सु घर। भये बीस बासुर सुथह॥
नन भई बुझ्झि राजन किनो। तौ को गुदरै अप्प कह॥
छं० ॥ १६८ ॥

श्रीपति साह का सब साहुकारों को लिवाकर गुरुराम के घर जाना।

भुजंगी॥ तबै उच्चर्यौ साह श्रीपत्ति तामं। सबै मंच मंडौ जुषंडौ विरामं॥
भए सब्ब सामंत चित्तं विरत्तं। दरंतेन तज्यौ न्रिपं मन्नि मत्तं[1]॥
छं० ॥ १६९ ॥

पुरष्यं[2] दरब्बार पावै न जानं। रहैं चौय रुक्कै पुरुष्यं पुरानं॥
विरानंन[3] अप्पंन बुझ्झै न सायं। करं बेत लट्ठी तरस्सीत रायं॥
छं० ॥ १७० ॥

न्रिपं रस्स बंधे सुपंगानि तासं। भए तीस अग्गं बरं पंच मासं॥
निसा बासुरं संधि भूल्यौ नियानं। लगे मीनकेतं क्रतं पंच बानं॥
छं० ॥ १७१ ॥

कहै कोय राजंग सुझ्झै न अप्पं। ग्रिहं राज चल्यौ गुरंराजबिप्पं॥
सहै भंति एकंत कुम्मार यानं। बिना सेव देवन्न आहार पानं॥
छं० ॥ १७२ ॥

पुछै बैरि बर बीर चामंड धारं। करै कानि भानेज रेनं कुमारं॥
घरं घालि बरदाय सूतो सुअप्पं। करै कित्ति आनूप प्रागट्ट तप्पं॥
छं० ॥ १७३ ॥

कहै गुद्दरं अन्य सूझै न राजं। बिना राम देवं जिनं दिल्लि लाजं[4]॥
मतौं मंडि उट्ठै सबै साहि तामं। चली प्रज्ज सथ्थैं ग्रिहं विप्प रामं॥
छं० ॥ १७४ ॥

---

(१) ए. कृ. को. वत्त   (२) ए-गुरष्यं
(३) मो.-विरामन्ना   (४) ए. कृ.को.-काजं

चढ़ै जान एकं सुएकं अनोपं । नरं जान जानंचवं डोल जोपं ॥
बहिल्लं सु अस्वं सजुत्ते बनेयं । केयं अश्व रोहै सुषं राह रेयं ॥
छं० ॥ १७५ ॥
वसंतं अनूपं जरावं सुधारे । मनों धूंम रूपं धरन्नीव तारै ॥
चली प्रज्ज सथ्थंग हंकार सद्दं । गए विप्र गेहं गहं माह नद्दं ॥
छं० ॥ १७६ ॥

गुरु राम का सब सेठ साहूकारों से सादर मिलना।

दूहा ॥ सुने गहंमह विप्र दर । आयौ उट्टे ताह ॥
तब दर पति सनमुष कहिय । आये श्रीपति साह ॥ छं० ॥ १७७ ॥
प्रजा षलक सथ उम्मही । जे बड़ दिल्ली साह ॥
सो आये दरबार तुम । कोइ इक काज उगाह ॥ छं० ॥ १७८ ॥
आए आतुर राज गुर । करिय विवह महमान ॥
आदर करि आसन्न दिय । संबोधे वर बानि ॥ छं० ॥ १७९ ॥

श्रीमंत सेठ का गुरु राम से शाह की चढ़ाई का समाचार कह कर सारा दुःख रोना।

कवित्त । सुनि अवाज सुरतान । षलक भज्जिय नद मंडल ॥
कर कुसाव भहरा । दान अरु मान अषंडल ॥
लिलि परवान पुंडीर । सहर लुथ्यौ द्रब साइय ॥
हनि सोदागिरि बानि । बनिज उन्नित पट पाइय ॥
अग्यान लुपै अग्या न्रपति । सत संपति संभर धनी ॥
गुर राज काज अवसर अवसि । प्रज पुकार मंडिय घनी ॥
छं० ॥ १८० ॥
दूहा ॥ तुम सम राजन राज हित । बित रष्षन चित भ्रम्म ॥
कानन मंडै करन सों । तू धर रष्षन ध्रम्म ॥ छं० ॥ १८१ ॥
कवित्त ॥ मंद राज माल दे । देष चिय तन असि किन भौ ॥
लोहानौ आजानबाह । अजमेर द्रुग्ग गौ ॥
पावस रा पट्टनी । महि महि सार निरत्तौ[1] ॥

---

(१) ए.-नारंनौ, नारंतौ

जर जोवन तन मंद। तुंग तेजी रन असुभौ॥
दाहिम्म दोह बंछै विषम। चरन बीर बेरी बहन॥
घर घालि भट्ट सूतौ घरह। सुबर विप्र तोही कहन॥
छं० ॥ १८२॥

का कलहंतरि नारि। धारि आनी घर मझ्झै॥
रवि समान प्रथिराज। गिल्यौ गोरी जिम संझै॥
जिहि परिगह परिवार। मारि मारत उप्पारिय॥
जिम रावन मंडलिय। बलिय बन्दर हरि बारिय॥
इच्छहु जो विप्र पच्छहि मरन। तौ अग्गै सोइ कहौ॥
कर दरभ कमंडल छाग म्रग। बादरि द्रुग मारग गहौ॥
छं० ॥ १८३॥

पाहुंनौ रावर नरिंद। बर प्रथा सपत्तौ॥
सोइ अचिज्ज गरहां। सुनंत मन मंझह संतौ॥
ता सज्जन दी लज्ज। बज्र गोरी धर चंपिय॥
नद नाहर पट्टन। प्रवेस अवनी आकंपिय॥
इम सुषम निंद आवै न्टपति। विषम अप्प डंकह डसिय॥
गुर राज काज अवसर वसिय। किम सुनेह छंडै रसिय॥
छं० ॥ १८४॥

राजह्रौं कूरम्म। हथ्थ लड्डू बिय बंधे॥
चाहुआन सुरतान। कूर काबरि इन बंधे॥
देव राज षीची प्रसंग। गंग टट्टं पट फुट्टिय॥
जैत राव हय गय। भंडार साहन सह लुट्टिय॥
गुज्जर गमार सस्चह बली। मंत दैव द्रुग्गन गनै॥
बर विप्र राज राजंग गुर। कहै आज तोही वनै॥ छं० ॥ १८५॥

गुरु राम का कहना कि मैं तो ब्राह्मण हूं पोथी पाठ जानता हूं राज काज की बातें क्या जानूं।

प्रोहित वाक्य।

इम सु कज्ज प्रव पंच। पढ़ै पचा प्रभु रंजहि॥

हम जु लच्छि आस रहि। चरन चंदन घसि बंदहि॥
हम सुदेव जग्योपवीत। सोहै तन मंडन॥
हम विरद बंदि न पढ़त। पापह पर पंडन॥
इह विकट भट्ट चंदहि चरित। कहै सुमानै न्नप नवल॥
परतष्पि द्रुग्ग पुच्छन चलौ। मंच घत्त सत्रह सबल॥
छं० ॥ १८६॥

शाह का कहना कि राज गुरु होकर अब आप भी ऐसा कहते हैं तो हम किसके होकर रहें।

प्रजा वाक्य।

धर बाहर पंडवन बुद्धि। बंधवन रुधि छुट्टिय॥
धर बाहर वामंन। छलित्त बल दोष सुयट्टिय॥
धर बाहर जुरि जरासिंध। गुर गजा जुद्ध किय॥
धर बाहर सुर पत्ति। अस्ति दद्धीच मंगि लिय॥
जिहि जियत धरनि धर और प्रभु। तिहि जननी जुब्बन हरिय
बंभन सुकज्ज इह अज्ज तुम। प्रज पुक्कार मंडी करिय॥
छं० ॥ १८७॥

गुरु राम का श्रीपत साह और सब महाजनों सहित कविचन्द के घर जाना।

दूहा॥ प्रज्ज सु करिवर विप्र कज। सीस तिलक तन तुंग॥
कुसुम गंध सब सथ्थ मिलि। मनहु कमल रस भ्रंग॥
छं० ॥ १८८॥

जब सहाब चद्दर उठी। तब गलहां फुटि चाय॥
प्रज पुकार गुर सों कहिय। चंद कहन गुर आय॥ छं० ॥ १८९॥

कवित्त। राज गुरू दरबार जाय। घर चंद सपत्तौ॥
छत्र चौडोल रु जान। दिव्य[1] आसन दीपत्तौ॥
हेमहार मुद्रित उ चंद। किरनिय जगमग्गिय॥

(१) ए. कृ. को.-दिप्ष।

तिमिर पाप कट्टन। लिलाट प्राची दिसि उग्गिय॥
प्रज सोर रोर पावस मनों। सुगर भट्ट चंदह मुनिय॥
भट्टनि जगाय जग्यौ पुरस। सुगुर पच्छ सद्दह दुनिय॥
॥ छं० ॥ १९० ॥

कवि का स्त्री बालकों सहित गुरु राम की पूजा करना और गुरुराम का कवि से अपने आने का कारण कहना।

चंद बदनि जगि चंद। चंद बदनी मुख चाह्यौ॥
है चंद्राननि चंद्र। कंत चंदहि न सुहायौ॥
अन्नित मित्त कलमित। नित्त बंदिन इह बद्दिय॥
छिन छिन घटि बढि बढै। राह भय भवन सुजंदिय॥
दुज पुज्जि अज्ज लज्जा न करि। राज गुरू आयौ घरां॥
साषंग धूप दीपह चरचि। सुबर बिप्र मंडल बरां॥
॥ छं० ॥ १९१ ॥

मुरिल्ल॥ सकल लोइ पुच्छन गुरु अष्षहि। गुरु षट मास राज बिन दिष्षहि॥
तब पर जानि प्रपंच उपायौ। तब गुरु पुच्छन चंदहि आयौ॥
॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा॥ आदर चंद अनंत किय। ग्रह आवत गुरु राम[1]॥
सम सुत त्रियनि सु चरन परि। सिर फेरिग सब हाम[2]॥
॥ छं० ॥ १९३ ॥

मुरिल्ल॥ तब गुरराज राज कवि बुझ्झै।
तुहि बरदाइ तीन पुर सुझ्झै॥
अहि निसि देव सेव गुरु ठानिय।
सो षट मास मिले विन जानिय॥
छं० ॥ १९४ ॥

---

(१) ए. कृ. को-राज।　　　　(२) ए. कृ. कों.-साज।

कवि का कहना कि जिस स्त्री के कारण सर्वनाश हुआ राजा उसी के प्रेम में लिप्त है।

दूहा ॥ हस्यौ चंद बर बिप्र सों। तुम जानहु बहु भंति ॥
जिहि कामिनि कलहो कियौ। सो जामिनि बिलसंत ॥
॥ छं० ॥ १९५ ॥

गुरुराम का कहना कि पृथ्वीराज ऐसा उदंड पुरुष क्योंकर स्त्री के वश में है।

मुरिल्ल ॥ कही चंद बर बिप्र न[1] मानिय।
रहि रहि कवि तैं बात न जानिय॥
जिहि धनु त्रिय रन त्रिन वर आनिय।
सुक्यौं देव त्रिय बसि करि मानिय ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवि का कहना कि अभी आप वह बात नहीं जानते ।

तुम सम दिष्टि अदिष्टि न दिष्यौ। जब असीलष्य दल्ल गहि[2] भष्यौ॥
प्रान समान परत दप छोड्यौ। मरन छंडि महिला सुष[3] मोड्यौ ॥
॥ छं० ॥ १९७ ॥
तिहि महिला महिला बिसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई ॥
बिभौ भूमि भ्रित जाहु सुजाही। सुनि सौ समौ राज गुर नाहीं॥
॥ छं० ॥ १९८ ॥

गुरुराम का कहना कि हां कवि कहो क्या बात है।

दूहा ॥ समौ[4] जानि गुर राज रहि। कहि कहि कवि इह बत्त ॥
किहिवै किहि रूपनि रवनि। किम राजन रस रत्त॥ छं० ॥ १९९ ॥

कविचन्द का संयोगिता के रूप राशि का वर्णन करना।

जुब्बन ज्यौं तन मंडनौ। सिसु मंडन तन डोल॥

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को.-गहि गहि।
(३) ए. कृ. को.-मन। (४) ए.-मनौ।

बालप्पन सह बिच्छुरन। तिहि चित चंचल लोल॥
॥ छं० ॥ २०० ॥

गाथा ॥ जंजोई संजोई। जोईतं सिद्ध जम्माई॥
नंजोई संजोई। गोईतं सिद्ध जम्माई॥ छं० ॥ २०१ ॥

मालती ॥ गुरु पंच सत्तति चामरे। चहुआन अच्छर धामरे॥
सति पीय पिंगल बंधए। गिय मालती प्रति छंदए॥
॥ छं० ॥ २०२ ॥

संजोगि जोबन जंबनं। सुनि सर्वदा गुरु राजनं॥
नग हेम हंस जुथप्पनं। गै मग्ग हंस उथप्पनं॥
॥ छं० ॥ २०३ ॥

तल चरन अरुनति अद्धयं। जनु ओय ओषँड लद्धयं॥
नष कुंद मल्लि सुवेसनं। प्रति व्यंब ओन सुदेसनं॥
॥ छं० ॥ २०४ ॥

करि कासमीर सुरंगनं। विपरीत रंभति जंघनं॥
रस नेव रंजि नितंविनी। कुसुमेष इक्क बिलंबिनी॥
छं० ॥ २०५ ॥

उर भार मध्य विभंगनं[1]। दिय रोम राय सुथंभनं॥
कुच कंज परसन जंअली। मुष मयुष[2] देषि[3] कलंकली॥
छं० ॥ २०६ ॥

हिय[4] अयन सयनति सिद्धयौ। भजि ग्रहन ग्रहनति रिद्धयौ॥
उर झीन झीलति कंचुकी। भुज ओट जोटति पंचकी॥
छं० ॥ २०७ ॥

नलि नील पाणि वअच्छयौ। जनु कुंद कुंदन सुच्छयौ[5]॥
कल ग्रीव रेह चिवल्लया। जनु पंच जन्य सुयल्लया॥ छं० ॥२०८॥

अधरेव पाक सुविंबनं। सुक सालि आलिन खंडनं॥
दस नेव मुक्ति सुनंदनं। प्रति भास मुद्रित वंदनं॥
छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए. कृ. को.- विल्गन (२) को.-नयुप (३) मो. दोप
(४) ए.-सिय (५) ए.-चच्छयो

सग् नागुरया मधु सदया। कलयंत कोकिल बद्दया ॥
छक लबन जीवन नासिका। तसु अंजनी पिय वासिका ॥
छं० ॥ २१० ॥

झाल सलत श्रवन तटंकता। रथ भंग अरक विलंबता ॥
तुछ तुच्छ इप्पहि इच्छसी। पष लज्ज सैसव संकसी ॥
छं० ॥ २११ ॥

सित असित उररि अपिंगज्जौ। जनु सेड बंदर बच्छज्जौ ॥
तसु मद्धि ध्रग्ग मद बिंदुजा। दुति इंदुनिंदत सिंधुजा ॥
छं० ॥ २१२ ॥

कच वक्र चक्रति कुंतलं। तसु ओपमा नह भूतलं ॥
मनि बंध पुहपति दीसए। जनु कान्ह कालिय सीसए ॥
छं० ॥ २१३ ॥

चिस रावली बनि बंनियं। अवलंबि अलि कुल स्रिनियं ॥
चित चित्त चित्तत अंबरं। रति जानि हुल्लति सम्मरं ॥
छं० ॥ २१४ ॥

जनु सीस फूलति अच्छयौ। मनु कान्ह कालिय मुच्छयौ ॥
* * * * * * * छं० ॥ २१५ ॥

संयोगिता के शरीर में १४ रत्नों की उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ जिहि उदद्धि मथ्य ए। रतन चौदह उद्धारे ॥
सोइ रतन संजोग[1]। अंग अंगह प्रति पारे
रूप रंभ गुन लच्छि। बचन अम्रत बिष लज्जिय ॥
परिमल सुरतरु अंग। संष ग्रीवा सुभ सज्जिय ॥
बदन चंद चंचल तुरंग। गय सुगति जुब्बन सुरा ॥
धेनह सुधनंतरिसीख मनि। भौंह धनुष सज्जौं नरा ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ समर समंडन समर ग्रह। समर सुरप्पर भोग ॥
समर सुजित्तिय पंग न्रप। तिहि[2] चल्लन संजोग ॥
छं० ॥ २१७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सोइ संजोग सुअंग (२) ए. कृ. को.-वल्लह ।

मन्नि राज गुर राज रस। कवि वर वरनिय सत्ति ॥
जस भावी तस भुग्गवै। तस विधि अप्पै मत्ति ॥
छं० ॥ २१८ ॥

उभै उभै रस उप्पयौ। मिले चंद गुर राज ॥
कब वयनन आनन मिलहि। नयन निरप्पहि राज ॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द और गुरु राम का सब महाजन मंडली सहित राजद्वार पर जाना।

भुजंगी॥ मिले विप्र भट्ट अनूपंम धामं। मनोहिंदवानं सबानं[1] तकामं ॥
उभै सूर सांई सु अग्या विनानं। चढ़े एक चोडोल नर एक जानं ॥
छं० ॥ २२० ॥

महा प्रीति अंगं मनं एक कीनं। मिले हथ्थ हथ्थं तुतालीय दीनं ॥
उभै ओपमा सूर चंद सु चंदं। उभै पूजनं राज राजंन बंदं ॥
छं० ॥ २२१ ॥

अनेकं सुभंती उभै जानि बानं। उभै अस्स किती रथं चाहुआनं ॥
उभै आस पासं महाजन्न चालैं। जिनं देख देसं महानीच हालैं ॥
छं० ॥ २२२ ॥

कहै जे समाचार दूरंम होता। मिलै लोक सथ्थें तमासा निजोता ॥
* * * * * * * छं० ॥ २२३ ॥

कवित्त ॥ एक रथ्थ आरुहिय। सरद दिन इंद मनोहर ॥
समुह राज दरबार। पलक उम्महिय सनोहर ॥
कलस बंधि बंधियन। सगुन संचारि विचारिय ॥
बढ़े किति वल्ली[2] सुघट्टि। घट आउदि हारिय[3] ॥
उच्छह उतंग छंदह बयन। गयन गज्जि बज्जिय जलह ॥
दरबार राज धुंधरि धरनि। सरन रष्पि दुग्गा बलह ॥
छं० ॥ २२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सबानंन
(२) मो.-बेली (३) मो.-भट आय निहारिय

संयोगिता की ओर से नरभेष धारण किए हुए पहरेदार स्त्रियों का सब लोगों को मार कर भगा देना।

दिष्षि दइय दरबार। पंग कुंअरि चर बारहि ॥
नारि भेष नर वस्त्र। सस्त्र लकरी कर झारहि ॥
मार मार उच्चार। बाल तरुनि सुगंध रस ॥
तुरिय नथ्थि गज नथ्थि। नथ्थि रथ विरद बंदि जस ॥
बाजहि विसाल रन तूर रव। भवर भीर भामिनि भवन ॥
दिठि परत लरथ्थर पय परत[1]। नकरि जीव अग्गह गवन ॥
छं० ॥ २२५ ॥

षलक भग्गि गय सथ्थ। छंडि चौडोल लोग गय ॥
लाल लहरि लक्करिय। छाह सिर विप्र भट्ट भय ॥
बिन अलच्छि लच्छि नह। बिहनि इच्छा भइ सुगंह ॥
उम्माह ग्राह मिल्लिग[2] पवारे[3]। रवरि राह ठिल्लित ठिल्लिग ॥
दासी दिवंग सम अच्छरिय। मिलित दरह दोउनि बुल्लिग ॥
छं० ॥ २२६ ॥

कविचन्द का ड्योढीवाली दासियों से बातें करना और कंचुकी का कलरव सुनकर कवि के पास आना।

चंद्रायना ॥ मिले चंद गुरराज विराजत राज दर।
जहां पंगा प्रभानु कियो प्रथिराज बर ॥
तहां अपुब्ब रस रास विलासति सुंदरिय।
भित बिन न्रप दरबार जिनग बिन मुंदरिय ॥
छं० ॥ २२७ ॥

दूहा ॥ इम जंपै कविराज गुर। कंपिग पहन वार ॥
को गुर देव नरेस सों। दिसि गज्जनी पुकार ॥
छं० ॥ २२८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिठि परतल रप्पर पय परत। (२) ए. कृ. को.-पिल्लिग
(३) मो-दवरि, ए पवरि

सुनि सुनाइ आवंन मिटि। दिष्षि कविंद न्नप थान ॥
जै जीवन तौ पंच बुलि। दर बोले दरवान ॥

छं० ॥ २२९ ॥

बर किंचिक प्रब्रह न्नपति। सुनि कलरव कवि वानि ॥
धाय चंद दरसन कियौ। भ्रम्म परिग्गह ठानि ॥

छं० ॥ २३० ॥

सुनि कवि बानि प्रमान धन। कहि इंछनी सें जाइ ॥
जु कछु कहौ बरदाय बर। ज्यों हित दिसा पसाइ[1] ॥

छं० ॥ २३१ ॥

अन्दर से इस दासियों का आकर कविचन्द से कहना कि क्या आज्ञा है सो कहिए हम राजा से निवेदन करें।

चद्रायना ॥ तव कुटिल्ल भोंह चख सोहति मोहति दासि दस।
कछुक हंसिय[2] पय लग्गिय जंपी अलीय[3] लसि ॥
तुम सरवग्य सुकब्बि राज गुर राज सम।
तुम तन समुह निरष्षि गये पति पाय हम ॥ छं० ॥ २३२ ॥

दोहा ॥ आसन असु दिय चरन रज। कच झारिय तन रेन ॥
सब्ब सिंगार सु सुंदरिय। आदर आभर नेंन ॥

॥ छं० ॥ २३३ ॥

दिट्ठौ सो दिट्ठौ नहीं। अनदिट्ठौ दिट्ठाय ॥
तुम सरवंगिय कवि सुनिय। इह अचिज्ज किहि भाय ॥

छं० ॥ २३४ ॥

कवि अचिज्ज सब अप्प घर। तरह तरह बतिनाइ ॥
नैप्रिय धन तिन नाव दस। किद्ध भूत गीताय ॥ छं० ॥ २३५ ॥
आदर दर दिन्नौ कविहि। आयस मंग्यो दासि ॥
कहा पयंपहु न्नपति सों। कहौ चंद गुर भासि ॥

छं० ॥ २३६ ॥

(१) मो.-पटाइ

(२) ए. कृ. को.-हसीप (३) ए. कृ. को.- अलिप

कविचन्द का राजा को एक पत्र और सँदेसा देना।

कग्गर अप्पह राज कर। मुष जंपह इह बत्त।
गौरी रतौ तुअ धरनि। तूं गोरी रस रत्त॥

छं० ॥ २३७ ॥

कवित्त॥ नथ्थि कन्ह चहुआन। धीर पुंडीरन निड्डुर॥
नहि सुमंत कयमास। राय गोयंद अषंडर॥
नहि सुलोह लंगरिय। अत्तताई सुभंग भर[1]।
नहि पज्जन पंवार। सलष लष्पन बघघेल नर॥
भोहांन भूप बंधुन बरन। सरन जाहि ढिल्लिय नयर॥
घर नयर राय रावर समर। सक सहाब गारी वयर॥

छं० ॥ २३८ ॥

दासियों का पृथ्वीराज के पास जाना और कवि का पत्र देकर सँदेसा कहना।

दूहा॥ दासि संपत्तिय तिहि महल। जहं संजोगि नरिंद।
सनमुष सषी निरष्षयौ। मनो पृथीपुर इंद॥ छं० ॥ २३९ ॥
क्रम क्रम दासिय संचरिय। दस दस दिसि दरबार॥
पग मुक्कत उक्कत लिषिय। न्रिप निय नयन निहारि।

छं० ॥ २४० ॥

अन्य महल दासिय निरष। परषि पयंपन जोग॥
उन्नित मुष रुष राज किय। न्रपति सपत्तौ लोग॥

छं० ॥ २४१ ॥

इय कहि दासिय अप्पि कर लिषि जु दियौ गुर चंद॥
पहिलौ औलौ बंचियौ। भूमिय जाय नरिंद।

छं० ॥ २४२ ॥

कविचन्द का पत्र।

* षग तिस जस तिस दान तिस। तिस लग्गै हरि नाम॥

(१) मो.-मह सुम्भर

* यह दोहा मो० प्रति में नहीं है

अह निस ते मन वीर वर। तिस रष्षे संग्राम ॥

छं० ॥ २४३ ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आयौ असंभ। सह सेन सकिल्लिय ॥
दै चादर आदर अनंद। दिल्लिय दिसि मिल्लिय ॥
दस हजार वारूनि विसाल। दस लाष तुरंगम ॥
तह अनेक भर सुभर। मीर गंभीर अभंगम ॥
आवरन बत्त चहुआन सुनि। प्रान रष्षि प्रारंभ करि ॥
सामंत नहीं सोमंत करि। जिन बोरहि ढिल्लिय सुधर ॥

छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज का पत्र फाड़ कर फेंक देना और शृंगार से वीर रस मे परिवर्तित हो जाना।

दूहा ॥ सुनि कग्गर फार्‍यो सुकर। धर रष्षै गुर भट्ट ॥
तरकि तोन सज्यौ न्रपति। जिम बदल्यौ रस नट्ट ॥

छं० ॥ २४५ ॥

कल किंचत किंचित भयौ। गुनियन मयन उढारि ॥
बर पंचों छिन छिन छुटति। लज्ज पंच बढ़ि पार ॥

छं० ॥ २४६ ॥

राजा का कुछ विमन होकर संयोगिता की ओर देखना और संयोगिता का पूछना कि यह क्यों।

प्रिय अप्रिय दिष्षौ बदन। किय जिय न्रप भौ सथ्य ॥
इं पूछो बर बरह तुहि। कहि सम दौरति कथ्य ॥छं०॥ २४७॥

राजा का कहना कि मुझे रात्रि के स्वप्न का स्मरण आगया है।

अदभुत इक दिष्षौ न्रपति। रयनि गलित [1]षिन प्रात ॥
सुरति एक सम्मुह रही। सा सुपनंतर बात ॥

छं० ॥ २४८ ॥

(१) ए. कृ. को-छिन

संयोगिता का कहना कि यह तो हुआ ही करता है।

कवित्त ॥ कहै पीय पोमिनिय । कंत धन धन्यौ तोन धन ॥
सुष सुमार आरोह । सार संसार मरन मन ॥
दिन दिनयर निसि चंद । रेनि दिन दिनयर आवै ॥
जंतु मंतु इह बरनि । श्रवन लग्गवि समुझावै ॥
अरधंग धरा अरधंग हुअ । अरि अंग रंग अरधंग करि[1] ॥
जिम हंस रहत तस हंसनिय । सर सुक्कै जिम पंक परि ॥
छं० ॥ २४९ ॥

राजा का कहना कि नहीं वह अरिष्ट सूचक अपूर्व स्वप्न ध्यान देने योग्य है।

दूहा ॥ कहै राज संजोगि सों । अद्भुत चरित सुनंत ॥
निय पाइन लग्गिय सुप्रिय । कहि कहि कंत सुमंत ॥
छं० ॥ २५० ॥

संयोगिता का हठ कर कहना कि अच्छा तो बतलाइए।

कहै राज संजोगि सुनि । सुकथह कथ्य अकथ्य ॥
श्रवन मंडि कनवज्ज निय । सा सुपनंतर अथ्य ॥
छं० ॥ २५१ ॥

राजा का रात्रि के स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ अज्ज सुपन सुंदरिय । रंभ लग्गिय परि रंभह ॥
तहं तुअ संग सुकिय । तेज अच्छिय रवि गिम्मह ॥
तहं तुम मिलि झग्गरौ । गहहि करिवर कर जंपहि ॥
तहं अदिष्ट आरिष्ट । दुष्ट दानव तन चंपहि ॥
तहं तून हून नन अच्छरिय । हर हर हर सुर उप्पज्यौ ॥
जानै न देव दैवान मति । कहन्निम्मान कह निप्पज्यौ ॥
छं० ॥ २५२ ॥

(१) ए. कृ. को.- अरि अरधंग अरंग करि

राजा का महलों से निकल कर कवि के पास आना।

सुनि उट्टिय संजोगि। बचन जै जै जंपत जस॥
धनि स्त्ररति चहुआन। राज सिंगार बीर रस॥
हक्क मरन सुर नरां। मरन सिध साधक मुक्कै॥
भरन रहै जग नाम। चित्त रष्पत ब्रत चुक्कै॥
अध अध करे अरियन दुअध। तूं उधतदि अरधंग न्नौं॥
सामंतन को सो मंत करि। राजस अप्प पधारिहौं॥
छं० ॥ २५३ ॥

राजा के स्वप्न का हाल सुनकर कवि और गुरुराम का बलिदान और दान पुण्य करवाना।

सुपनंतर पुच्छनह। राजगुर कविगुर बुल्लिय॥
सो सुपनंतर सुनवि। तेनं सुष तिन प्रति षुल्लिय॥
सुबर हथ्थ दै सथ्थ। अभय पंजर पढि दिन्नौ॥
सहस कलस भरि षीर। अरघु रवि ससि को किन्नौ॥
दस बलि दिसान दस महिष हनि। मित अनंत मित दान दिय॥
तिहि दिवस देव प्रथिराज दर। संझ सुभर भर महल किय॥
छं० ॥ २५४ ॥

दूहा ॥ आवस्यक भावी विगति। कहा महिष बध होइ॥
जो जतननि टारी टरै। नल[1] पंडव सम कोइ॥
छं० ॥ २५५ ॥

पृथ्वीराज का बाहर के सब समाचार और रावलजी की अवाई की खबर सुनकर पश्चात्ताप करना और मंत्रियों से कहना कि जिस तरह हो रावल जी को लिवा लाने का उपाय करो।

पद्धरी ॥ किय महल राज आरंभ संझ। पद्धरी छंद व्रन्नैति मंझ॥

---

(१) मो.-भल।

धुक्किय निसान हुक्किय जिकीव। दिसि दिसि रिसान धाए नकीव॥
छं० ॥ २५६ ॥

षोलिय सुषग्ग हैं गै पलान। रथ अरथ दिष्ट गुष्टिय गुमान॥
पट नरम गरम जरि जिमित षान। जे लए दंडि सुरतान पान॥
छं० ॥ २५७ ॥

आवध अरद्ध सिलहन सकोड़। जंपरिय किरन किरनाल छोड़।
उच्छरिय सुच्छ बंकुरि कपोल। बिदिन बिरह उत्तंग बोल॥छं०॥२५८॥

छह रंग छक्क आहत्त दान। इल मझ्झ नंज बंबरि विषान॥
लिषि भित्त भित्त कग्गर सुइष्ट। जोगिन जमाति जन मिलि गरिष्ट॥
छं० ॥ २५९ ॥

सनमंध प्रियापति चित्रकोट। वहु लज्ज बीस बासरति ओट॥
पुछ्यौ प्रधानह हंकारि हकारि। कह करी प्रथापति जनु जुहार॥
छं० ॥ २६० ॥

कासंध अंध बीसल कुलेन। अपराध कोटि कामिनि रसेन॥
जित महल पुरष रस बस अरक्क। भुग्गवै भूप ते निज नरक्क॥
छं० ॥ २६१ ॥

मो बर समान धरपति सुइष्ट। मो कहि न कवन डर कवन कष्ट॥
गोग्रहन धरनि ग्रह अतिथ राज। रष्षहि सरीर सुष[1] कवन काज॥
छं० ॥ २६२ ॥

अप अप्प दोष चित चिंति बीर। इहि लज्ज अज्ज छंडो सरीर॥
धरनर नरिंद जोगिंद मंत। पति चित्रकोट अरु प्रिथा कंत॥
छं० ॥ २६३ ॥

उतर्यौ आय घर निगम बोध। मुहि दइन मुगध किन आय सोध॥
अब करिव कोइ जिहि तिहि उपाय। जिम चलै अप्प ग्रिह समरराइ॥
छं० ॥ २६४ ॥

रिस दिसर जान संजोगिबान। फिरि मझ्झ बोलि पिय सुनहु आनि॥
महिलान मंत पुच्छै न कोइ॥ हुं कहौं नाथ ज्यों समझि होइ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुष।

सब त्रिया बुद्धि नीची गिनंत। मानै न सच्च जो फुनि मुनंति ॥
संसार त्रिया बिन नाहि होत। संजोगि सकित सिव माँहि जोत ॥
छं० ॥ २६६ ॥

एह रन सरन्न बहु भांति जानि। गुन अगुन अविधि विधि सबै ठानि॥
ग्रह चरित लषै जोतिग्ग माहिं। त्रिय चरित करत कवि सुद्धि नाहिं॥
छं० ॥ २६७ ॥

अन्नादि रीति सुनि एह बात। तिन काज कहै हम बुद्धि घात ॥
हम सुष्ष दुष्ष बंटन समथ्थ। हम सुरग बास छंडै न सथ्थ ॥छं०॥२६८॥
हम भूष प्यास अंग मैं देव। हम सर समान पति हंस सेव ॥
छं० ॥ २६९ ॥

संयोगिता का दासी भेजकर राजा को दरबार में से बुला भेजना।

कवित्त ॥ अंग रष्षि संजोगि। नाम सुभना सुभ लच्छन ॥
रूप तेज अति तास। सकल कल ग्यान विचष्षिन[1] ॥
आइसु सष्ष्स महल्ल। देषि द्रिग राजन उच्चिग ॥
गहर लज्ज बर बान। नेम निज नाथ स दुच्चिय ॥
इंछै सुमष्ष्ष संजोगि तुम। आवन राज षिनक्कनह ॥
सुनि सुभर सबै बैठन कहिग। संजोगी संपत्त ग्रह ॥ छं० ॥ २७० ॥

दूहा ॥ उठत राज सुह सुह हगनि। भरमंडी सन सन्न ॥
त्रिया रसन तृपतो नहीं। राज काज नह मन्न ॥ छं० ॥ २७१ ॥

राजा का संयोगिता से पूछना कि तुम मन खिन्न क्यों हो।

दिष्षिय राज संजोगि द्रिग। मन मलिन्न चलचित्त ॥
कहै राज पंगानि किम। तूं तन मनै अहित्त ॥ छं० ॥ २७२ ॥

संयोगिता का कहना कि जिस विषय पर दरबार में बात चल रही थी उसीके लिये मैंने भी आपको कष्ट दिया है।

कहै संजोगिनि स्वामि तुम। सभा सु जंपिय बत्त।

(१) ए कृ. को.-सुलच्छिन।

सोइ कारन प्रभु संभर्यौ। सुहौं पगि कहौं सत्त ॥

॥ छं० २७३ ॥

संयोगिता का कहना कि मैंने रावलजी का उचित आदर सत्कार साध दिया।

कवित्त ॥ प्रथां कंत आगमह। कंत भोंकलि प्रधान दिय ॥
सुभर अन्न वस्तर सुगंध। आदर अदभ्र किय ॥
ननद देउ सिंगार। हार उत्तंग दुति मुत्तिय ॥
विजै करत विजैपाल। तात कै तात लिए निय ॥
विस लेष[1] प्रीति अंतर निमष। श्रवन राज आनंद दिय ॥
गुरमंच तंच जिम प्रौढ तिय। पिय पियूष ज्यों रेनि पिय ॥

॥ छं० २७४ ॥

पानिव्रत वर्णन।

त्रिय जु प्रीय उच्चरिय। त्रिय जु प्रिय बिन जिय[2] रष्षै ॥
अग्गि लोपि रव रवन। रवन बिन घटिन परष्षै ॥
पवन पंथ हाहंत। रहिन ग्राहत ग्रह तन्नै।
अंसु रष्षि तजि अंसु। हार सिंगारत जन्नै ॥
जुरि[3] चक्र चक्र बोलह अगनि। चरित चित्त सुज लोक चित ॥
अरधंग अंग संदेह नहि। सुहो मोहि पिय पंग पित ॥

छं० ॥ २७५ ॥

दूहा ॥ पिय बिन तनपनं अनंन धनं। भूषन वसन न रत्त ॥
जीवन बिन जीवन रषन। तो पति एह परत्त ॥

छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को आलिंगन करना।

* हँसि आलिंगन अंग दिय। जुरि लोयन पिय पीय ॥

(१) ए. द. को.-विषलेप। (२) ए. द. को. तिय।
(३) ए. कृ. को.-सुरि।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

स्वंच लावन्य समुंद सर। समुध सुधा रस दीय॥
छं० ॥ २७७ ॥

आलिंगन समय की शोभा वर्णन।

कवित्त॥ हँसि आलिंगन देत। उपजि आनंद अपारह॥
कनक लता जनु उमड़ि। लपटि लग्गी सहकारह॥
नृप पयान सुनि कान। अंसु फिरि उअर समावत॥
मानो आगम झरमंडि। विरह पावक बुझावत॥
चहुआन चलत संजोगिता। पंग आनि करि कैं कहै॥
संदेस सास संभरि धनी। पलन प्रान पच्छै रहै॥
छं० ॥ २७८ ॥

पृथ्वीराज का इंछनी आदि अन्य सब रानियों से मिलना।

दूहा॥ अंतर गति अंतर मिलन। ए सुष बुद्धि न कोइ॥
कै जानै बिछुरन मिलन। कै सरवग्य जु होइ॥
छं० ॥ २७९

चिपति नयन बयनह चिपति। चिपति अलिंगन देह॥
रमन रमन्न विलास करि। फिरि दिय गंठि अछेह॥
छं० ॥ २८० ॥

इंछिय इंछिनि वंछिनी। सथ्थनि सुचच्छ सुहाग॥
दस रवनी दस घटिक मिलि। जानि भवर कुसुमाग॥
छं० ॥ २८१

दसर वन्नि दस घटति । फिरिग कुसमंग भवर जिम ॥
ग्रह ग्रहञ्जि अलि मुक्कि । फिरिय कुंडली वाम इम ॥
नयन कंति फिरि देषि । चंद ओपम फिरि पाई ॥
कमल कोस ग्रह जुथ्थ । भवंर फिरि फिरि लग्गाई ॥
मंभरे चित रावर समर । दइ दुबाह दुज्जन हरन ॥
जोगिंद राव जुग उप्परह । नर नरिंद करनी करन ॥
छं० ॥ २८३ ॥

पृथ्वीराज का दरबारी पोशाक करके रावलजी से मिलने के लिये निगम बोध को जाना ।

दूहा ॥ चल्यौ राज संबोधि तिय । लिय बहु भांति वसत्त ॥
प्रीति सहित अंतर उमग । करन सु सीतल गत्त ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ कुसुम पट्ट सिर पग्ग । कुसुम रस गंध भवर सम ॥
श्रवन साष दोउ लष्य । द्रव्य बहु मोंरि[1] जोरि जम ॥
सुरत रत्त अंतरह । रत्त तन बिरत मोहि मनि ॥
फुरत हथ्थ आतुरत । घुरत नीसान धुक्कि सुनि ॥
मन मुरित मोह सेना सुरत । रुरत रात[2] सामंत सथ ॥
न्रिप समर सीह राजन मिलन । निगम बोध भिट्टन सुतिथ[3] ॥
छं० ॥ २८५ ॥

दूहा ॥ करिय मतौ मंडलौ महल । छंडि चावंड बर बंद ॥
बगरि देव दरस्यौ न्रपति । सुमन मानि आनंद ॥
छं० ॥ २८६ ॥

आनंदेश्वत भर सुभर । दिन दुलंभ न्रिप काज ॥
सुवर बंध बंध्यौ न्रपति । साहि गह्यौ जिहि साज ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-मोंहि ।
(२) मो.-रास (३) ए. कृ. को.-कथ

तब न्रप उत्तर अप्प दिय। समर सपत्तौ ग्रेह ॥
तास मदन विधि अप करौ। होय भविस्यति[1] तेह ॥
छं० ॥ २८८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतमंडली सहित निगमबोध स्थान पर पहुंचना।

भुजंगी ॥ चल्यौ भेटनं राचि आवाज बज्जी। दिषी रत्ति निद्दी रही ताहि लज्जी।
चवं मास पट्टं छहं रत्ति गज्जी। क्रमं मोह छंडे ग्रिहं क्रम्म लज्जी ॥
छं० ॥ २८९ ॥

फिरै कुंडली डोरि व्रिम्मान तज्जी। मनों पातुरं चातुरं न्रत्त सज्जी॥
मयं मोर मुत्ती हयं हीर मंडे। मनों सेत नेतं सुमेरं प्रचंडे ॥
छं० ॥ २९० ॥

चल्यौ चाइ चहुआन दै कंध पानी। भई जैत आजैत आकास बानी ॥
रवी जोग बैठौ अकासं सनीरं। दिसं बाम ईसान सद्यौ[2] करीरं ॥
छं० ॥ २९१ ॥

फलं फूल पत्रं सुवंनं उड़ाये। मनी बार बारं सुवाहं चढाये ॥
सबै बोलि सामंत सामंत मन्ने। भई अग्गि या चढ्ढनं सब्ब जन्ने ॥
छं० ॥ २९२ ॥

चढे सथ्य सामंत सब्बै समथ्थं। बजेद नीसान सद्दे अकथ्थं ॥
चढ़े सेन चल्ले निगंबोध मग्गं। गए पासि सिंघं चरं चारि अग्गं ॥
छं० ॥ २९३ ॥

चल्यौ रावलं संमुहं मंगि वाजी। चढी सब्ब सेना भरं नामसाजी ॥
मिले संमुषं सेन दो राज राजं। दिठे[3] दिट्ट दिट्ठी रसालं विराजं ॥
छं० ॥ २९४ ॥

मिले प्रेम पूरन्न सामद्धि राजं। बजे अत्ति उच्छाह सुच्छाह बाजं॥
भए चित्त आनंद मानंद दूनं। बढी प्रेम बान कुसल्लं सजूनं ॥
छं० ॥ २९५ ॥

मिले जाय बैठै निगंबोध थानं। चितं दोय रंजै प्रियं प्रेम पानं ॥

(१) ए. कृ. को.-भविष्पति (२) मो.- चद्यौ (३) ए. कृ. को.-दिले

घने आदरं सादरं सहि बैठै। मनों काम देवं दोऊ रूप पैठै॥
छं॥ २९६॥

एक दूसरे की कुशल प्रश्न होने पर पृथ्वीराज का रावल जी से अपना सब हाल कहना।

दुहा॥ कुसल त्तन पुच्छिय न्रपति। हय गय भूमि भरान॥
ता पच्छै सुत सुति सुपरि। सुष दुष पुच्छि परान॥
छं॥ २९७॥

चौ अग्गानी सद्धि बर। पंगानी प्रभु आनि॥
रहे सूर सामंत ते। नव जम्महि पहिचान॥
छं॥ २९८॥

सा संषेपक उच्चरिय। बिहुन विरद्दह तोल॥
जग्यराज जयचन्द ग्रह। पुच्छि करै तिहि बोल॥
छं० ॥ २९९॥

रावल जी का कहना कि स्त्री संभोग से भला कोई भी संतुष्ट हुआ है।

कवित्त॥ * सोम वंस राजिंद। नाम ससि वंध विचक्षन॥
घर घर प्रति इक रूप। रूप लावन्य सुलच्छिन॥
दस हजार तिय परनि। करेहु अग्गैर महल्लं॥
एकादस हज्जार। गए संवच्छर चल्लं॥
त्रय कोडि लाष पच्चास हुअ। पुत्र तास बलवँत सरस॥
रावल्ल पयंप प्रथिराज सम। ते पन धपिय न काम रस॥
छं० ॥ ३००॥

कविचन्द का नवीन सामंतों के नाम कहना और रावल-जी का प्रत्येक से सादर मिलना।

दूहा॥ सामंतनि भेट्यो समर। प्रति प्रति आदर दीन॥
नाम कहे कविचंद नै। छंद अनुक्रम कीन॥ छं० ॥ ३०१॥

* यह कवित्त मो. प्रति में नहीं है।

नविन सामंतों के नाम ग्राम इत्यादि का परिचय।

भुजंगी ॥ अपें अब बुआ राव भेट्यौ नरिंदं। स्तीधार राजा सुलज्जी समुद्दं ॥
मिल्यौ बग्गरी देव षीची प्रसंगं। गुनं दान मानं जया जास अंगं ॥
छं० ॥ ३०२ ॥

लगे पाय कुम्मार दोनों सलीहं। लये लाय कंठं सनमान जीहं ॥
मिले सिंघ पामार साधार भारं। कमद्धज्ज आरज्ज सारज्ज वारं ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

तबै आय परिहार सिंघं महन्नं। समं पीप बंधं सुभेट्यौ सहन्नं ॥
तबै आइयै ताम आजान बाहं। अजम्मेर हुनौ समत्तौ उछाहं ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

लगौ रावलं पाय सा चाहुआनं। समं प्रीति रत्तौ सुमत्तौ द्रिसानं ॥
मिल्यौ चंद चंडी बिरद्दं सुवाचं। बलं बुद्धि षग्गं सुअंग्गसाचं ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

अबदूत राजंग गोरष्ष रायं। कलंकं सुरायं सु अंगं उहायं ॥
सुअं जन्ह हत्या सुमत्या कलेवं। धरा ध्रम्म रूपं कलौ देव एवं ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

गुरं राजजोगिंद इंदं सुभासं। अविख्यात मंचा सनं सब्बितासं ॥
अठं सट्ठितीरथ्थ मो अज्ज पाया। मुषं देषते चित्त कोटं सुराया ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कवीताम आभासि जोगिंद रायं। मिले पुच्छि वत्तं कुसल्लं ग्रहायं[1] ॥
मिलेताम माल्हन्न सो वीर वीरं। धरै स्वामि ध्रम्मं सदा षग्ग धीरं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

लगे ईसरं दास चहुआन पायं। नरं नाह कन्हं सुअं सच्चभायं ॥
पऱ्यो राव परताप रायं पुमानं। वरं लज्ज दाहिम्म कैमास पानं ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

सुषं भिंटि गहिलौत गोयंद राजं। समं तोल सामंत सीहं सु ताजं ॥
जयं जाम देवं सुजुद्धं जुधानं। वियं भूप भोरं सु जोरं वियानं ॥
छं० ॥ ३१० ॥

(१) मो-ग्रहायं

बिय तेज मुत्ती सु जोति क्रिसानं। इमं तेज अंगं सुरंगं दिसानं॥
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक बानै सदा एक लाजं॥
छं० ॥ ३११ ॥

दिठे दिठ्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो मेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ ब्रम्मथानं॥
छं० ॥ ३१२ ॥

बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों जामनी राज सोमेस भेली॥
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती॥
छं० ॥ ३१३ ॥

दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ षीभि पंवार बोल्यौ बिचारी॥
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभानौ॥
छं० ॥ ३१४ ॥

तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुझ्झियै सब्ब सामंत लाजं॥
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। बिना हथ्थ राजंन की हथ्थ षंडौ॥
छं० ॥ ३१५ ॥

अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लम्भों इको रन्न अंगं॥
सबै क्रूर कूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटी॥
छं० ॥ ३१६ ॥

बढ़ी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेली[1]॥
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रजे राजरूपं॥
छं० ॥ ३१७ ॥

बढी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंगं॥
तबै बढ्ढि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुम्मान आसन्न होई॥
छं० ॥ ३१८ ॥

सषंसी कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
दमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं॥
छं० ॥ ३१९ ॥

समं जाम देवं तनं सब्ब काजं। सबै[2] ब्रम्मइ राज जद्दों सु जाजं॥

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली। (२) ए. क. को.-सजे।

घनं तर्क अबतर्क करि राजबेहं। मनों बेरि षुम्मान चावंड एहं॥
छं० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय बिचारो।

कवित्त ॥ देषि चरित चहुआन। चित्त बत्तह बिचारिय॥
भय भवस्य न्रिम्मान। कन्न जंपिय उच्चारिय॥
घटै बढै संग्रहै। जीव साषी सुष दुष्षह॥
नव जम्मह चित्रंग। चित्र कोटह बँध रष्षह॥
सम्भाव मरन गज मत्त जिम। पै संकर बंधी सरर॥
आमंत मंत सामंत हौ। कोन मंत रष्यो सुधर[1]॥ छं० ॥ ३२१ ॥
चहुआनां बर बंस। ब्रह्मवेदी जगि जन्ना॥
ता राजन क्रत काज। सित्त सामंत उपन्ना॥
पंच सूर इक अग्ग। जथ्थ कथ्थां कुल जाए॥
दइय क्रम्म करि जोग। भोग जोगनिपुर आए॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिया। बर सु केलि रावर समर॥
सगपन सु प्रीति बासुर दुदस[2]। निगम बोध उत्तरिय धर॥
छं० ॥ ३२२ ॥
बोलि मंत सामंत। समर जंपहु न समर बर॥
अग्गै ही चितरंग। बंध जस बंधि अप्प घर॥
ए अभंग राजंग। मरन जानै तिन मानं॥
इन कलंक नन ग्रेह। बीय कालंकन भानं॥
सुभ्भर सुमहन रंमह सुभर। बर बीरग विह्वारि घन॥
जोगिंद राज जग हथ्थ वर। बर विढार विरुझाय रन॥
छं० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद। पूरंन प्रेम भर॥
अति अनन्द मन चंद। नेह उरछंग देह वर॥

(१) मो.-कोन मंत रषहु जुधर। (२) मो.-दुदत्त

बिय तेज मुत्ती सु जोति क्रिसानं। इमं तेज अंगं सुरंगं दिसानं॥
सदा एक पेमं रनं एक राजं। धजा एक बानै सदा एक लाजं॥
छं० ॥ ३११ ॥

दिठे दिट्ठ नेनं दुनेनं दुरूरं। दिसा दच्छिनी उत्तरे एक सूरं॥
मनो मेद पाटं सु घाटं पिछानं। पिता एक माता भयौ भ्रम्मथानं॥
छं० ॥ ३१२ ॥

बलीराइ बलिभद्र किय दास केली। जदों जामनी राज सोमेस भेली॥
नयं जीयविचार दुहुमात पित्ती। जयं जादवं संभरी रत्त रत्ती॥
छं० ॥ ३१३ ॥

दियं चित्रकोटं सोइ सुन्नि भारी। उठ्यौ षीझि पंवार बोल्यौ विचारं
लग्यौ गुज्जरं पाइ षीची रिसानौ। मनों डंकिनी डक्क अग्गै उभानं
छं० ॥ ३१४ ॥

तुमं पंच पुत्तानि सोमेस राजं। तमं बुझ्झियै सब्ब सामंत लाजं
तुमं मंड के डंड के बोल छंडौ। बिना हथ्थ राजंन को हथ्थ षंडै
छं० ॥ ३१५ ॥

अरी सिंधु लोपी जमं संधि रंगं। नही मग्ग लम्भों इको रन्न अं
सबै क्रूर क्रूरंम की बात षोटी। हसै जादवं पानि पामार जोटी
छं० ॥ ३१६ ॥

बढ़ी हास रासं रसं प्रेम बेली। बढी प्रेम नेमं सु मग्गं सहेली
मनों प्रेम बानंक सज्ज्यौ अनूपं। कला नेह बढ्यौ रजे राजरूप
छं० ॥ ३१७ ॥

बढी जोति जोती रसं रास रंगं। कला कुंदनं ओप बढ्यो सुअंगं
तबै थट्टि परिहार अप्पै सजोई। कही बात षुम्मान आसन्न होई
छं० ॥ ३१८ ॥

सषंसी कुसीहं परीहार बंगं। रनं रामदेवं सु षीची प्रसंगं॥
दमे दाहिमं सूर जोरं जुनेकं। परै जुद्ध सुरतान चामंड मेकं॥
छं० ॥ ३१९ ॥

समं जाम देवं तनं सब्ब काजं। सबै[२] व्रम्हइ राज जहों सु जाजं॥

(१) मो.-घटे बढे संग्रहं जीव सेली। (२) ए. क. को.-सजे।

घन तर्क अबतर्क करि राजबेहं। मनों बेरि षुम्मान चावंड एहं॥
छं० ॥ ३२० ॥

रावलजी का सबको प्रबोध कर कहना कि अब जिसमें राज्य की रक्षा हो सो उपाय बिचारो।

कवित्त ॥ देषि चरित चहुआन। चित्त बत्तह बिचारिय॥
भय भवस्य त्रिम्मान। कन्न जंपिय उच्चारिय॥
घटै बढै संग्रहै। जीव साषी सुष दुष्षह॥
नव जम्मह चितंग। चित्र कोटह बंध रष्षह॥
सम्भाव मरन गज मत्त जिम। पै संकर बंधी सरर॥
आमंत मंत सामंत हौ। कोन मंत रष्यो सुधर[1]॥ छं० ॥ ३२१ ॥
चहुआनां बर बंस। ब्रह्मवेदी जगि जन्ना॥
ता राजन कृत काज। सित्त सामंत उपन्ना॥
पंच सूर इक अग्ग। जध्य कथ्थां कुल जाए॥
दइय क्रम्म करि जोग। भोग जोगनिपुर आए॥
ता अनुज राज भगिनी प्रिथा। बर सु केलि रावर समर॥
सगपन सु प्रीति बासुर दुदस[2]। निगम बोध उत्तरिय धर॥
छं० ॥ ३२२ ॥
बोलि मंत सामंत। समर जंपहु न समर वर॥
अग्गै ही चितरंग। बंध जस बंधि अप्प घर॥
ए अभंग राजंग। मरन जानै तिन मानं॥
इन कलंक नन ग्रेह। बीय कालंकन भानं॥
सुम्भर सुमहन रंमह सुभर। वर बीरग बिह्वारि घन॥
जोगिंद राज जग हथ्थ बर। वर विढार बिरुझाय रन॥
छं० ॥ ३२३ ॥

रावल जी का राजमहलों को आना।

मिले राज रावल नरिंद। पूरंन प्रेम भर॥
अति अनन्द मन चंद। नेह उच्छंग देह वर॥

(१) मो.-कोन मंत रषहु जुधर। (२) मो.-दुदत्त

मिलिय सुभर उम्भय नरिंद। पित नाम आति तव ॥
कुसल बत्त पढि तत्त। हित्त आभित्त चित्त सव ॥
बैठे जुपंच सत्तह घटिय। लै रावर संमुह चढिग ॥
आए सुग्रेह नद्द त नद। अति उच्छव सुच्छव बज्जिग ॥
छं० ॥ ३२४ ॥

पृथ्वीराज और रावल जी का संयोगिता के महलों में बैठना रावलजी का सरदारों सहित भोजन करना।

गाथा ॥ बैठे आद्दय ग्रेह पंगानी। अत संबोधि रुचिय रस बानी ॥
धवल उंच साला सम रुच्चं। अति सुष्पान[१] मान थल सुच्चं ॥
छं० ॥ ३२५ ॥

आरोहित आसनयं सारं। अति गति रूप व्रन्न तन पारं ॥
जरा जरान अति अंग उभारं। देखत चित्त चढे के बारं ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

जे जे अष्यि पंग ग्रह उत्तं। देषन चातुर चित्त अभूतं ॥
ग्रिह साला सिगारि अनूपं। समताहीन इंद्र पुर रूपं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

तहां आसन्न उतंग विराजं। जे मानिक्क विवह मनि भ्राजं ॥
तहां रावल सम रोज अरोहं। मानहु इंद्र उदे उभ सोहं ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

बोले सुभट सब्ब नर तथ्थं। जे भर अप्प जुरावल सथ्थं ॥
मुष मुष किद्ध प्रसंस विचारं। जे भर सथ्थ सुरावल सारं ॥
छं० ॥ ३२९ ॥

बिवह सु सुद्ध वास रुचि रासं। मुक्कि गंध वर धूम सुवासं ॥
साष जाति भत्ति हित्त सुभावं। विवह सुगंध प्रसंसन पावं ॥
छं० ॥ ३३० ॥

कुसुम सुवास जाति भत्ति भत्ती। रूप अनूपम गुंथि सुगत्ती ॥

(१) ए. कृ. को.-सुषासन

कासमीर म्रगजा घनसारं । कर्दम जच्छ दच्छ तातारं ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

विधि विधि भंति सुरावल रच्चै । पूजा देव समान सुसच्चै ॥
अति आनन्द सेव[1] सह सारं । तब सुभ्र पंग आय परिहारं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

भोजन काजि अंतर आभासं । साला पहु संपन्न सहासं ॥
सालं असन अनुपम रूवं । आसन बैठि नेह पहु दूवं ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

बैठे सुभट सथ्थ सम थानं । आभासित भोजन विधि वानं ॥
छं० ॥ ३३४ ॥

भोजन के समय किन किन पशु पक्षियो को रखना उचित है।

दूहा ॥ * कुर्कट निकुल करोंच कपि । हिरन हंस सुक मोर ॥
असन करत न्रप रष्षि ढिग । सूचक जहर चकोर ॥
छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ हंस होत गति भंग । मोर कटु सबद उचारै ॥
रोवत क्रौंच कुरंग । सुकपि छंडत आहारै ॥
सूआ वमन करंत । निकुल कुर्कुट मिचाई ॥
ऐसे चरित करंत । जानि आगंम दिनाई ॥
चकोर परस्पर हित रहित । कहत चंद पारष्ष लहि ॥
तिहि काज आनि रष्षत इनहि । भूपत भोजनसाल महि ॥
छं० ॥ ३३६ ॥

षट रस व्यंजनों का व्योरा।

दुविध अन्न फल त्रिविध । साक पंचम सुहारं ॥
जुग बिधि गोरस गुनित । ईप गति इक्क विचारं ॥
लवन तेज साहिंग । अट्ठ दस भोजन भत्तं ॥

---

(१) मो.- देव

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है

ता अनंत गति रचे। गनिक को गनै कवित्त ॥
संजोगि एक अन्नेक सचि। षट रस षटु विधि लहिग सुचि ॥
सारदा मंति समुझै भलै। जुपहु आहारै अन्न रुचि ॥
छं० ॥ ३३७ ॥

साटक ॥ त्रिविध मुदित मन्नं शृंग घंटं सुसीषं।
जड़ दल पल पुहपं पल्लवं पंच साकं ॥
जल थल नभ मेतत् सास मेनं त्रिधापि।
षट रस घ्रत जुक्तं षटू त्रिधा भक्ष[1] भोज्यं ॥ छं० ३३८ ॥

भोजन हो चुकने पर दरबार होना। पृथ्वीराज का कवि चन्द और गुरुराम से कहना कि ऐसा उपाय करो जिसमें रावल जी घर चले जावें।

पद्धरी ॥ भोजन कीन रावल नरिंद। मन्नेव रुचि आनंद द्वंद ॥
आहार जुत्त कपूर पन्न। सुर वास रोहि सो सोभि तन्न ॥
छं० ॥ ३३९ ॥

कसमीर अंग रच्चै सुरंग। गिय गान तर्क मानि सुचंग ॥
रस रास हास बढ्यौ अपार, गुन गुंथि नेह वल्ली सुसार ॥
छं० ॥ ३४० ॥

अव चक्क चककारि सिंघ ताम। अग्गियां मंगि सासुर इयाम ॥
चढ़ि चल्यौ अप्प पति चित्र कोट। सम चढ़े सब्ब सामंत जोट ॥
छं० ॥ ३४१ ॥

संप्रेरि सब्ब रावर सुताम। सामंत सपत्ते निज्ज धाम ॥
संवित्त अद्ध निसि घटी दून। सुष सेन किन्न रस रत्ति ऊन ॥
छं० । ३४२ ॥

उग्गौ सु सूर बज्जे घर्यार। सम देव संष गज्जे सर्यार ॥
जग्गे विताम संजोगि राज। विचार मंत सामंत काज ॥
छं० ॥ ३४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-भष्य

ग्रिह जाइ अप्प जौ प्रिया कंत। सुद्दरै काज अप्पां सुसंत ॥
थपि मंत बोलि सामंत तब्ब। आये सुनंत सातब्ब सब्ब ॥
छं० ॥ ३४४ ॥

बुझ्झै व मंत सब्बां समूर। विधि कही राज कज्जां सऊर ॥
सम चल्यौ ताम दिल्लिय नरेस। गौ सिंघ ताम चिंता सुभेस ॥
छं० ॥ ३४५ ॥

मिलि उभै राज आनंद अंग। बरनेह देह रज्यौ सुरंग।
मिलि बैठि तत्त सम सथ्थथान। अन्योन्य रंग बध्यौ रसान ॥
छं० ॥ ३४६ ॥

पल वीह घट्टि उप्पर दिनेश। दिन आय रुद्र मौ रत्त रेस॥
गुर राम आय बरदाय ताम। पट्ठए काज पंगजा जाम ॥
छं० ॥ ३४७ ॥

आसिष्य उभै दिय राज हित्त। बैठे व कह्यौ न्रप कारन वत्त ॥
उट्ठेव बैठि न्रिप अन्य थान। करि मंत कथ्थ रावर समान॥
छं० ॥ ३४८ ॥

पट्टए चंद गुर राम ताम। जामानि जद्द गुज्जर सुराम ॥
पीची प्रसंग पम्मार जैत। विधि कही अब्ब[1] कारन सुभैत ॥
छं० ॥ ३४९ ॥

सो करौं सबे बर विधि उपाइ। जिम चलें अप्प ग्रह समर राइ॥
सो चलै जथ्थ[2] रावर नरिंद। लग्गी सु तलव कारज्ज भिंद ॥
छं० ॥ ३५० ॥

दूसरे दिन प्रातः काल से दरबार लगना और पृथ्वीराज का रावलजी की विदाई की तैयारी करना।

कवित्त ॥ प्रथम जगिय घरियार । सैष रजनी परगट्टिय ॥
फुनि जग्गिय तमचर। प्रसिद्द करि सद्द उघट्टिय ॥
पूरब दिसि चिय जगिय। मुकुर जिम आनन मंजिय ॥
रवि कर जग्गिय अरुन। बदन रंगन जग रंगिय[3] ॥

(१) ए. कृ. को.-अव्व (२) ए. कृ. को.-मथ्थ
(३) ए. कृ. को.-बदन रंग निज गुरं गिय।

दुज कमल जगिय किन बचन अलि। जगिय जगत प्रथिराज जस।
बरदाय चंद जग्गिय धरम। मारतंड मंडल दरसि ॥छं०॥ ३५१॥

दूहा ॥ सब सामंत सुबोल लिय। और चंद बरदाय ॥
सुफल काज मन्ने व सब। जो प्रिया कंत घर जाय।
छं० ॥ ३५२ ॥

सोचि समझि सामंत सब। मिलि आए सब थान ॥
स्वामि ध्रम्म हित चिंत कौ। काम करन सु प्रमान ॥
छं० ॥ ३५३ ॥

कवित्त ॥ ता सम दम सामंत। राज संजोगि सपन्नौ ॥
हय हथ्थी सृंगारि। हेम नग मुत्ति सु दिन्नौ ॥
प्रियो कंत घर जाहु। हमहि गोरी घर लग्गिय ॥
को जाने किंहोय। कोय सज्जिय को भग्गिय ॥
संचरो जाय संभरि धरा। अरु संभरि अव धारयौ ॥
सब जंत रीति जम्मन मरन। समर राय विचारियौ ॥
छं० ॥ ३५४ ॥

रावल जी का चित्रकोट जाने से नाहीं करना।

कुंडलिया। जंत रीति जम्मन मरन। चाय जु सुन्यौ नरिन्द ॥
तुमहो जान प्रमान बर। बर दंपति सुष वंद ॥
बर दंपति सुष वंद। रत्त सहजंत सुजानं ॥
मरन मोह मोहन्न। मोह मल्लं रस ठानं ॥
अंक निद्धि चित बंध। उलजि निधि मुक्की अथ्यह ॥
उत्त ढुंढ बंस बर चतुर। मरम जानै सब जतंह ॥
छं० ॥ ३५५ ॥

पृथ्वीराज का पुनः विनीत भाव से कहना कि यह अरज मानिए परन्तु रावल जी का कुरुष हो कर उत्तर देना।

चित्रंगी चितवनि परषि। निरषि बदन कुंभिलान ॥
कै अदब्ब हम रष्पही। इत्ती बेर प्रयान ॥

इत्ती वेर प्रयान। कहत तुम लज्जा नहीं ॥
कोन काल जीवन्न। काज जस संचौ आहीं ॥
तुम चित छंडि हम घर चलहि। इह अवथ पचंग ॥
जुद्ध जुरो चिचंग तौ। अग चैहान नरिंद ॥
छं० ॥ ३५६ ॥

कबित्त ॥ समुद विद्धि संभरिय। राज अग्गिय अहुट्ट पति ॥
अंत दान कालिंद थान। राजंग पान गति ॥
देस काल पातर पवित्र। संभरि संभारिय ॥
अंत दान संकलपि। सोम कन्या अवधारिय ॥
मूरष सुषंग तौ अंग सौं। प्रान देह दावन सुबन ॥
प्रिथिराज सथ्य सामंत सौ। धुनि निसान मंड्यौ सुदिन ॥
छं० ॥ ३५७ ॥

दूहा ॥ धन चौरी मुक्यौ सु धन। सही न पुट्टि अवाज ॥
मोहि चलंतह चिंतवन। धर चिच कोट सुलाज ॥
छं० ॥ ३५८ ॥

कवित्त ॥ विभौ जाय जौ ध्रम्म। क्रम्म जौ जाइ भजत हरि ॥
मान जाइ सम प्रान। ग्यान जौ जाइ तत्त जरि ॥
भ्रत्य जाइ बिन लज्ज। हेत सों जाय कपट्टह ॥
चित्त जाय पर नार। नारि जौ जाइ लंपटह ॥
रस जाहु जाहि अपजस लगै। वंस जाय जौ जुद्ध सुप ॥
प्रति प्रथिराज रावर कहै। इनहि जंत लग्गै न दुप ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

चंदानौ आयास। वास भ्रगुटी रुद्रानौ ॥
द्वै नयना द्वै सूर। तेज अश्विनि ना सानौ ॥
जीह वरुन जल स्वाद। करन मंडल वायालय ॥
बाहु इन्द्र आसरै। ब्रम्ह इंद्री दासालय ॥
सब देव विसन अग्यार मैं। आन अनंदे तौ फिरै ॥
चिचंग राय रावर चवै। प्राहुन्ना भग्गा भिरै ॥
छं० ॥ ३६० ॥

मो[1] भग्गो संग्राम। सोहि भग्गै भग्गै अरि॥
वसों साज रन सूर। सुमत सुक्कै कलहं कारि॥
तत्त पांच पाहुना। भगत चुक्कियै न कित्ती॥
नव ग्रह ग्रह फिरि ग्रंह। सुक्कि जीरन ग्रह जित्ती॥
सगपन सुनेह सनमंध नहि। लज्ज ग्रम्म धन चुक्कियै॥
चित्रंग राय रावर चवै। तत्त पंथ नहि मुक्कियै॥
छं० ॥ ३६१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि आप हमारे पाहुने हैं अस्तु हम आपको विदा करते हैं आप जाकर अपने राज्य की रक्षा कीजीए।

तुम पाहुना परदीप। राज पर कौ का झुंझ्यौ॥
चहुआना कुल पुज्ज। राज दुज की वर पुज्जौ॥
तुम पुट्ठे गिरि जंग। द्रुग्ग दारुग गंभीरा॥
गुज्जर वै माल वै। हम भज्जौ हम्मीरा॥
फल फूल पान अंबर सुवर। मुकुट बंध चामर सरज॥
सामंत सूर जों राज घर[2]। एक सुदिन मानै वरस॥
छं० ॥ ३६२ ॥

एक बरष सामंत। जानि गोरिय भिरै भर॥
एक बरष सामंत। बंस सिसपाल पलह जर॥
एक बरष सामंत। बीर अब्बू गढ़ छंड्यौ॥
एक बरष सामंत। जुड़ भोरा भर मंड्यौ॥
दिन इक सोय सामंत को। पंग ध्रम्म दरहंत जिय॥
साध्रम्म बाल बोल्यौ तहां। मरन छंडि महिला रजिय॥
छं० ॥ ३६३ ॥

रावल जी का उत्तर देना कि मैं सुरतान में मिलूंगा।

मो संजानी ढाल। माल कमला रुद्रानी॥

(१) ए.-सो (२) ए. कृ. को.-रा वरह, मो

मो नाग सुषी सिल्लार । ब्रह्म मोगर सिद्धानी ॥
हों सिंगी रा अवधूत । जोग बच्छों जुद्धानी ॥
हों आहुठास स्वामि । स्वामि कहि जोँ सुरतानी ॥
सामंत मंत केते कहों । केते घर गोरी बहन ॥
हों कालंक राय कप्पन बिरद । महन रंभ चाहों कहन ॥

छं० ॥ ३६४ ॥

महन रंभ आरंभ । छत्र जैजै तप वारिय ॥
महन रंभ आरंभ । राय जद्दों षग झारिय ॥
महन रंभ आरंभ । साहि बंध्यौ गुज्जर वै ॥
महन रंभ आरंभ । षग्ग भट्ठी करि ह्वै वै ॥
कालंक राय दुज्जन दवन । निगम सोह बंधे रवन ॥
भग्गौ सुबंध संग्राम कौ । जो चित्रंगि कीनो गवन ॥

छं० ॥ ३६५ ॥

रावल जी को कुपित देख कर पृथ्वीराज का उनके पैर पकड़ कर कहना कि जो आप कहें सो करुं ।

सुनि सुवत्त चहुआन । नयन सम सिंघ निरष्षिय ॥
भ्रकुटि वक्र द्रगस्त । करन मुष वरन सु दष्षिय ॥
अंक तेज असहेज । ग्रीषम मध्यान भान सम ॥
गहिय पाय प्रथिराज । कहहु सोइ मंत मन्न तुम ॥
जंपै सु सिंघ चहुआन सुनि । हम अयान मंत न कहै ॥
पुच्छौ सुमंत सामंत सब । जिन बोलां धर उग्रहै ॥

छं० ॥ ३६६ ॥

कहै राज प्रथिराज । सुनौ पति कोट चित्र तुम ॥
तुम वड्डे वड्डाय । सव्व राजन्न देस जुम[१] ॥
तुम जुगिंद जग जित्त । तुमह हम पुच्छि प्रीत गुन ॥
मति अथाह जुध राह । दछ्य सब नीति मंत सन ॥
तुम वत्त मत्त कुन उच्चरै[२] । तुम उप्पर हम को हि तुअ ॥

(१) मो-सब सामंत हैं तुम, (२) ए. कृ. को.-तुम मत्त मत्त कों तुच्चरौं

उच्चरौ एक बत्तिय तुमै। सो हम मानैं मन्न ध्रुअ॥
छं० ॥ ३६७॥

रावल जी का कहना कि तुमने और अनर्थ तौ किये सो किये परन्तु चामंडराय को बेड़ी क्यों भरी।

क्यों ग्रहियौ दाहिमौ। राज गंजन का[1]गज्यौ॥
पातिसाह परबंध। ताहि भर मह कां भज्यौ॥
मान हीन क्यों कर्यौ। तुच्छ करि कांइ दिषायौ॥
भिरि भारथ सम पथ्थ। नाहि पुरषत्त गमायौ॥
प्रथिराज काज साधन समर। गय[2] घट संमुह टिल्लिय॥
चामंड राय दाहर तनौ। तिहि पग लोह न मिल्लिय॥
छं० ॥ ३६८॥

पृथ्वीराज का कहना कि उसने मेरा सर्व श्रेष्ठ हाथी मार डाला।

इसौ हार सिंगार। जिसौ ऐरावति इंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ लिष्पमी गयंदह॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ गज ग्राह स्याम घन॥
इसौ हार सिंगार। जिसौ सुप्रति करि नंगन॥
कुवलया पील जनु कंस कौ। बरन सोभ गनपति बनिय॥
चिचंग अग्ग चहुआन कहि। सो दाहिम्मै किम हनिय॥
छं० ॥ ३६९॥

दूहा॥ संभरिवै रजबट रहन। पनि रावल इह कथ्थ॥
सिंधुर भाम उलालि रिन। गय नंगन भारथ्थ॥छं०॥ ३७०॥

रावल जी का कहना कि चामंड राय को छोड़ दो।

सिंघ कहै प्रथिराज सुन। एक मत्त बर सत्त॥

(१) ए. कृ. को.-क्यों। (२) ए. कृ. को.-गज।

दाहिमौ छंडौ न्टपति। एह मत्त मुझरत्त[1] ॥
छं० ॥ ३७१ ॥

कबित्त ॥ महन रंभ आरंभ। राज रावल रा हिंदू ॥
सत्त मत्त बर बैठि। जवन जोगिन ग्रह जिंदू ॥
चाहुआन कूरभं। गौर गाजी बड़ गुज्जर ॥
जादौं रा रघुबंस। पार पुंडीरति पष्पर ॥
रट्ठौर पवार सुरस्थलिय[2]। ब्रह्म चालुक जंगल भरा ॥
चामंड राय कट्टौ न्त्रपति। जो किवार संभरि धरा ॥
छं० ॥ ३७२ ॥

महन रंभ आरंभ। साईं सामंत विचारौ ॥
तौ छंडौ चामंड। ढिल्ली मंडल उच्चारौ ॥
समर चलत रष्पियै। समर बंधियै समर बर ॥
सुवर सूर गोरी नरिंद। दह गुन्न[3] सज्जि दल ॥
कलहंत केलि लग्गिय विषम। हैवै सिंधु समुत्तरी ॥
मंडियैं जुद्ध सुरतान सौं। सुगति मग्ग षुल्लहि दरी ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज का चामंड को छोड़ देने पर राजी होना।

दूहा ॥ छंडन कहि चामंड रा। जुग जोगिंद सुदेस ॥
धर रष्षन जो तोहि नृप। करि सामंत नरेस ॥
छं० ॥ ३७४ ॥

पंगी पाघ[4] सुरंग जग। सामंता सत भाव ॥
जुद्ध निबंध्यौ साहि सौं। छंडो चामंड राइ ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चामंड की बेड़ी उतारने के लिये पृथ्वीराज का स्वयं चामंड राय के घर जाना।

कवित्त ॥ बंभन बाहौ वह्यौ। ठेलि ठट्टो पर जारिय ॥
जिहि मुंगल मेवात। मारि मोहिल उज्जारिय

(१) मो. मुझ परत। (२) ए. कृ. को.सुरस्थलिय। (३) मो.-दहगुनौं।
(४) ए.कृ. को.-पाग

जिहि केहरि कंठेरि। तारि काढ्यौ तत्तारिय ॥
जिहि राया रघुवंस। आय संभर संभारिय ॥
इंद्रपथ्थ सुपंथह कारनै। बाहर बीर बिचारियै ॥
इहि बार वेरि कढ्ढन न्नपति। राजन पोरि पधारियै ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

दूहा ॥ मन्निय राजन सिष्य सब। संबोधिय सब नाम ॥
आय परंतै अबसरह। पुरपहि सिझ्झै काम ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

इक सुरतान अबाज सुनि। विय राजन ग्रह आय ॥
द्वै आनंद बधाइयां। है घर चामंड राइ ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

चामंड राय की माता की प्रशंसा।

सीला संगर मात तुहि। तिहनौ षीर पियाइ ॥
सिंघनि सिंघ सु जाइयौ। दंगे दाहर राइ ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

राजा का कविचंद और गुरु राम को चामंड के पास भेजना।

तब बिचार न्रप संचुकिय। पठए सब तिहि ठाय ॥
आप राज फ़रमान दिय। कढ्ढौ लोह सुपाइ ॥
छं० ॥ ३८० ॥

गये चंद सामंत तहं। जहं चामंड वर बीर ॥
देष्यौ देव समान तहं। सूर सत्त रन धीर ॥
छं० ॥ ३८१ ॥

चामंड राय का कहना कि इस समय मेरी बेड़ी उतारने का क्या प्रयोजन।

ए सम राजन राज कौ। राज काज तुम जानि ॥
लाज उरै धरि रष्पना। कहि संजोगि पगानि ॥
छं० ॥ ३८२ ॥

जाहु सबे सामंत हौ। कहौ न्रपति प्रथिराज ॥
ता दिन मुक्यौ लोह पग। अब मोसों कुन काज ॥
छं० ॥३८३॥

कविचन्द का चामंडराय को समझाना।

कवित्त ॥ दाहिम्मा को फेरि। दियौ उत्तर कविचंद ॥
सकल सूर सामंत। सुनत चित्त ंग नरिंद ॥
नीसरनी असमान। तुहिज काली हर बेहर ॥
तू पाताल कुदाल। हथ्थ सत्ती ना लेयर ॥
दीपक पतंग जिम तुट्टि के। सम रंगनमें परन भय ॥
चामंड राय तिहि तुच्छ पग। लोह घल्लि चहुआन लय ॥
छं० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ लाज राज निकसन्न घन। अप्पा नैन दुराइ ॥
सामंता बर हुक्कम करि। कट्टौ लोहनि पाइ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

औली रष्पिन आलि करि। वड्डे बोलन बोलि ॥
ते रन जंगो बज्जिहैं। ढीली हंदे ढोल ॥
छं० ॥ ३८६ ॥

कवित ॥ जे रन जोग जुसद्द। ढोल वज्जै ढिल्लिय धर ॥
जस औजस तन मुक्कि। जोगि जूह संजोगि वर ॥
तनु जानैं तिन मान। सूर अवसर किं मुक्कै ॥
सूर कित्ति ग्रहि जांय। सुबर अवसर क्यों चुक्कै ॥
चामंड राय दाहरतनौ। जुग्ग जात तन मंडियै ॥
तो भुज्ज अज्ज जोगिनि नयर। रोस छिमा छिम पंडियै ॥
छं० ॥३८७ ॥

दूहा ॥ से वेरि पग संमुहौ। से राजन पग लग्गि ॥
से ठट्ठ ठट्टाइया। जानि उन्हइया अग्गि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त ॥ भट्टी अग्गि अबुझ्झ। ठाढ़ि भग्गी सुरतानी ॥
तरुन तप्प गोरी नरिंद। हेवरन विप्र चढ़ानी ॥

चामंडारै भाग। समर रावर ग्रह आइय॥
जंपि बीर प्रथिराज। दई सुरतान बधाइय॥
लभ्भ चय लभ्भ दाहिम्मे करह। मुगति मग्ग रावर दरसि॥
सुरतान जुड चहुआन रिन। दैन बीर चाल्यौ उलसि॥

छं० ॥३८९॥

दूहा॥ पांमारां पुंडीरियां। कूरंभा जद्दूनि॥
गुज्जरिया दाहिम्मियां। घर हस लग्गी दोनि॥ छं०॥ ३९०॥

कवित्त॥ जिहि जद्दों जामानि। राज लग्यौ कूरंम्मां॥
वीची राव प्रसंग। देव बग्गरी दुरम्मां॥
गुज्जर रामह देव। जैत साहिब अव्वूरा॥
होइ अबारी होस। क्यों सुभग्गो बंवूरा॥
मुख जीह लोल बोलै बयन। राजन काज वरद्दिया॥
पावै न पीर पंजर तनी। मन पष्षै भट्टह विया॥

छं०॥ ३९१॥

दूहा॥ तब तरिवारन बंटनो। इह बंटनी न देस॥
मोसा बोल्लि न दाहिमा। होइ अपानै भेस॥

छं०॥ ३९२॥

इह बंटना न देस धर। इह बंटनीन लच्छि॥
तन तर वारिन बंटना। चावँड राइ सु अष्षि॥

छं०॥ ३९३॥

बर बानै बंधै सकल। अप्प अप्पनै भाग॥
ते बांधी सुरतान पर। षंगे षंगी पाग॥

छं०॥ ३९४॥

को बंधै ग्रहनी ग्रहन। को बंधै बिन मान॥
ते बंधी सुरतान पर। माल्लिम सो चहुआन॥ छं०॥ ३९५॥

चामंडराय का कहना कि राजा की पाहिनाई बेड़ी मैं कैसे उतारूं॥

जौ मंड्यौ न्रपपग्ग हम। सो किम साहों हथ्थ॥

न्रिप अपान पासन तजहु । कहौ चंद कवि कथ्थ ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

पुनः कवि चन्द का चामंड की वीरता का बखान करके समझाना ।

कवित्त ॥ तें जित्यौ गज्जनौ । तूं जु अड्डौ हम्मीरा ॥
तें जित्यौ चालुक्क । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
तें दल पंग नरिंद । इंदु ग्रहियौ जिम राहा ॥
तें गोरी दल दह्यौ । बार षट्टह बन दाहा ॥
तेग तेग तुअ उंच मन । तंतो पास न मिल्हियै ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज[1] उप्पर षिल्लियै ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

तौ सज्जत गज्जनै । हक्कहै कंप उठे अति ॥
परै उचकि सुरतान । हरम हैहै आतुर गति ॥
तें जित्यौ परमार । पहरि सन्नाह सरीरा ॥
जा बूदल तें सहै । तें जुहीरा रघुबीरा ॥
पहु मीस राम हनुमान सम । तंतो पासन मेल्हियै[2] ॥
चामंड राय दाहर तना । तो भुज उप्पर षेलियै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

दूहा ॥ राजा मान पुंडीर कुल । तेहनौ पुत्र प्रताप ॥
से राजन पग लग्गिया । आज हनंदे पाप ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । दरसि रावर वर भग्गा ॥
कप्पन विरद कलंक । जीह किल कित्तिय लग्गा ॥
आहुट्टा मभ्र स्वामि । छित्ति छत्री परमानं ॥
हिंदवान तुरकान । ससि उग्गै जिम भानं ॥
औधूत राइ माया अडर । गोरष रा गोरष्य जिम ॥
वर तिथ्थ तिथ्थ रावर समर । मार[3] रूप भंजन विक्रम ॥ छं० ॥ ४०० ॥

(१) मो. भुत्र (२) मो.-ना मल्हियो ।
(३) मो.-मार

पृथ्वीराज का चामंड को अपनी तलवार देना।

दूहा॥ छोरि तेग न्रप अप्प कर। अप्पी हथ्थति सूर॥
लै चामंड सु बंधि द्रिढ़। तू धर रप्पन नूर॥
छं० ॥ ४०१ ॥

चामंड राय का प्रणाम करके तलवार बांधना और बेड़ी उतारना।

तब सामंत सुसिर धरिय। मुप जंपिय इह बैन॥
जौ सिर पर प्रथिराज है। तौ कित्तक गोरिय सैन॥
छं० ॥ ४०२ ॥

बेरी कट्टत चरन न्रप। नमित कियौ तिहि सीस॥
राजन मनह प्रमोद करि। दैन कही बगसीस॥
छं० ॥ ४०३ ॥

जा न्रप रुट्ठे भय नही। तुट्टै नह धन आस॥
ग्रहनि ग्रह नाहीं समथ। ता न्रप वृथा प्रयास॥
छं० ॥ ४०४ ॥

पृथ्वीराज का चामंड राय को सिरोपाव और इनाम देना।

डेढ़ हजार तुरंग बर। हसती तेरह तीन॥
मुत्तिय माल सुरंग दस। राजन अप्पि नवीन॥
छं० ॥ ४०५ ॥

चीर पटंबर फेरि सिर। बज्जा बज्जन बग्ग॥
बर बरदाइ बरद्दिया। बोल समंगल लग्ग॥
छं० ॥ ४०६ ॥

चामंडराय के छूटने से सर्वत्र मंगल बधाई होना।

कवित्त॥ चीर पटंबर फेरि। बज्जि बाजिच राज बर॥
अति अनंद मन चन्द। करै मनुहारि देव नर॥

राजा मानि पुंडीर। राजसुत बरन[1] दिषारिय॥
ता छंडन चहुआन। करिय सो मंच विचारिय॥
आनंद राज कुम्मार ग्रह। मातपष्ष आनंद हुअ॥
रामंति सव्व पष्षी फिरै। भिरि चामंड सुवज्र भुअ॥

छं० ॥ ४०७ ॥

दूहा॥ लोहानी पग कट्टिकै। लज्जानी पग वंधि॥
लज्जि लज्जि गुन लज्जि कै। तेग धरी भर कंध॥

छं० ॥ ४०८ ॥

घर घर मंगल बोलिये। घर घर दीजै दान॥
सें मुष धनि धनि उच्चरै। भल छोर्‌यो चहुआन॥

छं० ॥ ४०९ ॥

कवि का कहना कि लोह की बेड़ी के छूटने से क्या होता है नमक की बेड़ी तो पैरों में और राजा के आनकी तोष गले में आजन्म के लिये पड़ी है।

हथ्थ हथ्थ करि प्रेम की। पाइन बेरी लोन॥
गलै तोष न्रप आन की। छुट्यौ कहत है कौन॥

छं० ॥ ४१० ॥

लोक लज्ज ग्रह लज्ज उर। हठ न ग्रही रिस एक॥
लोह लँगर कट्टत चरन। लरन हथ्थ लइ तेक॥

छं० ॥ ४११ ॥

कुँडलिया॥ लरन हथ्थ गहि तेग बर। बोलि समीप प्रमान॥
बर बंधन सुरतान को। रिन अप्पन चहुआन॥
रिन अप्पन चहुआन। कहै चावंड ममेरी॥
लोहानी कर कट्टि। लज्ज बंधी बर वेरी॥
हठनि ग्रहन ना वारै। करै नियह रन मरनह॥
तेगे सिपर जलाइ। देह रावल रन लरनह॥

छं० ॥ ४१२ ॥

(1) ए. कृ. को-चरन।

पृथ्वीराज का चामंड को घोड़े देना। उन घोड़ों का वर्णन।

भुजंगी ॥ गही तेग भू दंड सामंत राजी। दियौ बाज राजं सुजक्की सुताजी॥
छवी रत्त स्याहं हबी जानि जंबू। रच्यौ रूप राकी पक्यौ जानि जंबू॥
छं० ॥ ४१३ ॥

जरी जीन साकत्ति हेमं हसेलं। निसा न्रिम्मलं किस्न नच्छित्र झेलं॥
उचं कंध कन्नं नयन्नं न नासं। गनै रंध्र रंध्रं सुधा स्याम मासं॥
छं० ॥ ४१४ ॥

नषं मंडलं डंड संधं सुधारै। उवं पुट्टि मंसं दु पुट्टं उचारै॥
दुमं इंछनं चाय ढारंत वायं। छिमा छत्र छाया तनै बाजि रायं॥
छं० ॥ ४१५ ॥

कवित्त ॥ नटिय नट्ट जिम चपल। बदन जिम सरस सद्द कवि॥
बग्गह मुनि मन गहिय। तिम सु उड्डिय सुरंग दवि॥
इम चब्बिय करियार। तिम सुमुड्रस मुह मिट्टिय॥
तिष्पन तरून कटाच्छ। तिम सुमन मोहन दिट्ठिय॥
अभिसार रसन उच्छाह जिम। तुंग प्रमत्त सुसील मय॥
हिंसत[1] हसंत हरसंत न्रप। बाज राज दिन्नो तुरिय॥
छं० ॥ ४१६ ॥

पवन पाय पूजयो। बेग पुज्जिय कवि चित्तह॥
पिट्ठि चाप पूजयो। पसम पूजिय नव नीतह॥
पुच्छ चमर पुज्जयौ। कंध केसनि पुजि केहरि॥
श्रवन अग्र पुज्जयौ। अग्ग तिष्पह सुडम्भर सर॥
पुज्जयौ जगत जिहि पूजयौ। सालिग्राम सुंदर सुद्रिग॥
संभरिय तुरिय पुज्जिय जगत। षंजन नट भट मीन म्रग॥
छं० ॥ ४१७ ॥

सूर्य्य के रथ के घोड़ों की चाल का वेग।

दूहा ॥ देषि अश्व दाहिम्म कौ। पुच्छि चंद चिचंग॥
कहौ कित्त कत तौ पडै। रैवत रथ्थ पतंग॥ छं० ॥ ४१८ ॥

(१) ए. कृ. को. हिसनह सतह।

कोस सहस नव षट्ट सय । अंषिनि अरध फुरक्क ॥
गय नंगन कविचंद कहि । अश्व क्रमंत अरक्क ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

सूर्य्य के रथ की संपूर्ण दिन की चाल ।

गाथा * ॥ गुन चालीस अरब्बं । अठ्ठ षरब्ब असीयं लष्षं ॥
असी कोरि परिमानत । दिन मानं कोस भानयं चल्लं ॥
छं० ॥ ४२० ॥

दूहा ॥ सो बाज राज दिन्नौ बगसि । मिलि मंगल गल लग्गि ॥
निसि निसान भेरिय सबद । जनु बीर जगावति बग्गि ॥
छं० ॥ ४२१ ॥

सब सामन्तों और रावलजी सहित पृथ्वीराज का युद्ध विषयक सलाह करने के लिये निगम बोध स्थान पर जाना ।

कवित्त ॥ अप्पि न्नपति हयराज । कढ्ढि बेरी बर छंडे ॥
हरनि सुनी सुरतान । इला अग्गर भर मंडे ॥
मत्त सूर सामंत । मिलिव मत तत्त विचारौ ॥
सबलां सों संग्रास । मंत बिन मंत सुहारौ ॥
चित्रंग राव रावर समर । समर विद्धि जानैं सकल ॥
विय निगम बोध धंनुह सुदिति । मत्त राज मोहैं अकल ॥
छं० ॥ ४२२ ॥

एक शिला का डोलना और सब का विस्मित होना ।

दूहा ॥ धर धर धरनिय धरहरिय । कुंडलि किय फनि पुच्छ ॥
तेग पकरि सामंत तव[1] । मिलि वर घल्ल्यौ मुच्छ ॥
छं० ॥ ४२३ ॥

कवित्त ॥ सिला एक पाषान । हथ्थ तीसह विय लंबिय ॥
दीह दसकर षवसट्ठि । सट्ठि अंगुल उदरंभिय ॥
ता नीचि कांद्रा । तहां को सूर निद्रामैं ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।
(१) ए. कृ. को.-तब ।

ता उप्पर तिहि दिवस। राज बज्जै सादानै ॥
आघात सुनत करवट्ट लिय। बज्जे बज्जावन गुरिग ॥
अचरिज्ज[1] करिग साम त प्रभु। भट्ट सहित पारस फिरिग ॥
छं० ॥ ४२४ ॥

इक्क कहै भुअकंप। इक्क कहै सेसह हल्लिय ॥
इक्क कहै उट्ठवै। याहि उठवत भ्रम षुल्लिय ॥
छह लंगर गर घल्लि। ग्राव लीनौ उच्छंगह ॥
मुष अनिंद चष निंद। अग दिष्यौ वहु रंगह ॥
प्रारथ्थि चंद पुच्छै तिनहि। कह सुजाम कह उप्पनिय ॥
को मात पित्त को[2] नाम तुम। किम सुधान इह नींद किय ॥
छं० ॥ ४२५ ॥

शिला के नीचे से एक भीमकाय वीर का निकलना। कविचंद का पूछना कि तुम कौन हो।

विराज ॥ वरंन्नति स्यामं,समंरत्ति कामं। नषं पंडि पीतं,भयं भीम भीतं॥
छं० ॥ ४२६ ॥

जगं जानु रत्तं, हवी जानि लत्तं। कटिं नाभि नीलं,उरं सु अपीत
छं० ॥ ४२७ ॥

चषंधूमरूपं, मुषं जोग भूपं। भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिद्धि मूरी॥
छं० ॥ ४२८ ॥

सिरं सेत नेतं, विरागी पवेतं। रजंताम नेनं, सुसातुक्क हैनं ॥
छं० ॥ ४२९॥

डकारंत डक्कं, द्रिगं कंप हक्कं। महावीर बल्ली, दया भ्रम्म पल्ली॥
छं० ॥ ४३० ॥

वरं बप्पुजीहं नको लोपि लीहं। गयं गात गेनं, वुलै चंद्र वेनं॥
छं० ॥४३१॥

वरदायि वाचं, कहै वीर[3] साचं। * * छं० ॥ ४३२ ॥

---

(१) मो.-अरज।
(२) मो.-किहि।
(३) ए. कृ. को.-कवि।

बीर का कहना कि मैं शिवजी की जटाओं से उत्पन्न बीर भद्र हूं। बीरभद्र का पूछना कि यह कोलाहल क्या हो रहा है।

कवित्त ॥ दच्छ प्रजापति जग्य। रुद्र निंद्रा सति संभरि ॥
तनु तिनु जिमि जग्गयौ। जलन जग्गिय मन मंजरि ॥
हय हय हय त्रिभुवंन। नाग सुर नर गंध्रव गन ॥
भिरि भिरि नंदिय सुभग। भइय पुक्कार छंडि रिन।
भयभीत भूत वेताल घन। कपिल कंपि कैलास डरि ॥
तिहि त्रिसल तेज लग्गिय नयन। जट जुगिंद पिट्टिय सुफिरि ॥
छं० ॥ ४३३ ॥

मो जटा जनम तिन दिनह। नाम मुहि बीरभद्र धरि ॥
तात नाम त्रिपुरारि। जग्य विध्वंसि सीस हरि ॥
सतजुग संकर षनिय। तत्र त्रेता तुंबालिय ॥
द्वापर सुम्भर सलित। धम्म धरनिय प्रतिपालिय ॥
आनन्द निंद जोगिनि पुरह। काल नाम कलजुग्ग लहि ॥
आवत्त सोर फट्टै श्रवन। किम सुसोर कविचंद कहि ॥
छं० ॥ ४३४ ॥

कविचन्द का कहना कि युद्ध के लिये चामंडराय की वेड़ी खोली गई है उसीके आनंद बधावे का शोर है।

इह सुमोर सुनि स्वांमि। इन्द्र वृत्ता सुर लग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। राम रावन घर भग्गिय ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। पंड कौरव फट्टै अभु ॥
इह सुसोर सुनि स्वांमि। जरा सिंधव जद्दव प्रभु ॥
इह सोर स्वांमि सामंत मिलि। सुपति साह गोरिय बयर ॥
चावंड राइ कढ्यौ लरन। इह सुसोर ढिल्लिय नयर ॥
छं० ॥ ४३५ ॥

बीरभद्र का कहना कि मैंने बड़े बड़े युद्ध देखे हैं यह क्या युद्ध होगा।

इह मनुष्य सत्ताईं। देव देवासुर दिष्षिय ॥
से रंभातारिका। जुद्ध राजन्न परप्पिय॥
रामाइन मंडलिय। मग्ग मागध मॉधाता॥
मानं तुरंग दुरजोध। पथ्थ पंडव छह भ्राता॥
बरदाय द्रुग्ग द्रुग्गह सुजिय। सद्ग जाति जीहं दुनौ॥
सा भ्रम्म जुद्ध हिन्दू तुरक। कथ समंत ताथें सुनौ॥
छं॥ ४३६॥

कवि का कहना कि आपकी देव संज्ञा है आपने देवताओं के युद्ध देखे हैं यह युद्ध देखकर भी आप प्रसन्न होंगे।

तुम देवह समदेव। जुद्ध देषैति सषाने॥
ए सामंत उमंत। झझझ देषत विरुझानै॥
इन आवध आवधै। झक वज्जै झक झांइय॥
उत्तमंग उत्तरै। सीस हक्कै धर धाइय॥
जित रुधिर बूंद कंदल परहि। ते कंदल उठ्ठहि भिरन॥
उन बीर संग तुम बीर हुअ। निमिष नेह नच्चै फिरिन॥
छं० ॥४३७॥

देव देवानहि जुद्ध। ते पुब्ब देषे पुरषारथ॥
पन बीर अति सौम। धीर देष्यौ घट भारथ॥
देषि बीर मनि[1] हसिव[2]। कही मन्नौ नहि सच्चौ॥
उत्तमंग उत्तरै। सूर सथ्थह होय नच्चौ॥
वज्जै विसाल असिवर निझर। सिव समाधि साधक षुलिय॥
जे पुब्ब देव भारथ दिषिय। दिषि भारथ चिंता डुलिय॥
छं० ॥ ४३८॥

तुम मनुछ गति देव। बोल बोलौ मनुच्छ सम॥
में देषे जदु महिप। तौ न नच्च्यौ छुट्टिय भ्रम॥

(१) मो.-थनि। (२) ए. कृ. को.-हसवि।

घरी एक भै भीत। एक आचिज्ज सुनि बीरं॥
रगत बीर जसमान[1]। लच्छि दह होइ सरीरं॥
अचरिज्ज भेर परबत ढहै। धर हल्लै पटतार बर॥
कालक रूप काली धरा। सुपनि बीर दिष्यौ समर॥
छं०॥ ४३९॥

वीरभद्र का कहना कि मुझे युद्ध दिखाने वाला दुर्योधन के सिवाय और कौन है।

दूहा। तब जग्गि वीर संडिग नयन। बयनह अलप प्रबोध॥
मोहि जगावन जुद्ध को। बिन दुरजोधन जोध॥
छं०॥ ४४०॥

रुधिर बूंद कंदल परहि। असिवर सज्जिय हथ्थ॥
कहै बीर न्रप बीर कहि। अमितचंद इह बत्त॥
छं०॥ ४४१॥

कवित्त। जग्गि बीर भैभीत। मुष ज्वाला हवि छुट्टिय॥
डक डकार कंपै त्रिलोक। कपि कंधर जग घुट्टिय॥
छिन एक छिमि समूह। बीर हुंहुं उच्चारं॥
बिन दुरजोधन जोध। जोध दिप्यो न विचारं॥
आसंत मनुष आसंत सुनि। पुब्ब कथा दुरजोध सुनि॥
वारि राज जग्गा यगसन्न वर[2]। मन जग्गत नीसान धुनि॥
छं०॥ ४४२॥

दुर्योधन की वीरता और हठ रक्षा की प्रशंसा।

जिहि दुरजोधन जोध। संधि मानी न दैव बलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। भूमि दीनी न जीव कलि॥
जिहि दुरजोधन जोध। दवा अव दसन परप्पिय॥
जिहि दुरजोधन जोध। चीर कढ्ढत नन रप्पिय॥
भप्पिया भप्प[3] पर भूमि पर। धर समान धर नंपयौ॥

(१) मा.-मात मत्त बेर जस मान। (२) मो.-वारि गजगाह गमन्न वर।
(३) ए० कृ० को०- भेर।

संकल कलप्प रुधि मंस सों। पंड भोग भुअ चष्षयौ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

महाभारत के युद्ध की संक्षेप भूमिका।

प्रान रष्षि रा पंड। डंड आरन्नि वास किय॥
हेत रष्षि बलिराय। सपत पाताल जाय जिय॥
भगत रष्षि प्रहलाद। तात दिपि नष्ष विदारत॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। दैत जुरि जग्ग बिगारत॥
धन धवल गरुव गंधारि उर। गदा कदंब वपु अटल धुअ॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। मान रष्षि दुरजोध भुअ॥
छं० ॥ ४४४ ॥

न को जियत दिष्षियन[1]। मरन दिष्षियै न लोई॥
मात ग्रभ्भ जनमीय। काम अवसर जुग सोई॥
क्रोध लोभ माया न मोह। तार तंची जिड भोगी[2]॥
विक्रम क्रम नच्चियन। जोग नंचै विधि रोगी॥
उच्चरै बीर बलिभद्र मन। बहुत काल इहि थान भय॥
हा हंत हंत तत गुर गनिय। सुनो भट्ट तत मत्तलय॥
छं० ॥ ४४५ ॥

भीष्मजी के विषम युद्ध का संक्षेप वर्णन।

भुजंगी। जिनै जोध दुरजोधनं जुद्ध कीनौ। जिनै दीहनो दूनको अत्तलीनो।
जिनै अप्प अप्पं प्रतंग्या निवारी। जिनै नंदनंदं[3] परं पैज पारी॥
छं० ॥ ४४६ ॥

जिनै चक्रधारी कियौ चक्ररूपं। जंही जांहि रुंधे तहीं तांह जूपं॥
जबैं पथ्थ रथ्थं चषं लोपि कोपं। कियौ पंड षंडं रथं बान धोपं॥
छं० ॥ ४४७ ॥

(१) ए० कृ० को—दिष्षिगन। (२) मो० जोगी।
(३) मो०—नंद नंदी।

हनूमानं पच्यौ[1] पताकी पतंगं। हन्यौ सेत बाजी जुग्रं जोगि भंगं॥
अप[2] तीन कव्यौ नग जीव गज्यौ। दियौ देवदत्तं धनुर्जीव बज्यौ॥
छं० ॥ ४४८ ॥

कियौ छीन छीनं सनोहंति छीनं। जटूं देवबादी रुधिर्देव भीनं॥
सुभं स्याम रत्तं सु स्यामं सुदेसं। मधू माधवें जानि माधुर्ज्यकेसं॥
छं० ॥ ४४९ ॥

जकी जोगमाया बकी थान थानं। कहैं देव देवान जानं न जानं॥
न जानं न जानं न जानंति जानं। न तंची न जंची न मंची न मानं॥
छं० ॥ ४५० ॥

हयंती हयंती हयंती प्रमानं। भरंती भरंती घरंतीति बानं॥
रथंती रथंती रथंगं सुपानं। * * * * छं० ॥ ४५१ ॥
कुरं षंडषंडं पलं षंड जूरं। सुरंगं सुरंगं वरं काल रूरं॥
ततथ्ये ततथ्ये तथं त्रत्य वारं। निरंषंत फट्टं करंतं उधारं॥
छं० ॥ ४५२ ॥

चवट्ठी चवट्ठी चवै सिंध पूरं। बिताली बितालं करै तार तूरं॥
फिरै जोगिनी जोग माया सतत्थं। ढुंढे लोक लोकं चलोकं सुनथ्थं
छं० ॥ ४५३ ॥

स्वयं ब्रह्म पूछ्यौ धरै ध्यान ईसं। दिषे देव देवांग[2] भारथ्य रीसं॥
तहां आय दिष्यौ स्वयं ब्रह्मनाथं। कियौ वज्र रूपं कियौ वज्र हाथं
छं० ॥ ४५४ ॥

पथंतं पथंतं पथं पार पारं। झरंती झरंती झरंतीति सारं॥
कथंती कथंती कथं मार मारं। * * छं० ॥ ४५५ ॥
वजंती वजंती वजं[3] घाय घायं। नवंती नवंती नवंतीत पायं॥
लुटै[4] पट्ट पीतं कवी तेज वान्यौ। धवै सिंघ सैलं महामत्तजान्यौ॥
छं० ॥ ४५६ ॥

करै चक्र वक्रं उनके प्रवानी। भुले भट्ट नांही चितं मत्त वानी॥

---

(१) ए० कृ० को०—हट्टयौ। (२) मो०—देवंज। (३) मो०—बजती निघाय।
(४) ए० कृ० को०—लुटे।

उचै चरन उठ्ठै लगे भूमि आवै। पिछ्ले बीर अप्पै जु पाताल पावै॥
छं० ॥ ४५७ ॥

कटी पट्ट छूटी लुथ्यौ पट्ट पीतं। नसंभूल बंभू भया भीम भीतं॥
छं० ॥ ४५८ ॥

दूहा ॥ अभय भीति भीगम सुभर। इप दिय अरघ उदार॥
आलु आनु अवनिय धरन। कह्यो संतन राजकुमार॥
छं० ॥ ४५९ ॥

भै छित रोम सछित्त भर। तारस लागि क्रिसान॥
दसों दिसिनि द्रिगपाल डर। मै अरन्य द्रिह्मयान॥
छं० ॥ ४६० ॥

बीरभद्र का कहना कि ऐसा विकट युद्ध देख कर तब से मैं सोया हुआ हूं।

छित श्रोनित छिंछै सुतन[1]। सुतन लागि चप दून॥
जनों अमर पूजहि अमर। बर बंधन परहून॥
छं॰ ॥ ४६१ ॥

सुकरि ग्यान स्त्रतौ सुमरि। हिय धरि ध्यान गुविंद॥
मंद हास मंडिग बयन। कहि कविंद[2] कविचंद॥
छं० ॥ ४६२ ॥

तल वैतल धुक्किय धरनि। करस चक्र लिय धाय॥
सुर नर नागनि बंधि धन। भै भग्गै अकुलाइ॥
छं० ॥४६३॥

चरन नीच उंचिय अवनि। कमट पिट्ठ दर नाग॥
चकित अट्ठ द्रिगपाल कुल। मुष चिक्करि भै भाग॥ छं० ॥४६४॥
प्रलै जलह जल हर चलिग। बल बंधन बलिचार॥
रथ चक्कह हरि कर करिय। परि पर बत परतार॥
छं० ॥ ४६५ ॥

(१) ए० कृ० को०--सुवन। (२) ए० कृ० को०--कहिंद।

बीरभद्र की सुसुप्त अवस्था का भयानक भेष।

भुजंगी ॥ धरे ध्यान सूतौ बली बीरभद्रं। मनों पेषि आकास विंदं कविंद्रं ॥
हयं जोय एकं करं चक्र एकं। प्रलै काल सज्ज्यौ मनों ईस वक्रं ॥
छं० ॥ ४६६ ॥

भुजं भार भारं सुभारं सुनैनं। रिसा रत्त अरविंद संबै सबैनं ॥
सषा भीर हूई धरं भार भानं। त्रिषा छत्र छत्री न छत्री दिदानं ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

भ्रिगू पत्ति जान्यौ सु तान्यौ धनुक्कं। करों छत्र जानी सुतानी ग्रिनंकं॥
जुरी डंड षंडं पिता माहि सुक्क्यौ।तुमैं जानि पंडं पराकाम चुक्क्यौ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

रजं ताल बींछी रयं बंधि उंचं। सिधं सस्त्र कड्ढौ धरा पारि नंचं
महारथ्य सारथ्य पारथ्य पानं। लघुं लाघ विद्या सुपूजै गियानं॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गुनं दिठ्ठ लोनं[1] जुधानं धरानं। क्रिपालं क्रिपाकी क्रिपाके निधानं॥
सुषं तो सुकंदं सुकत्ती प्रसादं। प्रतंग्या प्रमानं कली क्रत्ति वादं ॥
छं० ॥ ४७० ॥

अभेदं सरीरं द्रसं तोपि नैनं। त्रितं लोक सोकं भयं भै अभैनं ॥
क्रितं पुन्य पुब्बं न जानौ गुसाईं। ग्रसै काल व्यालं भए को सहाई ॥
छं० ॥ ४७१ ॥

दूहा ॥ मै दिठि दिठ्ठि निहठ्ठि हरि। धरि मिट्टिय निज निंद ॥
जिहि सुकंज रहरति हियै[2]। बिसरि जाइ तेगंद ॥
छं० ॥ ४७२ ॥

कवि का वीरभद्र से कहना कि आप हमारे राजा की सभा में चलकर सलाह सुनिए क्योंकि आप तीन काल की जानते हैं।

कहन चंद उद्दिम कियौ। सुनन वीर धरि कान।
भाषा सब्ब परष्यहु। नव रस सब्ब सुरान॥ छं० ४७३ ॥

(१) [illegible] । (२) [illegible] कृ. को.-ति हिजिये ।

तुम भवस्य जानहु सकल। अकल अपूरब बत्त ॥
सुमत बैठि सामंत सब। सुनहु तो कहूं कवित्त ॥
छं० ॥४७४॥

कवित्त ॥ अगह मगह दाहिमो। देव रिपुराइ पयंकर ॥
कूरमंत जिन करो। मिले जंबू वै जंगर ॥
मो सहनामा सुनो। एह परमारथ सुझ्झै ॥
अष्यै चन्द बिरद्द। बियौ कोइ एह न बुझ्झै ॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी। इह संभलि संभारि रिस ॥
कैमास वलिष्ट[1] बसीठ बिन। म्लेछ बंध बंध्यो मरिस ॥
छं० ॥ ४७५ ॥

दूहा ॥ सभा बत्त इह चंद कहि। सुनिय वीर धरि कान ॥
राजन मन अंदेस धरि। जु कछु विद्दि न्निमान ॥
छं० ॥ ४७६ ॥

बीर का जंभाई लेकर उठना और पृथ्वीराज की सभा में जाकर बैठना तथा सामन्तों के नाम पूछना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त कविचंद। बीर अदभुत्त मंनि मन ॥
एह बत्त आचिज्ज। सूर सामंत कहिय जन ॥
उठ्ठ बीर करि जंभ। अंग मोरिय उत्तानह ॥
जाय बयठ्ठौ पास। सूर सामंत सभा महि ॥
पुच्छी सुबत कविचन्द सों। अहों चन्द बरदाय सुनि ॥
लै नाम सूर सामंत सब। मोहि दिपावहु मंत गुनि ॥
छं० ॥ ४७७ ॥

कविचंद का सामन्तों के नाम बताना और जामराय यद्दव का कहना कि कैमास के मरने से मुसलमानी दल सहजोर हो गया है।

इ जैत राव चामंड राव। इह देव रा वग्गरिय ॥

(१) ए. कृ को-वासिष्ठ.।

इह बलिय राव बलिभद्र। राम कूरंभ संभरिय ॥
इह षीची राव प्रसंग। जाम जादों भर भष्पिय ॥
रवनि[1] राज पहु प्रान। सांम दानह धर रष्पिय ॥
सामंत मंत कै मास बिन। बल बंध्यौ सुरतान दल ॥
सामंत सिंघ दुज्जन सया। दया न किज्जै काल षल ॥
छं० ॥ ४७८ ॥

चामंडराय का कहना कि गत पर सोच क्या, जो आगे आई है उस पर विचार करो।

कहै राव चामंड। जांम जदों सुनि बत्तिय ॥
गत्त सोच जिन करौ। सोच भग्गै बल छत्तिय ॥
सुष अंतर दुष होइ। दुषह अंतर सुष पाइय ॥
सुष दुष बंध्यौ जीय। जीव बंध्यौ मन गाइय ॥
मन स्वांमि ध्रम्म बंध्यो रहै। स्वामि धरम बंधिय मुगति ॥
सा मुगति बंध सुरतान दल। मथिन सूर कट्ठौ जुगति ॥
छं० ॥ ४७९ ॥

जामराय का कहना कि तुम्हारी तो अकल मारी गई है इधर देखो सौ में से सात बाकी हैं।

पुनि जंपै जद्दौं जुवान। चामंड राव सुनि ॥
तुम पग लग्गो लोह। लोह लग्गै गत मत[2] हनि ॥
साम दान अरु भेद। बंका तौ कंक करिज्जै ॥
कंक बंक भरि होह। बंक भर भूपति छिज्जै ॥
सुरतान षान षुरसान पति। दल बद्दल पावस मनौं ॥
प्रथिराज साथ सामंत सौ। तिनमहि छह सतह गनौं ॥
छं० ॥४८० ॥

चामंडराय का वचन।

तब जंपै चामंड राइ। जादौं जम बत्तिय ॥

(१) ए० कृ० को०—वरनि।　　(२) ए० कृ० को०—मद्दानि ढंनि।

हम पग लग्गो लोह। लोह लग्गो गत मत्तिय ॥
जौ तो ह्वं तूं कहै। तो राज को काज विनासै ॥
अद्ध रयनि उठि जाहि। करै दुज्जनपुर वासै ॥
हम पगनि वहुरि वेरी भरौ। लरि न मरैं जहीं कहै ॥
जहं जहं सुदैव कुल संसवै। तहं तहं पंजर पुरस है ॥
छं० ॥ ४८१ ॥

वलिभद्रराय का वचन।

तब कहैं राव वलिभद्र। काम कूरौ मंतानिय ॥
सबलां सों संग्राम। राज भज्जै राजानिय ॥
म्है म्हां कै ढोलरै। ढाल ढोरी ढुंढारी ॥
कूरंभा ऊपरें। डाढ़ ढिल्ली उच्छारी ॥
औरैं सुमुष्य अंसर उरी। मन सापी जानैं जनां ॥
असुमेध जग्य यौ है तनौ। जनमेजै वरज्यौ घनां ॥ छं०॥ ४८२॥

रघुवंस राम का रात्रि को धावा करने की सलाह देना।

बर बीरह रघुबंस। राम रति बाह उचारिय ॥
जीव संक छची अध्रम्म। मिलि जु संकर पह सारिय॥
आगैंही इहि बंस। बाच दिठ मरनह डिग्यौ ॥
सांम ध्रम्म समलीह। अजै गिरि में रचि गड्डौ ॥
तुट्टै कमन्ध उट्ठै धपिग। बिपथ सीस हंकारयौ ॥
प्रथिराज संग बन्धौ मरन। परिय न्रपति अरि धारयौ ॥
छं० ॥ ४८३ ॥

रे गुज्जर गांवार। ग्रब्ब तजि सज्जि सुमंतं ॥
मोहि ईस आसीस। लागि अंगन रवि रत्तं ॥
मरन सोय अरि हरन। सेन साहाव सबन मथ ॥
भान रथ्थ षंचि है। देव देषै सु रुक्कि रथ ॥
भारथ्थ थंभि रष्षै अरी। रतन रष्षि बर रतन लजि ॥
चहुआन आन सुरतान सों। सामर[1] सजि लज्जी बरजि ॥
छं० ॥ ४८४ ॥

(१) ए. कृ. को.-सागर।

बलभद्रराय का बचन।

फिरि उच्चरि कूरंभ। तंत मंतह उच्चारिय॥
जै पुव्वह बन्धान। टरै सनबन्ध न टारिय॥
व्यास बचन जनमेज। सत्त जानी असत्ति करि॥
क्रम बन्धन पै आहि। मन्ति आयौ सुमंडि घरि॥
आचिज्ज हरिय उत्तर दिसां। मद्धें बड़वानल बिसहि॥
बरजयौ सत्तवचननि तबै। तात जानि नाही असहि॥
छं० ॥ ४८४॥

सुनि अचिज्ज है हेरि। राज संमुह उच्छाइय॥
हरि दिष्षी मतु फिरै। जग्य बड़ बाजि बसाइय॥
बड़ बन्धा करि बन्ध। उंच उंबी जु सेभेरी॥
व्यास बचन करि असति। जग्य जंपन कहि फेरी॥
सोइ जग्य कियौ पहु पंडकुल[1]। तरुन बीर बभन्न बरि॥
सनमंध जीव जुइह सुगति। सो न टरै टारीय टरि॥ छं० ॥ ४८५॥

दूहा॥ ए उदार लज्जिय सुजल। कवि बंधि उट्ठिय आस॥
मरन सुलज्जी बंधयौ। जंपि उदार प्रयास॥
॥ छं० ॥ ४८६॥

रामराय बड़गुज्जर के वचन।

कबित्त॥ कहै राय रासदे। राइ रावत अज्जूना॥
है हथ्थी नौसाज। राज[2] लहौ पज्जूना॥
सासंता उभ्भार। जुइ अथ्था सथ्थानी॥
सौ अग्गानी सट्ठि। सट्ठि आनी पंगानी॥
म्हें गामी गुज्जर गल्हियां। हंसाई हंसाइयां॥
रतिवाह देहु सुरतान दल। रषि राजन लगि पाइयां॥
॥ छं० ॥ ४८७॥

तुम भोरें भीमकैं। रत्ति सोभ्भति ज्यों जित्तिय॥
ज्यों दुम भोरें अंब। घाय धत्तूरस पत्तिय॥

(१) ए० कृ० को०-पहुपग कुल। [२] ए० कृ० को०-रान।

आसामी असपत्ति। लाप कुरकार[1] चढाइय॥
हस्तीनी चिक्कार। फटै रासभ उरझाइय।
पुंडीर राव भग्गौ भिरां। जे सुरतान बंधाइया॥
आभंग जंग[2] अनभंग भर। ते कनवज्ज जुझाइयां॥ छं०॥४८८॥

चामंडराय का रामराय को व्यंग बचन कह कर हँसी उड़ाना।

दै गारी गुज्जरह। राय चामंड कहानौ॥
ए जादों कूरंभ। जिय न वंछै सु सदानौ॥
षीची राव प्रसंग। चोर बंधे सुपुराना॥
ते बीरंग बिडार। डाक वज्जै उभ्भाना॥
गोयंदराज बोल्ला बरै। महिल्ल केलि कलपंत किय॥
पंजाब पंच पंचह सुपथ। जात गात रष्यौ सुजिय॥
॥ छं०॥४८९॥

दूहा॥ लछ बल छुट्टे पंग पहि। सत छह छचनि छच॥
समर सगण्पन देव तन। कहौ न मुह भरि तच[3]॥
॥ छं०॥४९०॥

सब लोगों का हँसना और बलिभद्रराय का सबको धिक्कारना।

कवित्त॥ तब सुराव बलिभद्र। हथ्थ जहों दै धारिय॥
बड़ गुज्जर दाहिमा। बोल लगै अधिकारिय॥
को सेवक को सांई। कोन भर धर किन षाइय॥
केहुं ना घर जरै। हासमे कैको आइय॥
सनमंध राय सगपन कियौ। पच्छै को केहौ कहै॥
सहगवन राज सुरपुर करै। ढोली कछु वासन लहै॥
॥ छं०॥ ४९१॥

[१] ए० कृ० को०-साकुर। [२] ए० कृ० शो०-वुझ्झ।
[३] ए० कृ० को०-वत्त।

रामराय यादव का चामंड की चिघ्घी उड़ाना ।

तब कहै जैत पंवार । साम ध्रम्मह इन जानिय ॥
करन अग्गैं द्रोपदी । चीर दुस्सासन तानिय ॥
पिता दोष जान्यौ न । सेव अंगद घनमंडिय ॥
बंध दोष बेरी प्रमान । राव चामंडह छंडिय ॥
जो दोष सामि तुछ उप्परै । काम दुष्ष बहुं करं ॥
परसंग राव पीची सुनै । मुक्कि राज छंडिय बरं ॥
॥ छं० ॥४९२॥

चामंडराय का गुस्से होकर जैतराव की तरफ देखना ।

दूहा ॥ चिसल तेज लग्गी बिभुत्र । चपरता हवि जान ॥
जैत राव बरजौ इन्है । इकटिह देखवियान[1] ॥
छं० ॥ ४९३ ॥

इन कंठन दिल्लिय नगर । इन कंठन लगि राज ॥
इन आवध काढै न्त्रपति । साहि आज की काज ॥
छं० ॥ ४९४ ॥

जैतराव का दोनों के शान्त करके राजा से कहना कि लोहाना से पूछिए ?

कबित्त ॥ राज काज पामार । सिंघ उच्चार वार तिहि ॥
हों जादों जामानि । वलिय बलिभद्र वार इहि ॥
वह गासी गामार । राम रति वाह सुजंपै ॥
ससि पंडों षुरसान । अधर गुज्जर ग्रह जंपै ॥
न्त्रिघात पात भज्जै सयन । गहन राज रवि उग्रहै ॥
आजान बाह पुच्छौ न्त्रपति । स्वामि ध्रंम सिर न्त्रिब्रहै ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

लोहाना का कहना कि जहां रावलजी उपस्थित हैं वहां और कोई क्या कह सकता है ।

तब लोहानौ आजान । बाह बह बह बक्कारिय ॥

---

१ [illegible] लिया पान ।

समर सिंघ रावर। समुष अग्गै हक्कारिय ॥
तुम सुधरम राजन। अनेय लज्जा अधिकारिय ॥
जो असंत सामंत। ताहि मंता उत्तारिय ॥
दस लष्ष भष्ष सुरतान दल। तनु तुरंग उत्तंग वर ॥
रुधि मंस अस्ति बस पान तुम। कन पिसान दृषहि सुकर ॥
छं० ॥ ४९६ ॥

पुनः लोहाना वचन।

तब चिचंग नरिंद। चिंत चिंता चिंतोनी ॥
भव भविष्य न्निम्मयौ। ब्रह्म जानै न बिनानी ॥
तुम अजाब अंगवनि। जंग सुरतान विचारिय ॥
रत्ति वाह दिन वोहु। कलह केली सु सुधारिय ॥
सुभ थान प्रान पतिसाह कौ। राज पान संमुह लरै ॥
बत्तीय बिकत्ति जंपै सुकवि। वहसि वहसि वुल्ल्यौ वुरै ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

चामंड राय वचन।

कहै राव चामंड। अस्ति कर दुष्पिन सागर ॥
काली कर दुष्पैन। रकत वर जोगिनतावर ॥
इन्द्र आदि दुष्पैन। पंक प्रव्वत्त प्राहारै।
चंद हथ्थ दुष्पैन। गुद्ध तारक्क वीचारै ॥
थक्कैन हथ्थ वर करन सुअ। मंस काज विभ्भूत वर ॥
संग्राम काम कारन भिरन। सो न थकै रजपूत कर ॥
छं० ॥ ४९८ ॥

पृथ्वीराज वचन।

पहुमि ईस पलटौस। रोस तजि रहसि बिचारिय ॥
प्रिथा कंत सोमेस। तनं हँसि हँसि दियतारिय ॥
निसा अद्ध वत्तरी। देव कंदल नहि पिष्पै ॥
हम मनुष्य तन रूप। कित्ति कहि कहि कह भष्पै ॥
धवली सुरेंन धवली दिसा। धवल कंध सनमुष लरहि ॥

सोमेस आन सुरतान सों । जौ न जुद्ध इत्तौ करहि ॥
छं० ॥ ४९९ ॥

लोहाना आजान बाहु बचन ।

अद्ध रयन अंतरिय । जाम जामानि भतारिय ॥
सामंता रौ साथ । अरध चढ़ि[1] अरध उतारिय ॥
मुक्कि बान कम्मान । तुंग तरवारि कटारिय ॥
हथ्थ[2] घल्लि सिर मंडि । रुद्र लोहं उच्चारिय ॥
आजान बाह इम उच्चरै । बाबारौ लंबी भुआं ॥
प्रथिराज काज इक्कै सरै । पै चित्रकोटि रावल दुआं ॥
छं० ॥५००॥

प्रसंगराय खीची वचन ।

विहंसि राव परसंग । षिजे षीचौ चमरालिय ॥
राज नैंन दिय सैंन । वयन बुल्ल्यौ बेढारिय ॥
रे गुज्जर रे जैन । अरे चावंड राइ सुनि ॥
राजादों कूरंभ । बलिय बलिभद्र सीस धुनि ।
सुरतान छच अनछच करि । राज सीस छचह धरों ॥
इह समर सिंघ रावल सुनै । जौ न जुद्ध इत्तौं करों ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

चामंड राय का वचन ।

षिझ्यौ राव चामंड । चिल्लं लग्गि चय भूअ वरा ॥
अवर मत्त सामंत । बोल बौलैंति मत्ति धरा ॥
राज मद्द धन मद्द । मद्द जोवन घन घारौ ॥
सवै मद्द उत्तरै । पग्ग सुरतान सुझारौ[3] ॥
जे होय सूर सूरह सुबर । निपन सूर जुद्धं जई ॥
बोले न बैंन समझे घनं । संग्रामह अरि हंकई ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—चढ़ । (२) ए० कृ० को०--हाथ्थ वेव गग घल्लि ।
(३) को०—सूझो ।

बरहमंड चामंड। षग्ग उच्चरिग मंत मह ॥
षग्ग मग्ग अन दग्ग। भ्रम्म स्वामित्त रत्तरह ॥
उमरि साहि बिधि बद्ध। छिनन इत उत बर बज्जै ॥
टरै न द्रिग टारंत। बीर गाजै धर गज्जै ॥
नर मंत देव मंडल सुपह। सुपह सद्ध अध अद्ध हुअ ॥
बर बरै बीर दाहर तनौ। रहति चंद मन्नेति धुअ ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

जैत प्रमार बचन।

कहै जैत पामार। बार बिग्गरी तुम्हारी ॥
कही सुनी चामंड। जाम जद्दों अधिकारी ॥
अप्प पान तोलियै। सेन सुरतान निहारौ ॥
मवन मंत चुक्कियै। धरम छत्रो जिन हारौ ॥
सर बर सुबीर[1] संभरि धनिय। मुहि प्रतीत राजन तनी ॥
जै अजै भाग भूपति बढ़ै। पै चढ़ै धार धारह धनी ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

गुरुराम प्रोहित का बचन।

तबै कहै राम गुर राज। सेन तोलौ राजानी ॥
सुनौ सूर सामंत। मंत कलहंत प्रमानी ॥
किं जानै किं होय। सूर उट्ठै ढिल्लानी ॥
उतराधी उत्तरै। जाय संमद साहानी ॥
भज्जै भरम्म चहुआन कौ। मंत मभ्भ कलहंत भौ ॥
जानहि न जुद्ध बंभन मरन। इन महि छुट्टिय सग्गभौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

देवराज बग्गरी बचन।

देव राज बग्गरी। बीर बीरह बरु बंध्यौ ॥
करौ जु कोइ करि सकै। साम दानह मिलिं संध्यौ ॥
मोहि राज प्रथिराज। काज केवल कलहंतिय ॥

(१) मो.-रस बर सुवर

जंच जोर सुर सारि। सार भग्गै रहि तंतिय ॥
जीवंन हथ्थ तुम सथ्थ सुर। तनक लाज दुहुं भुज धरौ ॥
मो बुझ्झि जुझ्झि संमुह लरौ। न लरौ तौ फुनि पच्छै मरौ ॥
छं० ॥५०६॥

गुरुराम बचन।

कुसुमै जुध कीजै न। सार भर धार भिरै कस ॥
अजै होत अरि हसै। बिजै संदेह देव बस ॥
ता कारन घर घेरि। भिरत जुटि प्रथमं जोरी ॥
इन बात करत कुढंग। सूल बहुरंतर फोरी ॥
गुरु राज राम इम उच्चरै। समर सिंह प्रथिराज प्रति ॥
धर साम दान भेदह रहै। जु कछु करौ सो मंत मति॥
छं० ॥ ५०७ ॥

पृथ्वीराज बचन।

तू कुपट्ट दुजराज। राज राजन क्रित कंपी ॥
जुद्ध रूप पुर प्रथम। जुद्ध करि जुद्ध निकंपी ॥
बहू जाइ भर जीय। सुकति कित्ती भर' अग्गा ॥
सोइ जब सुह भोगवै। चिहुंट चीरं जिम लग्गा ॥
कायरन काज आवै वसुह। वसुह न काइर घर रहै ॥
ज्यौं वसुरत्ती सुर हूर सुआ। त्यौं राजा बसि इल रहैं ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

वीर माल्हन बचन।

समुह वीर समवीर। मंत माल्हन इह सारिय ॥
राज समुह रासलह। दिट्ठ हूरति संचारिय ॥
सुमन जेम जन महै। क्रम्म गोरिय गुर ढिल्लन ॥
इग्र अजब्ब मन मत्त। टरहु जीवन कलि पिल्लन ॥
अनुसरहु धरम चहुआन रन। मन सुमाहि माहाव सम॥
दुरजय दुराय छुट्टन सुगति। निय नियान पुट्टै सुद्दम ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

(१) मो...

गुरुराम बचन।

बहसि गुजर परिहार। जियन जुग तत्त बिचारिय ॥
सुभट मंत जानहु न। राज भंजै पच्चारिय ॥
मत पष्षै कै मास। जुद्ध बंध्यौ सुविहानं ।
बिरद मंत मंतयौ। सबर अरि तजि सुरतानं ॥
जप होम मंत्र बलिदान तप। दुष्ट ग्रहं ग्रह टारियै ॥
चौरासि जीव भोगै मनिछ। सो जीव मत्त बिन डारियै ॥
छं० ॥ ५१० ॥

राम राय रघुबंसी बचन।

सुनि गुज्जर गांवार। राम उच्चरै सत्ति बर ॥
सर पुट्टै गा हंस। अद्ध पिष्षियै अधा धर ॥
दै अचार कुल अधम। राम रोगौ नह बुझ्झै ॥
ताव जुरा घृत देइ। कित्ति अन कित्तिय सुझ्झै ॥
सुरतान सेन कित्तक बहन। अरु कित्ती कुल भंजियै ॥
पारथ्थि राव रावल सुनै। जिन क्रित्ती ते लज्जियै ॥
छं० ॥ ५११ ॥

माल्हन परिहार बचन।

परसि अमत परिहार। गुज्ज गांवार बात सुनि ॥
अनम लोभ इह जानि। कित्ति मंडियै तनह फुनि ॥
जु कछु जंत त्रिम्मए। कहै सब माया मेरी ॥
माया मेरी कहत। निमुष चलतें नह हेरी ॥
सो मित्र नंद अप्पन सुगति। जुगति मोह भंजै गिरै ॥
भोगवै दुष्ष जीवै बहुत। कहौ जु कछु जिहि उब्बरै ।
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रसंगराय खीची बचन।

फुनि कहै राव परसंग। बिहंसि बुल्ल्यौ चमरारिय ॥
इनहि स्लर सांमंत। बार बेरह नह[1] झालिय[2] ॥

(१) ए० कृ० को०-हरन। (२) ए० कृ० को०-डालिय।

विषम दोह लज्जी प्रमान। रति बाह करिज्जै ॥
अजहु हले संग्राम। फेरि सुरतान गहिज्जै ॥
रष्पनह राह ज्यौं उड़गनह। सयन चंद चँपि चंद गहि ॥
ग्रह भजन भरम जामन मरन। कित्ति काल छूटी फुरहि[1] ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

सुनि सुमंत सामंत। सुचिय बंधवति पुत्र सम ॥
साम अग्गि गुर संच। तत्त जानौ सु छुट्टि भ्रम ॥
सहस धीर ज्यौं सूर। सहज लग्गीत ग्रहन[2] बर ॥
बुद्धि[3] पराक्रम बंध। सुरन अप्पौ राजी बर ॥
चित्रंग राव रावल समर। समर मोह ग्रह जस छुटी ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। यों अवाज सम्मर फुटी[4] ॥
छं० ॥ ५१४ ॥

देवराज वग्गरी वचन।

दूहा। देवराज जपि जैत सों। तुम जानौ सब तंत ॥
उहि दिन बहु जित्ते रवद। इहि दिन इह गत मंत ॥
छं० ॥ ५१५ ॥

कवित्त। एक सुदिन सामंत। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। पंग जग्यह घर रुंध्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। चाय चालुक्क बिडार्यौ ॥
एक सुदिन सामंत। राज रिनथंभ उधार्यौ ॥
दिन एक स्वामि सामंत कौ। संत छंडि कलहंत रजि ॥
सुप लोकि लोकि जीवत जरिय। घरिय पट्ट घरियार बजि ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

सब सामंत समंत। सुनिय बोल्यौ गिरवर पति ॥
अरो सूर सामंत। अंत कालह बिगरिय मति ॥
अप्प अप्प सुप दवै। मेद अंतर गति संडै ॥

---

(१) [illegible]—[illegible]रहि।　　(२) ए० कृ० को०—ग्रहत।
(३) [illegible]—[illegible]द्ध।　　(४) ए० कृ० को०—फुट्टी।

इहै अष्टम अंत होय। अक्तित दित दोज षंड ॥
तुम करहु संत एकंत मिलि। जुद्ध अग्ग छत्रपत्ति छिति ॥
जानौ न और उपजै न काहु। इहै पंथ आदिहि विगति ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

दूहा। समर ससर वत्ती सुनी। हुए सबै मति एक ॥
इह जुगिंद अग्या दई। ग्रहैं लग्गन कर तेक ॥ छं० ॥ ५१८ ॥

सामंतों की बात सुन कर रावाल जी का किंचित रुष्ट सा होना।

कवित्त। जुद्ध मंत सामंत। यपिय चहुआन प्रान घन ॥
सबै सूर सामंत। चिंत लागै सु जोर मन ॥
मुष्य तेज असहेज। नेंन नंचै सु सूर रस ॥
उद्धलोक आपेष। भ्रम्म अम्मैव स्वामि तस ॥
सा लष्षि अष्षि गिरि चित्रपति। दुसह काल कारन धर्यौ ॥
सनमंध सगप्पन जानि जिय। सुअन सोम प्रति उच्चर्यौ ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

सब सामंतों का कहना कि जो कुछ रावल जी कहें सो हम सबको स्वीकार है। रावलजी का कहना कि कुमार रेनसी को पाट बैठाल कर युद्ध किया जाय।

पद्धरी। उच्चर्यौ इष्षि दष्षिन नरेस। मन्नेव विषम क्षित काल एस ॥
संग्रह्यौ भेव अंतर उरेव। जग्गयौ बीर दैवात देव ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दिल्लीव बंध बंधौ सु पथ्थ। रष्षहु कुमार भर रेन सथ्थ ॥
संभरे वत्त सा संभरेस। मन्नेव मत्त हित्तं हरेस ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बोलयौ राज जामानि तास। साहाब अब्ब वल विषम काम ॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनंत। मंडौ वयित्ति पच्छेव मंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

जंपी सुवत्त रावल सहित्त। सच्ची सुसोय सुम्मा सुभित्त ॥
षुम्मान ग्यान जोगिंद राज। त्रैकाल ज्ञान सुक्झै सुभ्राज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥
त्रयगुन अतीत बुक्झै त्रिलोइ। जग तंत मंत कारन सुजोय ॥
वैदेह जेह वैदेह अप्प। पग्गाह सुबुद्धि सुव गंग तप्प ॥छं०॥५२४॥
ब्रह्मंड पिंड बुक्झै पुरान। षट द्रब्ब द्रह विद्या विनान ॥
आगंम गंम बुक्झै गुराह। बुक्झैव ग्यान मग्गा अथाह ॥
छं० ॥ ५२५ ॥
अवधूत राइ गोरष्ष ग्यान। नर लोइ देह देवंग जान ॥
सनसंध सगप्पन अप्पनेह। जंप्यौ सुकित्य कारन्न तेह ॥छं०॥५२६॥
हम हीन आउ सोमंत सूर। बुक्झैव पच्छ मंडौ समूर ॥
रष्यौ सुपच्छ रैनं ससुक्झ। रष्पहि सु देस दिल्ली सु गुज्झ ॥
छं० ॥ ५२७ ॥
उद्दर्यौ तास जादो सुजास। धनि सत्ति गत्ति चहुआन तास ॥
रष्यौ सु वद्ध मर पच्छ काज। थंभै सुदेस रष्पै सुलाज ॥छं०॥५२८॥
जिहि पुत्त एक सा पुत्त ग्रेह। थंभै सुराज कुल वट्ट तेह ॥
बिन पुत्त जेस देवल अथंभ। ढहि परै भिन भिन्नह अचंभ ॥
छं० ॥ ५२९ ॥
बिन पुत्त पच्छ जानै न नास। सुभ क्रंम धम्म को करै काम ॥
देवतं देव देवीन लोक। मागंत पुत्त बिन सबै फोक ॥
छं० ॥ ५३० ॥
तिन कज्ज राज इह सतौ सन्नि। चिह्नंग राज जंपै सु धन्नि ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

पृथ्वीराज का रावल जी का वचन मान कर जैतराव के ऊपर कुमार का भार देना।

कवित्त। मत्रिय का चहुआन। चित्त आसिक्त सन्नि मन ॥
[illegible] पागार। [illegible] कुमार [illegible] तन ॥

मंत गंठि मन संठि। जैत रष्पहित राज रह ॥
घरिय हीय साधीय। अप्प गंभीर धीर तह ॥
सनमुष्प आय सिर नाय करि। कहि राजन परसंस करि ॥
रापहु सुराज ढिल्लिय सुथल। राज चित्त जानहु सुपरि[१] ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

सो संभरि ढिल्लीस। जैत अप्पह आभासिय ॥
करिय कित्ति विधि नीति। रीति राजंग रहासिय ॥
रयन पान संग्रहौ। देस सिर भार सुधारौ ॥
रष्पहु रज चहुआन। प्रीति अप्पा प्रतिपारौ ॥
उच्चर्‌यौ गरुअ पामार गजि। पग्ग सीस आयास सजि ॥
आरत्ति नैन श्रुति वेन तन। उहसि रोम मुछां उसजि[२] ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

जैतराव का राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करना।

तबै कहै जैत पामार। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
अज्ज कज्ज सोकंध। रेन कारन्न आनि गुनि ॥
आदि छत्र तुम सीस। अज्ज सिर सुम्भ्रम कित्ति पल ॥
भर गोरी गरुअत्त। करौं उम्भ्भार भार दल ॥
संचरो मंझ बिंबे बहरि। विधि कारन मो कंध दिय ॥
को करहु बंध संधहि सकल। मैं जित्त हरि लोक लिय ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

प्रसंगराय खीची और अन्य सब सामंतों का भी दिल्ली में रहने से नाहीं करना तब रावलजी का अपने भतीजे बीरसिंह को राज्य का भार देना और सामंत कुमारों को साथ में छोड़ना।

पद्धरी। सुनि बत्त सच्च संभरि नरेस। परसंसि जैत अप्पह असेस ॥
परसंग राव षीची स बोलि। गरुअत्त गात उत्तंग तोलि ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

(१) ए० कृ० का०—सुपरि। (२) ए०—उसमि।

तुम धरौ पानि कुम्मार रेनि। रष्यौ सु रज्ज कज्ज हत्ति ऐनि ॥
बोलयौ ताम पीची सुगाजि। उम्भेर अंग छूरत्ति आजि ॥
छं० ॥ ५३६ ।

जित्तौं सुलोक सुरपत्तिराज। उद्धरौं सीस पग स्वामि काज ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बोलि। पामार सिंघ ओडे सु ओलि ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

जाद्व सुजात आरज कमंध। आभासि कहिय न्रप करहु बंध ॥
उम्भरे सोय भर च्यार भार। गज्जे व गेंन असि रुद्ध क्कार ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

जित्ते सुलोक जे उद्ध उद्ध। सज्जै विलास सुरतरु निरुद्द।
जे जे सुराज आभासि छूर। जंपैव सेव तेते करूर ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

अति दुमन देखि जंगल नरेस। चित्तंगराव चिंते सहेस ॥
निज बंधु सुअन वरसिंघ बोलि। छूरत्त गहर जिन लाज तोल ॥
छं० ॥ ५४० ॥

रष्पे सुभट्ट से सत्त तथ्य। छूरत्त घत्त संग्राम हथ्य ॥
सह रष्पि पोस रेनं कुमार। बंधेव बंध सारज्ज सार ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

ईसरह दास सुअ कान्ह सादि। कमधज्ज वीर चंद्रह सुवादि ॥
कैमास सुअन परताप मानि। सुअजैत करन आभासि आनि ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

सामंत सिंह गहिलोत गानि। परतोप सुअन परताप जानि ॥
जयसिंह महन सुअ बोलि बंदि। परिहार तेज छूरत्त नंदि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

आभासि सङ्घ परसंस किन्न। गुन जंपि प्रथक उच्चान भिन्न ॥
रष्पै सु पान रेनं कुमार। बाजे अनंत वज्जे उदार ॥
छं०॥ ५४४ ॥

ए दोय दोय दिन्ने नउंच। राषे सु सह भर गज्ज संच ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

यह समाचार सुन कर कुमार रेनसी जी का युद्ध में जाने के लिये हठ करना।

कवित्त। तब सुनि रेन कुमार। पच्छ रष्षै राजानं॥
पंच पथ्थ की काज। मोहि ढिल्ली धरवानं॥
इंद्रपथ्थ तिल पथ्थ। पथ्थ सोवन पानीपथ॥
वाग पथ्थ धर काज। और रष्षे सामंत सथ॥
छचीन ध्रम्म धर राज सुनि। जो आपन अनकान करै॥
हरै जनंस मानुष सुपति। अरु निहचै नरकह परै॥छं०॥५४६॥

पृथ्वीराज का कहना कि पिता का वचन मानना ही पुत्र का धर्म है।

दूहा। तब राजन बोलै सुपुत। आदि ध्रम्म सु विचार॥
पिता वाच मानै सु सुन। ते धर रापहि[1] सार॥छं०॥५४७॥

कुमार का योग लेने के लिये उद्यत होना परंतु राजा और गुरु राम और कविचंद के समझाने से चुप रहजाना।

भुजंगी। तबैं जंपि तामं सुरेनं कुमारं। सज्यौ साथ राजंग जगं सुभारं॥
पिता देव सेवं[2] सुसेवं विरंची। न चूकै तनं पचि राजं सु अंची॥
छं०॥५४८॥
करो चूक सबि लागि राजं सुकाजं। सजो बन्न मारग्ग बद्री सुआजं॥
जटा बंधि लंगोट अंगं तपेसं। महा मोनधारी वधं पंडवेसं॥
छं०॥५४९॥
तपै जाय कासी प्रयागं सुथानं। ग्रहै घोर तष्यं करै धूम पानं[3]॥
इला आदि छची कर्‌यौ छित्ति कामं। रहौ लोभ माया धरे पच्छधामं॥
छं०॥५५०॥
इसी बात कहूं ति कै मूढ प्रानी। कही बाद बादै कुमारंति वानी॥
सनै[4] उच्चर्‌यौ ताम दिल्ली नरेसं। सदा विद्धि सिद्धी व राजंग एसं॥
छं०॥५५१॥

(१) ए० कृ० को०—रापै। (२) ए० कृ० को०—देवं।
(३) ए० कृ० को०—नहीं मोह कामं।पिता राजधानं। (४) ए०—मते।

महाजन्न सारम्म बूझौ विचारं । तरं वेलि कित्ती चढ़ै अस्स धारं ॥
तनं रीति आदित्त गत्ती समानं। पुनं जात अंतं पुनं जात आनं ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

अहं संक्रमं प्रान सुरतान साथं । सजौ सूर राहं चलै कित्ति काथं॥
कहै राज रासं गुरं पुच्छि दिष्यौ । कवीचंद बानी सुबानी विसिष्यौ॥
छं० ॥ ५५३ ॥

गुरं राज बोलै भटं चंद साषी। पिता वाच मानै इहै पुत्र भाषी ।
अहो आदि माता पिता मूल जानं । पछै तीरथं आठ सट्टं प्रमानं॥
छं० ॥ ५५४ ॥

कहै गंग गोदावरी ग्रेह माहै । जिनै मात सेवा पिता सेव ताहै॥
धरा अस्स राषे पिता वाचमानै । ग्रहै राज भारं सुरं पथ्य थानै॥
छं० ॥ ५५५ ॥

व पूछित्ति काजै धर्यौ सूर लाजै । अरी आय लागै तवै जुद्ध साजै ॥
तुसं काज ढिल्ली गरै लाज आनी । जबै आय लागै तवै काम जानी॥
छं० ॥५५६॥

तुसं सथ्थ सामंत पुत्रं सुभट्टं । सजै भारथं सार ठेलै सु घट्टं ॥
इनं बत्त कज्जै तुसं पच्छ रष्यं । सनी राज पुत्तं न बोलेति भष्यं ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

उस समय नाना प्रकार के भयानक अशकुनों का होना और इसके निर्णय के लिये राजा का ज्योतिषी को बुलाना।

लोइ विद्धि आरिष्टसोचै अपारं । धरा व्योम पानं तरं वंन चारं॥
धरा धूरि गाजी रहै वारि वाहं । रसं छोनि सुक्कै दिगं दाह दाहं॥
छं० ॥ ५५८ ॥

पावंतं विकालं तरं मुल्ल नारं । अवं स्रोन धारं वनं वार वारं ॥
गरक्कंत गाजै चईतं चिकारं । दिनं सद्द वहंति फेकी पुकारं ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

करे मानयं भग्गि प्रासाद कोटं । प्रतिम्मा प्रतंती वहै आस नोटं ॥
नुपं पोन होनं सनेनं प्रचारं । प्रती थान छुट्टै अपुट्टी उमारं ॥
छं० ॥५६०॥

बहै अब्ब सम्मीर नीरं अपातं। असै गिद्धिनी चिल्हनी रूप रातं।
विकंतं सकंतं अनूपं उहासं। परी गौप जायं गवायं परासं॥
छं० ॥ ५६१ ॥

सिरं दून चेवं अनेवं प्रसायं। नयंनं वयंनं श्रवंनं विद्यायं॥
वड़ बागवा चीय माहीप तासं। प्रसंवं सरुंडं अभूतं दुगासं॥
छं० ॥ ५६२ ॥

तनं कंप स्वेदं फरक्कंत रोमं। मनं भीत रीतं चरं चंच लोमं॥
सु पन्नं दुपन्नं सु दीसै उरानं। लपै सूर सासंत कैलास थानं॥
छं० ॥ ५६३ ॥

महा बुद्धि दैवग्य बुझ्झै बजासं। जगं ज्योति व्यासं हरी जोति तासं।
लहै सब्ब जोतिप्प विद्या विनानं[1]। उरं इष्ट भासे सरूपं सन्यासं।
छं० ॥ ५६४ ॥

दुअं पुच्छि आभासि दिल्ली नरेसं। कही अंत आरिष्ट साचै असेसं।
कहौ बिप्प भा सेवरा सेव सब्बं। निरष्षै सु कालं दुरासह अंबं॥
छं० ॥ ५६५ ॥

ज्योतिषी का अशकुनों का और ग्रहचाल का फल बतलाना।

कवित्त। तब जंपत जग जोति। व्यास हरि जोति अपारं॥
सुनौ राइ दिल्लीस। तजो मन षेद सुभारं॥
काल व्याल संसार। ग्रसै सब रिद्धि लोक रह॥
करो न रोस सदोस। हम जंपैं सुविद्धि इह॥
उच्चरै राज प्रथिराज तब। कहौ चित्त छंडैद्रु सय॥
आरिष्ट इष्ट सोचहि अनत। हिय हम मानहि अंत पय॥ छं० ॥ ५६६ ॥

हनूफाल। जंपे वतं जगजोति। हरि ज्योति वयासह जोति॥
विधि काल व्याल विजान। सुक सुनिय जान गियान[2]॥
छं० ॥ ५६७ ॥

आगंम आगम विद्धि। अति इष्ट बुद्धिय सिद्धि॥
ग्रहचार वक्र विगत्ति। पिति सयल भेद विभत्ति॥
छं० ॥ ५६८ ॥

(१) ए० को० कृ०—विज्ञानं।   (२) ए० कृ० को०—ग्यान विनान।

सनि वक्र दिल्लिय देस। सुरभन नयर विरेस॥
अरि ग्रेह कोप्यौ अप्प। सुर असुर मंचि यदप्प॥छं०॥ ५६९॥
ग्रह विपम तन चहुआन। ग्रह दुष्ट छवि छितान॥
हुअ हिंदु युद्ध तुरक्क। रह उंच सजहि इक्क॥ छं०॥ ५७०॥
दिल्लीस[1] गज्जन ईस। सम चलहि प्रान पुरीस॥
दिल्लीय के दिन राज। चहुआन रेन बिराज॥ छं० ॥ ५७१॥
साहाब सूअ सहाव। अति तेज होय सताब॥
करि बंदि जीतहि देस। दल जोरि जर अस हेस॥छं०॥५७२॥
सब करहि धरनिय पानि। सजि चलह कनवज थान॥
नन जुरहि कमंध नरेस। सिर करहि गंग प्रवेस॥छं०॥५७३॥
पिति जीति गज्जन ईस। सम जरहि दिल्लि सरीस॥
सम जुद्ध जंगल राज। मिलि करहि स्वामि स आज॥छं०॥५७४॥
सम जग्गि गोरिय जुद्ध। पद रेनि पामहि उद्ध॥
दस एक संवत सट्ट। सवि अग्ग द्वादस तत्त॥ छं० ॥ ५७५॥
तावं तत्तेव समथ्थ। असुरान दिल्लिय तथ्थ॥
एवत्त बुझ्झिय राज। सं सच्चौ ऊरध काज॥ छं० ॥ ५७६॥

ज्योतिषी की वाणी सुन कर राजा का कुपित और क्लान्त चित्त होना और सामंतों को समझाकर कहना की गोविन्द का ध्यान करके अपना कर्तव्य पालन कीजिए।

कवित्त। सुनिय वत्त दिल्लीस। रोस उब्भार अप्प तन॥
मन उदास चिंतास। काल मन्निय सु कत्त मन॥
निरषि स्वामि सामंत। ताम गुम्मान स जंपिय॥
अद्ध काल संग्रहै। छोनि इह फेरि न कंपिय॥
रप्पहु सुरेन कुम्मार रज। धरावंध वंध्यौ सुमर॥
मम मारो मोह चिंतो सुहरि। सज्जौ स्वरग मारग सुभर॥
छं०॥ ५७७॥

(१) मो० दिल्लीस।

तब जलद मेघ मंडिलिय । नयन पुंडीरिय सुसोभित ॥
त्रिसल पीत अंमरिय । गुंज मंजरिय अरोहित ॥
श्रुत कुंडल मंडरिय । मोर पंपरिय सिरोयनि ॥
मुरलि मधुर मुष्परिय । चक्र बंकुरिय करोयनि ॥
इय ध्यान मंन राजन धरिय । मत्त घत्त पच्छौ सरिय ॥
कैलास वास सामंत सथ । कलह केलि रची ररिय ॥छं०॥५७८॥

हनूफाल । वपु स्याम धर मति भेष । चप पुंडरीक सुरेष ॥
कच वक्र कुंतल लीन । मकरंद जौ मुप पीन ॥ छं० ॥ ५७९ ॥
सुक्रीट हार विहार । तम हरन किरन प्रहार ॥
श्रुत कुंड लेन विलाल । सक सकल ग्रीव विसाल ॥छं०॥५८०॥
निज नास मोति सुद्दंद । तिलकं सुसम अति बिंद ॥
तें प्रतिय[1] अमर प्रतीत । रघुवंस राजस रीति ॥छं०॥५८१॥
करि करिय सिंगिनि पानि । मधु मधुर मिष्टित बानि ॥
धरि पुट्टि तूर धनुक्क । जिय जासि जानि जनुक्क[2] ।छं० ॥५८२॥

कवित्त । सुमन मयन मंजरिय । रमन षंजरिय विरम्मिय ॥
तिलक अलक जंजरिय । असित अंजरिय द्रिगंमिय ॥
सुश्रित चिसिति अम्मरिय । चिहुर उम्मरिय सिरन्निय ॥
सरन[3] हंस झंझरिय । डंड डंमरिय करन्निय ॥
बर बिदुष सुष्प कह हंकरिय । धरिय भगति दिसि नंजरिय ॥
अइय द्रग्ग पंपं परिय । राज ध्यान उमया धरिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥

दूहा । हरि माया उमया सुहरि । न्त्रिपवर चिंतिय ध्यान ॥
मन एकंत समंचरिय । प्रति बोधे सब्बान ॥ छं० ॥ ५८४ ॥

क्रोध और क्लान्त अवस्था में पृथ्वीराजकी मुखप्रभा वर्णन ।

कवित्त ॥ अति तरक्क[4] बर तिष्प । षंभ तिष्पन[5] तररक्किय ॥
बंभ अंड विद्दरिय । मनहु दारिम दरक्किय ॥

(१) ए० कृ० को०—प्रीति । (२) मो०—जनक्क । (३) मो०—रसन ।
(४) ए० कृ० को०—तरप्प । (५) ए० कृ० को०—तष्पन ।

फनिन परिय फुंफरिय। फेन फुंकरिय फनिंदह ॥[1]
परम उग्र वपु दुर्ग। दिग्ग मुद्दिग दिग अंतह ॥
नर हर अपुब्ब नहपुब्ब पर। दुरद दनुज दारुन दिसनि ॥
जन हेत विघुन्निय अधम उर। रुहिर चंद घुंटिय रिसनि ॥
छं० ॥ ५८५ ॥

नद्दिय भीमह नद्द। षुंभ षुंभिय अररक्किय ॥
अध धक्किय धर धरनि। सीस फनपति सुररक्किय ॥
पिष्षिय रूप अपुब्ब। सब्ब लोयन बल घट्टिय ॥
अट्टहास टह टह उघट्टि। बरपुंज निघट्टिय ॥
गहि पलय ताहि तिम दुग्ग द्रिग। नर हर तप्पिय तीन पुर ॥
चब्बिय बहद्दु विद्दरि नपन। दप्पह चंद दवित्त[1] उर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

काल चक्र की प्रभूति और राजा का रैनसी जी को समझा कर उन पर दिल्ली राज्य का भार देना।

वाघा ॥ इह भविष्य बीतय दिल्लेसं। आवरि वीर अंग अस हेसं ॥
मंनि काल क्रित कारन रूपं। सादैवत्त आदि गति ओपं[2] ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

कालं दैव देव संहारं। कालं मंदिर मेर ढहारं ॥
कालं जगत जगत्त विलोमं। कालं सिध साधक्क न ओमं ॥
छं० ॥ ५८८ ॥

कालं अजा जठर हरिवासं। कालं मानुष इंद्र विनासं ॥
कालं लंका गढ़ किय पाजं। कालं दिय म्बभपन राजं ॥
छं० ॥ ५८९ ॥

कालं जादव कुल संहारं। कालं द्वारिक समुद सिधारं ॥
कालं जलथल एक पसारं। कालं कन्ह वडपन्न सघारं ॥
छं० ॥ ५९० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-[illegible]।　　(२) ए. कृ. को.-[illegible] आदि गति ओपं।

कालं बालं कालं वृद्धं । कालं जोगी कालं सिद्धं ॥
कालं सूरिज कालं चंदं । कालं नवै डुंगरी नंदं ॥छं०॥५९१॥
कालं ब्रह्मा केइ संहारे । कालं ग्रह नव नापित्त तारे ॥
सुन्नि काल गति उति चहुआनं । आवरि निज मारग कुल कानं[1]॥
छं० ॥ ५९२ ॥
तब सुनि रेन कुंअर कहि सारं । इह गति इह संसार असारं ॥
इतनी बार न बोल्यौ एसं । गुरु भट न्नप तीने सविसेसं ॥
छं० ॥ ५९३ ॥
इह अब काल ग्याल गति जानी । ते हम ग्रहै तेग परिमानी ॥
बोलै अग्गर रेन कुमारं । किय परसंस राजगति सारं ॥
छं० ॥ ५९४ ॥
राषहु रयन थान गति थित्ती । जानहु चित्त रीति रज गत्ती ॥
का जानै सज्जी का भज्जी । जग जानै दुज्जर गति लज्जी[2] ॥
छं० ॥ ५९५ ॥
रष्षहु रयन दिल्ली रजभारं । तुम जानहु षिची षग सारं ॥
राषहु बंध नयर सुभसाजं । जं निरमितं सकल कुल काजं ॥
छं० ॥ ५९६ ॥
तब जंपै नमि रेन कुमारं । सेवा वाह पिता अगि सारं ॥
कै साजो सेवा जुध अष्षं । कै परसन बद्री पति दष्षं ॥छं० ॥५९७
बार बार जंपन नहि कामं । अब हम तुम रष्षौ रजमामं ॥
तब जंपै रावल प्रति राजं । तुम रष्षहु बुझ्झवि सुत आजं ॥
छं० ॥ ५९८ ॥
तब धरि पानि षुम्मान कुमारं । किय संबोधि सुचित चित सारं ॥
किय अप रेन कुमार सुचित्तं । जंपे सहु चहुआन सहित्तं ॥
छं० ॥ ५९९ ॥
राषहु कुमर सथ्थ भरसारं । जे रज्जै साजै रज भारं ॥
उट्ठिय मंत चिंत करि राजन । बाज्यौ बीर धीर सब ताजन ॥
छं० ॥ ६०० ॥

(१) ए. कृ. को.-आवारिन मारग कुलकानं। (२) ए०-लग्गी।

जै जै जै बानी आया सह। सुनिय मंनि क्रित काल सुतासह ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

रेनसी जी का कहना कि मैं तो युद्ध में पराक्रम करूंगा।

कवित्त ॥ * चक्रव्यूह भारथ्थ। रचिय द्रोण आचारिज ॥
दुरजोधन नृप कुंअर। नाम लषमना मद्धि सज ॥
दस हजार अनि कुंअर। रषि पारथ्थ जुध कज ॥
एक एक भुजबल प्रमान। भद्र जातीक अयुत गज ॥
ते हनिबि सकल कहि रयनसी। भंजि ब्यूह लगि षग्ग रस ॥
अभिवन्न कुंअर अरज्जुन कौ। काम आय षोडस बरस ॥
छं० ॥ ६०२ ॥

कविचन्द का कुमार रेनसी को समझाना।

पद्धरी * ॥ कविचंद जंपि मधु वचन जोह। राजिंद कुंअर सुनि रयनसीह ॥
सत एक पुत्र हुअ रिषभ देव। बड़ पुत्र भरथ तिहि सुनहु भेव ॥
छं० ॥ ६०३ ॥
वैराग चित्त लग्गै सुरंग। माया अलिप्त भेदै न अंग ॥
तप करन चलिय तजि राज पाट। परमोधि आय मिलि रिष्य घाट॥
छं० ॥ ६०४ ॥
पित मात जियत तूं तजहि देस।अपहास करहि अनि सुनि नरेस ॥
उत्तानपात सुत ध्रूअ जेस। रहि जाय वत्त इल अचलतेस ॥
छं० ॥ ६०५ ॥
पाटवी पूत छंडहि न रज्ज। आगम निगम वेदन बरज्ज ॥
इन भंति उक्ति अनेक उक्त। तिहि काज राज नवषंड भुक्त ॥
छं० ॥ ६०६ ॥
समझाय आनि ग्रह फिरि भरथ्थ। दै राज रिषभ निज हुअ अतिथ्थ॥
भागवत कथा संभलि प्रबन्ध। नगहट्ट छंडि मन महि समंध ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

* ये दोनों छन्द मो० प्रति में नहीं हैं।

पृथ्वीराज का कुमार रेनसी का राज्यभिषेक करना।

कवित्त ॥ करिय सुचित भर सब्ब। रोज दिन्नेव द्रव्य भर ॥
मंगि मदन शृंगार। गज्जबर पट्ट मद्द भर ॥
रयन कुमर आभासि। दीन माला मुत्ताहल ॥
असी बंधी निज पानि। बंदि कीनौ कोलाहल ॥
आरोहि गज्ज कुम्मार निज। पच्छ बंध सा सिंधु किय ॥
जोगिनिय बंदि चहुआन पहु। कत्य काज मन्नेव इय ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

दूहा ॥ रेन कुंअर सोचित्त थपि। ठयौ जुद्ध मति मानि ॥
उट्ठि राज सब ग्रेह कों। दिय अग्या बर बानि ॥ छं०॥६०९॥

दरबार बरखास्त होना और पृथ्वीराज का रावलजी को डेरे पर पहुंचा कर महलों को जाना।

अरिल्ल ॥ उठ्यौ मंत चित्त करि राजन। जै जै जै बानी आयासन ॥
बढ्यौ धीर बीर रस ताजन। सुनिय मंच किलकान सुतासन ॥
छं० ॥ ६१० ॥

कबित्त ॥ उट्ठि महल प्रथिराज। मंगि आरोहन बाजिय ॥
रावल प्रथम चढाय। चढ्यौ चहुआन सुताजिय ॥
करि अस्तुति सम सिंघ। तुमहि बड्डुं बड्डाइय ॥
तुम जोगिंद जग जित्त। कित्ति तुम कहिय न जाइय ॥
परसंस करत अन्नेक परि। करि डेरा रावर समर ॥
चढ्ढनह[1] बर निसि सेष कहि। आयो बज्जन बजत घर[2] ॥
छं० ॥ ६११ ॥

उधर से शहाबुद्दीन का सिंधु नदी पार करना।

बाजि घरिय घरियार। साहि उत्तरिय सिंधुनद ॥
विषम वाव उड़ि भ्रिंग। सिंधु छुट्यौ कि सद्द मद ॥
तमसि तमसि सामंत। राज राजस किय तामस ॥

(१) मो.-चढ़तिहि। (२) मो.-आयौ वजत वजन्न रव।

घुमरि घुमरि नीसान। थान जग्गे मन पोवस ॥
निसि अद्ध अनेही पीय तिय। पिय पिय पिय पप्पीह तिय ॥
पंपनिय फरकि अंषिय अनषि · उदय अनंद[1] सुबीर किय ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय पृथ्वीराज को शाह की अवाई का समाचार मिलना और उसका सब रसरंग त्याग कर जंग के लिये सजना।

उदै अनंदिय बीर। बाजि रनजंग बीर बर ॥
क्रोध लोभ मद उतरि। मद्द पिन्नो मुगत्ति सर[2] ॥
अद्ध अनैही[3] राति। अद्ध नेहं सुलितानं ॥
दुहुं मिलंत महिलानि। मिलत चित अच्छरि धानं ॥
तिय मद्धि पंच घट्टीय घटि। वर मिलान पोमन्न करि ॥
बर बीर बेलि बढ्ढिय विषम। करन[4] छिमा छिम छन उसरि ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मोतीदाम ॥ सुबीर अनंद अनंदिय नंद। नच्यौ भ्रम छंडि भयानक छंद ॥
कला कल अप्पिरसुच्छिर बानि। सिषी सिष अभ्भ सिकंडिय जानि ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

गये निज मंदिर समँत सूर। मिले नर नारि महारस नूर ॥
मिले रस राजस पंग कुंआरि। करी परिक्रम्म सुनेहिय नारि ॥
छं० ॥ ६१५ ॥

अनेक सुगंध सउद्ध अनूप। मिलंत[5] छिनेक सु मन्नहि भूप ॥
करी घन नेहिय नेह प्रकार। मिलंन सुमंनहि मंनहि मार ॥
छं० ॥ ६१६ ॥

करी नर नारि सुरंग उधंग। पुछै चर आगम साप सुरंग ॥
रजंनिय अंत रही इक जाम। कहै दोइ दूत सुआइय ताम ॥
छं० ॥ ६१७ ॥

---

(१) मो.-अनंदिय। (२) ए. कृ. को.-वर। (३) ए.कृ. को.-मनेही, नेनेही।
(४) ए. कृ. को. करिय। (५) ए.कृ.को.-मिलन्न।

पिय करुना मुष पी मुष वीर। दियौ रस संकर अंतर चीर॥
संयोग वियोग नवै रस बंध। लह्यौ चक चक्किय ह्वै निसि अद्ध॥
छं० ॥ ६१८ ॥

पिय पिय पिट्टन दिट्ठ भवन्न। रह्यौ चित पुत्तलि जनि मवन्न॥
पुरं पुर भ्रम्मनि केवल साहि। मनों बिंब चोल करुन्न मिलाहि॥
छं० ॥ ६१९ ॥

बिथा बिथ कंपिन जंपिन सेइ। को पुच्छहि काहि को उत्तर देइ॥
कथौ कथि अंगन अंगन ताहि। रहे चप जानि टगट्टग चाहि॥
छं० ॥ ६२०॥

क्रमं क्रम जग्गिनि लग्गिन नैन। गये रस छंडि मनो असु हैन॥
रसी रस सिड्डिय विड्डिय माल। ग्रसे सब सुष्प[1] भयानक वयाल॥
छं० ॥ ६२१ ॥

निमेष करी करुना रसकेलि। उठी वर वीर वरब्बट वेलि॥
दिषे दिषि कंत सु दंपति चाहि। मिले चित मित्त सु अंगन साहि
छं० ॥ ६२२ ॥

जनौं पर निड्डि सु देषिय रंक। टरै नहि चेतन ज्यों निधि संक॥
भये रस सत्त प्रभात प्रामन। बजे रन जंग चढे चहुआन॥
छं० ॥ ६२३ ॥

सुने धुनि राज गवन्न गवन्न। तजे तिन मत्त भवन्न भवन्न॥
घनंक्कि निसाननि नादानि बद्द। षलक्कि जंजीर उमद्द निमद्द॥
छं० ॥ ६२४॥

षनक्किय संकर अंदुनि अद्द। ठनंक्किय घंट सु घंटन हद्द॥
घुरक्किय घुग्घर दादुर भद्द। * * * छं० ॥६२५॥
जयंजय सद्द बदै चहुं ओर। करै जनु प्रात सिषं डिय[2] सोर॥
भनक्किय भेरि सु भम्भकार बद्द। रनक्किय वीरन फेरिय सद्द॥
छं० ॥ ६२६ ॥

(१) ए०—सुप्प। (२) ए० कृ० को०—सिकंडिय।

हरक्किय भ्रूभ्र सुराज रवद्द । भरक्किय नाग गयो सिरखद्द ॥
तुरक्किय तुंग तुरंगन सीस । सरक्किय सप्पय सेसनि सीम ॥
छं० ॥ ६२७ ॥

परक्किय पष्षर पष्षर तोन । ढलक्किय ढाल सुढक्किय प्रोन ॥
हलक्किय हाल फवज्जिय सूर । धरक्किय घाम सु कातर क्रूर ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

कथं कथमान गुमान उमान । दुअं दस कोस मिलान मिग्गान ॥
सु हिंदुअ मेछ बजयौ रन तोल । गयौ दिव देव कबी दिय बोल ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

निमेषक भूमि अयासह अंग । चल्यौ जनु इंद्र धनुक्कह रंग ॥
जयं जय सद्द करी तिहि बीर । कह्यौ तिनिं राज रवन्नह पीर ॥
छं० ॥ ६३० ॥

कविचन्द का बीरभद्र से युद्ध का भविष्य पूछना और बीरभद्र का कहना कि पृथ्वीराज पकड़ा जायगा।

दूहा। तुम सु बीर जानहु भवसि। कहौ राज न्रिम्मान ॥
बीर कहै संभर परै । ग्रहै मेछ चहुआन ॥ छं० ॥६३१ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली से चलकर दस कोस पर पड़ाव डालना।

साहस गहन सहन्न किय । हरिग राम चहुआन ॥
पंच सबद बज्जिय सघन । दिय दस कोस मिल्लान ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

पृथ्वीराज के कूच करते समय संयोगिता की विरह बिथा का वर्णन।

कुंडलिया। नृप पयान पोमिनि परषि। घटि साहस घटि एक ॥
सुकथ केलि पियूष पिय। जतन करहि सषि हेक ॥
जतन करहि सषि हेक। हाय करि [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] कर मिंडि। धरकि धरहर जिय कंपहि ॥

[illegible] पृ० [illegible]-निहि।

इह प्रयान नृप करत। परी संजोगि धरा धपि॥
सषी करत सब जतन। चलत पयान तहां नृप॥
छं०॥ ६३३॥

त्रोटक॥ जतनं जतनं किय झंझलियं। दिपि दीपक भोंन भर्‌यौ सुहियं।
भवनं भवनं भवना गरियं। धर मुच्छि परी वुधि सागरियं॥
छं०॥ ६३४॥

ससि सूर चयं रवि जोग ससी। विष ज्वाल असी सुमनं विगसी।
द्रिग चंचल अंचल सोमुदयं। विरहा उर उग्ग ग्रसी सुधियं॥
छं०॥ ६३५॥

अहि घुट्टि लियं बयरं जुलियं। पह तुट्टि सुधा निधि की विधियं
बर विंब बिलोकि सषी करियं। असु आसिक नासिक सें भरियं॥
छं०॥ ६३६॥

अह कट्टहि निट्ट निसान घटे। विरही घटिका जनु अग्गि पढै॥
विरही बरनेह अनंग कसं। भए जानि किरोग त्रिदोस बसं॥
छं०॥ ६३७॥

सुबढी विरही न घटे न घटं। सु चढी जनु वेलिय ब्रष्य वटं॥
जल नेननि बूंद परै कुचयं। तिनकी उपमा नयनं सचयं॥
छं०॥ ६३८॥

जुरठी हुति पुञ्ज कमोद कली। तिहि तारक सोम बसीठ इली॥
इहि सारन प्रान न मुक्कि पती। तिन मंडि रहे दुष देषि जती॥
छं०॥ ६३९॥

घल घंदन चीरति सीर करै। लहरी विष जानित प्रान हरै॥
सषि सूंठिन भूढ़ रसे सुतनं। घन सार निहारनि नारि बनं॥
छं०॥ ६४०॥

नटि नारिय नारिय पानि गहै। तजि जाहिन अंक वियोग सहै।
पल ध्याननि आननि नेन चहै। अलि ओटन जोट वियोग सहै।
छं०॥ ६४१॥

घन घूमरि भूंमि समीप रहै। ठग टग्ग लगी चष कोन चहै॥
षिन दाषिन षीनह षीन भई। घरियार निहारत प्रात भई॥ ६४२॥

कुंडलिया ॥ घर घयार वज्जिग विषम। हल्लिग हिंदु दल हाल ॥
दुतिय चंद पूनिम जिमैं। बर बियोग बढि बाल ॥
बर बियोग बढ़ि बाल। लाल प्रीतम कर छुट्टौ ॥
है कारन हा कंत। आस आसु जानि न फुट्टौ ॥
देषंत नेंन सुभक्षै न दिसि। परिय भूमि संथार ॥
संजोगी जोगिन भई। जब वज्जिग घरियार ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

कवित्त ॥ बढि बियोग बहु बाल। चंद विय पूरन मानं ॥
बढि वियोग बहु बाल। वृद्ध जोबन सममानं ॥
बढि बियोग बहु बाल। दीन पावस रिति बट्टै ॥
बढि बियोग बहु बाल। लच्छि कुलवधु दिम घट्टै ॥
बट्टै वियोग बालनि विरति। उत रावन सेना चढिय ॥
करकादि निसा मकरादि दिनं। बाल बियोगत सम बढ़ियं ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

वही रत्ति पावस्स। वही मघवान धनुष्षं ॥
वही चपल चमकंत। वही बगपंत निरष्षं ॥
वही घटा घन घोर। वही पप्पीह मोर सुर ॥
वही जमीं असमान। सही रवि ससि निसि वासुर ॥
वेई अवास जुग्गिन पुरह। वेई सहचरि मंडल्लिय ॥
संजोगि पयंपति कंत बिन। मुहि न कछू लग्गत रल्लिय ॥
छं० ॥ ६४५॥

दूहा। जल अधार(१) रष्यो जियन। छत रष्यौ नन प्रान ॥
अब रबि मंडल बर मिलन। कै जोगिनिपुर थान ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

हरिहु आदि अंमर सकल। अलि रष्षहु अलि भोर ॥
जोग भोग पिय संग रहि। तियन ध्रम्म घर और ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

कै धरणी कै अम्मरह। कै अंतर तरु मूल ॥
दैवकाल बातुल मिलि। उड्डहि तंत तन तूल ॥
छं० ॥ ६४८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अधीर।

पृथ्वीराज की चढ़ाई की तैयारी का वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ साह चहु आन सूर। भुंधरी विदिसि दिसि दिपिकरू॥
सुर धुनि निसान बज्जे सुरंग। नपफेरि रंग सिंधू उपंग॥
छं० ॥ ६४९॥

दल चलहि दवरि षंपे दुरंग। उरझंत पंथ इत्ते कुरंग॥
सो सद्द बद्द संभरे सूर। उट्ठे ति मुच्छ बंकी करूर॥
छं० ॥ ६५०॥

चिंतवै सूर सा भ्रंम हेरि। मन कहै गहै सुरतान फेरि॥
बारुन्नि बहै गजदान भद्द। क्रोधह कुरंग दीसै रवद्द॥
छं० ॥ ६५१॥

आरुहै मिट्ठ गज तुरंग बढ्ढि। कातरिति कंमि[1] गिरि धुम्र चढ्ढि॥
धावंत तेज पुज्जै न धाइ। छुट्टै न प्रान जिन करै छाइ॥
छं० ॥ ६५२॥

मद सरक धरक जोगी समान। क्रम क्रमनि असो पयपयन जान॥
दीसै तुरंग अनधूत धूत। मानो सुदंति पब्बै सपूत॥
छं० ॥ ६५३॥

चतुरंग सेन सजि बर प्रमान। सिंधूरन ब्रह्म चढ़ि चाह,आन॥
षोले किपाट बर मुगति रूप। सोमेस पूत अवधूत भूत॥
छं० ॥ ६५४॥

चहुआन को चलते समय अशकुन होना।

कवित्त। चढ़त राज चहुआन। छीक अगनेव देव दिसि॥
मिल्ल कुंजर बिन दंत। अश्व अपलानि चिंत वसि॥
सूच मंत तुट्टयौ। राज दिट्ट सु विचारयं॥
गौर कुंभ उप्परै। स्याम कुंभह अद्धारिय॥
तजि मोष रस्स संधी चिषा। आवै क्रित गवनन छची॥
ससु नौम जोग पंचमि दिवस। चढ्यौ राज निस[2] तुछ षची॥
छं० ॥ ६५५॥

(१) ए० कृ० को०— कार्य। (२) ए०—निज।

गजनी के गुप्त चरों का शाह को पृथ्वीराज के कूच का समाचार देना।

दूहा। इह चरित्त पिष्षिय चरन। वह चरित्त नह राय॥
　　सो चरित्त सुरतान सों। सिंध उलंघिय धाय॥
　　　　　　　　　　　　　　छं०॥ ६५६॥

हुवि हमीर दल हाम करि। मन करि अग्गो पच्छ॥
दूधैं दझौ ज्यों पियै। फूंकि फूंकि के छच्छ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं०॥ ६५७॥

कुंडलिया॥ कूच कूच पंधार परि। हलिग हिंद दल हींच॥
　　कह्यौ राज सुरतान कह। सिंधु विहथ्थै बीच॥
　　सिंधु विहथ्थै बीच। फेरि पुच्छै चहुआनं॥
　　कहौ मग्ग परिमान। जेह संख्या तुम जानं॥
　　कौन ठौर जुध मेल। होइ चिंतौ तुव सोचह॥
　　सकल सबै सामंत। करौ नदि उत्तरि कूचह॥
　　　　　　　　　　　　　　छं०॥ ६५८॥

राजपूत सेना का पहला पड़ाव पानीपत में होना।

दूहा। आय जलह पथ उत्तर्यौ। दिल्ली वै चहुआन॥
　　हरन अति आनंद हुअ। सहि संजोगी हान॥
　　　　　　　　　　　　　　छं०॥ ६५९॥

शाही सेना का चिनाब नदी पार करना।

कवित्त। दिल्लिय ते सत कोस। अग्ग सिंध[1] नदी कहिज्जै॥
　　द्वादस नद सतनंज। तहां न्रप दल मलहिज्जै॥
　　दिल्ली तें सत दोइ। नगर लाहौर सु थान॥
　　असी कोस नदि विषह। परें लाहौरयि जान॥
　　उत्तरौ सिंधु लाहाब दी। विहथ परै आयौ सुरजि॥

(1) ५०-नि०, ए० को०-देह।

दिन सत्त अट्ठ महि जानिहौ। औ आयो चिन्नाब गजि॥
छं० ॥ ६६० ॥

दूहा। सा चिन्नाब लाहौर तें। कही कोस च्यालीस॥
अप्पन सेन समाहिकैं। जाय मिलौ दिल्लीस।
छं० ॥ ६६१ ॥

पावस पुंडीर का उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज के पास जाना और क्षमा मांगना।

कवित्त। इह अवाज पुंडीर। सुनिय वह रोस उपन्नौ॥
पावस राइ हिंसार। कोट छंडवि संपन्नौ॥
आज राज कौ काज। करौं तिल तिल तन वंटौ॥
तौ धीरंजा धीर। स्वामि अग्गौं रन नट्टौ॥
इनवार भ्रत्य जग्गौ नही। छोनी छल कायर करै॥
हारै जनंम मेटै सुजस। कहर क्रूर दोजिग परै॥
छं० ॥ ६६२ ॥

आयौ छंडि हिंसार। राज मतरंग मिलन्नौ॥
सबें सूर सामंत। जाय अग्गों होय लिन्नौ॥
लग्यौ पोइ रा जान। भाव रष्षै मन उंचो॥
हेत बत्त पुच्छी न। नैंन ते नैंन दुमंचौ॥
यौं कहैं सबैं सामंत तब। राज पाय पुंडीर गहि॥
अपराध कोटि बगसंत न्रप। हूई बात पिछली सही॥
॥ छं० ॥६६३॥

पृथ्वीराज का पुंडीर वंश का अपराध क्षमा करना।

कुंडलिया। तब तुम लुटि छंडिय सहर। अब आए जुध भीर॥
धीर लाज कवि लगी गनौ। रे पावस पुंडीर॥
रे पावस पुंडीर। धरि लाजह जल रष्यों॥
नत[1] सोमेसर आन। मान गढ़ते गहि नष्यों॥
हंसहि[2] मोहि सामंत। लैजु आय तुम सब्बह॥

(१) मो०—नन। (२) ए० कृ० को—सहहि।

कहै राज पृथ्वीराज। सहर लुट्यौ तुम तब्बह ॥
॥ छं० ॥ ६६४ ॥

कवित्त। तुम लुट्यों लाहौर। भौमिभंज तुमी भग्गा ॥
साम ध्रम्म पथ मुक्कि। पंथ सो द्रह सुलग्गा ॥
ध्रम्म धीर अरु सुकथ। पुन्न भग्गा चंदानी ॥
राज मद्ध चहूणो। भंगि अग्या राजानी ॥
पुंडीर राइ साधन सकल। अकल मोह बंधौ नजिय ॥
दिन अट्ठ द्रट्ठ चहुआन को। रहा न न्रप दरवार थिय ॥
॥ छं० ॥ ६६५ ॥

धरिय च्यारि पुंडीर। छिमा छिम अदब परघ्यौ ॥
सामंतन सब सुनत। मंत अच्छौ मिलि भघ्यौ ॥
हमहि द्रोह लग्यो दिवान। सुतौ सुरतानह जानै ॥
दोह सत्त अट्टमै। होइ मौलिप चहुआनै ॥
जब लोह कोह परियारतें। काटि अरिन भंजौ सुरिन ॥
प्रथिराज काज तरवारि भर। जौव उड़वि लग्गौ तरनि ॥
॥ छं० ॥ ६६६ ॥

शाही फौज की चाल और नाके बंदी का समाचार पाकर पृथ्वीराज का कविचन्द को हम्मीर को मनाने के लिये लेजाना।

दूहा। धरिय पंच बत्ती सुबर। कागद आय सपन्न ॥
अरियन दिसा जु विद्दनी। जोग नेव कर दिन्न ॥
॥ छं० ॥ ६६७ ॥

साटक। सोतं श्री फल लाभ राजन वरं गोरी ग्रहे बंधनं ।
पावक्कं अरि रोह दाहन बरं भूभार उत्तारयं ॥
मानं पंगय पंग जग्य मरसं वग्गं वरं हीमयं ॥
नेयं श्रूत विधान न्त्रिमित बरं सामं भुजं राजयं ॥
॥ छं० ॥ ६६८ ॥

दूहा। ॥ सो मतन मंतौ न्रपति। वामन जंबू राइ ॥
कोर काम चहुआन कौ। कहै सुकिज्जै धाइ ॥
॥ छं० ॥ ६६९ ॥

कवित्त ॥ सुभर उतरि सतनंज । चंद पट्टो कंगुरह ॥
लै आयौ जालंध । राइ हाहुलि हमीरह ॥
अरु जाल पाप रमि परस । परस दरसत दुह भग्यौ ॥
आदि सुद्ध दय दीन । सिंघ पष्परि किन दिष्यौ ॥
हम नमसकार करि पुचछयौ । अरु पुछमो पछली बिगति ॥
हुं कहों सुतुम जानहु सकल । चलहु चंद अग्गे निरति ॥
छं० ॥ ६७० ॥

कवि चन्द का जालंधर गढ़ जाना और हम्मीर को समझाना ।

मुरिल्ला ॥ मग्गह चलंत नहि करि विरम्म । सामंत सूर सुभर भुदित्त तम्म ॥
जालंध जाहु नृप पति सुकाज । रापहु तराज प्रथिराज आज ॥
॥ छं० ॥ ६७१ ॥

कवित्त ॥ कह्यौ चंद बरदाई । बत्त हाहुलि हम्मीरह ॥
स्वामि ध्रम्म चिंतियै । दोस टारियै सरीरह ॥
बहुआसा दौ राज । धान जंबू ग्रह लग्गौ ॥
बोल वंक तजि कंक । साम भ्रम्मह पथ जग्गौ
जंमन मरंन भंजन भिरन । जंत रीति सह जानियौ ॥
कंगुरह राइ बत्तें चपल । भई बचन परमानियौ ॥
॥ छं० ॥ ६७२ ॥

चलत मग्ग दुह मंगि । राजा तव संगि दुहि धीरह ॥
लै आउं जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
नदि विषाह उत्तरिग । जाय कंगुर सपन्नो ॥
पंच सत्त पंच पेडि । आय अग्गौ होइ लिन्नौ ॥
भोजन भगति बहु भांति किय । सब पुच्छिय राजन बिगति ॥
जालंध राइ जंबू धनि । सुनि हमीर चंदह सुमति ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

प्रथम बाह असनान । अष्ट भुज देवि परसनसौ ॥
तहं सुदेह रा ग्राम । बाम गंगा अब दरसौ ॥

गए पाप जनमंत। भेट कंगुर गढ़ रानी ॥
और मिले हम्मीर। सामि अम्मह सहि नानी ॥
तुम कहि जुहार सामंत सब। अरु राजन बहु हेत धरि ॥
इन वार तुम्म हम्मीर नृप। सजौ सेन सुरतान परि ॥

छं० ॥ ६७४ ॥

दूहा ॥ मुष मिट्ठौ रुठ्ठौ सुजी। हाहुलि राव नरिंद ॥
बोल बंक सो कंक करि। जंपि सु मुष जै चंद ॥

छं० ॥ ६७५ ॥

कवि चन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो।

कुंडलिया ॥ ढिल्ली वै है गै दिसा। ता राजन लगि भीर ॥
हो तौते रन आतुरह। चढ़ि हैवर हम्मीर ॥
चढि हैवर हम्मीर। साहि नदि सिंधु समुझी ॥
राइ रोस गोरी नरिंद। चहुआन सरुझी ॥
पग्ग मग्ग अकलंक। कित्ति बोहिथ चलाई ॥
तौ लागो संग्राम। भार अप्पौ ढिल्लाई ॥

छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ कै कारन भौ वै दिसा। चढि ढिल्ली वै भद्द ॥
बंक बिसाहन भरह पौ। लै लाहौरी हद्द ॥ .

छं० ॥ ६७७ ॥

कबित्त ॥ इन लाहौरी हद्द। कंक करि बैर बिसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। बीर व्यापार बसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। मूल बिन व्याज साहि लिय ॥
इन लाहौरी हद्द। बाल चहुआन सत्य किय ॥
लाहौर हद्द अजह्न सकल। करहि जय व्योपार बर ॥
हाहुलि हमीर दो पष्ष बचि। करौं धरब्बर साहि बर ॥

छं० ॥ ६७८ ॥

(१) [illegible] —[illegible]

बोलां वंकस कंक। केलि संभलि रा गोरी ॥
वे उन्हां उन्हां कहै। पंचौ नद मेरी ॥
जुल्लानी वज्रागि। लागि बीरां उन्हाई ॥
हो हम्मीर नरिंद। चंद आयो न बुझाई ॥
षगधार ध्रम्म पची तनौ। चूकै न्रक निवासियै ॥
जै काम सूर साधन चलै। धूधू मंडल वासियै ॥

छं० ॥ ६७९ ॥

हम्मीर बचन।

के दीहां[1] लगि केलि। करौ काहे लगि झुझ्झौ ॥
हट गलहां सों लागि। जाइ कौरव[2] कुल बुझ्झौ ॥
हौ हमीर हम्मीर। चंद वत्तां करि दिष्षौ ॥
जौ पंचानदि पंच देस। अड्डा अध नष्षौ ॥
कहियै न सुष्ष नर लोक को। किंसुर लोक सुहाइयां ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन। पुच्छो तोहि कहाइयां ॥

छं० ॥ ६८० ॥

कविचन्द वचन।

ध्रिग्ग सुष्ष संसार। ध्रिग्ग मिष्ठान पान वर ॥
सुपन में ईषह पत्त। मिष्ठ लग्गै हाहुलि पर।
न्रक संधि में परै। क्रम्म घर बंध भार गिर ॥
कातर मन छंडियैं। जीह सल बंधै दुद्दर ॥
सुर लोकहु नर न्रकपन। जस अपजस वंधी रवन ॥
मो बुझि झुझ्झि पच्छै मरौ। जानि वक्र ग्रह सुगति पनु ॥

छं० ॥ ६८१ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। नाम तुम चंद न्याय धरि ॥
कहौ मंच कुल वह। कबहु उतरै न संभरि ॥
राज नीति जानहु न। साहि दिष्षौ दल अप्पन ॥
गलहां करि मरिहौ जु। विरद लभ्भौ उर कंपन ॥

(१) ए० कृ० को०—हीहां। (२) ए० कृ० को०—कोरों।

जद्यपि सुभोन उत्तर तपै। जदपि संभ्र चंपिए गहन ॥
चहुआन अंग ते दिन नही। गहन राज ते रिपु रहन ॥

छं० ॥ ६८२ ॥

कविचन्द वचन।

सुनि हम्मीर नरिंद। बिधिनि बंधे बंधन वर ॥
डोरी घन न्रिम्मान। काल षंचौ निकट्ट कर ॥
पय लग्गोनिय मींच। मंत कौ करै जियन कौ ॥
विधि विधान न्रिम्मान। झूठ उच्चार कियन कौ ॥
गल्हां न संच संचै ननह। सो न' रहै गल्हां रहै ॥
उच्चरै चंद जंबू धनी। साच एक जुग जुग चहै[2] ॥

छं० ॥ ६८३ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। हुऔ दिन अदिन बिचारौ ॥
जब रावण हरि सीत। कियौ गढ लंक संघारौ ॥
अदिन काज पंडवनि। जूअ सों हेत विचारौ ॥
अदिन काज परिछत्त। रिष्य गल अप्प हकारौ ॥
इह अदिन बुद्धि सामंत सब। कलह केलि अति बल सरिय ॥
हरि हरा देख इंद्रादि सुर। वरजि गये अति गति बुरिय ॥

छं० ॥ ६८४ ॥

मिटै न बर संबंध। इता अनयो क्यों सहिय ॥
चंद बिंब चहुआन। भूमि भारह न्रिब्बहियै ॥
जैत सुभर बलिभद्र। बीर बंधन सुविहानं ॥
बड़ गुज्जर रा राम। झूठ बंधै बर बानं ॥
बीरंम भग्ग मन जिहि बरनि। नर वरनि तिहि मोह नर ॥
जानियै न मन छिज्ज मदर सुगति[3]। यो धर बंध पूरंन कर ॥

छं० ॥ ६८५ ॥

कविचन्द वचन।

चंद कहै हम्मीर। अनप पची क्यों आवै।

---

(१) ए० कृ० को०—मैन। (२) मो रहै। (३) ए० कृ० को०—सुगति।

जबहिं समर संपजै । तबहि अंबर सिर लावै ।
जहां हथ्यौ तहां मरै । घाट अवघट न विचारै ।
जस लज्जा गल बंधि । स्वामि अम्मह उच्चारै ॥
संसार अथिर सामंत(३) मत । सक सहाव बंधन भिरिम ॥
जानहि पराक्रम पुच्छ तम । इन अग्गें को वर करन ॥
छं० ॥ ६८६ ॥

हम्मीर बचन ।

काली कल विष धरै । डंक बीछी उच्छारै ॥
नीलकंठ सिव वरै । मोर महीरंग निहारै ॥
काल अंब ढरि जाहि । जीह पप्पीह पुकारै ॥
धप्पै बढै गयंद । चढै शिकार सिआरै ॥
सुरतान काम सद्दै सलष । जैत राइ बिरदां बहै ॥
हाहुलि राइ भट्टै कहै । को अनंघ दुत्तै सहै ॥ छं०॥ ६८७ ॥
दावानल पांवार । अनल चहुआन सहाई ॥
घटजनमा रिषिराज । समद सोषै धरताई ॥
जैत राव कंठीर । हथ्थ सामंत राज सिर ।
पहु पहार पांवार । घडै भंजै गोरी धर ॥
अब्बुआ राव अग्गै पहर । बिन न जोर जंबू रहै ॥
बुंगलिय बाज जोगिनि पुरिय । जं जं भावै तं कहै ॥
छं० ॥ ६८८ ॥

कविचन्द बचन ।

सुन हम्मीर नरिंद । मरन आवै अभाग मति ॥
अंत काल बिक्रम नरिंद । भष्षि वायस अविछि गति ॥
मरन वार वर भोज । धूम्म मुक्के मलेच्छ भौ ॥
मरन काल पंडवन । ग्यान छुट्टौ मोहि लब्भौ ॥
चिंती न चिंत चिंतह नहौ । नरक निवासी होहि नर ॥
धिग धिग सुबीर बसुधा करै । तौ न छुट्टै नर काल भर ॥
छं० ॥ ६८९ ॥

---

(३) ए० कृ० को०—संसार ।

हम्मीर वचन।

सुनौ भट्ट कविचंद। रहसि बुल्ल्यौ जंबू पति ॥
मो जिय इय अंदेस। मंत पुच्छौं जालंधर गति ॥
उभै लिषें कागद प्रमान। राज राजन सुलितानं ॥
बीय अग्गै मुक्कियै। सोइ अप्पै फुरमानं ॥
बत्ती विवेक दुग्गा सुपत। हथ समप्पि हम्मीर कर ॥
आरंभ होइ इह बत्त गति। सुबर बीर जंपौ सुबर ॥

छं० ॥ ६९० ॥

कविचन्द वचन।

असत राज जब ग्रहै। नीति भ्रम दूरि बिडारै ॥
सती असत जब ग्रहै। पैसि भांडै भंडारै ॥
जती असत जब ग्रहै। कनक कामिनि मन मंडै ॥
सूर असत जब ग्रहै। स्रन माया तन मंडै ॥
हो अबुधि न करि जंबू धनी। इह सुबुद्धि कौ पुच्छियै ॥
जालंध देवि गम अगम बुधि। सो बुधि पुच्छन इच्छियै ॥

छं० ॥ ६९१ ॥

हम्मीर वचन।

कुंडलिया ॥ मगि वायस जग्गिय अलुक। पषि परवार कपोत ॥
भौम नहीं बंधाइ बंध। धरक न मानै जोत ॥
धरक न मानै जोति। धरक मुक्कै न धरहर ॥
पर मुक्कै मुक्कहि न मान। सिंघ सा पुरिस बोज वर ॥
सेब दिसिह चढ़ि चरौं। चंद जन मांतहि पग्गं ॥
कौ अनंग दह सहै। कहै सामंत सुर मग्गं ॥

छं० ॥ ६९२ ॥

कविचन्द वचन।

कवित्त ॥ सोइ ज सूर सा अग्म। जुग्ग सा भ्रम्म न पुज्जै ॥
दया दान दम तित्थ। सर्ब सा भ्रम मनि रुज्झै ॥

---

(१) ए० कृ० को०—चरौं।

साँमि ध्रम्म वर मुगति। नरक वर तिथ्य निवासौ ॥
सुनि हमीर सा ध्रम्म। करै सुरपुर नर वासौ ॥
सा ध्रम्म मुकति बंधै रवन। सांमि ध्रम्म जस मुगति वर ॥
अब कित्ति कित्ति करतार कर। नरक चूक भ्रुभ्रभौति नर ॥
छं० ॥ ६९३ ॥

हम्मीर बचन।

अब्बूरा पांवार। जैत हाहुलि कहि बुल्लै ॥
सुनि कन्नां चहुआन। ताहि प्रथिराज न पल्लै ॥
पूछानी चामंड। डंड मंगै लाहौरी ॥
जिम खाना गंधान। कोल लद्धौं कारोरी[1] ॥
उच्चार भार बोलै हरै। राज उलग्यौ साहनी ॥
उपरैं जांम जद्दौं लगर[2]। सुभर उभारै पाहनी ॥
छं० ॥ ६९४ ॥

कविचन्द बचन।

इन वेरां हम्मीर। नही औगुन बंचीजै ॥
इन वेरां हम्मीर। छचि ध्रम्मह संची जै ॥
इन वेरां कै सिंघ। बर विषर जेम उंभारै ॥
इहि वेरां हम्मीर। सूर क्यों स्यार सँभारै ॥
बेरां हमीर पौरुष पकरि। इह सु बात रंडां ररी ॥
सामंत राज काजह समय। न करि ढील निंदा करी ॥
छं० ॥ ६९५ ॥

हम्मीर बचन।

की लोहानै जंग। साम लग्गा अजमेरी ॥
कै मासें उच्छेरि। तुरी तूंवर विच्छेरी ॥
जेती ताहूभांमि। ढाम ढंढा ढुंढारा ॥
कूरंमा पज्जून। काम किन्नो कुट्ठारा ॥

(१) ए० कृ० को०—कालोरी। (२) ए० कृ० को०—गरल।

सांरुडै झुझझ उलझिझया। सोहानै सज्जी वही ॥
ऊछंगा बंधन सेवरा। तें भट्टां द्रुग्गा सही ॥

छं० ॥ ६६६ ॥

कविचन्द वचन।

सलष अलष करि जुद्ध। साहि गज्जन वैसाह्यौ ॥
कैमासें बर बंधि। भीम भोरा घर गाह्यौ ॥
तूंबर बर उच्छारि। अप्प बाचा कहि फेरी ॥
कमधज धरधक धोरि। धरनि जित्ती अजमेरी ॥
हों भट्ट चट्ट जस अजस पढि। भरों साषि सूरह समर ॥
हम्मीर मंत चुक्कत सभर। हसहि देव दानव अमर ॥

छं० ॥ ६६७ ॥

हम्मीर वचन।

भोरै रा भारथ्थ। कथ्थ जाने तूं भाई ॥
पामारां पज्जून। लिये पट्टन वै सांईं ॥
मे वह्यो कैमास। हथ्थ भीमा वट्टानी ॥
तूं जानै चहुआन। बार बर तूं इच्छानी ॥
सलषां सलष्भ ग्रब्बां हुआं। अब लग्गाई वत्तरी ॥
सुरतान कालिह आनौं धरा। आज तुम्हारी रत्तरी ॥

छं० ॥ ६६८ ॥

मुह वट्टानी बत्त। चंद आनी पहिलाही ॥
ते साई रै काज। भरकि उट्ठे अच्छांही ॥
तूं आरज आजान। बार ढिल्ली घर[1] अड्डा[2] ॥
तूं रापन हिंदवान। पान राजन तो वड्डा ॥
आगर बुलाह गो बंभनां। गर हड्डा पड्डा मुहां[3] ॥
आलपा जागि पुच्छाइयां। जो रापै अम्मा दुहा ॥

छं० ॥ ६६९ ॥

(१) ए० कृ० को०—बर। (२) मो० वडा।
(३) ए० कृ०—गर वडा पड़ा मुहं।

चहुआना रै रजधान। सोमंत लड़ाई ॥
ते बोलो वर लागि। जाइ कनवज्ज झंझाई ॥
ए गोरी साहाव। दीन जानै पहिलोना ॥
हसम हय गय देस। देह दष्यौ दह गोना ॥
कै काम कलह कंदल चढौ। कै कम्मां मत्तां गढौ।
वे काम भट्ट गलहां पढै। जिन भंजौ दिल्ली सढौ॥

छं० ॥ ७०० ॥

कविचन्द बचन।

गलहां काज हमीर। देव देवी सिर दिन्ना ॥
गलहां काज हमीर। अग्ग सधयौ जुउजिन्ना ॥
गलहां काज हमीर। राज मुक्यौ रघुराई ॥
गलहां काज हमीर। मंस[१] कथ्यौ सिव सांई ॥
हम गलहवांन गलहा करैं। तुम गलहां लग्गै बुरी ॥
म्रत लोक जीव जम पंजरै। तुम जानौ छुट्टै दुरी ॥

छं० ॥ ७०१ ॥

हम्मीर बचन।

अरे चंद तुम गलह। इहां नाही अधिकारिय ॥
ए घर जानी षेल। नही डिभरु षिल्लारिय ॥
इहै अग्गि नहि दीप। ग्रहै आगें होइ दिष्षैं ॥
जब फुट्टै आकास। कोंन थिगरी स्तरष्षै ॥
हम दुरैं नही जीवन मरन। नह लागै गलहां बुरी ॥
मो मत्ति इहै अप उब्बरी। करौ मंति गो ब्रह्म छुरी ॥

छं० ॥ ७०२ ॥

कविचन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण दे कर हम्मीर को समझाना)

सुन हमीर इक अलुक। गरुर गाढी मिचाई ॥
तब्ब उलूकह देषि। गरुर जोरा मुसकाई ॥

[१] ए० कृ० को०—संग।

तब अलूक भय भयौ। गरुर अग्गैं कर जोरै॥
मोहि तहां लै जाहु। जहां कोई जीव न तोरै॥
धरि पंष ढंकि साइर गुहा। तहं बिलाव भष्पह भरन॥
सनमंध देह जष्षह परन। मिटै न सो राजन मरन॥
छं०॥ ७०३॥

दूहा॥ पारधि वागुरि सिंघ कौ। दावानल भय मानि॥
ससि मंडल में मृग बसत। ग्रहन राह सोइ आनि॥
छं०॥ ७०४॥

गाथा॥ ईसं सीस मयंकं। सरन रहिय जा भय संने॥
हं इ माल छल राहं। अनचिंतियं आय घेरिय तथ्थं॥
छं०॥ ७०५॥

हम्मीर बचन।

कवित्त॥ केहरि कंदर द्वार। भिल्ल मुगता फल पायौ॥
फिटक जानि पाषान। मूढ अज गल बंधायौ॥
कोइक समै पारषी। मिल्यौ जवहरी विचष्पन॥
मुह मंग्यौं दै मोल। तोल करि आनि ततष्पन॥
अवलोकि तेज पानी सरस। महिपति जरिय किरीट महि॥
इहि रीति चिंति कविचंद कहि। हाहुलि राव हमीर कहि॥
छं०॥ ७०६॥

पुनि षष्षिय हम्मीर। सुनहु देविय वर दाइय॥
मार पिट्ट मोरिंग। अंग सोभा दरसाइय॥
तिन को लै मंदमति। चोटि नंषत करि लघुता॥
मंडल भ्रमी रमत। बढ़िय सो पावत प्रभुता॥
ब्रजनाथ हाथ गहि माथ धरि। मुरली मुष बज्जावही॥
मिलि सकल गोप गोपंगना। मुकता फल सुवधावही॥
छं०॥ ७०७॥

कविचन्द बचन।

बरहि तेल सिंदूर। बहुरि बंधे सिर चंमर॥
आभूषन परिराइ। तंनि ऊपर पाटंबर

चलावंत मुह अग्ग। दुरद नरपति कैं दिट्ठ ॥
झनरि भ्रुंड में घात। धाय बन मंझ अपुट्ठ ॥
अप अप्प उतन सग्गत सदा। मिट्ठौ हाहुलि राव धम ॥
कविचंद कहत पिछताइगौ। मत्ति करै दिसि जवन मन ॥

छं० ॥ ७०८ ॥

हम्मीर बचन।

दूहा ॥ बहुत कहत हम्मीर सुनि। अब कछु रहत रमन्न ॥
थान भिष्ट सोभत नहीं। नर नष केस दसन्न ॥

छं० ॥ ७०९ ॥

कबित ॥ दसन दुरद सों भइय। पहिर बनिता कर चूरिय ॥
सरहि केस सोभइय। राज सिर सभा स पूरिय ॥
केहरि नष सोभइय। कनक मढि कुंअर घलत गर ॥
सूर बीर सोभइय। सिघ सा पुरस परद्धर ॥
हाहुलि कहंत कविचंद सुनि। अन्न जुगति बन बहि घनिय ॥
पहिले न करिय आदर भरनि। मन विचारि संभरि धनिय ॥

छं० ॥ ७१० ॥

कविचन्द बचन।

अरनि मद्धि धसि कूप। परत नर पथिक अड्ड फर ॥
बट बल्ली अवलंबि। नाग अवलोकि चरन तर।
सिर पर सिंधुर आय। सुंड गहि साष हलावत ॥
तुह छत्ता मुह आलि। उड्डि तिहि तन पलटावत ॥
मधु बुंद परत चट्टत अधर। सकल दुष्ष जिय भुल्लइय।
इम विषय सुष्ष कविचंद कहि। किम हमीर मन डुल्लइय ॥

छं० ॥ ७११ ॥

कविचंद और हम्मीर का जालंधरी देवी के स्थान पर जाना।

दूहा ॥ तत्त बत्त जानौ सबै। इम माया इछांमि ॥

चलि जालंधर देहरै । मिलि जालय पुच्छांमि ॥

छं० ॥ ७१२ ॥

नालिकेर फलदल सुफल । कर कपूर तंमोर ॥
उभै सुनर पूजन चलै । दै सब सथ्थ बहोरि ॥

छं० ॥ ७१३ ॥

जालपा के स्थान का वर्णन।

कवित्त ॥ देषि थान जालंध । पच षोडस बारस गुर ॥
करित कोट अछिरन । पंति पंतिनि दिष्पत बर ॥
मनि न्निप उत जंबु नरिंद । चंद बंदी बंदत उर ॥
मनो बडुवा नल लपट । कोटि फुट्टी जालंधर ॥
मनो मोहनी रूप ह्वै अवतरी । कै महिल काहल भांई बंधी ॥
ससि एक कोटि घर ज्यौं जुवह । सो कविराज ओपम सधी ॥

छं० ॥ ७१४ ॥

च्यारि कोट चजरंग । मद्धि जालपा सुथानह ॥
रम छच जरि सुत्ति । संचद्रु ग्गा जंपानह ॥
करिय सनान पवित्र । धोइ धोवत तन मंडिय ॥
सम सुगंध पढि छंद । जाय कुसमंजलि छंडिय ॥
करि धूप दीप नैवेद मिलि । राज अंद्रेस संदेस कहि ॥
बोली न बयन देवि तदिन । अजुत हमीर सुवत्त गहि ॥

छं० ॥ ७१५ ॥

कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना ।

दूहा ॥ कुसुम मंडि मंडलि सिरह । चंदन चर्चित चंदि ॥
सुरभि गंध दिय धूप दिव । जै जालंधर बंदि ।

छं० ॥ ७१६ ॥

अबनी अंबी अंब सुनि। अंबी अब सुबंभ ॥
अंबनि चंद उचार किय। सुतन अनंदिय संभ[1] ॥
छं० ॥ ७१७ ॥

देवी (जालपा) जालंधरी की स्तुति ।

भुजंगी॥ द्रुग्गो हिंदु राजान बंदीन आयं। जपै जाप जालंधरं तूं सहायं
नमस्ते नमस्तेह जालंध रानी। सुरं आसुरं नाग पूजा प्रमानी
छं० ॥ ७१८ ॥

ह्रीं कार रूपं सुआपे विराजी क्लींकार झंकार हंकार साजी॥
ऊंकार रुपं श्रींकार धारी[2]। प्रियं कारनं कारनं सार सारी[3] ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

सिवं संपुटं बीज पनव्व रुपं। स्वहाकार पटकार हंकार ओपं॥
सुरं षोडसं रूप चोदस्सि मानी। चयं जीस[4] ब्रन्नं सुवृन्नं प्रमानी
छं० ॥ ७२० ॥

चयं रुप ब्रंह्मादि संध्या सकत्ती। चयं काल चैलोक चैवेद रत्ती
अद्म्भुत रूपं सुअव्वै समाया। गुनातीत आतीत[5] जालंध राया
छं० ॥ ७२१ ॥

जपै तोहि जापं सुधामं प्रमानी। दियौ अब सिद्धिं सुरिद्धी सुरानी
प्रथीराज चहुआन दीनौ उतारं। तहां दुंद नामी करै अब्बसारं
छं० ॥ ७२२ ॥

कह्यौ तोहि प्रन्नाम[6] मो सिद्धी देवी। प्रकारं सुधारं विवद्धी सुसेवी
अहं मा कसयौ चाहुली पास काजं। तिनं पुच्छमं माव साक्षित रा३
छं० ॥ ७२३ ॥

कहौ कारनं अब साराज अबी। पुहं पंजली छंडि सीसं सुलंबी।
रह्यौ आप थहौ दुअं पानि मंडी। अगं कारनं जानि बोली न चंडी।
छं० ॥ ७२४ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सिंभ। (२) ए० कृ० को० साजी।
(३) ए. कृ. को —राजी। (४) ए.—त्रयं जीमं।
(५) मो.—आनीत। (६) ए. कृ. को.—प्रमान।

हम्मीर का देवी से निवेदन करना।

कवित्त ॥ कहि हमीर सुनि देवि। तत्त वादी कवि आया ॥
कौ को हिंदू को तुरुक। कोंन रंक सु को राया ॥
को रविंद को जिंद। कोन तापस को छाया ॥
को साहब को राज। कवन सुकवि कह गाया ॥
इह परम हंस संसार हित। तूं माया तूं मोह मत ॥
जानों न बाम दच्छिन करन। हौं सांई संसार रत ॥

छं० ॥ ७२५ ॥

कविचन्द का देवी के मंदिर में बन्द हो जाना और हम्मीर का शाह की सहायता के लिये जाना।

इह परत्तर दीह। चंद जान्यौ षहुआनं ॥
जिन भुजानि धर भार। भोमतीय अधरं भानं (१) ॥
हसम हय गाय देस। दीह घट्टै बल घट्टै ॥
धन्न मरन तिन जानि। महल सिर सारे पट्टै ॥
आवृत्त बात जोगिनि पुरह। भव भवस्य इह न्त्रिमयौ ॥
कविचंद रुक्कि बंच्यौ जियन। ग्रिह गोरी हाहुलि गयौ ॥

छं० ॥ ७२६ ॥

उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त चहुआन न्त्रिप। धरिय धीर मन पान ॥
हौं अभंग अनभंग बर। हौं भंजन सुलतान ॥

छं० ॥ ७२७ ॥

कुंडलिया ॥ रोकि कविंदहि अप्प मिलि। सो सुरतान अबुज्झ ॥
सुनत राज प्रथिराज कौ। हवि लागी उर मज्झ ॥
हवि लागी उर मज्झ। संझ आई गुर गल्हां ॥
भइ बसीठह रोकि। अप्प है वै दिसि हल्लां ॥
दस हजार हैवरनि। सहस एषट्ट्स अस वृंदा ॥

(१) ए० कृ० को—भोमति अंबरभन।

मिल्यौ आइ सुलितान । रोकि देवल कविंदा ॥

छं० ॥ ७२८ ॥

चामंडराय का कहना कि सब लोग चार चार तलवारें बाँधें, जो जिसमें जा मिला सो जानदो।

दूहा ॥ चवै राइ चामंड इम । अहो राज प्रथिराज ॥
च्यारि च्यारि तरवारि भरि । भर बंधै सब आज ॥

छं० ॥ ७२९ ॥

मरन तुच्छ मारन बहुल । हम उन अंतर एह ।
एक सु पक्की निजर की । अरि कर कच्ची देह ॥

छं० ॥ ७३० ॥

कवित्त । सुनिय राज इह रीति । वीर संसार मपन्नौ ॥
अवर रत्त संकुचित । गुनज मुक्कित अपन्नौ[1] ॥
सहन अगर[2] तन मंग[3] । मनह छचिय छल लग्गा ॥
क्रोधतश्रम्म मथिवचन । लोभ लग्गा सह अग्गा ॥
सज्जिता सुनीर वित्तें सरद । अब्ब सुप्प दंपति भिली ॥
आसौज बीज संसार कर । रंज रंजि राजन मिली ॥

छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावस पुंडीर को हम्मीर को रोकने के लिये बीड़ा देना।

बोल्लि राज प्रथिराज । पान अप्पै से पानं ॥
तूं धीरं जा धीर । भीर भंजन सुरतानं ॥
है हमीर आधीर । साइ द्रोही सिर बंधी ॥
लाज वडप्पन घाइ । सिंधु हम्मीर जु संधी ॥
सामंत सूर सगपन सरै । सुतेग बेग बंधै न कोइ ॥
पुंडीर राइ पावस्स सुनि । बंधि तेग रावत्त सोइ ॥

छं० ॥ ७३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—अवसर नहां सकुचि गुन जनुकंत अपन्नो ।
(२) ए० कृ० को०—अंगार । (३) मो०—अंग ।

पावसपुंडीर का बीड़ा लेकर तैयार होना।

पानि सामिल्लिय हथ्थ। बंदि सुरमरि चढ़ि आइय॥
बीर द्रगनि झलकंत। काच करवत जलझाइय॥
सुबर राज प्रथिराज। सजिय बर अप्प तुरंगम॥
नृप सनाह पावस नरिंद। हरचंद अभंगम॥
दल मलन अरि आवृत्त बर। बंधन हाहुलि राव भर॥
रनधीर धीर तन तन दलन। पुहप भ्रमभ पावस सहर॥

छं० ॥ ७३३ ॥

चौपाई॥ मनो नागपति कन्ह जगायौ। कै प्रलै काल चैनेच लगायौ॥
कै हर हरन त्रिपुर सुरधायौ(१)। कै छिति हरन हरनाकुंस सायौ॥

छं० ॥ ७३४ ॥

जामराय यादव का मुसलमानी सेना के निकास का रास्ता बांधना और पावस का सीधी पसर करना।

कवित्त॥ तब पावस पुंडीर। बोलि राजन जमजद्दौं॥
कै कोसन सुलतान। कोस कै प्रब्बत बंदौं॥
बोलि राव रंघरी। निरत कीनी कीहानी॥
पंच पान परबत्त। सत्तपानं सुलितानी॥
जंगली ग्राम सामंत सह। सेम बढी वाढी वलह॥
हम रुप्प जाहि मीरां दिसी। चढि पावस पावस कलह॥

छं० ॥ ७३५ ॥

तब पावस रा पुंडीर। सज्जि सन्नाह संपन्नौ॥
तीन सहस पुंडीर। बंध अग्गै रस भिन्नौ॥
अप्प अप्प चिंतयौ। होय अग्गी जन मानं।
लच्छि सु लूटन काज। रंक धावै धन धानं॥
लियै रावत्त कित्तिय कला। है गहि मोह माया तजे॥
दुति भग्ग भ्रम्म सामंत दुति। धीर धवल कंधह मजे॥

छं० ॥ ७३६ ॥

(१) मो०—कै हरन हर त्रिपुरारि सुधायौ।

पावस पुंडीर की पसर का रोस और कांगुरे को तिरछा देकर सीधी राह जाना।

दूहा ॥ पावस षढि पावस अगमि। घन छची छिति रूप ॥
गावहि नीर हमीर घर। सुकि जवास उर भूप ॥

छं० ॥ ७३७ ॥

षढि पावस पावस रवनि। गजि दल बदल निसान ॥
धनि षग पंति[1] सनाह तुअ। मनु वद्दल विज्जुल भान ॥

छं० ॥ ७३८ ॥

पावस पावस मेघ सम। कै सम मुरति[2] प्रमान ॥
चित्त सुमन पुंडीर परि। बाजि गुड़िग्ग निसान ॥

छं० ॥ ७३९ ॥

कवित्त ॥ सह सेना चालीस। मधय सत पंच तुरंगम ॥
टारि सूर सामंत। वज्र करिवार वज्र सम ॥
सस्च तेज जम जुत्त। जुद्ध आकूत अभंगम ॥
पुच्छि भ्रम्म सा ध्रम्म। क्रम्म बंधीन बंध भ्रम ॥
कंगुरौ तिरच्छौ मुक्कि कै। बर अग्गें को धाइया ॥
तिन ठाम चूक चिंत्यौ हतौ। मिलन सरोसन पाइया ॥

छं० ॥ ७४० ॥

हम्मीर की और पावस पुंडीर की आगे पीछे छुआ छाई होते जाना।

यों छेटी भंजीय। मुद्ध भंजै नर धायौ ॥
चच्छया अवा भज्जंत। गहर आगें नन जायौ ॥
ज्यों अरथ न छिपै कविंद्र। मोह नन जाय ग्याम अग ॥
मुनि न जाय गम भावि। रूप नन जाइ दिष्ट अग ॥

(१) ए० कृ० को०—पंति।

(२) मो०—गुरति।

वन जाइ म्रिग्ग म्रगपति सुअग । आष जाइ नन गुरव अगि ॥
नन सकै जाय हम्मीर तिम । इम हक्यौ पावस सुलगि ॥
छं० ॥ ७४१ ॥

पावस पुंडीर का नदी का घाट जा बांधना ।

प्रात गयौ हम्मीर । सांझ पुंडीर सपत्तौ ॥
रंच नाव थकि गयौ । अजहु पत्तयो जिवत्तो ॥
पंथ वान पुच्छयौ । वत्ती पावस धर जित्तौ ॥
रा हमीर उत्तरयौ । राव वीरत्त विरत्तौ ॥
आड़ौ उलगि पारेव वजि । धार धार सों उत्तरी ॥
लोहां सुलहरि तप छंडि वपु । दिसि कंगुर संमुह भिरी ॥
छं० ॥ ७४२ ॥

तेंही बार सलित्त । नीर लग्गौ दो कंठ छलि ॥
ज्यौं वह्लैल तिय मिलत । पाप छल्लै सुभस्स कलि ॥
ज्यों समंद सित पष प्रमान । कित्ति फल करै सलिता ॥
सिह पालंक छिप ईस । फूल पल्लै सुप हलता ॥
यों परस जीव दावह सुद्दत । वज्र कोट तारन सगुर ॥
दुअ सेन संझि सलिता परिय । सो ओपम जंपी मुवर ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

वज्र वाय दिष्षियै । सूर दिष्षियै नीर सुर ॥
ज्यों मृनाल दिष्षिये । कमल दिष्षियै उपर धर ॥
प्रबल बाल सैसव समूह । मझिम्भ जोवन चिन्ह न छपि ॥
उदत उदै ज्यौं भान । किरन रत्तौ सुमंत पिपि ॥
द्रिग लपै क्रोध हिय मझ्झातें । अंजुलि में जग्ग दिष्षियै ॥
सुर सहस मझ्झ्झ वड्डेति पट । सत वज्र दहाई अष्षियै ॥
छं० ॥ ७४४ ॥

हम्मीर की सेना के नदी पार करते समय पुंडीर सेना का हमला करना । दोनों की लड़ाई ।

गज्जिय राव हम्मीर । वीर उकगति विषम घट ।

(१) मो० प्र० में—[illegible]

दुहु जोजन संभवति। रोकि पुंडीर सते[1] यट ॥
कलपंतर फिरि रोकि। बार उतरि हथ्थि पारं ॥
मार मार उच्चार। दौर घट्टति पछिवारं ॥
पुंडीर धीर नंदन नवल। दिसि हमीर असिवर कढ़िग ॥
उच्चरिय वेन पछिवान अरि। बीर बल्लिय संमुह चढ़िग ॥
छं० ॥ ७४५ ॥

दा पावस पुंडीर। बोल्लि पंगा[2] रस पुंछी ॥
वे वरह लिपि धीर। बीर बीरा रस कंछी ॥
वांक वंक रस पंक। बीर पुत्त रस जुट्टी ॥
दोउं बल धुनि प्रान। कंक छित क्रंस अवट्टे ॥
विब्भाय भाय पंजर कढ़िग। बढ़िग बीर बल्ली सुभर ॥
मद मोप जानि छुट्टे जुरन[3]। बजिग लोह मह स्वर धर ॥
छं० ॥ ७४६ ॥

हं धीरं जा धीर। सस्र छुट्टे पुंडीरं ॥
पावस पावस राव। धार उज्जल झरि वीरं ॥
षग्गानी झिल्लोर। सार वुट्टे तिन गानी ॥
मनो बीजली बाल[4]। सध्थ उस्सासैं पानी ॥
घरी एक जुड आवृत्त करि। जुड्डानी गंजागि लगि ॥
हम्मीर राव पावस पुरिस[5]। बरिषा विय आवृत्त जगि ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

दूहा। जंबू हाहुलि राव सो। जज्जर बज्जि सनाह ॥
भिरि संमुह पुंडीर बजि। बन जज्जर अगि दाह ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

---

(१) ए. क. को.—सर्वे।
(२) ए. कृ. को.—पंधार।
(३) ए० कृ० को०—लरन
(४) ए०—वाज
(५) ए० कृ० को०—सरिस।

इस लड़ाई में पांच पुंडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना । हम्मीर का भाग जाना ।

कवित्त ॥ निकरि बीर जल छंडि । रुद्धि जंबू पति अग्गा ॥
भग्गा वर हम्मीर । पुन फिय फेरि विलग्गा ॥
पंच सहस पुंडीर । जुद्ध कीनौ अधिकारी ॥
हो हम्मीर नरिंद । पेत बोल्यौ हक्कारी ॥
पुंडीर राव पावस पहर । झर उझ्झार लग्यौ गयन ॥
कट्टैति लोह परियार तें । तुनहु छूर छूटन वृनन ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

बीर रूप उन्नयन । सस्त्र विज्जल कट्टी वर ॥
सय पावस पावस प्रमान । गज्जि घन बात रससगिर ॥
क्रोध पवन तट ईंट । टाढ़ कंपे कर करिवर ॥
सागर सलित सुसस्त्र । रुधिर जल वहै सारस्फर ॥
सुष हुए छूर संजोगिनी । बीर वियोग कारंन कथ ॥
वैठेति चिंत पावस रियह । संजोगिनि नरपत्ति हय ॥
छं० ॥ ७५० ॥

दूहा ॥ उभै पृत रन परिग वर । वर बंधे गिरि पुत्त ॥
रास चढ़ि फिरि बज्जि बर । उतरि सलित्त सुरत्ति ॥
छं० ॥ ७५१ ॥

पुंडीरा भग्गा भिरै । गहन हरं जुध भीर ॥
विपस तज आवृत्त नर । धनि धीरजा धीर ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कवित्त ॥ सो पुंडीर वर जुद्ध । भिरे तुट्टे सा रानौं ।
तीर छुटै जा तीर । तहां हम्मीर छुटानौ ॥
करवि मिलं सो वीर । तुटि संहे वर तोरं ॥
मनु वृछय भार सो भज्जि । रहै तुटि अनत भीरं ॥
उरसं सरीर तुट्टे पगां । तार जिह वल्लं मुभिर ॥
निपरत सिर मिटि नाद रव । चल हम्मीर सुनि धन हर ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

उभै बंध हम्मीर। पेत बंध रघुबंसी ॥
पंच वीर पुंडीर। सुगति लद्धी रन गंसी ॥
ज्यों वारुनि सुक्रि धाइ। लग्गी पानी वर भग्गा ॥
गहवि बाग पुंडीर। नीठ फेरे वर अग्गा ॥
यों लहरि लोह वाजी विषम। रा पुंडीर भारथ्थ जित ॥
हम्मीर भंजि हम्मीर पें। चढि तुरंग गोरी सुगत ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

दूहा ॥ असी सत्त ग्रह गगन वर। परे झुहिं[1] पुंडीर ॥
सामि दोह नट्ठो गयौ। मिले राज रनभीर ॥
छं० ॥ ७५५ ॥

चरन लागि सो राज कौं। जै वीरां गिर युत्त ॥
सकल सूर धनि धनि कहैं। जिति हाहुलि राघुत्त ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

पावस पुंडीर के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडीर योद्धाओं को चौतेगी होने का हुक्म देना।

बद्धाइय बाजी घरह। ढिल्ली वै वर थान ॥
हम्मीरह भञ्ज भरह। जित पुंडीर प्रमान ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

राजन अप्पन उचित करि। दिय सिर पाव सुच्यारि।
हुकम बेग बंधन कियौ। च्यारि च्यारि तरवारि ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

पुंडरि वंश की सजनई का ओज और शाह का समाचार पाना।

कवित्त ॥ च्यारि च्यारि तरवारि। बंधि पुंडीर सहस चिय ॥
बज्र काल बज्र बदन। बज्र झल्लै सुबरन निय ॥

(१) ए० कृ० को०–झुंडि।

यों पन ब धन हमीर। छंडि पष्षर सनाह अग ॥
वीर सर साधिक्क। पंच वीरह पावस सग ॥
भै द्रुग्ग वीर लिधि लज्ज जग। दुसह साहि अड्डौ सुचलि ॥
अगि लग्गि धीर पंडीन ज्यों। सजत सथ्थ उत्तरह षुलि ॥
छं० । ७५९ ॥

इह सुनि बत सुलितानं। चर[1] धाय साहि पें पत्त ॥
कहिय चरित पावस सरिस। साहिब धीर नमत्त[2] ॥
छं० ॥ ७६० ॥

हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुंच कर नजर देना।

कुंडलिया ॥ चमर पमर[3] म्रग मद मधुर। बाजी कष्ट कंठीर ॥
मिल्यौ जाइ गोरी धरा। हाहुलि राव हमीर ॥
हाहुलि राव हमीर। स्रांम[4] द्रोही घर लग्गी ॥
सील साच[5] तप तेज। ध्रम्म धुर धारनि भग्गी ॥
गौ विप्रह पष छंडि। घोर प्रव्रत पति पामर ॥
मिल्यौ जाय सुरतान। मधुर मृग मद लै चामर ॥
छं० ॥ ७६१ ॥

दूहा ॥ च्यांरि च्यारि तरवारि भर। भर बंधै चर धाय ॥
इह चरित्त चहुआन दल। कह्यौ साहि सों जाय ॥
छं० ॥ ७६२ ॥

शाह का कहना कि पक्की पकड़ी हुई एक तलवार चार को मात करेगी।

तबै हाय दज्जी सुबर। धुनि पुच्छी सिसुताइ[6] ॥
झुभझ्भा परट्ट्यौ हिंदुदल। रहैं निदान कि जाइ ॥
छं० । ७६३ ॥

---

(१) [illegible]—डर।
(२) [illegible]—साहि [illegible]।
(३) [illegible]—[illegible]।
(४) [illegible]—[illegible]।
(५) [illegible]—[illegible]।
(६) [illegible]—[illegible]।

बाल वृद्ध जुव्वन कहिय। वे सत्ते सत्ताय ॥
तेग एक पक्की ग्रहै। चौ कच्ची सग्गाय ॥

छं० ॥ ७६४ ॥

करि निवाज सुरतान कहि। कित्तिय वुद्धि दिलीस ॥
गहिव साहि कंधै हनो। अब जित्तों इनि[1] रीस ॥

छं० ॥ ७६५ ॥

शाह का काजी से भविष्य पूछना।

कुंडलिया ॥ इह गंदी मट्टी मुरद। तुम मरदों मरदानि ॥
तुम अब्बी सब्बी हरन। मैं फकीर सुलतान ॥
मैं फकीर सुलतान। आप कहि पुच्छिय काजी ॥
भिस्ति भाप जो कहो। होइ हाजी कै गाजी ॥
जो उमेद जिय होइ। राज दोइ अलह बंदी ॥
कोइ गुमान जिन करो। कहै काया इह गंदी ॥

छं० ॥ ७६६ ॥

पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था।

दूहा ॥ सज्यो सेन सोहन ससंद। जंगल वै चहुआन ॥
घर अंगन संगन लगिग। सुनत सूर अकुलान ॥

छं० ॥ ७६७ ॥

सबें सेन सत्तरि सहस। घटि वढि अन्नत बार ॥
जे भर भीरह मुह सधै[2]। ते बत्तीस हजार ॥

छं० ॥ ७६८ ॥

सहहि भीर न्रप पीर जिम। लज्जा धर भर भार ॥
धरनि धरनि तिन वर गनत। ते मर[3] बीस हजार ॥

छं० ॥ ७६९ ॥

वीस हजारन मद्धि दस। जे अग्या वर स्याम ॥
कर वज्जह वज्जी सहैं। ते पहु पंचह ठांम ॥

छं० ॥ ७७० ॥

(१) ए० कृ० को०—इहि।
(२) ए० कृ० को०—सजै।
(३) ए०—नर।

तिन महि कवि गनि पंच सें । साप भाप दृढ़ काज ॥
देव गत्ति दैवान सों । तिन महि पहु प्रथिराज ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ बढ़ी सेन न्त्रिप राज । बंधि पुंडीर तेग चव ।
धीर बोल वर पुब्ब । दाय चहुआनह हथ्थव ॥
सुरहर चप सुलितान । बंधि अप्पौ परिमानं ॥
दई दुवाह पावस नरिंद । गहन उच्चरि सुविहानं ॥
करतार हथ्थ केतिक कला । नर अवरें जंपै वयन ॥
संबूह बार भावी सगति । पग्ग काम लग्गै गयन ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ देपि सेन वर साहि पें । लै चरित्त चहुआन ॥
च्यारि च्यारि तरवारि वर । सह बंधी सुविहान ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

पावस आगम धर अगम । दल साजे दोउ दीन ॥
अंबर छायौ अभ्भरन । छिति छाइय छचीन ॥
छं० ॥ ७७४ ॥

उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना ।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुलतान । वत्त कहि षां षुरसानह ॥
षां ततार रुस्तमा । छुट्टौ तुम साह मुसाफह ॥
में आलम आलंम । सकल हिंदू रा उप्पर ॥
जिहि ग्रहि हंड्यौ नार । देर सो आप अप्प कर ।
तिहि ग्रहन देत हंडा सुमन । साह झूठ करतार कर ।
भग्गहु अभग्ग मन संग्रहै । धरहु लाज निज कुलन सर ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

सरदारों के शाह प्रति वचन।

बोलि षान षुरसान। षान रुस्तम षां ताजी॥
षां ततार षीरोज। षान असमान बिराजी॥
षां नूरी हुज्जाब। षान षाना षुरसानी॥
हबस षान हबसी हुरेब। षान सुविहान बयानी॥
सुविहान षान षुरसान पति। बीरम स्तूरति रत्ति करि॥
इहि बेर सरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन लरि॥
छं० ॥ ७७६॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का कसम खाना।

षां ततार रुस्तम। साहि अग्गें करि जोरैं॥
आन साहि सुविहान। हिंदु दरिया ढंढोरैं॥
गहि मुसाक गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ बर॥
हों ग्रहयौ उन बेर बेर। छुट्टेव डंड भर॥
बर बंटि फौज दिष्षौ निजरि। सिंधु उतरि सुविहान बर॥
सत पंच सूर सोलषि घटी। बंधी बीर द्रोनति सुधर॥
छं० ॥ ७७७॥

पुनि षुरसान ततार। षान रुस्तम कर जोरहि॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन विछोरही॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज बे काज। जाय गोरी गुमानहि॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न चाल बंधे भिरहि॥
दै मथ्थ हथ्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि॥
छं० ॥७७८॥

शहाबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सजिय सन्नाह सदिष्षिय॥
अद्द सेन किय अच्छ। वज्र सस्त्रं भिल अष्षिय॥

तिन में पंच तिलष्य। वज्र झिल्लै कर बज्जी ॥
एक लष्य दस भाग। फेरि दीयं न सुसज्जी ॥
तिन मझ्झ एक सहसं सुभ्रित। अड पंच प्रपंचनि अधिक ॥
तिन में सब सत समुद्र बर। पुन जेही गुन गुन सधिक॥
छं० ॥ ७७७ ॥

दूहा ॥ सजी सेन गोरी सुबर। सिंधु उतरि सुविहान ॥
राति सब्ब बर तिन सयन। आन षान षुरसान॥
छं० ॥ ७७८ ॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ समन कमन सो नदी। मीर महमुंद रोहिल्लौ ॥
नव सुकोरि भुअ दंड। एक इक लहै इकल्लौ ॥
कितीक गड्ड ढिल्लरी। कौन मंडल इह वारह ॥
कितेक सूर सामंत। कौन हस सस झुझ्झारह ॥
साहाब दीन सुरतान सुनि। प्रगट एह परं तंग बहि ॥
दो जिग्ग मग्गहस संचरहि। जौन देंइ चहुआन गहि ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना।

सजल पूर रतनंज। चरन साहाब सुमुक्किय ॥
पा कमाल गष्परिय। निरति सेना रसु लष्पिय ॥
परि प्रतीत सत्तन मयन। देस नद नव बल तोलन ॥
अथ जुवार' परवर दिगार। जुम्मीं जुर बोलन।
दिव निसा देषि हित चित्त दल। कलन लोह कुंजर हयन ॥
बचन भेष' लष्पन पिषन। करि कम्मार अम्मार बयन ॥
छं० । ७८० ॥

तम जित्तै जित बहल्लिय। राज गाजन ग्रह गुहर।
हमस हांम सामंत। संत पूरन भर सुभर।

(१) [illegible] —[illegible]। [illegible] —[illegible]।
(२) [illegible] —[illegible]।

सरदारों के शाह प्रति बचन।

बोलि पान पुरसान। पान रुस्तम पां ताजी ॥
पां ततार पीरोज। पान असमान बिराजी ॥
पां नूरी हुज्जाव। पान पाना पुरसानी ॥
हवस पान हवसी हुरेव। पान सुविहान बषानी ॥
सुविहान पान पुरसान पति। बीरम सूरति रत्ति करि ॥
इहि वेर मरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन लरि ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का कसम खाना।

पां ततार रुस्तम। साहि अग्गें करि जोरै ॥
आन साहि सुविहान। हिंदु दरिया ढंढोरैं ॥
गहि मुसाफ गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ वर ॥
हों ग्रहयौ उन वेर वेर। छुट्टेव डंड भर ॥
वर बंटि फौज दिष्षौ निजरि। सिंधु उतरि सुविहान वर ॥
सत पंच सूर सोलपि घटी। बंधी वीर द्रोनति सुधर ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

पुनि ष,रसान ततार। पान रुस्तम कर जोरहि ॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन बिछोरही ॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि ॥
पंच निवोज बे काज। जाय गोरी गुमानहि ॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न चाल बंधे भिरहि ॥
दै मथ्थ हथ्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि ॥
छं० ॥७७८॥

शहाबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सजिय सन्नाह सदिष्षिय ॥
अद्द सेन किय अच्छ। वज्र सस्त्रं झिल अष्पिय ॥

तिन में पंच तिलष्ष। वज्र भिल्लै दार बज्जी ॥
एक लष्ष दस भाग। फेरि दीयं न सुसज्जी ॥
तिन मभ्भ एक सहसं सुभ्रित। अड पंच प्रपंचलि अधिक ॥
तिन में सब सत समुद्र बर। पुन जेही गुन गुन सधिक ॥
छं० ॥ ७७७ ॥

दूहा ॥ सजी सेन गोरी सुबर। सिंधु उतरि सुविहान ॥
राति सब्ब वर तिन सयन। आन षान षुरसान ॥
छं० ॥ ७७८ ॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ समन कमन सो नदी। मीर महमुंद रोहिल्लौ ॥
नव सुकोरि सुभ्र दंड। एक इक लहै इकल्लौ ॥
कितीक गढ्ढ ढिल्लरी। कोन मंडल इह बारह ॥
कितेक स्त्तर सामंत। कोन हम सम भ्भुभ्भारह ॥
साहाब दीन सुरतान सुनि। प्रगट एह परं तंग बहि ॥
दो जिग्ग मग्गहम संचरहि। जौन देंइ चहुआन गहि ॥
छं० ॥ ७७९ ॥

शाह का चिनाव के उस पार तक आ जाना।

सजल पूर सतनंज। चरन साहाब सुमुक्किय ॥
पां कमाल गप्परिय। निरति सेना रसु लष्पिय ॥
परि प्रतीत सत्तन सयन। देस नव नव बल तोलन ॥
अथ जुवार[1] परवर दिगार। जुम्मी[2] जुर बोलन।
दिव निसा देषि हित चित्त दल। कलन लोह कुंजर हयन ॥
बचन भेष[3] लष्पन पिषन। करि कग्गर अग्गर बयन ॥
छं० ॥ ७८० ॥

तम जित्तै जित बच्चलिय। राज राजन ग्रह गुद्दर ॥
हमस हांम सामंत। मंत पूरन भर सुब्भर ॥

(१) ए० कृ० को०—जुआर। (२) मो०—जम्मी।
(३) ए० कृ० को०—भाप।

राज मिलन सुलतान। लिपि सुकग्गर फुरमानं ॥
हवि वचन्न असमान। असंप गज्जिय सुरतानं¹ ॥
सम सिफति सील उत्तर तरह। दिसि दुस्तर संग्राम रन ॥
सम विषम वत्त पारसि कुसल। स्वामि वचन हिंदू मथन ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना।

बचनिका ॥ बंधानी कौ लाजरी। कागर बंधी हेमांजरी ॥
मसि रुहीई मद्दे। काजी कतेव सद्दे ॥
मुल्लांन उचार उच्चै। बंचन राजा श्रोतान सच्चै ॥
राजा प्रथिराज आगें। सामंत सूर संचार लागे ॥
इन विधि सरजन हार जोरे। सुरतान जल्लाल दीन लोरे।
इनि विधि हिंदू मुसलमान मुहानी। वयन नीरां रा जंजे सुरतानी
छं० ॥ ७८२ ॥

शहाबुद्दीन के पत्र का आशय।

भुजंगी॥ बने भिस्ति बेषा षमे षान मंडौ। सजे षंभ थंभं नए रंड डंडौ॥
इला स्रस्च रत्ती न केली मुहावं। जमी जोर मनै न ओरं किसावं॥
छं० ॥ ७८३ ॥

हमं तुम्म एकं दुरं देव दाने। समं सिंध लोरै नहीं एक बाने॥
विनै देव ध्रम्मं कुरानं पुरानं। न जानं सुने है कि आने सुमानं॥
छं० ॥ ७८४ ॥

उभै रीति उत्तंग दुत्तंग देही। छिनं भंग भंजे सुकामंध केही॥
मिलौ आदि मीरा सुभीरा भिरंदे। बिबी गरह मरद्दै सुसद्दै सिरंदे॥
छं० ॥ ७८५ ॥

प्रियं प्रीति पैगंबरं साहि सज्जौ। सुत्रं जोर बंध्यौ सुलितान मझ्झौ॥
मिले हाहुली हेत हिंदू हमीरं। जनं जोर ठट्टै गुमानं गँभीरं॥
छं० ॥ ७८६ ॥

कियौ साहि सिष्टा सआपै आपनं। छलं छच हिंदू सिरं दीन मानं॥

---

(१) मो०—पुरसांन

मिलौ साहि साहाव सोहैत वंधी । दहै देस छत्नंज पंजाव अद्दी ॥
छं० ॥ ७८७ ॥

बरं पग्ग पुरसान सों मंडि छंडों । सुतं रेन उद्देव सो सेव मंडौ ॥
इला जुद्ध कीने कहा लाभ पंडौ । नियं नेहनी जोतिसों सेव षंडौ ॥
छं० ॥ ७८८ ॥

सदो जोर हिंदू नथे सुसलमानं । जुराजोध दुर्ज्जोंध संसार आनं ॥
उवं ज्जाव देहं सुमामंत राजे । तटं चन्द्र चिन्हाव सुरतान बाजे ॥
छं० ॥ ७८९ ॥

बरं बोल चामंड रायं सुनंदे । चितं चेत चिंता सुदेहो भरंदे ॥
छं० ॥ ७९० ॥

शाही दूत के प्रति चामंडराय के बचन ।

कवित्त ॥ सुने सद्द चामंड राइ । सुरतान बसीठं ॥
अप्रमान बोलहु बयंन । राजन सों ढीठं ॥
तुम जानहु सामंत । संत जेहा अभ्यासै ॥
साहंडै पट्टनै । पंत पानी पथ ग्रासै ॥
बोला न बोल कित्ती बढ़ै । हेला हंकि हमीर सुनि ॥
जालिम्म जोर मै सेछ धर । सार बहंटै धार धुनि ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

पुहुवि नरेसर सबल राइ । है वै हठ जित्तौ ॥
काटि सुभट थट विकट । कलह घघ्घर में वित्यौ ॥
गंजि गोरि रुम्मी तुरक्क । मरिया षत्ताई ॥
वंधे साहिव दीन । लियौ अजमेर चढाई ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । कपिसुलिङ्ग कुंदो कनै ॥
दस सहस लद्द ते डंड में । अजहुँ सुथक्कै गज्जनै ॥
छं० ॥ ७९२ ॥

सिंघ स्यार परधान । बंध कीनों इक जंतह ॥
मिल्यौ न भष्य दिन एक । स्याल आन्यौ पर मत्तह ॥
सिंघ फाल चुक्कयौ । गयौ पर जीवत थानं ॥

फुनि आन्यौ समझाइ। हन्यौ केहरि वलवानं ॥
विश्राम सिंघ हिरदै सुक्रंन। भष्पि गिदर जब मुच्छयौ ॥
नहि क्रन रिदै इहि सिंघ सुनि। द्रेपि गत्त पच्छौ अयौ ॥

छं० ॥ ७९३ ॥

दूहा ॥ रहि विधि तुम पति साह की। कहौ सुवंचा घ्यान ॥
निलज मेछ लज्जै नहीं। हम हिंदू लजवान ॥

छं० ॥ ७९४ ॥

दंत दरिद्री द्विपद रज। एपरि निपट घटंत ॥
सिंघ सिंचानौ सापुरिस। ए परि परि सुजठंत ॥

छं० ॥ ७९५ ॥

जद्दव जुवान और वलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजो।

बर जंपै जद्दू जुआन। वलिभद्र सुध्रम्मं ॥
हम सुलतान सुक्रम्म। सेव कीनी वहु म्रम्मं ॥
तुम ओछानी तक्कि। बक्कि हाहुलि हम्मीरं ॥
थट्टा बंभन बास। घास उतरे गंभीरं ॥
हम तुम्म तेक में सीस धरि। बीच करीम कुरान कौ ॥
बंचौ जु सौंह सांद्रोह दर। लभ्भौ लभ्भ पुरान कौ ॥

छं० ॥ ७९६ ॥

मुसलमांन दै हथ्थ। हाम हम्मीर मुहाई।
राज कुमारह रेन। सेव संचार दुहाई ॥
तुम मांगैं पंजाब। अद्ध पहु ग्राम न सुक्कै ॥
दोइ मित्तह उद्दोत। परी जम्मौ जित सुक्कै ॥
हम लभ्भनि तुम्म लराइयां। नर भराहिं सिंघह समर ॥
गुफ अभै स्थानि संचरि रहै। सुभ सियार चष्पहि अमर ॥

छं० ॥ ७९७ ॥

मभ्भझह रावल समर। सिंह सिंह त्तन पुच्छिय ॥
जे मंता मंतेह। हवै लड्डूं दुअ लच्छिय ॥

(१) ए० कृ० को०—यह। (२) मो०—दुअ।

जौ जीवंदे जित्त। मुत्ति तो सरग समानी॥
ना दिष्यौ प्रथिराज। मुरै मुग्गल चहुआनी॥
अवृत घत्त सतां लहौ। पर कज्जां सज्जां समर॥
तत्तग्राहत त्तव पराइयां। अपे देव दानव अमर॥

छं० ॥ ७९८ ॥

शाह के यहां से आने वाले सरदारों के नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना।

षा पट्टीय वसीठ। सथ्थ सुरतान कहंदे॥
तुम सारा है भुज्ज। डंड भरि जीव रहंदे॥
के भूले उपगार। कन्ह उपगार सुझ्झझ्झा॥
होहि न वड्डा बोल। चढ़े चंपौ अन वुझ्झ्झा॥
दिय दूत हथ्थ कागर दुजर। अगर पंच मन साहि दिसि॥
सोनी सुजान नीसथ्थ कथ। कहन बोल वर बीस बिसी॥

छं० ॥ ७९९ ॥

सा बट्टू की थली। पंच तेरह करि मंडिय॥
लष्पां छप्पिय च्यारि। षाम कागर करि छंडिय॥
षान षान ततार। षान रुस्तम षां हाजिय॥
षां पीरोज कुसाव। हिंदु तुरकी पढि काजिय॥
दीहांइ पंच पंथे वह्यां। दल सुरतानति संमुहा॥
पंजाब मड्डि टिल्ला पहर। मिलि मधयानति विम्मुहा॥

छं० ॥ ८०० ॥

कहि सोनी पतिसाहि। दुष्ट होइ कैसट भंगिय॥
या लज्जो[1] सुरतान। सिंधु कह कज्ज उलंघिय॥
पैगंवर दै बीच। मिटै वालां बर संधिय॥
एक वेर दूबेर[2]। बेर बेरह इन बंधिय॥
सौ न होइ पहिलोन हल। मुष देषावन देषिया।

(१) मो०—लज्जीवा। (२) ए० कृ० को—एक वार दुरवास।

क्रित हित्त चित्त मलै[1] नहीं। कहै वढ़ै गुर सिप्पियां ॥

छं० ॥ ८०१ ॥

सतलज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना।

त्रिपथ पंथ पव्वा पहार। गट्ठी दिसि वामह ॥
जेलं लंगर ग्राव। विहथ वंधी जथ नावह ॥
साहि तक्कि ताजिय चढंत। सुनाम सुन्नारह ॥
दैकागर दूतान। कियौ सोनार सलामह ॥
औ बंचि अप्प कुध्याहिया। न किहु किय करतार कर ॥
बच अद्ध कढ्ढि पिज्जिय पलां। बंभि याहि चंपौ सुधर ॥

छं० ॥ ८०२ ॥

तब बोलै साहाब। प्रति पट्टग चहुआनह ॥
सो आयौ सानंमि। पान जोरे रव्वानह ॥
बुझ्झै गोरी नरिंद। सयल जंगलपति जानह ॥
तब बोल्यौ कम्माल। सुनो बत्तां सभ्भासह ॥
सामंत सूर सब जोर बर। बिन बैरी चामंड किय ॥
श्रित ध्रम्म स्वामि रत्ते रहसि। तिन वर सज्जै तांम जिय ॥

छं० ॥ ८०३ ॥

चहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त गोरी गरुअ। तनमन कंप्यौ तास ॥
चल्यौ मंद गति मन विकल। ज्यों ग्रेह नउढा काम ॥

छं० ॥ ८०४ ॥

अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है।

कवित्त ॥ विहथ कंठ साहाब दीन। सुरतान संपत्तह ॥

(१) ए० कृ० को०-मिट्ट।

दल बद्दल दरिया हिलोर। उप्परि कलि अंतह ॥
समय ताम दुअ दूत। आय अति हित्त मत्त वर ॥
सोलष्षे सुरतान। बोलि बुज्झै सुवच्चचर ॥
नमि कहै गज्जअ गोरी सुनौ। चाहुआन वर जोर जुति।
मिलि आय सुभर सामंत सब। प्रोन कलप्पे काज पति ॥
छं० ॥ ८०५ ॥

शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना।

दूहा ॥ पुनि गोरी पुच्छेव चर। दल संष्या चहुआन ॥
जे आगम संजोर दल। कहौ सुभट सब्बान ॥
छं० ॥ ८०६ ॥

पद्धरी। संबचहि दूत प्रति गज्जनेस। चहुआन सुदल बल असहेस ॥
उत्तर्यौ आय सतनंज सेन। सामंत सूर सिर लग्गि गेन ॥
छं० ॥ ८०७ ॥

घुम्मान राव पति चित्रकोट। सनमंध सगप्पन आय जोट ॥
दह तीन अग्ग सेना समथ्थ। भर लाज सुदल बल सिद्ध हथ्थ ॥
छं० ॥ ८०८ ॥

कन्या जुलोह चावंड राव। चित्तै सुघत्त जुद्धां जुदाव ॥
पुंडीर आय चव सहस सथ्थ। चव तेग बंधि सज्ज्यौ समथ्थ ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

पामार तेत अब्बुअ नरेस। पहुमी सकाज आयौ असेस ॥
पामार सिंघ अनभंग जंग। लग्गौ सुअप्प रन रोह रंग ॥
छं० ॥ ८१० ॥

परिहार महन सम पीप बंध। लग्गौ सुलाज भर जुद्ध कंध ॥
कूरंभ राव बलिभद्र सथ्थ। परसंग पग्ग जा जुलिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८११ ॥

जामानि राव सव सथ्थ ताम। जा काज सोज साजंग मांम ॥
बग्गरी देव देवंग पेत। परसंग राय पीचिय सनेत ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

मारहन सु तेज बीरत सहेज। गुज्जरह राम जज्जा[1] अजेज ॥
आजानबाह माजे जुधान। अनभंग सूर जुद्धह जुतान ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

मोकल्यौ चंद कंगुर सुठांम। हाहुलि काम जुद्धा जुगाम ॥
मुक्काम आय सम संतुलेस। संजुरे सुभर सब्बां असेस ॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चौअग्ग सयन[2] असीस उद्ध। भर सबे सुद्ध एकंग जुद्ध ॥
इहि विधि सबै सेना सुगाजि। जानेव साहि साजौ सुकाज ॥
छं० ॥ ८१५ ॥

* जिहि थान उम्म हम रहे जाई। सो भू दुहव्य नंषी पुदाय ॥
हिंदू तुरक्क घन परिय अंटि। छिति छोति सेटि जलगंग छंडि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

सुभि श्रवन बयन साहाब दीन। छन एक्क रहिय मन होइ मलीन॥
दिल्ली दिसानि तरवारि तोलि। गज्जनेस गज्जि पुनि कुप्पि बोलि॥
छं० ॥ ८१७ ॥

हिंदवान थान नंषो उपेरि। कौं वच्च वेलि जिम कप्पि हेरि॥
कर फेरि मुंछ दट्ठी सुलग्ग। असपति परत्त घरि फेरि पग्ग ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

जितौं संग्राम चहुआन जब्ब। सनमुष्प करों सिर पष्प तब्ब ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना।

दूहा। मुरग पेच फुनि बंधि सिर। कर षंचै कम्मान ॥
सब उमराव बुलाई ढिग। मतौ मंडि सुविहान ॥
छं० ॥ ८२० ॥

सरदारों का उत्तर देना कि अबकी बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे।

कवित्त ॥ चिंति साहि सोहाब दीन। सुरतान तांक कुबि ॥
बोल्हि सबै उमराव। मंत सोंचिंत स्वामि तबि ॥

(१) मो०—जाजा। (२) ए० कृ० को०—अयन।

* छन्द ८१६ से लेकर छन्द ८२१ तक मो० प्राति मे नहीं है।

पर परिय चहुआन । कहिय सो आदि अंतह ॥
सोइ चिंत चिंतेव । सबौ सब्बं मिलि मंतह ॥
जंपेव तांम ततार तसि । करै चिंत साहाब चित ॥
कै सजहि भिस्ति मारग सकल । कै तुम आनहि जुद्ध जिति ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकड़ा जायगा।

भुजंगी ॥ तबै बुल्लयौ तांम काजी मदन्नं । ततं युद्ध विद्या सुराज्जं[1] सदन्नं ॥
सदा बंदिगी सांइ लागे सुमन्नं । सदानं[2] कुरानं सुभासै सवन्नं ॥
छं० ॥ ८२२ ॥

कहै तास काजी समं साहि गोरी । धरौ मुज्झ बातं परं चित्त छोरी ॥
दिनं कालिह कुछ्छ दिनं उंच दीनं । गहौ चाहुआनं कला इंद षीनं ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

परै सैन दूनौ भरं भार भारं । रनं रौद्र वित्तै अभूतं सुसारं ॥
षलं रुद्र रससं अभूतं भयानं । विभछ्छं समथ्थं उथथ्यं सयानं ॥
छं० ॥ ८२४ ॥

चढ़े कालिह चंपौ चिरं हिंदु सेनं । न चुक्कै कुरानं सुभानं सवेनं ॥
गहौ जीत हिंदू षलं दुष्ट असं । करौ षोदि षोखी तनं हं प्रवेसं ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

सब मुसलमान सरदारों का बचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब सोइ । बंध्यौ जोर जुरान ॥
चल्यौ अनी[3] नीसान दै । चित्ति चित्त ईमान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥

कवित्त ॥ आनि षान सुरतान । साजि साहाब सुहित्तं ॥

(१) ए० कृ० को०—सज्जै ।　　　　(२) ए०—मदान
(३) ए० कृ० को०—अप्प

डेरा पाना नाचि। करी प्रस्थान मिलत्त ॥
धरे धीर उछंग। षंग सुरतान चढंदे ॥
सन बंधु हम्मीर। सत्य लै सीह कढंदे ॥
दस सहस संग आलस्स के। एजु देस दह पंच बस ॥
संसार सकल पूजे बली। करी जोर छोनीय गस ॥

छं० ॥ ८२७ ॥

दूहा ॥ सेछम सूरति सत्य किय। बंचि उराम कुरान ॥
मीर विचारति रत्ति हुअ। दिय सैलान मिलान ॥

छं० ॥ ८२८

शाही सेना की तैयारी वर्णन।

जोटक ॥ सजि सेन सुगोरिय साहिरनं। सु मनों दल बद्दल पंति बनं ॥
दसमत्त पयोहर पंच गुरं। इह तोटक[1] छंद प्रमान धरं ॥

छं० ॥ ८२९ ॥

घन अज्ज निसान दिसान सुनं। थलहूं जल जल्ल सुपल्लवनं ॥
बिसरी द्रिग अङ्ग न सुझ्झयनं। सु बजे घनघंट निसान[2] घनं ॥

छं० ॥ ८३० ॥

बन नंकहि भेरि न केरि घुरं। सुबजे घन सिंधुअ राग सुरं॥
सुभयं गजराज उतंग उभे। सुचलै गिरि कैं मनु जंम सुभे ॥

छं० ॥ ८३१ ॥

गज गुघघर ठघघर यों गुबरै। सु मनों तम के तन सो सुहरै ॥
बर गात परब्बत से दिषियं। छर बछ्छर मेरति तेल लियं ॥

छं० ॥ ८३२ ॥

दिन छिप्पिय रैंन दिसा गुनियं। वर सद्दन कान नही सुनियं ॥

छं० ॥ ८३३ ॥

दूहा ॥ सबद कान सुनियै नही। मुंदि निसा दिन जान ॥
मीर पीर पैगंबरहु। सजि चल्लौ सुरतान ॥

छं० ॥ ८३४ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—मोदक।
(२) ए० कृ० को०—निघट।

सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन।

पद्धरी॥ सजि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पन्यौ जानि साहरन अंभ॥
मय तथ्य साहि सेना सुदीस। उन्नयौ मेछ[1] घर बैर रीस॥
छं० ॥ ८३५ ॥

बाजहि निसान घन जिम दिसान। दामिनी तेग बर बक्कमाल॥
बारुनि बहंत मद बूंद गंध। सुझ्झै[2] न भान दिसि बिदिसि धुंध॥
छं० ॥ ८३६ ॥

धम्मलिय मिलिय कलग निगसंद। झंझलग[2] झूर सुह सुरिग मंद॥
प्रझ्झरहि पंथ पहननि सिंध। मिलि चलहि सिंगि आरुभ गिद्ध॥
छं० ॥ ८३७ ॥

सिंधुर धरंनि संचरिहि सान। सुनियै न बयन सह तुरिग कान॥
चक्कीय चक्क सुक विक्कलंत[3]। निसि दरस सरस सारस मिलंत॥
छं० ॥ ८३८ ॥

प्रतिबिंब अंब अंबरनि तार। भुकतै न मुगति मंजर सिवार॥
धुंकार धुनति गाजहि निहंग। दस दिग्ग धरा पूरे समंग॥
छं० ॥ ८३९ ॥

चक्रित सुचित्त मन मिंत हित्त। रस उभय अभ्भ आनंद चित्त॥
दीपै अद्रप्प आलोल नेंन। बिसरीय कोक सुर मग्ग बेन॥
छं० ॥ ८४० ॥

निछुरिय ढाल धर धरिय कोक। संचिय सुसाल संभरिय सोक॥
हसि चक्क चकी सों कहिग छंद। माननियजानि दामिनिय चंद॥
छं० ॥ ८४१ ॥

असपति असंभ धर गहन हिंद। कोप्यौ कमाल गोरी नरिंद॥
[4]दिवि दिवस स्यार इक करहिं फेर। जोगिनि अनंद अच्छरि सुमेर॥
छं० ॥ ८४२ ॥

(१) ए०—मेघ। (२) मो०—झंझछि।
(३) मो०—विच्चलंत। (४) मो०—गाधव दिवस्स इक कराहिं फेर।

कुह किलकि सौन बर बरहि बीर। उच्छरहि मीन धर गरुव नीर॥
आवरत सेन दल हलिग[1] साहि। गाहन असंपि अदि भीम धाहि॥
छं० ॥ ८४३ ॥

अग्गें सुरेंन पच्छें पुकार। मायसिय संक्रमन सन्निपार॥
रवि परह राह अरु केत गत्ति। आनी न चंद ग्रह ग्रहन मत्ति॥
छं० ॥ ८४४ ॥

दूहा ॥ कहहि चंद रन अम्भरन। मरन सुधन्न धनाह॥
बर नरिंद दल हिंदु कैं। भई सनाह सनाह॥
छं० ॥ ८४५ ॥

राजपूत सेना की तैयारी वर्णन।

पद्धरी ॥ कहि कूह बहि सन्नाह सद्द। मंगिय सुहिंदु षुरसान रद्द॥
डंमरिय डहकि अंमरिय रत्ति। संभरिय रोव रावल सुवत्त॥
छं० ॥ ८४६ ॥

बंधरिय बीर रोमंच उट्ठि। ब्रह्मान भ्रंम कसि अंग पुट्ठि॥
म्रम्मानि हेम कमलानि कंट्ठि। बंदिय विभूति सिंगिय सुगंठि॥
छं० ॥ ८४७ ॥

अवधूत धूत जोगिंद राज। चट्ठी सुसक्क गढ़ चित्त लाज।
धज सुंज धज्ज नीसान नद्द। आहुट्ठि राइ असि कसिग हद्द॥
छं० ॥ ८४८ ॥

सक सकति नाग भुज भाग साजि। प्रज्जरिग क्रन्न मुष ब्रन्न गाजि॥
नभ मिलिन रन्न चष दिट्ठि दिट्ठि। मंडिय सुटोप सिर[2] निट्ठ निट्ठ॥
छं० ॥ ८४९ ॥

मृग जाति काय पष्षर पवंग। सित असित पीत कुंजनि कुरंग॥
उर राह बाह रावत्त भीर। निरमलिग नेह जनु लज्ज नीर॥
छं० ॥ ८५० ॥

गुन गनत तत्त वज्री सुवत्त। बंधिय सुहंसि सिर छहति सत्त॥
हिल्लुरिग अंब बर बरन बीर। प्रिय प्रिथम हेत न्त्रिप तिरम तीर
छं० ॥ ८५१ ॥

(१) ए० कृ० को०—लहिग। (२) ए० कृ० को०-सन।

पंडव सुपंह चहुआन षंड। सजि चढिग राज जोगिंद दंड॥
सुनि निज नफेरि संजोई कंत। आरुह्यो गरुर हय हय हसंत॥
छं० ॥ ८५२ ॥

जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं।

कवित्त ॥ पानि जाम जद्दों जुवान। लगि कान कह्यौ इह ॥
प्रिया कंत इह बार। तात कुसलत्त होय ग्रह ॥
छंद राइ कूरंभ। सिंभ पूजन[1] पति जंपिय ॥
करुन हथ्थ पुंडीर। राव पावस क्रत कंपिय ॥
महि महन सीह सिंह गुरिग। तिह सहाय रावर समर ॥
तुम सम न कोइ हिंदू तुरक। भिरि न सकहि दानव अमर ॥
छं० ॥ ८५३ ॥

पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए।

गरुर हंकि दानव नरिंद। दिसि वाम काम तत॥
झलकि झलकि झिंगुरिग। नेन दग[2] बेम कहत बत ॥
तुम दप्पिन गिरि गरुअ। संग रन रंग हरष्षय ॥
तुम समान कोइ आन। हमहि[3] हम हितू न दिष्पिय ॥
जब लग्गि मुझ्झ भीर न परै। तब लगि भट भिरम न करौ ॥
आरज्ज सोम संकट सतिन। सजिन सेन चंपत परौ[4] ॥
छं० ॥ ८५४ ॥

(१) ए०–पजून।
(२) मो०—द्रग।
(३) मो०–हमहि हिन्दू नह दिष्पिय।
(४) ए० कृ० को०–फिरौ।

रावल जी का कहना कि समर से विमुख होना धर्म नहीं है।

हंसि नरयंद आनंद। राज राजन प्रति पत्तिप।
तुम सनेह सम्मरिय। मोहि दप्पन लगि बत्तिप॥
ना हं ना तुं ना जगत। न मिच्छ दुच्छ नन॥
नहिन सूर सामंत। सूर अंकुर गहन मन॥
संग्राम धाम धर छत्रियन। पर इत पुर परतर लहै॥
चहुआन आन सोमेस सुअ। विमुष जीह जंतनि कहै॥
छं०॥ ८५५॥

रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना।

दूहा॥ दय दच्छिन दच्छिन अपन। प्रथम प्रिथा पति कंत॥
गरुर कंध यप्परि प्रयुत। प्रभु प्रथिराज सुभंत॥
छं०॥ ८५६॥

असुर सेन सम संचरिग। दल बद्दल विष मंत॥
बहुरि बियौ प्रब्बत सुभित। प्रथुरु संजोई कंत॥
छं०॥ ८५७॥

भुजंगी॥ दुअं सेन आवृत्त उत्तंग अंगं। दुअं छच सेतं पियं नेत रंगं॥
दुअं सार सिंधू उरं अग्र दीनं। दुअं बीच सा चंग लंकाल भीनं॥
छं०॥ ८५८॥

दुअं पथ्थ रथ्थं सरथ्थं परामं। दुअं सेन आपासि आपा विरामं॥
दुअं जोर जीवा रजं नार कंधं। समय एन संमं कलिं कहत धंधं॥
छं०॥ ८५९॥

रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से कुछ कहना और राजा का उसे समझ जाना।

दूहा॥ तन अलंग अंगह उभय। अप अप्पानं सेन॥

कछु जुक्कन लगिकें कह्यौ। [1]सुन न्रप परषिय वेन ॥

छं० ॥ ८९० ॥

रावल जी के इशारे पर सेना का व्यूह बद्ध किया जाना।

पद्धरी ॥ रस गीति सुसाजन षार तिन्न। न्रप सेटि समर रावर सुकिंन ॥
रस करन सथ्थ पावस पूंडीर। दनिवंत जिसौ धीरह समीर ॥

छं० ॥ ८९१ ॥

उनलंक जाति परषत्त पारि। जंजनिय अनिल ग्रम्भह विचार ॥
रस मरद देषि जादौंनि जांम। वय रूप रूप एकह सुजांम ॥

छं० ॥ ८९२ ॥

गल कंठ माल मोतिय सुसेलि। संजोगि तात दन्नियत[2] केलि ॥
लिय लष्ष हेम कैलास गूर। देसमिय सोप उद्दोत भूर ॥

छं० ॥ ८९३ ॥

अदभूत देषि बलिभद्र सद्द। गाजने साहि जे हरन मद्द ॥
अभिलाष हास्य घट जीव कीन। षनलषिय षान लषियै प्रवीन ॥

छं० ॥ ८९४ ॥

वीभच्छ नैंन मस लहन सीह। जय लागि गरुअ हय छंडि लीह ॥
निरवान राइ रंधन सुसंत। गल गलिय[3] नेन लांगत पंत ॥

छं० ॥ ८९५ ॥

संजोगि सयन अंगुलि बताय। सम समर साहि रावल दिषाइ ॥
नर सहित नेत बंधै नरिंद। मनि मरन भौन जिम सुक मुनिंद ॥

छं० ॥ ८९६ ॥

पहु परी छित्त अवतार सुब्भ। हरि षक्कवान राषै सुग्रब्भ ॥
उहि बरन भेष चिचंग राव। मिलि दैव जोग संजोग दाव ॥

छं० ॥ ८९७ ॥

इन सम सुलभ्भ लाहू विषानि। इन मरन जियन देषियन हानि॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुनत परच्छिय वेन।
(२) मो०—दिल्लियत, ए०—दिन्नियत।

कोइ गुस्भ मंत समझी न अग्ग। कहि जाम देव सौं कान लग्गि॥
छं० ॥ ८६८ ॥

आगम सुबात भव भूत हेत। सिर जैत अप्पि तहां छच सेत॥
गहि पान पानि पंच्यौ पमार। लिय दच्छिनेस ढिल्लन पहार॥
छं० ॥ ८६९ ॥

घावंड राइ सुप रापि नाइ। भ्रम होइ मोहि जिहि पातिसाहि॥
* षोडसह द्वन रस[2] रति तिवार। अंगुलिन गनित दस कहिग[3]मार॥
छं० ॥ ८७० ॥

राजपूत सेना का सुसज्जित होकर शाही सेना के साम्हने होना।

कवित्त ॥ बिलखि साह ढिल्लरिय। साह लल्लरिय निरप्पिय॥
जुरन जैत जग हथ्थ। नाथ सिर छच हरप्पिय॥
आसमान पांमार। रहन झुंडे झुकि गड्डे॥
अव्बू राइ नरिंद। वाद बीरति कर छंडे॥
करन इत बान बानैत जनु। चाव सबय नेहं कुरिय॥
सित रत्त पीत कज्जल ललित। सलित कमल दल संकुरिय।
छं० ॥ ८७१ ॥

मुरिल्ल ॥ लज्जिय लौ बज्जिय लौ सारं। गज्जिय लौ अरतिय उभ्भारं॥
सज्जिय लौ हिंदू दल धारं। जानि कि मेघ घटा करिवारं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

घट घट जिय विज्जलिय विराजैं। गरुअ पंति रति रनि तहां साजै॥
तत्त तहां तोरन तिल लाजै। मंत मरन दिष्षै इक गाजै॥
छं० ॥ ८७३ ॥

बंधिय फौज राज जपि सारिय। रंगी जानि क्रिसान दिषारिय॥

---

(१) ए० कृ० को०—गलगिय (२) ए०—सर

(३) ए० कृ० को०—गमार। *राजा प्रथीराज री फौज हजार त्रयासी जी की सरव्यई तुक में कही। षोड़ द्वन वत्तीस, रस नौ, राति छः, तिवार बारेह लिखा ११=१२८६११ (कृ० प्रति) ठाकुर कृष्ण सिंह जी की टिप्पणी।

दंगी दीवर दोस निकारिय[1]। दिट्ठे दिट्ठ मिले हकारिय ॥
छं० ॥ ८७४ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी के समय के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ बर मावसि सनिवार। राहु रवि ग्रहे[2] संपतौ ॥
न्रप संमुह जोगिनी। पंछि पच्छिम श्रौलितौ ॥
वाइ विषम संमूह। चक्र जोगिनि दिस रुंधी ॥
राहु न्रपति सत्तमौ। भान अष्टम गुर संधी ॥
साध्रम्म वढ्ढिय नभ छहयौ। वाम काम छुट्टे दरस।
जम रोज पत चढ़ि दीन बिय। मुकति बीर बंछै परस ॥
छं० ॥ ८७५ ॥

राजपूत सेना की चढ़ाई का ओज और व्यूह वर्णन।

भमरावली ॥ सलिता जनुं सत्त समुद्दलियं। दोउ राज महाभरयं मिलयं ॥
ककरादि निसा मकरादि दिनं। बर ब्रिद्धत सेन दुबाल मिनं ॥
छं० ॥ ८७६ ॥

दोउ राज रयत्त सुरत्त उठे। बहुरे मन पावस अब्भ बुठे ॥
निसि अद्ध विभत्ति निसान घुरं। दरिया दिव जानि पहार गुरं ॥
छं० ॥ ८७७ ॥

सहनाइन फेरि कुलाह लियं। रस बीरह बीर मिले बलियं ॥
ठहनंकित घंट निघंट घुरं। कल कौतिग देव पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ८७८ ॥

लगि अंबर बंबर उंमरियं। बिसरी दिसि अट्ठति धुंधरियं ॥
समसेर दुसेन समा इन से। दमकै दल मद्धि तराइन से ॥
छं० ॥ ८७९ ॥

चमकै चव रंग सनाह घनं। प्रति बिंबति मिंत मयूष बनं ॥

(१) मो०—दिपारिय।
(२) ए० कृ० को०—धर।

हरसी दल की दल ढल्लरियं। सुमिरैं घर कायर बल्लरियं॥
छं० ॥ ८८० ॥

जिनकै मुष मुंछनि मच्छरियं। निरपें तिनके तन अच्छरियं॥
न्रप जोइ फवज्ज सुबंटि लियं। मुह मारक चावंड राय दियं॥
छं० ॥ ८८१ ॥

भुज दच्छिन अब्बुअ राव रच्यौ। सिर छत्र सपेद सुआनि मच्यौ॥
भुज की दिसि वाम पुंडीर भरी। कटि कंध कबंध गिरंत लरी॥
छं० ॥ ८८२ ॥

कूरंभ अरंभति अप्प अनी। सुधरी कविचंद मुनी सुभनी॥
दल पुट्ठ सुमोरिय राव सुन्यौ। कवि उत्तिन संच सुन्यौ सुभन्यौ॥
छं० ॥ ८८३ ।

निरवान चंदेलति जुद्ध मिले। हय मुक्कि लरें जम सों जुरले।
तिन मद्धि सुसंभरि वार इसौ। भुज अर्जुन अर्जुन वार जिसौ॥
छं० ॥ ८८४ ॥

अमरावलि छंद प्रमान कियं। न्रिप जोइ फवज्ज सुबंटि दियं॥
छं० ॥ ८८५ ॥

राजपूत सेना की कुल संख्या और सरदारों की स्फुट अनीकनी सेना की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ अप्प अप्पनी फौज बंटि। नाम ठाम सामंत ॥
संख्या दल कविचंद कहि। तिन बल जुद्ध अनंत ॥
छं० ॥ ८८६ ॥

भुजंगी॥ सबं सेन साहस्स अससी त्रयग्गं। चवै फौज साजी जयं जुद्ध जंगं।
सुरं संषि हज्जार सा फौज वामं। पतिं चित्र कोटं जयं क्रत्य कामं॥
छं० ॥ ८८७ ॥

तहां साजि साहाइ साजाम देवं। बलीभद्र कूरंभ सथ्थे सुनेवं॥
सुअं धीर पुंडीर पावस्स तथ्थं। तहां पारिहारं महन्नं समथ्थं॥
छं० ॥ ८८८ ॥

सजी जैत अन्नी सुदाहिन्नि भारं। भरं राज हज्जार इकईस सारं॥

तिन मझ्झ आरज्ज कमधज्ज राजं। अचल्लेस भट्टी सुजादव्व काजं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

तहां बंकटी राव पामार धीरं। बडं गुज्जरं चन्द्र सेनं सुवीरं ॥
वरं सिंघ पंचाइनं चाहुआनं। धरा भस्स रापै पलं पित्त टानं ॥
छं० ॥ ८९० ॥

न्रपं देवती लष्षनं धार ईसं। विज्जै राज वग्घेल सथ्थें सजीसं ॥
तहां दछ्य परिहार ते जल्ल डोडं। सजै जैत भीरं अरी साल सोढं ॥
छं० ॥ ८९१ ॥

सुषं अग्ग सेना सुचामंड राजं। तहां साजि साहस्स सासत्त काजं ॥
तहां पीप परिहार भारथ्थ रायं। भरं दाहिमा जंगली राव सोयं ॥
छं० ॥ ८९२ ॥

रचै ढंठरी ठांक पुंजं पहारं। भरें भीम चालुक्क बज्जैन सारं ॥
तहां राज रावत्त सथ्थें सपेतं। सजे जूह दाहिम्म सा सुम्भनेतं ॥
छं० ॥ ८९३ ॥

सजे सेन पुट्टीय सा चाहुआनं। भरं तथ्थ हज्जार उनईस थानं ॥
सथें सिंघ पामार षीची प्रसंगं। बड़ं गुज्जरं राम देवं अभंगं ॥
छं० ॥ ८९४ ॥

तहां बग्गरी देव आजान बाहं। गुरू राम देवं सुसथ्थेव ठाहं ॥
गुरं चाल गेहिल्ल सो पंच यानं। भरं अन्य सज्जे न्रपं ठान ठानं ॥
छं० ॥ ८९५ ॥

सजी फौज लष्षै सुदिल्ली नरेसं। चढे इष्षनं इम्भ राजं सुरेसं[1] ॥
चढे व्योम विम्मान अप्पं अपानं। मिली अच्छरी मंजि रज्जे सुजानं
छं० ॥ ८९६ ॥

पिलै नारदं तुंमरं तंति तारं। करे हूह हाकं गुरंगै उछारं ॥
मिलै वीर वेताल पेयाभ्भ पेतं। मिली चौसठी सक्कत्ति सोयं अनेतं ॥
छं० ॥ ८९७ ॥

घनं धष्प गोमाय गिद्धी गहक्कै। पलंचार ओनं चरं दंद हक्कै ॥

(१) ए० कृ० को०—नरेसं।

मिलै ओनचारं लपे मोन[१] भारं। अनी जाम बंधी त्रिपत्ती करारं॥
छं० ॥ ८९८॥

शाही सेना का संतूलपुर के पास आना।

कवित्त ॥ सजि आयौ सुरतान। जूह सेना अति आतुर॥
तुरिय लष्प दह सुभर। दंति दस सहस मंत वर॥
पुर संतुल सा निकट। आय दलबल संपत्तौ॥
सज्यौ देषि ढिल्लीस। नाम गोरी अनुरत्तौ॥
पुछ्यौ सुमंत ततार षां। षुरासांन साहाव मदि॥
टट्टौ सु सज्जि जंगल सुपह। रचौ बंध अप्पान[२] रदि॥
छं० ॥ ८९९॥

शहाबुद्दीन के आज्ञानुसार तत्तारखां का अपनी सेना को व्यूहबद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम।

पद्धरी ॥ संबच्यौ तांम तत्तार तंमि। षुरसान षान साहाव स्रमि॥
बंधौ सुअनी साजै सुबानि। संहरौ सेन ग्रहि चाहुआन॥
छं० ॥ ९००॥
संची सुबत्त सब्बान ताम। बंधी सुअनी पंचौ दुराम॥
दाहिनी सेन सज्ज्यौ ततार। द्वै लष्प तुरिय सारह सार॥
छं० ॥ ९०१॥
द्वै सहस दंति उनमत्त मंत। संजूह स्रब्ब बानै अनंत॥
नौ चम्म षान रुमी समथ्थ। नारंग निस्तूरनि सिंघ हथ्थ॥
छं० ॥ ९०२॥
साहाब बंध सुअषान षान। महमुंद षान रुस्तम षान॥
गज गरुअ षान तह षुरेस षान। जे हान षान जंगी जनान॥
छं० ॥ ९०३॥
हमियाम षान भै[३] रुस भार। मीरां मसंद षल षित्त ढार॥

(१) ए० कृ० को०—जुद्ध।
(२) ए० कृ० को०—आनंद।
(३) ए० कृ० को०—मैरुं।

काजी कमाल हवसी हुसेन। सादी मलिक्क अहिय अनेन[1] ॥
छं० । ९०४ ॥

मालहन हंस हम्मीर तथ्य। सह संच पंच गष्पर गुरथ्य ॥
सज्जे सुसद्ध सेना ततार। बंधी सुपनी भर भीर सार ॥
छं० ॥ ९०५ ॥

बांई दिसान षुरसान सज्जि। हैलष्प मीर गरुअत्त गज्जि ॥
गज सहस इक्क सारद्ध सथ्य। बाने विरद्द बंधरि बिहथ्य ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

ईसणफ षान आली अपूव। गाजी वषान गर बर हबूब ॥
आलील षान दस्साद ईस। सारीर षान सुरतान जीस ॥
छं० ॥ ९०७ ॥

पीरोज षान पाहार पीर। अलि असद षान उस्माद मीर ॥
महसुंद षान मीरन सुधारि। सारीर षान सेरन सुभारि ॥
छं० ॥ ९०८ ॥

ताजंन षान तुरकाम ताम। कम्माल षान गरबर गुराम ॥
रोचन्न षान रोहन्न राज। सल्लेम षान सेकंद ताग ॥
छं० ॥ ९०९ ॥

महसुंद सैंद फत्तेन खूब। अबदुल्ल मीर मुलतान ऊब ॥
साजे सजूह मारूफ षान। साबद्द नद्द अनभूल बान ॥
छं० ॥ ९१० ॥

साहाब सेंन परठे सुपुट्ठ। सारद्ध लष्प सेना सुदुट्ठ ॥
गय सहस एक साजे सुभार। बानैत वान अनभूल सार ॥
छं० ॥ ९११ ॥

सथ्थेव साजि मारूफ मीर। पीरोज षान फत्ते नसीर ॥
पीरन्न मीर सेरंन सादि। मरहट्ट मान गाजी मुरादि ॥
छं० ॥ ९१२ ॥

कंनर कनक्क हरचिच सेन। सारंग देव गव्वर सबेन ॥

(१) ए० कृ० को०—अलेन।

उस्माद् पान फत्ते फरीद। बंकट्ट राव वामन वरीद॥
छं० ॥ ९१३॥

संचे सपुट्ठि सेना सद्धाव। परसंसि सूर सब्बान श्राव॥
सजि मध्य सेन गज्जन नरेस। द्वै लष्प मीर साजै सुभेस॥
छं० ॥ ९१४॥

गज सहस चैव मंते उमंत। बंबर विरद्द वाने वहंत॥
खालिन मलिक्क गालिब्ब बंध। बाजंन पान गोरी विरद्ध॥
छं० ॥ ९१५॥

संगदह राव मरहट्ठ मेह। कोतन असंन गप्पर अरेह॥
सनसुप्प सज्जि मारूफ पान। सुअ गज्जनेस गरुअत्त वान॥
छं० ॥ ९१६॥

चै लष्प मीर सेना समाज। द्वै सहस इम्भ सारद्ध साज॥
संमन क्समंन महमुंदमीर। मों नदी अग्र सेना सधीर॥
छं० ॥ ९१७॥

तोसंन मीर ताजंन पान। श्रोलील सैद पाना सुवान॥
सादीप षान हबसी सलेम। आबूब पान रुम्मी अलेम॥
छं० ॥ ९१८॥

महदीय सहदी मीर बंध। रत्तेव क्रन्न वक्रंत कंध॥
सल्लेम षान साकत्त सेष। जा जन्न जमन मीरां विसेष॥
छं० ॥ ९१९॥

सल्लेम सैद सेना सकूप। मोसम्म मीर सुलतान रुप॥
हाजिय पान न्याजी सताज। अहमद्द षान षिति पग्ग लाज॥
छं० ॥ ९२०॥

साजिय अनीय साहाब पंष। गज बाज बिरद बाने न संच॥
उम्मरा मीर साजे असंष। को गनै पार अप्पार तंष॥
छं० ॥ ९२१॥

संषैप चंद जंपै समूह[1]। आभूत सेन गोरी गरूह॥
षट तीय लष्प संष्या गिनंत। सेना अनंत पयदल मिलंत॥
छं० ॥ ९२२॥

(१) ए० कृ० को०—सतूह।

सर बंधि संधि सोजूह भार। आवरै अंग भर अनिय धार॥
गज वाज सुद्ल वल पय पगार। बाजे अनंत वज्जे करार॥
छं० ॥ ९२३ ॥

जंबूर सूर हथ नारि भार। आतस चरित्त अदभूत पार॥
बाजंत राग सिंधूर वद्द। धर पूर व्योम नीसान नद्द॥
छं० ॥ ९२४ ॥

बहु रूप विरद वाने अनंत। सुरपत्ति विपन रज्ज्यौ वसंत॥
आरोह एक डंमर डरान। खोपंत व्योम सुझ्झै न भान॥
छं० ॥ ९२५ ॥

सुर बैठि रथ्थ साजे अनंत। धर अतुल चार अड्डन अंत॥
पल चार श्रोन चर इपि अनंद। हसि हसिस धीर नच्चैं पसंद॥
छं० ॥ ९२६ ॥

दुअ सेन साजि राजे रवद्द। ठट्टै सुआय आसुर उरद्द॥
छं० ॥ ९२७ ॥

श्रावण वदी अमावास्या शनिवार को दोनों सेनाओं का मुकाबला होना।

दूहा॥ साक सु विक्रम रुद्र सौ[1]। अट्ट अग्र पंचास॥
सनि वासर संक्रांति क्रक[2]। श्रावन अद्धौ मास॥
छं० ॥ ९२८ ॥

सावन मावसि सूर सुअ। उभय घटी उदयत्त॥
प्रथम रोस दोउ दीन दल। मिलन सुभर रन रत्त॥
छं० ॥ ९२९ ॥

दरसे दल वद्दल विषम। रागरुद्दाग निसांन॥
मिले पुव्व पच्छिमह तें। चाहुआन सुलतान॥
छं० ॥ ९३० ॥

सारन धीरी सारुहै। धीर न धरी प्रमान॥
चाहुआन गोरी सरिस। गोरी रा चहुआन॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) ए० को० को०—सत्त सैा। (२) मो० क्रम।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन ।

भुजंगी॥ मिले चाय चौहान सुलतान पग्गं । मनो बारुनी छक्किवे बारु लग्गं
उठे हथ्य हक्कं कहं कूहकालं । जुटे जोध जोड्ड तुटै ताल तालं॥
छं०॥ ९३२॥

भए सेल भेलं दुहूं मार मारं । वढ़ी संग लग्गी वजी धार धारं॥
सुभट्टं सुथट्टं सुरीसं समेकं । भई सेलमेलं अनी एक एकं॥
छं० ॥९३३॥

परें घाइ अग्घाइ केकेन सुद्धं । कटै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं॥
परै सूर सम्भ्झं उतंगं सुधारं । भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ हारं॥
छं० ॥ ९३४ ॥

छुटे वान चहुआन आवद्ध राजं । लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं
फुटै संगि संनाह के अंग अंगं। उठै श्रोन छिंछं जरैं जानि दगं॥
छं० ॥ ९३५ ॥

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं । भए मेछ अद्धे मनों राह केतं॥
बढ्यो बीर नन्दी सुसूली अनन्दी । नचै भूत भैरूं बकें जानि वंदी
छं० ॥ ९३६ ॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं। ग्रहै गिद्धि,सेवाल लुथ्थानि लुथ्थं
चुवै श्रोन सट्ठी किलक्कंत घुंटै । ग्रंह मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै॥
छं० ॥ ९३७ ॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं । परें पंच पंचास चोवंड वीरं॥
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने । परे देवरा जेद्ध ते दून जने॥
छं० ॥ ९३८ ॥

परे सांषुलो सव्व भाटी सुराने। परे हंस मारहन मिल्लि हंस थाने॥
परे राह रट्ठौर रनभूमि ठोरे । मनों सार संसार रन सामि छोरे॥
छं० ॥ ९३९ ॥

परे चाइ चालुक्क ते सार दूने। मुरे मोरिया सव भए जाति सूने॥
परे सहस षट सूर कूरंभ वाला।[१] परै गज्ज सिंदूर कते ढालढाला॥
छं० ॥ ९४० ॥

---

[१] मो०—" फिरै गज्ज सिंदूक ठाकेति ठाला"

परे पीचिया पग्ग षेलै सुपाला । परे टांक चंदेल पुंडीर माला ॥
सहै भीर रन रंग जे तुंग लाला । चले ब्रह्महंसं षुले सुत्तिलाला ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

परै जैत पम्मार आबु सुराया।करी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पंच से पंच चहुआन वड्डे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठड्डे[1]॥
छं० ॥ ६४२ ॥

परे सहस पच्चीस सब सेन गोरी । रहै तुरक हिंदू मनों षेलिहोरी ॥
भिरे देव दानव्व जिम वैरू वित्यौ।मुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

परे लुथ्थि अगिनंत जानों न संख्या।रची जांनि जोगिंद सा मुंनि दष्या॥
मिले षान सुरतान रनभूमि पिष्यौ । तहां एक देवास में देव दिष्यौ ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

परी विटं राजंग सा अंग मीरं। करी कुंडली काल रज्यौ कठीरं ॥
कथें कथ्य कुब्बेर सांई सु अग्गे । चितं अत्ति आनंद उब्भास लग्गे ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, कुवेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना ।

कवित्त । तांम ठांम जलप्प । जाय जटधार सपत्तौ ॥
आहुत्ती वलिभद्र । बीर बीराधि सहित्तौ ॥
आति आदर दिय देवि । पुच्छि परपंच संच विधि ॥
वर आसन उत्तान । मान रष्पिय सु प्रान उधि ॥
आयौ सु जच्छि सुबेर तहं । सँग जोगिनि वेताल साथ ॥
वीतौ सु जुद्ध हिंदू तुरक । कहिय ईस दिय भेट अथि ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो ।

तब कहै ईसमन मंडि । [2]अहो सुब्बेर दच्छ सुनि ॥

[1] ए० कृ० को०—वड्डे । (२) मो०—अहो सु वेर द्रव्य सुनि ।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन ।

भुजंगी॥ मिले चाय चौहान सुलतान पग्गं । मनो बारुनी छकिवे बारु लग्गं
उठे हथ्थ हक्कं कहं कूहकालं । जुटे जोध जोद्धं तुटै ताल तालं॥
छं०॥ ९३२॥

भए सेल भेलं दुहुं मार मारं । बढ़ी संग लग्गी वजी धार धारं॥
सुभट्टं सुथट्टं सुरीसं समेकं । भई सेलमेलं अनी एक एकं ॥
छं० ॥९३३॥

परें घाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं । कटै अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं ॥
परै सूर सभ्भं उतंगं सुधारं । भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ हारं॥
छं० ॥ ९३४ ॥

छुटे बान चहुआन आवद्ध राजं । लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं
फुटै संगि संनाह के अंग अंगं। उठै श्रोन छिंछें जरैं जानि दगं॥
छं० ॥ ९३५ ॥

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं । भए मेछ अद्धे मनों राह केतं ॥
बढ्यो बीर नन्दी सुसूली अनन्दी । नचै भूत भैरूं वके जानि बंदी
छं० ॥ ९३६ ॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं।ग्रहै गिद्धि सेवाल लुथ्थानि लुथ्थं
चुवै श्रोन सट्टी किलक्कंत घुंटै । ग्रंह मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं । परें पंच पंचास चोवंड बीरं॥
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने । परे देवरा जेद्ध ते दून ऊने ॥
छं० ॥ ९३८ ॥

परे सांषुलो सव्व भाटी सुराने। परे हंस मालइन मिलि हंस थाने॥
परे राह रट्ठौर रनभूमि ठोरे । मनों सार संसार रन सामि छोरे॥
छं० ॥ ९३९ ॥

परे चाइ चालुक ते सार दूने। मुरे मोरिया सव्व भए जाति सूने॥
परे सहस षट सूर कूरंभ वाला। [१] परै गज्ज सिंदू कते ढालढाला॥
छं० ॥ ९४० ॥

---

[१] मो०—"फिरै गज्ज सिंदूक ठाकेति ठाला"

परे षीचिया पग्ग षेलै सुषाला। परे टांक चंदेल पुंडीर माला॥
रहै भीर रन रंग जे तुंग लाला। चले ब्रह्महंसं षुले मुत्तिमाला॥
छं० ॥ ६४१ ॥

परै जैत पम्मार आबु सुराया।करी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पंच से पंच चहुआन बड्ढे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठड्ढे[१]॥
छं० ॥ ६४२ ॥

परे सहस पच्चीस सब्ब सेन गोरी। रहे तुरक हिंदू मनों षेलिहोरी॥
भिरे देव दानव्व जिम वेरू वित्यौ।मुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

परे लुथ्थि अगिनंत जानों न संख्या।रची जांनि जोगिंद सा सुंनि दष्या॥
मिले पान सुरतान रनभूमि पिष्यौ। तहां एक देवास में देव दिष्यौ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

परी विटं राजंग सा अंग मौरं। करी कुंडली काल रज्यौ कठौरं॥
कथें कथ्य कुब्बेर सांई सु अग्गे। चितं अत्ति आनंद उभ्भास लग्गे॥
छं० ॥ ६४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, कुबेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना।

कवित्त। तांम ठांम ज लष्प। जाय जटधार सपत्ती॥
आहुत्ती बलिभद्र। बीर बीराधि सहित्ती॥
आति आदर दिय देवि। पुच्छि परपंच संच विधि॥
बर आसन उत्तान। मान रष्षिय सु प्रान उधि॥
आयौ सु जच्छि कुबेर तहं। संग जोगिनि वेताल साथ॥
बीतो सु जुद्ध हिंदू तुरक। कहिय ईस दिय भेट अथि॥
छं० ॥ ६४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो।

तब कहै ईसमन मंडि। [२]अहो कुब्बेर दच्छ सुनि॥

[१] ए० कृ० को०—वड्ढे। (२) मो०—अहो सु वैर द्रव्य सुनि।

किम हिंदू तुरकानि। पाम[1] जंपौ जुद्ध गुनि ॥
इहै जोग सारत्त। मंत दिष्षौ जुध जग्गिय ॥
इहै बीर उनमद्द[2]। साषि भष्षी सा अग्गिय ॥
बलिभद्र कहिय अति उद्ध कथ। रूद्र सूर सामंत रन ॥
भारथ्थ कथ्थ लग्गै अतुल। कहौ पान उत्तान तन ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

सुवेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पहिले राव वलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना।

दूहा। कहिय दच्छ कैलासपति। सुनि रन संकुल सार ॥
चाहुआन सुरतान पिति। जे भर जुट्ठे धार ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

कहै सूर सामंत सह। जस जीतन यों काज ॥
जो जीतन तुम होय नहि। तौ रष्षहु प्रथिराज
छं० ॥ ९४९ ॥

प्रथम जुद्ध आवृत्त मचि। कर यक्के दोउ दीन ॥
औसरि दल दूनौ रहै। ज्यों प्रमुदा रस भीन ॥ छं० ॥ ९५० ॥
मिले सूर सामंत मत। पति चित्रंगे पुच्छि ॥
तुम माया मद जित्त हौ। हम मानव मन तुच्छ ॥ छं० ॥ ९५१ ॥

बलभद्र और जामराय का रावलजी प्रति प्रश्न।

कवित्त। विपथ राव बलिभद्र। सुपथ जादौं पति कथ्थिय ॥
समरसिंघ रावलह। समर साहस गति पिथ्थिय ॥
राज ध्रम्म अत ध्रम्म। ध्रम्म छत्री सालोकिय ॥
कह सु हंस आनंद। बुद्धि कहि तत्त सलोकिय ॥
कहं कहां सु मोह मरयाद कह। कहां सुनीति जोतिहि लहै ॥
जोगिंदराव जगहथ्थ तुअ। जग सु देव तत्तह कहै ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

(१) मो०—पात। (२) मो०—उदमद।

रावल जी का उत्तर देना।

विपथ सुबंध्यौ सोह। सुपथ जिहि स्वामी निवरतैं॥
राज सु अग्या रवन। सेव तिन वज्र प्रवत्तै॥
भ्रित सु स्वासि सोरत्त[1]। नीय निंदा न प्रगासिय।
अह निस वंछहि सरन। सु पहु संकुरै निवासिय॥
हा हंस हंस संडल रूरै। सन अनंत अंतहि रूरत॥
सामंत सिंघ रावर चवै। सुगति सुगति लब्भै तुरत॥

छं०॥ ९५३॥

प्रश्न "क्षत्रियों का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते हैं।"

कहै राव जामानि। अहो चित्रंग राव सुनि॥
तुम सु जोग जोगिंद। जोगधर मूल ब्रम्ह गुनि॥
तुम सुधीर अवधूत। व्यास जिम लहौ सकल गति॥
तुम सुझ्झै चयलोक। सकल काल कालय तुम्झ्झ मति॥
इम कहौ छत्त छत्रिय सुधर। राज ध्रंम अत ध्रंम॥
सालोक साज सज्जौ प्रथक। कहौ मुत्ति[2] सारूप भर॥

छं०। ९५४॥

रावल जी का वचन कि धर्मरहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते हैं।

तब कहि रावर सिंघ। सुनहि जामानि राज बर॥
भल पुच्छिय भर समथ। सार संसार कला धर॥
कहिय पुराननि वत्त। रिप्प आगम बहु बिथ्थरि॥
कपिल गाय कह्यौ भरथ। कहिय पारथ ग्यान सु हरि॥
इन काल द्रष्ट इय चित्त निज। मुप अग्गै आसुर सयन॥
संषेप कहौं तुम तत्त मत। मझ्झे गहि रायौ सुमन॥

छं०॥ ९५५॥

काल तिमिर पर वर्‌यौ। चिंति तिहि ध्रंम न बुझ्झै॥

(१) ए० कृ० को०—सौरत्त॥ [२] ए० कृ० को०—मुत्ति॥

अंतकाल मुष अद्ध। ग्यान त्रय कालह सुझ्झै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़। राति चैकाल[1] पलट्टै ॥
निंद मद्द धन काम। धाम आवरदा घट्टै।
बंधनह अप्प आरमुप्प किय। गज्ज जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्यो नयन। नहि अचिज्ज नरकहिं[2] पिरै ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

प्रश्न-क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा। [3]कहैं राइ जामानि तव। किमि भव तरियै पार॥
कहौ राइ जोगिंद तुम। गुरमति त्रिभुवन सार ॥
छं० ॥ ९५७ ॥

रावलजी का वचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त। जाग्रति सुषपति सुपन। तुरिय अवस्था ये च्यारहि ॥
ता मध्ये वय ग्रहै। लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव। देवकरि आवध मानै ॥
स्वामि ध्रम्म आचरै। दुष्ट क्रित धरै न कानै ॥
समपै सुक्रंम सह हरि सहस। अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्ष स्वामि निज सुद्दरै। इम पची पारह तिरै ॥
छं० ॥ ९५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै। स्वांमि ध्रम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै। अप्प हरि ध्यान न मुक्कै ॥
सबद जोति रहै लीन। ध्रम्म कृत वासर क्रम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त। आय अरि षुत्तह अम्मै ॥
संकलपि सीस सांईं सरिस। मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन। एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

(१) ए० कृ० को०—त्रैदेह (२) ए०कृ०को०—नरकह पैरे।
(३) ए० कृ० को०—"कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को०—देव। (५) मो०—मुकति।

पियै सगति धर श्रोन। पिंड पावक आहारै ॥
सांइ समप्पै प्रान। सीस उर शंकर धारै ॥
अंत तुट्टि पय चंपहि। डिंभ लग्गहि सृग गिद्धिय ॥
जय बंछै निज स्वामि। लगै ताली मन बद्धिय ॥
मंडलह हंस हंसह जुरै। जीय जोग गति उद्धरै।
निरकार ध्यान रापै शु निज। इम भव सारूपह तिरै ॥
छं० ॥ ९९० ॥

नृबैर भूत भव सकल। अकल आनंद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित। अहित हित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति। रमति स्वांमित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर बज्र। अङ्ग वज्जंग अरिन गन ॥
जंप्पौ सुरम जामानि जद। अनहद सद मत्ता मवन ॥
जानंत विदुष मति सकल तुम। बहुत बात जंपत कवन ॥
छं० ॥ ९९१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छिय सुफरि। जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छची भव उत्तरै। जंपि समर न्रप राइ ॥ छं० ॥ ९९२ ॥

रावल जी का बचन-राजनीति वर्णन।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात। सुनि कहौं जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति विद्द पहिलै सुध्रम्म। मालीय काम त्यों[2] न्रपति क्रम्म ॥
छं० ॥ ९९३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै सुहित ते हीन पुष्टि। मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छं० ॥ ९९४ ॥

फल फूल डार लुनि लेइ कच्छि। न्रप सचिय करषि कर हरै लच्छि ॥
नहि लेइ माल न्रप करि उपाइ। सरिजाइ सुफल त्यों लच्छि जाइ ॥
छं० ॥ ९९५ ॥

---

(१) कृ० ए०—बात, मो०जात।
(२) ए० कृ० को०—ज्यों।

अंतकोल मुष अद्व । ग्यान चय कालह सुझ्झै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़ । राति चै काल्लै[1] पलट्टै ॥
निंद मद्द धन काम । धाम आवरदा घट्टै ।
बंधनह अप्प अ रसुप्प किय । गज्ज जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्यौ नयन । नहि अचिज्ज नरकहिं[2] पिरै ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

प्रश्न-क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा । [3]कहैं राइ जामानि तव । किमि भव तरियै पार ॥
कहौ राइ जोगिंद तुम । गुरमति त्रिभुवन सार ॥
छं० ॥ ९५७ ॥

रावलजी का बचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त । जाग्रति सुषपति सुपन । तुरिय अवस्था ये च्यारहि ॥
ता मध्ये वय ग्रहै । लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव । देवकरि आवध मांनै ॥
स्वामि ध्रम्म आचरै । दुष्ट क्रित धरै न कानै ॥
समपै सुक्रंम सह हरि सहस । अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्ष स्वामि निज सुद्धरै । इम पची पारह तिरै ॥
छं० ॥ ९५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै । स्वांमि ध्रम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै । अप्प हरि ध्यान न मुक्कै ॥
सबद जोति रहै लीन । ध्रम्म कृत वासर क्रम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त । आय अरि षुत्तह ध्रम्मै ॥
संकलपि सीस सांई सरिस । मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन । एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

(१) ए० कृ० को०—त्रैहे (२) ए० कृ० को०—नरकह परै।
(३) ए० कृ० को०—"कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को०—देव। (५) मो०—मुकति।

पियै सगति धर श्रोन । पिंड पावक आहारै ॥
सांइ समप्पै प्रान । सीस उर शंकर धारै ॥
अंत तुट्टि पय चंपहि । डिंभ लग्गहि स्रग गिद्धिय ॥
जय चंछै निज स्वामि । लगै ताली मन बद्धिय ॥
मंडलह हंस हंसह जुरै । जीय जोग गति उद्धरै ।
निरकार ध्यान रापै जु निज । इम भव सारूपह तिरै ॥
छं० ॥ ६६० ॥

नृवैर भूत भव सकल । अकल आनंद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित । अहित हित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति । रमति स्वामित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर वज्र । अङ्ग वज्रंग अरिन गन ॥
जंप्पौ सुएम जामानि जद । अनहद सद मत्ता मवन ॥
जानंत विदुष मति सकल तुम । बहुत बात जंपत कवन ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है ।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छिय सुफरि । जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छत्री भव उत्तरै । जंपि समर न्रप राइ ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

रावल जी का बचन-राजनीति वर्णन ।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात । सुनि कहौं जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति विद्द पहिलै सुध्रम्म । मालीय काम त्यों[2] न्रपति क्रम्म ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै सुहित ते हीन पुष्टि। मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छं० ॥ ६६४ ॥

फल फूल डार लुनि लेइ कच्छि।न्रप सचिय करषि कर हरै लच्छि॥
नहि लेइ माल न्रप करि उपाइ। सरिजाइ सुफल त्यों लच्छि जाइ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

(१) कृ० ए०—बात, मो०जात ।
(२) ए० कृ० को०—ज्यों ।

सिरजोर सीस सचिव जौ होइ। होइ साप भेद विपरीत कोइ॥
ज्यों कौन पातवै रोचनेव। न्रप सावधान मन रहै तेव॥

छं० ॥ ९६६ ॥

लघु बट्ठि हट्ठि ज्यों करि उतंग। त्यों हीन नरनि[1] न्रप करै चंग॥
हुअ बंक डार जे चलहि झूलि। तिन छंटि छुटि बढ़वै मूल॥

छं० ॥ ९६७ ॥

जे भत्त राज मन्ने न पंक। तिन जर उपारि कट्ठै सुबंक॥
बंबूर बारि ज्यों बाग होइ। कंटकनि बंक भट रप्पि जोइ॥

छं० ॥ ९६८ ॥

जे धरा काज धरधरै धाइ। अंकुस गयंद त्यों जोर जाइ॥
वर जोर सचिव वधकर अपान। द्रिष्टतव[2] सरप ज्यों दुगध पान॥

छं० ॥ ९६९ ॥

परधान चीय न्रप जोर जाहि। धर जात वेर लग्गै न ताहि॥
[3]सेवकिनी पत्ति जित रामै नाह। विलसै ससचिव लै लच्छि लाह॥

छं० ॥ ९७० ॥

दूहा ॥ इह जामानी कथ्थ कथि। कहि संषेपिय उद्ध॥
सजौ जूह सज जुद्ध भर। सनमुष अरि वेनु युद्ध[4]॥

छं० ॥ ९७१ ॥

रावलजी का सब राजपूत योद्धाओं को समझना और सब का रणोन्मत हो का युद्ध के लिये उद्यत होना।

पद्धरी। संबोधि सुभट षुम्मान राइ। आभासि सबें अप्पा सुभाइ[5]॥
सामंत सीह अरसिंह बोलि। जैतसी लषमन लष्ष ओलि॥

छं० ॥ ९७२ ॥

साअंन सीह सदि लषम सीह[6]। सत स्याम सीह[6] रतनं अबीह॥
तेजसी राव कुंडल करंन। देवरा देव न्रिभ्भै सरन्न॥

छं० ॥ ९७३ ॥

(१) ए० कृ० को०—जनानि। (२) ए० कृ० को०—दृष्टंत।
(३) ए० कृ० को०—ज्यों सव किनी पत्त जिम रमै नाह।
(४) ए० कृ० को०—वे युद्ध। (५) ए० कृ० को०—राइ (६) ए० कृ० को०—बामंनसिंह।

आभासि भीम भय अभय सिंघ। सूरत्त दत्त एकंग रिंघ ॥
सामंग्र राइ भर समर राउ। उह्सै रोम भ्रगुटी उथाउ ॥
छं० ॥ ९७४ ॥
जंपेव ताम दष्षिन गुरेस। आयस्स सांइ अप्पौ सुदेस ॥
उच्चरहि ताग आहुट्ट ईस। अप्पौ सुमंत सामंत दीस ॥
छं० ॥ ९७५ ॥
प्रोकम्म कम्म उभ्भार इष्ट। असि दाव घाव नंषौ अदिष्ट ॥
दैवत्त कृत्य आघात अप्प। रष्षै सुदंड चारी सु दप्प ॥ छं० ॥ ९७६॥
तुम उंच नाम सूरत्त साष। लष्षियै एक मझ्झैव लाष ॥
सव सजौ उद्ध सौजुद्ध मत्त। कीरत्ति अत्ति बद्धै कवित्त ॥
छं० ॥ ९७७ ॥
जंपहि सुभट्ट सुनि समर राज। लष्पहु सु घत्त साब्रत्त काज ॥
असि झाक वाक बज्जै अयास। सम मिलहि सूर नर जोति भास॥
छं० ॥ ९७८ ॥
उच्चरिग ताम सामंत सीह। निज भ्रात जुद्ध लष्षहु स लीह ॥
सामंत सूर चहुआन भार। बुझ्झामि धीर बाजंत सार ॥
छं० ॥ ९७९ ॥
आये सुभट्ट रावल रहस्सि। उभ्भरे व्योम लग्गे उहस्सि ॥
आयौ सुकन्ह मुहवन्न तोम। सुभ्र अनुज बंध सिष्षहि सुरोम ॥
छं० ॥ ९८० ॥
बाने विरद बंधे सुच्चार। आवरिय अधिक सूरत्त भार ॥
भर हरिय भीर अग्गर सहार। संकरहि विषम सुर सांइ पार ॥
छं० ॥ ९८१ ॥
भज्जनां राइ संकर पगार। सरनैत भत्त बाहां उगार ॥
झल हलिग तेज वर भाल भास। सूरत दत्त लग्गै अयास ॥
छं० ॥ ९८२ ॥
उह्सै रोम भ्रगुटी उथाह। वीरत्त घत्त बद्धै वराह ॥
बिस्साल अंग आरत्त ओप। जग्गैव प्रलै मनु काल कोप ॥
छं० ॥ ९८३ ॥
रोमंच उद्ध झक्षरि उथाल। उच्चर्यो सिंघ अग्गे सुढाल ॥

इह मत्त रत्ति अम्भाव सानि। उतमेछ सज्जि उभ्भै उतानि।

छं० ॥ ९८४ ॥

बलिभद्र वीर कैलास वान। कुब्बेर दच्छ मंते मतान ॥
इह जुद्ध विद्धि अप्पै वषान। कलहंत केलि लग्गी भरानि ॥

छं० ॥ ९८५ ॥

उभ्भरै सद्द सुनि सुनि निसान। संभरिय राइ चहुआन पान ॥
आतुर अनंत पग मग्ग दान। पति सरस मुगध वांछित विहान॥

छं० ॥ ९८६ ॥

शिवजी का यक्ष से कहना कि इस युद्ध का संपूर्ण वर्णन करो।

कवित्त। सुनिय वत्त जटधार। चित उभ्भार रहसि रजि ॥
मन विलास तन भास। रोम उल्लास तास सजि ॥
कहैं दच्छ सम ईस। कह्यो वेताल विवरि कथ ॥
अति लग्गै आनंद। प्रेम पूरन भारथ्थ कथ ॥
प्राकंम नाम सुभटन प्रथुक। कहै वीर सा विवरि विधि ॥
असुरान पान हिंदू तुरक। ताहि सु जंपौ जुत्त अधि ॥

छं० ॥ ९८७ ॥

यक्ष का युद्ध का विधिवार हाल कहना।

दूहा ॥ कहै दच्छ कैलासपति। सुनि धर श्रवन सुठान ॥
सुभर जुद्ध लग्गे अतुल। चाहुआन सुलतान ॥

छं० ॥ ९८८ ॥

प्रातःकाल होतेही राजपूत वीरों का घर द्वार को तिलांजुली देकर युद्ध के लिये उद्यत होना।

कवित्त। होत प्रात सब सूर। बज्जि घरियार फट्टि पहु।
मिलि बारन बर राज। बीर संदेस तत्त कहु।
स्वर्ग मग्ग रुक्किये। चित्त रष्षौ पुनि धीरं ॥
अच्छरि वर संग्रहै। लेहु अच्छरति सरीरं ॥
इत्तौ न हेव दंपतिय हित। दुहुंन सरन हित ओजयौ॥

जाने कि चित्र पुत्तरि लिषिय । जीव कविन इन लग्गा ॥

छं० ॥ ६८६ ॥

दूहा । दै पानी ढिल्ली धरा । मन सा पानी रष्षि ॥
सो चिंत्यौ संभरधनी । जन्म सुकित्तिय अष्षि ॥

छं० ॥ ६९० ॥

लज्ज सुही गहियै इला । कट्टय कित्ति न लग्गि ॥
दिन सो नर मिलि आइयै । गोरी अग्गि सुजग्गि ॥

छं० ॥ ६९१ ॥

रावल जी का कन्हा से कहना कि तुम पीछे की सेना की सम्हाल पर रहो ।

जोर मंडि कन्हा रहै । बड़ गुज्जर रष्याइ ॥
सज्जि सेन चतुरंगिनी । उत्तर रतन बजाइ ॥

छं० ॥ ६९२ ॥

हात सूर सो उग्गते । चहुआना सह पार ।
कुक मच्चि सम्हो मरिय । जग्गि अभंगे भार ॥

छं० ॥ ६९३ ॥

सूर सुअन जुड़ित अयिग । गई सु तिथ्थि अतीत ॥
वाम कलह कंदल अनी । भौ प्रतिपदा अदीत ॥

छं० ॥ ६९४ ॥

कन्हा का कहना कि हम तुमसे पहले जूझेंगे ।

चित्रकोट पति सों कहै । कन्ह सुभर बर ताह ॥
हम तुम अग्गे झुझ्झिहै । दूः जुझ्झानी राह ॥

छं० ॥ ६९५ ॥

कवित्त ॥ गिर संभरि दच्छिन नरेस । निज अत्त मंत बर ।
तुम जंपहु सामंत । सूर अति तेज जुद्ध जुर ॥
आज देव तुम सेव । कौन साजै जुध -थ्थं ॥
पल असंष पुद्दहि । पयांर बंधौ बर हथ्थं ॥
पल परहि जाम तुट्टहि धरनि । जाम हड्ड कहै सुभ्भर ॥

दह गुनौ बीर बीरत्त जगि। तांम तेज बंधहि सुभर ॥
छं० ॥ ९९६ ॥

रावल जी का पुनः समझाना परंतु वीर कन्हा का हठ करके युद्ध में प्राण देने को उद्यत होना।

बिअष्परी ॥ तब रावर जंपै सम कान्हं। हौं बुझ्झौं तुम तेज महन्नं ॥
तुम रष्पहु सुपच्छ धर बंधं। तुम राजौ गति राज सु संधं ॥
छं० ॥ ९९७ ॥

तुंधर तेज नेज दल तोहं। तू रापै दच्छिन गिरि सोहं ॥
'तो पच्छा' जेहों बर वीरं। है सुर है राजै तौ नीरं ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

तब हसि कन्ह कहै पति बंधं। रजै नही तुम बिना निबंधं ॥
हौं बंधो बर बिरद चियारं। लहियै सो[२] लागंते सारं ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

मैं बंधेव बिरद तुम सोहं। सो जागें झेलंते लोहं ॥
अज्ज[३] कज्ज साईं मो कंधं। मो कंधै जोगिनि पुर बंधं ॥
छं० ॥ १००० ॥

जुड अज्ज[४] मो इन्द्र निरष्पै। अज मो कंदल देव दनु लष्पै ॥
पल परबत्त रचों गढ़ भारं। सलिता ओन प्रगट्टै सारं ॥
छं० ॥ १००१ ॥

जुध कोतिग कारी आनंदं। जोगिनि जच्छ बीर उनमदं ॥
रनचर आस करौं पल पूरं। को सामंत मत्त भर सूरं ॥
छं० ॥ १००२ ॥

तब समसिंघ कहै षुम्मानं। हौं बुझ्झौं तुम तेजर नानं ॥
मैं रष्पन तुम दिली न किन्हं। सोइ कारन मैं चिंतन चिन्हं ॥
छं० ॥ १००३ ॥

रष्षैं नही बर सिंघ पच्छ बर। बिनसै क्रत कारन जोगिनि पुर ॥

---

(१) मो०—तो पच्छे जैहै बर वीरं। (२) ए०—मौ।
(३) मो०—अन। (४) ए० कृ० को०—कज्ज।

तुम प्राक्रम्म लही भर सारं। बंधहु बंध भिरौ भर भारं॥
छं० ॥ १००४ ॥

तब रावर मिलि कन्ह प्रसंसे। आलगे राजे रह अंसे॥
छं० ॥ १००५ ॥

रावल जी का कन्ह की प्रशंसा करना।

कवित्त॥ धरिय हथ्थ सिर कन्ह। अप्प अति अत्ति प्रसंसे॥
आभासिय बर भर। अपान जंपे गुन अंसे॥
उभै पष्ष सम सप्प। बंध बंधे भर रप्पै॥
त्रिमल नेह निज लीह[1]। धम्म स्वामित्त सुलप्पै॥
उम्भारि तेग एकेक अग। स्वामि अग्र बोलै बिहसि॥
इष्षेव अग्र आसुर सयन। गयन लग्गि गज्जै रहसि॥
छं० ॥ १००६ ॥

रावल जी के आज्ञानुसार राजपूत सेना का गरुड़व्यूहाकार रचा जाना।

अप्प सुभर आहुट्ट। ईस देषे आति दुज्जर॥
ताम हरषि सुभ्र तेज। गज्जि बीरत्त बीर बर॥
तब जद्दव कूरंभ। इष्षि चिंते मन अप्पं॥
अनिय व्यूह सज्जन। सुभार उभ्भर दल दप्पं॥
बुझ्झक्षेव ताम चिचंग पहु। बर आसुर झझ्झकार बर॥
भिड़ै न अकल अरिहर गहर। अति आवट्टहि दुट्ट षल॥
छं० ॥ १००७ ॥

तब जद्दव कूरंभ। राय रावल[2] प्रति बद्दिय॥
चामर छत्र रपत्त। ग्रद्ध व्यूहं रचि गट्टिय॥
एक पष बलिभद्र। एक पंपह जामानिय॥
पुंच[3] कंध पुंडीर। सेन संमुह सुरतानिय॥
पग पिंड सिंघ आहुट्ठ पति। पुच्छ रचि मारू महन॥
बामंग अंग प्रथिराज कै। सुभर जुद्ध मत्तौ गहन॥

(१) ए. कृ. को.-नेह। (२) मो.-जद्दल। (३) ए. कृ. को-चैंच।

छं० ॥ १००८ ॥

उधर हम्मीर का बीच में देकर यवन सेना का चन्द्र व्यूहा कार होना।

दूहा ॥ उत आसुर सेना रची। मझ्झ्झे[४] हाहुलि जंवु ॥
वह देषी चहुआन न्रप। [५]मुष भलहलि लगि लुंब ॥
॥ छं० ॥१००९ ॥

पुंडीर सेना का धावा करना।

कवित्त ॥ अरध चंद्र तत्तार। पान षन पान पुरेसी ॥
षां रुस्तम मारुफ। गरुअ गष्परति गुरेसी ॥
हाहुलि राव हमीर। चमर बंधै दल दोही ॥
जिहि संसारह आय। सांइ दोही सिर जोही ॥
बिहु भाय ढलकि बद्दल मिलिग। करिगह मीरह दुअ वहसि ॥
पुंडीर राइ पावस न्रिपति। लरन लोह कढ्ढे सुहसि ॥
छं० ॥ १०१० ॥

दूहा ॥ फुनि पावस पुंडीर पति। बरु करि बिनवै बत्ति ॥
गहि आनौ सुरतान कौं। कै हमीर सिर लत्त ॥ छं० ॥ १०११ ॥

पृथ्वीराज का पावस पुंडरी से कहना कि नमक हराम हम्मीर का सर अवश्यमेव काटा जाय।

तब राजा प्रथिराज कहि। सुनि पावस पुंडीर ॥
इतनौ परिहस सार[१] तुअ। काटहि सिर हम्मीर ॥
छं० ॥ १०१२ ॥

जथ्थ गरुअ गोरी सयन। गगन लग्ग उंडीर ॥
हुकम हंकि प्रथिराज दिय। तथ्थ भिरन पुंडीर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

(४) मो.-मझैं। (५) मो.-मझ्झ लहलि लागि लेव।
(१) ए. कृ को.-साह।

पुंडीर योद्धाओं का युद्ध।

रसावला ॥ जे पुंडीर जत्ती। महामत्त घत्ती।
लगैं लोह गत्ती। मनो बीज षित्ती ॥

छं० ॥ १०१४ ॥

अविहात छत्ती जुटे मेछ पत्ती ॥
मुदंगी सुरत्ती। रुरी भोरि[1] मत्ती ॥ छं० ॥ १०१५ ॥
गजं घाय अत्तौ। सतं बानि रत्ती ॥
गहे दंत दंती। चढी कुंभ मंती ॥ छं० ॥ १०१६ ॥
नचै जुग्गवंती। मनो इन्द्रपंती ॥
रुधी धार रत्ती। मनो इन्द्र हत्ती ॥ छं० ॥ १०१७ ॥
इसी बीर बत्ती। सु भारथ्थ नत्ती।
निरष्षी फिरत्ती। मनं बेन रत्ती ॥ छं० ॥ १०१८ ॥
दुहं सेन अत्ती। सुअं बानि रत्ती[2] ॥ छं० ॥ १०१९ ॥

कवित्त ॥ घरी अद्ध आवत्त। मेछ हिंदुअ जुध जुट्टे ॥
सार धार विहार। सार झर सारह तुट्टे ॥
दई बाह आहुट्ठ। समर पारस रह धाइय ॥
घरिय एक घरियार। सार बज्जै घन घाइय ॥
प्राहार धार धारह धनी। कल कलंक मम्हौ चढ़िय।
प्रतिपदा सघन आवत्त जुध। घरिय एक आवृत बढिय ॥

छं० ॥ १०२० ॥

हम्मीर की रक्षा के लिये तीन हजार गष्षरों सहित कई यवन सरदारों का घेरा रखना।

सहस तीन गष्षर गुराय। हाहुलि हमीर वहि ॥
मुररि मुररि मारूफ। ओट तत्तार षान रहि ॥
पल षुरेस षन षान। जानि छंडिय षग झिल्लिय ॥

(१) ए. कृ. को.—नीर। (२) ए. कृ. को. वत्ती।

मनह महिप मद मत्त । [1]कहर कानी दइ ढिल्लिय ॥
पुंडीर राइ पावस पहर । झर उझार लग्यौ गयन ॥
कूरंभराय अरु जादवनि । अमर मोह भुलल्यौ मयन ॥

छं० ॥ १०२१ ॥

पुंडीर सेना का हम्मीर पर धावा करना।

हाय हाय उच्चार । भिरे पुंडीर सूर झलि ॥
बजिग लोह तन घन विहार । ब्रह्म संधी न मुष्प पुलि ॥
पग्ग झटकि पायक प्रमोन । बीर उत्तरे सरम्भर ॥
रज्जि मेर बज्जे प्रहार । घाय अभग भंग धर ॥
चढि कंध कमंधन जोगिनी । सद्द मद्द उन मद्द फिरि ॥
नारद्द सु तुंमर जुद्ध चर । जै जै जै उच्चार करि ॥

छं० ॥ १०२२॥

रसावला ॥ सु पुंडीर भारी, मद्दमे पचारी । सुग्रं धग्ग झारी[2], सु सौभै उभारी

छं० ॥ १०२३॥

सो नंगा सु नारी, हकारै उभारी । दई देवि तारी, गिधिं उत्त फारी॥

छं० ॥ १०२४ ॥

करि नैर तारी, गिरिचा प्रहारी । कुलं सत्ति तारी लगैं जानि भारी॥

छं० ॥ १०२५ ॥

षिझै बीर कारी, रतं नैन सारी । मद्दं मोह धारी, छिनं मैं विसारी॥

छं० ॥ १०२६ ॥

कह्नं अस्स तारी,[3] सुभैं रथ्थ कारी । उतंमंग पारी, धवै षग्ग धारी ॥

छं० ॥ १०२७ ॥

निषंदी विधारी, असीसं उचारी । तिनं जोग गारी मुकत्तीन[4] हारी॥

छं० ॥ १०२८ ॥

---

(१) ए. कृ को.-कहर काती दई ढिल्लिय ।
(२) ए. कृ. को.-धारी । (३) ए. कृ. को.-नारी ।
(४) ए. कृ. को.-मुकत्तीत ।

पगं मग्ग षारी, झिनं मझ्झ झ पारी। सिरं ईस सारी. हर् यौ ब्रह्मचारी ॥

छं० ॥ १०२९ ॥

हम्मीर के एक भाई, पुंडीरों में से बारह योद्धा और वेंजल खवास का काम आना।

कवित्त ॥ परिग घाय नारेन। बंध हंमीर मुकतिबर ॥

द्वाद्दस षट पुंडीर। सुभट उत्तरिय षग्ग झर ॥

धीर षवास वेजुला। झार धर धर तुटि बंधर ॥

उप्पर मंडि उचार। बस्यौ द्वाहुलि हंसंमर ॥

भजि बंस अग्ग पारिग परी। परिगह सौसह सीर धरि ॥

जीवत मरत्त भंजन दुजन। सांम द्रोह कीजै न बर ॥

छं० ॥ १०३० ॥

पुंडीर सेना के धावा करते ही यवन सेना के एक लाख जवानों का हम्मीर को घेर लेना।

दस हजार असवार। लष्य पैदल सुपंति करि ॥

जवर जंग डरवान। छूटि हथनारि कूह करि ॥

सबर सूर पुंडीर। सार सहि सन्हो धायौ ॥

मार मार उच्चार। बीर बर बीर उचायौ ॥

पन वढ्ढि सूर कायर घटे। धरिय दीह उधरीय बर ॥

हम्मीरराइ जंबू धनी। लरन लोह पावस पहर ॥

छं० ॥ १०३१ ॥

पावस की पावस से उपमा।

मुरिल्ल ॥ झरि पावस सिर वर प्राहारं। बरषत रुढ्ढि धरं छिछवारं ॥

पग विज्जुल जोगिनि सिरधारं। बग्गी सो जंबू परिवारं ॥

छं० ॥ १०३२ ॥

मोटक ॥ कटि टूक करें जिनके किरयं। मनौं इंद्रवधू धरमें रचयं ॥

[1]झमकै सषग्गीन पग्गनि वजै। सुनि बद्दति झिंगुर सद्द लजै॥

छं० ॥ १०३३ ॥

(१) ए. कृ. को.– झमक्कै स षग्गा नग्गन वजै।

लपटाइ सुसोभिय वेलतरं। पर रंभन रंभन रंभ बरं॥
अकुरी रढि बंलि सुबीर बरं। बहि पावस पावस भारभरं॥
छं० ॥ १०३४ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट लेना।

कवित्त ॥ स्वामि वचन संभारि। हक्कि हंगै पावस तह॥
लापति दल मिलि गयौ। साम द्रोही हंमीर जह॥
उहि सोंही करि संग। इहित कर पग्ग समाह्यौ॥
धरी सुतन षिजि पेत। सीस दुरजन कै वाह्यौ॥
वाहंन पग्ग कंप्यौ पिसुन। धमकि अंग धरजिहि परयौ॥
नारद वीर वेताल मिलि। जोगिनि सद जैजै करयौ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

दूहा ॥ सीस छेदि लिय संगि वर। मि साह दल गीर॥
आय सूर सामंत पें। धनि धनि जंपत धीर॥
छं० ॥ १०३६ ॥

कवित्त ॥पिग्गि धरनि हम्मीर। भीर भंजी सेना भिरि॥
निघटि सेन हम्मीर। तदिन ठढ्ढौ पुंडीर लरि॥
षान षान षावास। चढ्यौ धोराहर तद्द॥
स्वामि ध्रम्म पावस सुपति। चढे कित्ती चित सद्दौ॥
दलमलिग नाम दुज्जन सुपर। दह भज्जिय प्रथिराज चर॥
धीरंज धीर धीरहु तनौ। जस सुध्रम्म लीनौ सुधर॥
छं० ॥ १०३७ ॥

पावस पुंडीर का हम्मीर का सर काट कर राजा के पास आना और राजा का उसे स्वामिधीन कहना।

जित्ति सेन हम्मीर। मान मरदे हम्मीरं॥
बजिय बाज नीसान। धजिय गज सबद सुबीरं॥
न्रप अग्गी उर दझ्झत। सुतन चंदन भो चंदन॥
अंछत संचिमन उलमि। भयौ अरि कंद निकंदन॥
सौं द्रोह कह्यौ चहुआन बर। तिन मुष सों साध्रम्म कहि॥
पुंडीर धीर तसलीम करि। तेग वेग चौहथ्थ गहि॥
छं० ॥ १०३८ ॥

च्यारि च्यारि बर तेग । राज अप्पी पुंडीरं ॥
बर बंधयौ हम्मीर । बंध बंधल हम्मीरं ॥
तुं धीरं जा बीर । धीर किन्नी सोइ किज्जै ॥
चहुआना सुलतानं । हथ्थ तेगह अब दिज्जै ॥
सो जननि भूत अब्बं गरिय । पुत्तह मंगल गोन बर ॥
जो जीवत पंचह पंजरै । गहैं साहि त्यौ स्वामि धर ॥

छं० ॥ १०३९ ॥

तूं चंदन कहि चंद । धीर सम धीर समानं ॥
तूं अजंव बंधे पग्ग । षग्ग षट्टौ षुरसानं ॥
तुं चालुक्को चूकि । भयौ सन्नाहं सु साई ॥
तैं बर जितते तहौ । हृय हाहिम उग्गाहौ ॥
अहौ नरिंद गोरी दलह । तो अग्गै चिनवर असुरं ॥
बंधी सुतेग[1] सुरतान पर । दै दुबाह दुज्जनह उर ॥

छं० ॥ १०४० ॥

दूहा ॥ धनिं पावस पुंडीर पति । धनि धनि कहै सुदेव ॥
लै सिर अरि नृप पैं गयो । कह्यौ आगिलो भेव ॥

छं० ॥ १०४१ ॥

हम तुमसों बहु वचन कहि । तब लाहौरी बत्त ॥
अब दल गज्जन साहि कौ । षग बज्जन रह घत्त ॥छं० ॥ १०४२ ॥

पावस पुंडीर के भाई का मारा जाना और पुंडीरों का पराक्रम वर्णन ।

रसावला॥सुलित्तान रज्जं, बजे षग्ग सज्जं । चढ़े लोह षज्जं, बंधे गंसि लज्जं॥

छं० ॥ १०४३ ॥

सुने सद्द भज्जं, निसानं निगज्जं । रुरी अंत रज्जं, ख्रिनाली विरज्जं ॥

छं० ॥ १०४४ ॥

तुटे कंध गज्जं, कमङ्गंति भज्जं । भमै षग्ग छज्जं, मनों बीज धज्जं ॥

छं० ॥ १०४५॥

भयानंक कज्जं, तुटै वाजि मज्जं । परे भूमि तज्जं, ... ॥

छं० ॥ १०४६ ॥

(१) मो०—पग ।

ढरै सूर अंती, गजं सोम दंती। कढै भूमि छत्ती, सुभारथ्थ सत्ती॥
छं० ॥ १०४७ ॥

सुतं सुत्त मानं, उछारै उसानं। कढी देवि जीयं, बरदाइ दीयं॥
छं० ॥ १०४८ ॥

हिंदू मेछ सूरं, तुरं बाजि तूरं। उपम्माम पूरं, गुरं भोजि घूरं॥
छं० ॥ १०४९ ॥

दुधं मट्ठ दूरं,......................। दे। उंता उतारी, ...॥
छं० ॥ १०५० ॥

पार रुद्धी छरी, काल नट्टै जरी। चट्ठ पट्टं अरी, बाहवानं सुरी॥
छं० ॥ १०५१ ॥

हिंदवानं गुरी, रम्नती अच्छरी। कीय सूरं जुरी, ज्यों भरथ्थं थुरी॥
छं० ॥ १०५२ ॥

घरीं[1] च्यारं चुरी, चबं जे पुक्करी। भेद हिंदू अरी, मेछ प्रत्तंतरी॥
छं० ॥ १०५३ ॥

पार पारस फिरी, सुरत्तानं गुरी। मान विंटं परी, ससी रद्दं जुरी॥
छं० ॥ १०५४ ॥

कवित्त॥ घरिय सुच्यारि चरिच। उदै पति अरून चढ़त बर॥
[2]परि पारस लहु बंध। मथिय गोरी सयन्न भर॥
चिद्स असुर नर नाग। जीति पुंडीर उचारिय॥
जीति कित्ति जमनीति। जित्ति पल कुल पय कारिय॥
दंपत्ति ईस जय जय कहय। पंषिन जै जै उच्चरिय॥
सूरंत चुकि हयवान[3] कजि। जै अच्छरि पंकति फिरिय॥
छं० ॥ १०५५ ॥

शहाबुद्दीन के हाथी का वर्णन।

सेत छत्र सुलतान। सेत चोरनि ढुलावै॥
गज्ज मेघ आरिष्ट। सेन संमुह हलावै॥
जूह जुद्ध आवत्त। चाव चतुरंग चंपि चलि॥

(१) ए० ह०—धरी

(२) ए० कृ० को०—जीत की तिम जीति। (३) ए० कृ० को-हथथान।

धुह निहचल चहुआन । मेर आनंद चिंत डुलि ॥
मधपान मान घरि अद्ध टलि । हिंदु मेछ कट्टै विषग ॥
जंगली जुद्ध सामंत सहर । सिर बज्जी घरियार मग ॥
छं० ॥ १०५६ ॥

दोपहर को रावल समर सिंह जी और तत्तार खां का मुकावला होना ।

समर सिंह रावरह । सहस तेरह हय छंडिय ॥
उत ततार गोरिय । बिलष्ष रोहो रन मंडिय ॥
बिरल ढाल षोडन । अभंग षग षेलि बिहथ्थह ।
कहैं चंद बरदाय । सुनहु छत्रिय इह कथ्थह ॥
भंजि भर भरम जंमन मरन । तिरन तुंग सद्धै समर ॥
मुरि गये छंडि भारथ्थ में । कोइ अग्गै अष्षौ अमर ॥
छं० ॥ १०५७ ॥

दूहा ॥ मिले सूर सामंत सब । असुर तेग सम कढ्ढि ॥
समर सिंघ रावर समर । समर भुअन बर चढ्ढि ॥
छं० ॥ १०५८ ॥

भंजि भरम जंमन मरन । कर नन सिंघ समार ॥
[1]मुरिगम छिन भारथ्थ किय । अंषो अंष अमार ॥
छं० ॥ १०५९ ॥

रसावला ॥ हिंदू मेछं भुरं, तार बज्जे हरं । षग्ग षेलै बियं, घाइ बज्जे नियं ।
छं० ॥ १०६० ॥

सार सारं भुरं, मंत मत्ते परं । बारुनी बारया, सूर पाना रया ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

दंत कट्टै करी, बीर नंचै षरी । ढाल मालं ढरी, गज्ज जुथ्थं परी ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

थान थानं रुरी, रोस ज्यों विच्छुरी । जोत ओतं जुरी, काल क्रयाम्नं फिरी ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

(१) मो०— मुरिग जिन भारथ्थ किय ।

घाट जा उत्तरी, फंद कट्टे नरी। सीस जा उत्तरी, दोम नंचै धुरी॥
छं० ॥ १०६४ ॥

समर रिंह जुरी, सार बितं तुरी .... ।
छं० ॥ १०६५ ॥

दूहा ॥ समर सिंघ आरध्य मिलि। उत मिलि पान ततार ॥
अप्प अप्प भीरम्म करि। ज्यों वद्दल घन सार ॥
छं० ॥ १०६६ ॥

युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ दुअं सेन हक्कै हलक्कै गुमानं। वजे तुंव तुंवो द्रुमं के निसानं॥
भयं नफ्फेरि भेरी भयानं। मनो मेघ गज्जै दिसानं दिसानं ॥
छं० ॥ १०६७ ॥

वजे घाइ आवद्ध बज्जी हपाई। करी दीन दीनं दु दीनं दुहाई ॥
हवक्की हवक्का करै नेज नेजं। महा मल्ल वल्लै ग्रमं जानि तेजं॥
छं० ॥ १०६८ ॥

गिरै उतमंगं उठे श्रोन लल्लै। सुभै दंग लग्गे सुपावक्क प्रल्लै ॥
नचै कंध धीनं कबंधं कलापं। जगी जोगनी जोग जापं अलापं॥
छं० ॥ १०६९ ॥

रंगी रंग भूमी वितालं उसद्दं। घरै कंध उद्धं विरद्दं विरद्दं ॥
गयंनंति गिद्धं सुसिद्धं विमानं। वरं रंभ रध्यं सुरं तंत थानं ॥
छं० ॥ १०७० ॥

षवं लोक पालं कहं कूह भीरं। लियौ तात संगं महा मल्ल वीरं॥
जयौ आप जोगिंद जालप्प थानं। वजी डक्क डौरो सु सिंगी गियनं॥
छं० ॥ १०७१ ॥

तहां तत्त वेदो कवी चंद गट्ठौ। उमा ईस दीसं वलीभद्र ठट्ठौ ॥
तहां सुष्प दुष्पं न मानं न तातं। चयं तुंग तुंवी[2] महा मोह वात
छं० ॥ १०७२ ॥

दूहा ॥ जालप सों जटधार कहि। समर समर आवृत्त ॥
देव न दानव असुर सुर। इह जुद्धानी वत्त ॥ छं० ॥ १०७३ ॥

(१) ए० कृ० को०-लगी। (२) ए०कृ० को०—त्यंग त्ववी।

तत्तार खां के मारे जाने पर निसुरत्त खां का समर करना।

कवित्त ॥ मुरत षान तत्तार। ताम निसुरत्ति षान लषि ॥
अनुज बंध साहाब। भ्रम्म स्वामित्त सूर तषि ॥
सहस दून सेनो। सुभार गज्जे गरुअत्तं ॥
बीर धीर वर बंस। जुद्ध जाने जुग घत्तं ॥
उच्चरै मंच चर आसु चिर। अनिय बुंध षल्लै विहसि ॥
षमरंत बीर बिरदैत घन। कलपि प्रान उभ्भारि असि ॥
छं० ॥ १०७४ ॥

चंपत आसुर सेन। इक्क उभ्भार भार असि ॥
हल हलंत दल हिंदु। भइय षुस्सान भीर बसि ॥
ताम कन्ह गुरु मन्त्र। षग्ग सज्जो सु व्योम सिर ॥
सिंघ कज्ज चिचंग। लाज गज्जे व भार सिर ॥
सय सत्त सथ्थ भर बीर वर। इक्क धुक्क बोले बिहसि ॥
बंधेव चाल मन मंडि हरि। लोहरिम्म खग्गे रहसि ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

मुकुंदडामर ॥ मिलि लोह उहस्सि उहस्सिय हस्सिय आवरि[1] बीर सुधीर भरं ॥
सब जंपिय इष्ट अभिष्ट तनं पति जग्गिय अस्सि उहस्सि भरं ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उभ्भर आनन सूर उवंन उवं[2] ॥
असि व्योम सुधूअ धरे धुअ मंडल सूर प्रसंसिय सूर सुअं ॥
छं० ॥ १०७६ ॥

मिलि षग्ग उनग्ग करूर करष्षिय षंडहि षंड बिहंग षलं ॥
धरकंत धरद्धर भार भरभ्भर होय हलं मल दून दलं ॥
बिहरंत धराधर सार बिषंडल तुट्टित बाह दुबाह दुरं ॥
मुरकंतह हड्ड कडकडत कंधर श्रोन दउक्क दउक्क जुरं ॥
छं० ॥ १०७७ ॥

हहकंत हकंतह वक्कत वक्कत सैल हवक्कह वक्क पगं ॥
बचयं भर आनंदु आनंदु अप्पति कंठह कंठ सुकंठ लगं ॥

(१) मो०—आदरि। (२) मो०—अनत्त उचं।

खिमम' कित बाजिय सार सुसाजिय तुट्टि सुसुंड चिकारि भजं ॥
पल पूरिय गूंदह कीष परारिम श्रोन प्रवाह दुवाह सजं ॥
छं० ॥ १०७८ ॥

घनन'कित' घंट सकत्ति स झूरिय पूरिय कंठ पिपास धरं ॥
धर नंचिहि वीर सुभीर बजामह गिद्धि झारम्झार होर झरं ॥
तब गज्जिय कन्ह महाभर उभ्भर दुभ्भर हंकि हिलोलि दलं ॥
दह पिंड अहुट्टिय आसुर सुभझर हंकिय षंपिय हिंदु दलं ॥
छं० ॥ १०७९ ॥

निसुरत्त के एक हजार योद्धा मारे जाने पर शाह का उस की मदत करना।

कवित्त ॥ दल आसुर दह पिंड । लोह झर भर आहुट्टिय ॥
सहस एक निज सेन । देषि निसुरत्ति सु घट्टिय ॥
तब आवरतन वीर । सेष सेना आभासिय ॥
मम भज्जौं धरो लाज । करौं कंदल असि रासिय ॥
परसंसि सहस सेना सकल । बल बंधयौ साहाब गजि ॥
तजि मोह पिंड सजि भिरति मन । भाय दीन महमुंद भजि ॥
छं० ॥ १०८० ॥

दूहा ॥ इह कहंत दल बल भरिग । धरि दिसान सुलितान ॥
उररि सेन उप्पर परिग । चहुआनो सुविहान ॥
छं० ॥ १०८१ ॥

कन्हराय और निसुरत्त खां का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं कन्ह आवंत सेनं । सयं तीन सेषं भरं अप्पछेनं ॥
तजे इन छोडंन गज्जे गहक्के । दुअं पास क्रप्पान धारे सुबक्के ॥
छं० ॥ १०८२ ॥

करें झार उभझार झारं करारं । समै सूर क्रम्मै थलं सार सारं ॥
हहक्कंत धक्कंत धक्कंत धीरं । दुए षग्ग षंडे धरं षग्ग भीरं ॥
छं० ॥ १०८३

(१) मो०—घननंतिय ।

कटै जंघ जंगं बनं रंभ जानं । पलं गूद हड्डं थरं सम्म थानं ॥
अलुभ्झंत अंतं सुभट्टं सुपायं । करै घाय सेलं दुहथ्थें दुहायं ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

फरक्कंत फेफं लरक्कंत डिभं । धरक्कंत झुझ्झै धरं हंकि सिंभं ॥
पलंचार स्रोनं षरं हंस चारं । अघायं सु घायं नचै सुभ्भकारं ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

लगे आसुरं हिंदु सों षग्ग षारे । करें घाय गज्जे गहक्के गुरारे ॥
सयंतीन ताई परे जाम मंतं । सतं बीस अग्गं करें हिंदु अंतं ॥
तबै कन्ह देवं निसूरत्ति षानं । मिलं दिट्ठ दिट्ठी करूरं दुरानं ॥
छं० ॥ १०८६ ॥

दुअं हक्क हक्के गहक्के व सूरं । बिरहैत दूनं दुअं जुद्ध पूरं ॥
धरै स्वामि ध्रम्मं दुअं उद्धम्मं । दुअं तेन धारी जुरे जुद्धम्मं ॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दुअं हक्कि आसासि साभासि दूनं ।दुअं संगि उभ्भारि निभ्भारि जूनं ॥
करीसिंह साहाव सोसाहि आनं। मिले झुझ्झ ढिझ्झे हुकंठीर जानं॥
छं० ॥१०८८ ॥

षस्यौ कन्ह गज्जे व लग्यौ अयासं । दुअं आय अड्डे निसूरत्ति तासं
दुअं षंध हम्माम कम्माम षानं । हवस्सी चले हंकि सो कन्ह ढानं।
छं० ॥ १०८९ ॥

करै मार झारंस उभ्भार मेजं । फटै टट्टरं दून तुट्टंम रेजं ॥
हने षग्ग कंधं दुअं सीस झारे । मनों स्रीफलं फट्टि मल्लं मुठारे॥
छं० ॥ १०९० ॥

बिना अंसु कल्लेवरं कंन्ह नंषे।षस्यौ रिम्म संमं धरे जुद्ध पंषे ॥
मिले हक्कि कन्हं निसूरत्ति षानं।करे षग्ग उभ्भै चवै ढान ढानं॥
छं० ॥ १०९१ ॥

हए षग्ग झारं दुअं सीस तुट्टे । लगे व्योम कंमंध मासूर उट्टे ॥
दुअं वाह षग्गं उछज्जे बिराजें । बिना देवलं इंदु धज्जा सुसाजें॥
छं० ॥ १०९२ ॥

असी झार झारे तिनं बप्प लग्गं । धरं कोनि षट्टै जुरै वीर जग्गं ॥
उठे सेन कल्ले वरं स्तूर षेतं । दुभं वीर झंझझ्झै निजं स्वामि हेतं ॥
छं० ॥ १०९३ ॥

पसंरो तुरक्कं सबै हिंदु तासं । धन धन्नि जंपै सुरं सो अयासं ॥
करूरं सुगत्ती जगी जोग राहं । लहै अच्छयं लीकसो हंस ठाहं ॥
छं० ॥ १०९४ ॥

इसी जुद्ध कन्हं महावीर कीनं । महा जोति में जोति संध्यान मीनं ॥
महाजोग ध्यानं सुग्यानं जुमत्ती । जुरै जुद्ध पार्वतिका सार हत्ती ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

जिकै कन्ह चिचंग सों बोलबोले । तिकै परग मग्गं दरंबार पोले ॥
इसीं जुद्ध सेनापती राउ कीनो । जिने पान निसुरत्ति कों भिस्त दीनो ॥
छं० ॥ १०९६ ॥

कवित्त ॥ परे षान निसुरत्ति । करै प्राक्रम उद्दअति ॥
सुभट सहस सारद्द । सथ्थ निज रोइ मुत्ति पिति ॥
सो सुनि आसुर सेन । भयौ हलाहल षालमन ॥
सायर लहर उलट्टि । कप्पि थट्टं थट्टं घन ॥
संभले तांम साहाब तमि । क्रमि सुअंत झलझाल चषि ॥
कलमलिय कोप आरत्त तन । फिरै तप्पि साषित्त लषि ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

मियां मुस्तफा का धावा करना ।

मियां मान मुस्तफा । उभै बंधव असि उब्भर ॥
धरा रोम उद्धरन । धरा स्वामित्त समुद्धर ।
सोय निरषि साहाब । दई अग्या तमि तामं ॥
तुम लष्यौ तत्तार । भार मंडे सिर कामं ॥
निसुरत्ति हयौ रावर भरन । हलहलंत तत्तार दल ॥
तुम जाय जुरौ उप्पर करौ । परौ बंधु बंधेव भर ॥
छं० ॥ १०९८ ॥

(१) ए० कृ० को०– चले ।

रावल जी के सरदारों का अतुल पराक्रम और दोनों भाई मुस्तफा मीरों का मारा जाना ।

भुजंगी। दुअ संभले बाच गोरी नरिंदं। सजे व्योम सीसं विकस्से सुबिंदं॥
दुअं नाय सीसं चले अस्त्रधारी। मनों उग्भरे बीर बीरंत भारी॥
छं० ॥ १०९९ ॥

सहस्सं दुअं पंच सथ्थं समीरं। चले बाग उच्चै बिरच्चै अभीरं॥
मिले आय अल्हु व आहुट्ठ रायं। भरं अत्ति चिंते बनी धंन्नितायं॥
छं० ॥ ११०० ॥

गर्जे जैत सिंहं अरस्सीह बीह। तमे तेजसी बीर बावंन लीहं॥
नरं सिंह साजंन सो बंधिचालं। रजै तेज रत्तं नसारंत भालं॥
छं० ॥ ११०१ ॥

बधे बीर सामंत सो बीर रूपं। अरज्जुन्न जेमं अरज्जुन्न ओपं॥
भरं भीम जेमं गजे भीम देवं। जगं माल जग्गे घरी साल केवं॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सहस्सं समेकं सतं एक सथ्थं। मिले षेत षग्गं गजे हथ्थ हथ्थं॥
तिनं मुस्तफा मान सो सेन हक्के। धराबीर बाजिच मीसान धक्के
छं० ॥ ११०३ ॥

सुरं पूरि सिंधुर वद्द सुषेतं। झलक्कं झलक्के बंधे बंध नेतं॥
तवै आसुरं दीन गोरी दुहाई। जपै आन षुम्मान हिंदू लराई॥
छं० ॥ ११०४ ॥

दुअं संभरे इष्ट अप्पं अपानं। मिले नेत धारी उभारै क्रिपानं॥
रुके बान भासंग मुद्दै मरीचं। तिरच्छे मिले षग्ग तत्तं तिरीचं॥
छं० ॥ ११०५ ॥

तिने तार आवद्ध बज्जै त्रिकूटं। हुवै षंड षंड लगै जूट जूटं॥
कटै जंघ रंभं समं हेम भासं। ढरै बाह कम्मोद नालं[1] सुरासं॥
छं० ॥ ११०६ ॥

परी सीस हुक्कै सुधक्कै कलेवं। रजै बीर रस्सं विसम्मे सुदेवं॥

(१) ए० कृ० को०—लानं

बलक्कंत श्रोनं अवोसं प्रवाहं। पलं कीच मच्ची सरुझ्झे सराहं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

धरं गज्ज भारं दुआरं करारं। तरं ढाल नेजा दुरोजा उभारं ॥
घनं वालुका बाढ आसत्ति रेहं। रसंमं असंमं उतं रभ्भ[1] देहं ॥
छं० ॥ ११०८ ॥

नदी रत्त पूरं गजं सीस कच्छं। समं अप्प वेनी नरं तंत मच्छं ॥
रजे केन उस्नीष आवृत्त रूपं। जलं जात वेनं अली नेन ओपं ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

कटे इभ्भ बाहं सग्राहं करूरं। मिले कम्म है गात भातं दुरूरं ॥
मराली ग्रहे तंत अंतीस मद्दी। रजे पंष हारी उदारी सुमिद्धी ॥
छं० ॥ १११० ॥

इसौ जुद्ध आजुद्ध मन्नौ[2] अपारं। मिले बाहु घत्ता तुटे मुत्र सारं ॥
लषे देव आइब्ब कौतिग्ग उत्तं। न दिट्ठौ मनं अप्प मन्नै अभुत्तं ॥
छं० ॥ ११११ ॥

जुटे मुस्तफा सीह सामंत षग्गै। दुअं वृत्तधारी क्रितं स्वामिअग्गै ॥
उभै धारि उभ्भारि संगी दुहथ्थं। जपै आनंदेस जपै इष्टतथ्थं ॥
छं० ॥ १११२ ॥

दोऊ लग्गि[1] करं चले चंपिपूरं। लगे हथ्थ बथ्थं जमं जद्द सूरं ॥
तनं षंड षंडं समं सानि मंसं। चले उत्त गत्ती न लष्येव अंसं ॥
छं० ॥ १११३ ॥

महाजोध षिषंग औधूत राजं। अयो जानि मेरं डिगै नाहि वाजं
प्रलै काल लग्गौ सुअसुराम सेनं। करे देव जै जै उचारं तिबेनं ॥
छं० ॥ १११४ ॥

करं जुद्ध बिरदैत रावल्ल समानं। नहीं सूर कोई इसे नेजवानं ॥
छं० ॥ १११५ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—इत्त
(२) ए० कृ० को०—मत्तौ। (१) ए० कृ० को०—लान।

मीर मुस्तफा के मारे जाने पर शाही सेना में से ग्यारह मीरों का धावा करना।

कवित्त ॥ पर्‌यो मान मुस्तफा। इष्षि धर रोम समुद्धर ॥
हल हलि सेन ततार। पच्छ दह पिंड धरद्धर ॥
तब मसंद दह एक। आय अड्डे बर बीरह ॥
मिले सुभर चिय्रंग। जंग उत्त असि धीरह ॥
गजनेस साजि आयास सिर[1]। लगे लोह तत्त तरसि ॥
रन परे विहंडे षंड भर। अनिय धार सोनं[2] धरसि ॥
छं० ॥ ११११६ ॥

अरिल्ल ॥ पर्‌यौ देषि मुस्तफा महाभर। हल हलि आसुर सेन रिंघनर ॥
लग्गं होय बीर रस ब्योमह। गज्जहि सूर कट्टि पलको मह ॥
छं० ॥ ११११७ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं में घोर युद्ध।

त्रिभंगी ॥ इष्षि ततारं सेन सुभारं मुस्तफ छारं हलिहालं ॥
जग्गे तन बीरं अप्प सनीरं धीर सुधीरं लषि ढालं ॥
चंपे चहुआनं कर उत्तानं जपैं आनं सुभ्भानं ॥
गज्जे गह मीरं सेन सुभीरं बंधे तीरं चलिचालं ॥
° • ° ° ° ° छं० ॥ १११८ ॥
बज्जे बज्जानं रन रहानं मय मद्दानं ढरि ढालं ॥
सिंध सुररहं बीर बिरहं रज्जे नहं रम[3] पारं ॥
चौसट्ठि सुरारं गाजि गुरारं मद्दि मदारं जैकारं ॥
छं० ॥ १११९ ॥
आहुट्टं ईसं चंपि सुरीसं लेहु बचीसं बीरेसं ॥
हिंदुअ असुरानं षग्ग पिलानं बज्जि बिनानं नीरेसं ॥
हक्के हहकारं होइ हलारं ढहै ढलारं सहारं ॥
गज्जय चिक्कारं हय हिंसारं षुंदि षुरारं रुहारं ॥
छं० ॥ ११२० ॥

(१) ए० कृ० को०—धर।
(२) ए० कृ० को०—सन्ने। (३) मो०—रुच।

कड़ कंधे कंध संध उसंधं तुट्टि दुरंध भयकारं ॥
उर श्रोन दडक्कं हड्डकडक्कं षग्ग कनक्कं पैकारं।
गज्जहि रन सूरं बिर बिरूरं अच्छरि छूरं बजि तूरं ॥
रत्ते रन चारं देषि दुरारं रज्जि उरारं ओपूरं।

छं० ॥ ११२१ ॥

फेकी फिक्कारं गिद्धझरारं सिद्ध गुदारं जैकारं ॥
कट्टे फर जरं अंत अटूरं डिमरूरं भैकारं।
आयौ गजि मानं हनि जिहानं मीर बिहानं दिषि पानं ॥
जै जै विज्जित्तं हरी सुइत्तं कढि क्रवत्त कृप्पान ॥

छं० ॥ ११२२ ॥

मेले असि घातं सूर सुभात बाहु दुबातं दुझ्झारं ॥
तुट्टे मझ्झारं दुझ्झारं सारं कंठ उभारं हसि हारं ॥
जग्यौ जम दट्ठं घाव पहट्ठं धारह डट्ठं बरि बीरं ॥
मुत्तिय चलि राहं सूर सुढाहं भौदिव राहं दुद्दीरं।

छं० ॥ ११२३ ॥

जुद्धं जुद्धानं षत्त फट्टानं बीर रसानं सद्धानं ॥
कविचंद कहानं कित्ति बषानं उभै पुरानं बक्तानं।

छं० ॥ ११२४ ॥

ग्यारहों मीरों और सरदारों सहित रावल जी का खेत रहना।

कवित्त ॥ परिम संद दह एक। सत्त परि रावर सिंघं ॥
उद्ध जुद्ध उद्धरे। इक्क एक रजि रिंघं ॥
रतन सिंह अर सिंह। सिंह तेजल्ल समथ्थं।
बीर देव बानेत। करै प्राक्रम्म अवाथ्थं ॥
अरिजुन जेम अरजुन करि। सामंत सिंह हुब्बे[1] बरन।
साजैति सूर भेरे बरह। षल अनंत षुट्टेव तन ॥

छं० ॥ ११२५ ॥

गाथा ॥ सहस च्यार सधि मीरं। निवडे विषम नंद बिय सत्तं।

(१) मो०—दूब्बे वे वरन।

न दे पलचर श्रोन । हालाहल विति विषमाइ ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

जामराय जद्दव का हरावल में होना ।

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ । गिद्ध जंबुक कोलाहल ॥
रगत बुंद निभ्भभरहि । अंत डबर[1] डोलाहल ॥
बार बार गुन धुक्क । हक्क श्रवन भक्क भाइय ॥
हो बलिभद्र सुभद्र । सिंघ रुक्यौ रन साइय ॥
संग्राम वत्त रस्सिय कहै । लग्गै गत्त दुहाइयां ॥
मोडनह[2] गरुत्र गोरी घटा[3] । सु जद्दव तेग उचाइयां ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

तब रन रत्तौ बलिभद्र । राइ पावस पग लग्गौ[4] ॥
तुं धीरंजा धीर । भीर रावत[5] तें भग्गौ ॥
हों ढंढोरी ढाल । हाल कट्ठौं सुरतानी ॥
बड़ गुज्जर दाहिमा । बोल बट्ठै उरतानी ॥
प्रारम्भ राव पज्जून सुत्र । बड्डारू बंटै भरां ॥
असवार सनाहरू सस्च । वे बंधव बंटै घरां ॥
छं० ॥ ११२८ ॥

शाही फौज में से सुभान खां का धावा करना ॥

अग्गैं बघ्घ[6] विश्राय । पच्छि जद्दव दव लग्गिय ॥
हय गय नर आरुरिय । भररि गोरी घर भग्गिय ॥
पग छुट्टत पतिसाह । षान षाना षुरसानी ॥
हिंदवान की हद्द । बोलि अग्गें सुरतानी ॥
सिरदार सिवान निसान पति । सूविहान असमान मति ॥
हों हाल गहों चहुआन कों । तौ पठान अगिवान पति ॥
छं० ॥ ११२६ ।

(१) ए०कृ० को०—अंबर ।
(२) ए० कृ० को०—गोडनह ।　　　(३) ए० कृ० को०—सुघर ।
(४) ए० कृ० को०—लग्गे ।　　　(५) ए० कृ०को०—रावर ।
(६) मो.– घुठ्ये वे बरन।

जामराय जादव और सुभान खां का युद्ध ।

त्रिभंगी ॥ लहु[1] गुरु छह सत्ता तेरह मत्ता एहा अच्छिर[2] अंदोई ॥
षगपत्ति सुनंदा नाग भनंदा त्रैभंगी छंदा एदोई[3] ॥
कूरंभा बाले संमर भाले सिंधुर ढाले उच्छाले ॥
गोरी घर घाले[4] असु करि ढाले परि बेहाले तन लाले ॥
छं० ॥ ११३० ॥

बर धरि सुलतानं से षुरसानं तरतुरकानं भुज भानं ॥
डह डह नीसानं बज्जि दुआनं असि झंझानं उन्भानं ॥
जद्दव जामानं कहि धरि ध्यानं गहि गैवानं सुरतानं ॥
सुनि सुनि सविहानं षक्किय आनं तेग उचानं असमानं ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

बहु मिलि मरदानं झरझर घानं असुकिय ढानं परधानं ॥
आवध तुटि तानं मिलि बथ्थानं जानि त्रिनानं मल्लानं ॥
धम धम्म लतानं बहु रग नानं[5] राजा मानं सु विहानं ॥
तरकिय तष तानं नह[6] सितपानं रहसि रिसानं विरुझानं ॥
छं० ॥ ११३२ ॥

कवित्त ॥ हूक सबद उच्चार । सुन्यौ जद्दव जुआनं मन ॥
मनहु मेघ गरजहि दिसान । नीसान सुहम[7] घन ॥
रन छीतर तोषार । हरसि हालाहलि दिट्टौ ॥
मनो कुमुद मुद्दयौ । चंद लग्गौ नह मिट्ठौ ॥
भरभार कीर कूरंभ कर । कमल अमल मुष उच्चर्‌यौ ॥
विधि जुद्ध रुद्ध सांइय सधन । सुगद[8] गिद्ध मिट्टौ चर्‌यौ ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

दूहा ॥ रवि चक्का चक्की चरन । दिठ लग्गिय असजोई ॥

---

(१) मो.-लघु । (२) ए. कृ. को.-अच्छिर ।
(३) ए. कृ. को.-बेज्जूमाशा छंदोई । (४) मो०-काले ।
(५) ए, कृ. को.-लालं । (६) ए. कृ. को. तह । (७) ए. कृ. को.-मुहम ।
(८)ए.-सुगंद ।

गह्वर करै सिद्ध तिय मन। घन रष्षै नब स्रोई॥
छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ उए सेन आलम्म। आय आलम संपती ॥
ए हिंदू आलंम। आय जदु पर हहकंती ॥
दुए उए अंकुरिय। धरिय बज्जी भर झंझर॥
नरे नरां वित्तरिय। हरिय जम्मन आवन धर ॥
रन राम दुजोधन भर भिरन। बालमीक व्यासह करिय ॥
हूए न होंहि हिंदू तुरक। मुगति मग्ग वित्तिय धरिय ॥
छं० ॥ ११३५॥

जामराय जादव का खेत पड़ना।

पर्यौ षेत परि जाम। लियौ धर साहस झोलिय ॥
तहं आयौ बलिभद्र। षग्ग षेलत रस होरिय ॥
असिवर ओड़न झारि। तार बज्जंत चिघाइय ॥
परि पथार अगवान। थाम थर हीय थराइय ॥
मझि ढाल धरिग गोरी गरुअ। मुच्छि बहुरि जग्गिय घरिय ॥
बलिभद्र जुद्ध दिष्यौ करत। हनौ हनौ[1] अप्पन करिय ॥
छं० ॥ ११३६ ॥

पज्जूनराय के पुत्र बलिभद्र राय का धावा करना।

बलिभद्रह आगमन। पुट्टि नव आय महाभर ॥
समर सीह सेवंज। लहै लज्जिय अदब हर ॥
सिंघ राव सांपुला। रोव पूरन परिहारह ॥
पति पहार सारंग। वेन बघेल सुभारह ॥
देवरा राव सारंग समथ। षीची हर देवह सुहर ॥
चालुक्क बीर डोडह रतन। तोंवर सागर तेग तर ॥
छं० ॥ ११३७ ॥

नौ सरदारों का बलिभद्र राय की सहायता पर उतरना।

नवै सुभट वै नुत्त। गात उत्तंग तेग गुर ॥

(१) ए. कृ. को.-हनौं आप अप्पन करिय।

कुल अरेह सुपदेह । जद्द उद्धरिय केय धुर ॥
स्वामि ध्रम्म समरथ्थ । अथ्थ बर हथ्थ प्रचारन ॥
अगस मग्ग ननचहै । धार पग तिहथ्थ सुधारन ॥
दिष्यौ सुराज प्रथिराज तिन[1]। करन अप्प[2] रिमहर कचर ॥
[3]अनु नंमि सीस असमान लगि । आय प्रचारिय तेक झर ॥
छं० ॥ ११३८ ॥

बलिभद्र के मुकाबले में जलाल जलूस का आना और दोनों का खेत में पड़ना ।

मोतीदाम ॥ समैं तिन सथ्थ बलीभद्र वीर। लगे अरि सौ असि तेग तरीर ॥
सनंमुष आय जलाज जलूस । ततारह बंध जरे तन जूस ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

रचे सथ पंच सु सथ्थिय मीर । तरक्कस नंषि कमानस तीर ॥
धरै कर षग्ग उनंगिय ताम । अगें पर पुट्ठि सुधारिय काम ॥
छं० ॥ ११४० ॥

करै असि हंकि बलीभद्र वीर । मनों मधि दंतिन गज्जि कंठीर ॥
संभारिय अप्पन इष्टह संभु । तरक्कि बढ्यौ बल सायर अंभु ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

धरी बर उज्जन उत्तर षान ॥ झनंक्किय दच्छिन षग्ग षिलानं ॥
मच्यो तन मार करीर असंभ । निरष्षहि आतुर उप्पर रंभ ॥
छं० ॥ ११४२ ॥

बलीभद्र हक्कि हन्यौ न्रप कंन । चंपे कजि उप्पर वाह विधंन ॥
चले भर सथ्थ गहक्कि जुनब्ब । करन्नह उप्पर आतुर रब्ब ॥
छं० ॥ ११४३ ॥

तिनं बजि आवध रीठ अपार । कटक्कट लग्गिय सोर करार ॥
कटै धर सीस बिसंधह संघ। तुटै पय पानि सु जानि बिरंध ॥
छं० ॥ ११४४ ॥

---

(१) ए. कृ को. तन। (२) ए. कृ. को.-किरत अपरि ।
(३) ए. कृ.को. नमि सीस राज लगि गैनतर, आय प्रचारिय लेकझर ।

पलक्कहि सुब्भर श्रोन प्रवाह । पलम्भय सीस भ्रिगुह गुराह ॥
बलीभद्र पारस एक पठान । कुस्यौ अप लष्षि जमाल्लन ठान ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

करष्षि जमाल्ल कमान करूर । हयौ तिनकौ वर कूरंभ ऊर ॥
सनंमुष चंपिय अश्वप जून । ग्रहे तल संडिय षोनिय षून ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

मषं सिष भंजिय हड्डरू मंस । करै धर नंषिय पिंडन अंस ॥
दिषे तब तम्मिय ताजन षान । भगन्निय युत्त ततारह मान ॥
छं० ॥ ११४७ ॥

हहक्किय धक्किय धामिय ताडि । पर्यौ दिषि बंधव लग्गिय दाह
सनंमुष सारिय झारिय षग्ग । पर्यौ बलिभद्रह सीस अलग्ग ॥
छं० ॥ ११४८ ॥

हयौ विन सीस असीवर झाक । पर्यौ सिर सथ्थह तुट्टिय साक ॥
बिना सिर धष्षिय धामिय वीर । परे सय दून सुहथ्थिह मीर ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

घरी दुअ केलि करी सु विसंम । सिरप्पर नंषिय देव कुसंम ॥
छं० ॥ ११५० ॥

गिद्धिनी का संयोगिता प्रति संवाद वर्णन ।

कवित्त ॥ पर्यौ राव बलिभद्र । झुंझिझ धर अग्गर सांइय ॥
गय रवि मंडल भेदि । जोति हर जोति सहाइय ॥
परे मीर सें तीन । परे षट सुब्भर राजह ॥
भित्त सु रावर सिंघ । लगी उर अच्छरि साजह ॥
सुभट च्यार सें राज रहि । गहकि भग्गि आलस्स भर ॥
गिद्धिनिय कहै संजोगि सुनि । धनि सु जुद्ध तुअ कंत गर ॥
छं० ॥ ११५? ॥

दूहा ॥ समर सिंघ भर जुद्ध परि । अनी वाम दिसि भंजि ॥
ता उप्पर पुंडीर गजि । हनन मीर धर सज्जि ॥
छं० ॥ ११५२ ॥

कवित्त ॥ परे विषम पथ्थार । मीर पावस गुर गज्यौ ॥
गाजी षान गहंति । बंधि सो साहिब सज्यौ ॥
उभै सहस भर मीर । सहस पुंडीर सहत्तौ ॥
विषम वीर उभ्भार । उभै लग्गै उत तत्तौ ॥
झर झार धार लग्गिय विषम । सिर धरि षत पुन पूर धर ॥
तुट्टंत असिय उड्डै अलग । मनों घन दीमिनि दंपि झर ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

गाजी खां और पावस पुंडीर का द्वंद युद्ध । पावस का मारा जाना ।

पद्धरी ॥ लग्गे सु घाव पुंडीर मीर । जग्गयौ विषम रसरुद्र वीर ॥
कट कटी पग्ग लग्गे विरूर । आवरे वीर गाजंत सूर ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
गाजीय षान पुंडीर बोलि । उत्तंग गात गरुअत्त तोलि ॥
चयभाग संगि ताली सुवीर । मनु मिले सिंघ गज्जे गुहीर ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
बिकसे नयन मिलि मुंछ मोह । भ्रकुटी सु सीस मिलि जम्म जुह ॥
उट्ठिय सु बीर बंबरि दुआन । चिकुटीय साजि कारूर कान ॥
छं० ॥ ११५६ ॥
सुष रत्त श्रोन बिंवह सुनेन । जंपेय उभय भर उंच वेन ॥
दोउ स्वामि ध्रम्म रत्ते सुराह । उव्वरहि आन दुअ ईस दाह ॥
छं० ॥ ११५७ ॥
मुक्किय जु संगि उन्हैं उनाह । लग्गिय सुउर फुट्टिय पराह ॥
चल्ले सुसंग बर बीर दून । असिझाक सीस तुट्टे सजून ॥
छं० ॥ ११५८ ॥
सिर परे दून लग्गे सुवथ्थ । षंपयौ षान गाजी सुहथ्थ ॥
नष्षयो धरनि गाजी सुषान । संमुहै। सूर धायौ परान ॥
छं० ॥ ११५९ ॥
बिन सीस हंरासे तीन मीर। धर ढर्यो धरनि सा सुतन धीर ॥

धनि धंनि सबद उट्ठे अयास। आक्रम्म देवि देषे सुरास ॥
छं० ॥ ११६० ॥

इन किये जुड जय दून वार। पहिल्ल की संख को गिनै पार ॥
चाहुलिय राय को जैत वार। सुरतान सेन कौ षयंकार ॥
छं० ॥ ११६१ ॥

चहुआन पान को रष्षवार। धर पऱ्यौ स्वामि कौ[1] षत्त फारि ॥
धीरंजधीर कोनौ प्रमान। भावी विगत्त मन चाहुआन ॥
छं० ॥ ११६२ ॥

दूहा ॥ अदिन राज लच्छिन मने। जब छीजे बर अत्त ॥
कै अनीति राजन करै। कै बल छंडै चित्त ॥
छं० ॥ ११६३ ॥

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। मीर बज्जे बहु बज्जे ॥
मनहु भाद्र पद ऐन। ऐन गेना घन गज्जे ॥
अचल चमू चतुरंग। कृष्षि कुप्पार अपारह ॥
असिनि भरनि तर अतर। षग्ग कर दंड सपारह ॥
जै जै चवंत चव रुष्ष चर। बरनि बरनि अच्छिर छरनि ॥
भव भाव भवन छिम छयं तजि। बसि पावस आवस धरनि ॥
छं० ॥ ११६४ ॥

रविवार परिवा का युद्ध समाप्त।

मोतीदाम ॥ ॥ पऱ्यौ धर पावस राइ पुंडीर। कियौ बर कासिवरं भकरीर[2]
धरब्बर धार सुधार भरीर। सच्यो[3] करि मावस मत्त कंठीर ॥
छं० ॥ ११६५

तिलं तिल तेगहि वट्टिनि मीर। भरै कुस संगन अंगन भीर ॥
नचै धर सीस अते धर बीर। नचै धर सीस अते धर बीर ॥
छं० ॥ ११६६ ॥

बजै मृदु मद्दल आनक भीर। हलज्जल सैल सरत्त तथीर ॥
गजै गज बाजि बजै तम तीर। छयैं रवि सारथ पारथ बीर ॥
छं० ॥ ११६७ ॥

(१) ए० कृ० को—मों।　　　(२) ए० कृ० को०—गरीर।
(३) ए० कृ० कोः—मच्यो।

परै पग लग्गत वथ्थनि हीर। जरें जनु मल्ल महा भर पीर॥
टगट्टग चाहत तुंडन लीर। मिले झलि गंग उदद्धि सुनीर॥
छं० ॥ ११६८ ॥

हकै हक हक्क सुकातर ईर। झुकें झुक कुंतनि झुक्क झुकीर॥
भकें भक रत्त निपत्त भकीर। धुकें धुक धुक्क उझक्कि उझीर॥
छं० ॥ ११६९ ॥

पर्यौ पन पान उपान उधीर। कटे घट घुम्मह्हि मीर सुपीर॥
सुजहर हैदरषान दरीर। सुर्यौ मपिपांदस पेंड अरीर॥
छं० ॥ ११७० ॥

घहै पुरसानत कित्तकि तीर। झरें असु सथ्य तनं धर भीर।
* * । * *॥
छं० ॥ ११७१ ॥

दूहा ॥ परिविसि निसि पत्तिन उदै। ठठुकि सेन दुअ दीन।
सहस एक आहुट्टि परि। मन न छीन तन छीन॥
छं० ॥ ११७२ ॥

तजि सुनेह संकित सयन। थान थान रहि भीर॥
प्रात तार से दिष्यियै। जोध जोध बर वीर॥
छं० ॥ ११७३ ॥

कवित्त। भयत भीति निसि अद्ध। मेघ डंबर दिसि छाइय॥
विषम बाय बर बज्जि। भूत वेताल चिघाइय॥
बज्जि घाय रन हक्कि। करै नारद किलकारिय॥
गिद्ध सिद्ध जोगिनी। मंझि[1] काली दै तारिय॥
बर बीर भद्र नच्चै तहां। धक्कि हक्कि दैकार फटै॥
अच्छरिनि गान गावै उमा। चित्त सूर ढुंढै भटै॥
छं० ॥ ११७४ ॥

बीर भद्र अरु वीर। जीति जालपा जलप्पिय॥

---

(१) ० कृ० को०—तरी दै कारिय।

कहौ बीर बेताल। सूर सामंत कलप्पिय ॥
कहौ बीर संक्रमन। बीर सनि ज्यौं रन मंझौ ॥
को हिंदू दल जानि। ग्यान दिन एक न षंझौ ॥
अरिष्ट राह झंपै रविहि। चंद जोति चहु दिसि द्रवै ॥
ग्रह माल लोइ बंदै नही। नीर मंझि रष्षै हवै ॥
छं० ॥ ११७५ ॥

दच्छ बंध कुव्वेर। नाम सुव्वेर सु ब्रत्तिय ॥
तुम सह कंदल कल्यौ। सूर सामंत कलप्पिय ॥
के मनु छिंदनुं रूप। भूप वंबरि करि उट्ठिय ॥
किम अरिष्ट आवद्ध। संगि बाना षलि फट्टिय ॥
किम किम सु षग्ग पंजर वध्यौ। किम सुराह गह गह गहिय ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवहि। दच्छ राज अच्छौ कहिय ॥
छं० ॥ ११७६ ॥

कै इन्द्री वल सूर। गुरू ग्याहौ सनि तीजौ ॥
नोंम सुक्र विन सुक्र। जनम मंगल बुध बीजौ ॥
राह केत सुष रष्षि। विप्र दच्छिन हरि चिंतिय ॥
जोति चक्र जुध चन्द्र। दुष्ट दानह करि मित्तिय ॥
त्रय त्रिपुर जीति त्रिपुरारि हुअ। षलनि मद्धि रष्यौ तिनह ॥
ग्रह ग्रहनि गंठि पूजै पुहप। सुषहु जुद्ध जीतें षिनहि ॥
छं० ॥ ११७७ ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध वर्णन।

मुरिल्ल ॥ वाम अनी कदल सों वीत्यौ। प्रती पद आदित्य अतीत्यौ ॥
सोम दिनह दुतिया तिथ रज्यौ। दाहिन कलह सुकंदल सज्यौ ॥
छं० ॥ ११७८ ॥

निसा भई आक्रम्मि सुसेनं। दल वल अप्प अप्प मिलि एनं ॥
फुनि सामंत सेन बर गज्यौ। दिच्छिवंध[1] कहनह को सज्यौ ॥
छं० ॥ ११७९ ॥

(१) ए०—दिसी वध।

दूहा। अति आतुर जित्तन असुर। अरु जित्तन सुर लोक॥
प्रतिपद रवि निसि यों गई। ज्यों रस रमनी कोक॥
छं० ॥ ११८० ॥

दोनों सेनाओं का दुतिया के प्रातःकाल का मेल॥

भयत प्रात निसि मुदित हुअ। उदित सूर छिन मंझ॥
बीर बीर संमुह चढे। चाहुआन सुर तंझ॥
छं० ॥ ११८१ ॥

शाही व्यूह का बल वर्णन।

कबित्त॥ सेत छत्र सिंदूक। सेत चामरन सेत धज॥
सेत धजा आभरन। जुद्ध आवरन पाट गज॥
हेम मुत्ति गज झंप। दंत कलयंस कटारह॥
चवनि अंग झारहि। झनंक पायक पुंतारह॥
सुरतान अग्र षुरसान षां। षां अग्गे महह सरक॥
दुअ वाह सैन सन्नाह बनि। मनु पच्छिम उग्यौ अरक॥
छं० ॥ ११८२ ॥

राजपूत सेना का व्यूह बल वर्णन।

सेत छत्र नीताय। जैत उभ्भौ दिसि बांई॥
चाव चलन चित धूअ। धूअ रष्पन चित सांई॥
दिसि दच्छिन चावंड। पाय मुक्के सिर नग्गा॥
समर सिंघ रावर नरिंद। साहि रुक्के रन अग्गा॥
सुरतान छत्र पावार परि। षतुरंगिय चंपिय सयन॥
आरत्त रत्त दुनियां विषम। देवरथ्थ बंधे गयन॥
छं० ॥ ११८३ ॥

दूहा। उन जीते जित्ते तुरक। उन भज्जे भज्जाइ॥
उररि सेन पम्मार परि। सेत छत्र नेताइ॥
छं० ॥ ११८४ ॥

कवित्त॥ तब हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट चामंड अंबरिय॥
रे जह्व वग्गरिय। राम कूरंभ संभरिय॥

षीची राव प्रसंग । सोधि पावस पुंडीरह ॥
षप्प अप्प मुष छंडि । जाय भज्जौ भर भीरह ॥
न्रप जैत राय उप्पर करन । दई दुबाह दाहर तनय ॥
तिरछौ सुतक्कि लग्गौ लरन । मनौ अग्गि अज्जर बनह ॥
छं० ॥ ११८५ ॥

चामंड राय के मुकाबले पर गाजी खां का उतरना ।

दूहा ॥ बिषम सरुच सुरतान दल । बल प्रति बज्जी धाय ॥
जैत छच सित ऊपरैं । तुरी मल्ल बर साय ॥
छं० । ११८६ ॥

कवित्त ॥ एक सूर सामंत । दंत दंती उप्पारिग ॥
सिंध हक्कि गय सिंघ । अभ्भ लगि षग्ग उपारिग ॥
सुल्ल सोम नंदनह । रत रावत्त विरुद्धौ ॥
अति करकस जु कमंध । षित्त को रहे जु सुद्धौ ॥
भर हरिग षान षंधार लषि । वर बिरुद्ध दाहर तनय ॥
विभ्भार हंस धर सिर जुरन । सुकल कित्ति सुर बर सुनय ॥
छं० ॥ ११८७ ॥

चामंड राय का विषम युद्ध ।

रसावला ॥ मेछ हिंदू दलं । हाल लग्गी दलं ॥ बीरबीरं बुलं । सीस हक्कै चलं ॥
छं० ॥ ११८८ ॥

अंभ कौतूहलं । जोग जोगं गलं । षान झुल्ली षलं । छच पत्ती चलं
छं० ॥ ११८९ ॥

घोर मूरं मलं । उट्ठि लग्गी कलं । काजसाई छलं । दीन दोई दल
छं० ॥ ११९० ॥

हाय हालं बुलं । दाहि दाहि मलं । उंच साहीयलं । मिच्छ किन्ने तल
छं० ॥ ११९१ ॥

दोय दोयं डलं । मेछ हिंदू यरं । एक एकं गरं । झारि बड्डं कारं ।
छं० ॥ ११९२ ॥

कारिजा कप्फरं । गेन लग्गा वरं । गिद्धि जाला जरं । द्दोमि नंचे धरं॥
छं० ॥ ११९३ ॥

सीस हक्का करं । दंति दंत सरं । अंत आलुभ्भरं । इम्भ सोहै परं ॥
छं० ॥ ११९४ ॥

माल कट्टै सरं । ढाल पील परं । केलि साषा ढरं । बीर सा वंवरं॥
छं० ॥ ११९५ ॥

जानु कट्टै परं । कंध बंधे भरं । ताल बज्जे हरं । मट्टि कंठे तरं॥
छं० ॥ ११९६ ॥

पंच पंचं घरं । मुत्ति लद्धी नरं । राइ चामंडरं । बीर गोरी लरं ॥
छं० ॥ ११९७ ॥

मुत्ति लद्धी भरं । पंथ बोली दरं । रुद्धि नद्दी पलं । पंक पंनं पलं॥
छं० ॥ ११९८ ॥

साहि सोहं गलं । अस्सियं झलझलं ॥ .... । .... ॥
छं० ॥ ११९९ ॥

कवित्त ॥ झलकि सेन सुरतान । कलकि हिंदू कर वज्जिय ॥
सार धार आकूत । बाज राजह तुटि तज्जिय ॥
स्वामि मंस है मंस । सानि संकट किय एकं ॥
लोथि हथ्थ सें पंच । नेह कीनी निजु केकं ॥
निज भृत्त निरष्यत संभरिय । राज रंजोइअ अंषरिय ॥
संग्राम धाम तुट्टिय सकल । साग सुनाई पंषरिय ॥
छं० ॥ १२०० ॥

पहकि पंति पंषिनिय । हक्कि मंकिनिय सुझो रुअ ॥
जहकि जच्छि अच्छरिय । कहकि अच्छरीब सु हरुअ ॥
हनकि जग्गि जोगिनिय । रहकि रुधि रंग सुरत्तिय ॥
दहकि मंस जंबुकिय । हलकि सिद्धिनि असु बत्तिय ॥
धर नरन हरन हिंदुअ तुरक । अरक मझ्झ चामंड किय ॥
दव दिट्ठि मिट्ठि सारह सरस । सुकल कित्ति कलजुग्ग जिय ॥
छं० ॥ १२०१ ॥

दूहा ॥ लगि गोरी चहुआन सों । भरे रुधिर जल पूर ॥
बहु दल अरि तन गंजि कै । तिन संघारिग सूर ॥
छं० ॥ १२०२ ॥

जैतराव का घोड़े पर सवार होना।

चढ्यौ जैत है संगि कै । षप्परि कंध सुपानि ॥
दल सुमिच्छ तिल तिल करन । करि जुहार चहुआन ॥
छं० ॥ १२०३ ॥

चामंडराय की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ऐ साहस सातरह । करिय पावारह आनं ॥
लष्प दलह मिलि गयौ । कियौ साहस आजानं ॥
लत उलत्त षेलंत । धार उद्धार षिलंतह ॥
सिर तुट्टे संमुहौ । भिर्यो कमंध सिर बत्तह ॥
सिर तुट्टि सुधर संभौ भिर्यौ । धर कटंत सिर विप्फुरिय ॥
विन सीस सहस अध पारि रन । इम सु केलि कासिम करिय ॥
छं० ॥ १२०४ ॥

रसावला॥षग्ग षोले षनं। साहि गोरी अनं । जैतछचं तनं । अंबुआ रायनं ॥
छं० ॥ १२०५ ॥

मेछ भंजैं जिनं । अद्ध अद्धे तनं । बाह वाहं घनं । रुंड मुंडं बिनं॥
छं० ॥ १२०६ ॥

षेलिता लम्भनं । पेषि साचं मनं ।उक्क लग्गी बनं। डुष्पि योरं यनं॥
छं० ॥ १२०७ ॥

वंदि वंदे लिनं । लोक लोकंगनं। मग्ग मग्गे सनं।जोग मग्गे जनं ॥
छं० ॥ १२०८ ॥

पग्ग लग्गे छनं। देव पचीयनं । स्वामि छुट्टे रनं ।स्रोन रेनं पनं ॥
छं० ॥ १२०९ ॥

पिंड सारे घनं ।सूर भिरितं यनं । कब्बि चिषं विनं ।वंद वंदाइनं॥
छं० ॥ १२१० ॥

देव बरदायनं । गरुश्र गोरी सनं ॥.......... |........॥

छं० ॥ १२११ ॥

कवित्त ॥ भिरि मारथ दाहिम्म । छुट्टि रन चीय प्रकारं ॥
मात पित्त अरु स्वामि । वाच मन क्रम्म सुधारं ॥
वेद मग्ग उथ्यापि । मग्ग थप्प धर धारं ॥
जोग मग्ग लम्भैन । क्रम्म नष्पै भरतारं ॥
आहत्त जुद्ध गिरि जुरिग[1] भर । भिरिग सूर सामंत नर ॥
पग पित्त षगिग दोउ दीन बर । चढ्ढि भंति बर विप्पहर ॥

छं० ॥ १२१२ ॥

दो पहर होने पर जैतराव का हरावल सम्हालना।

चढ़ विपहर संमान । जैत रुधयौ गज गोरिय ॥
दइ दुबाह पाधार । बज्रपित वज्रह जोरिय ॥
दंति अंति आघात । तंत जरि मंच समाइय[2]॥
कवल पीर ज्यौं कन्ह । दंति गावहि रुकि धाइय ॥
प्रथिराज बीर उप्पर करन । सिंह समर सो रंग भर ॥
बर बिषम तेज घन छांह छल । हक्कार्यौ वर वीर बर ॥

छं० ॥ १२१३ ॥

मियां मनसूर रुहिल्ला और चामंड राय का द्वंद युद्ध। दोनों का स्वर्गवासी होना ।

मोतीदाम *॥ सबैं दल गज्जन वै सुरतान। हलक्कि गहन्न चढ्यौ चहुआन ।
बजावति नौवति सिंधुअ राग । देवासुर कंक मनों फिरि लागि ॥

छं० ॥ १२१४ ॥

छुटे हथनारि तुवक जंबूर । षिवै जनु बीज गरज्ज गरूर ॥
बगत्तर पष्षर टोपन थाग । बचै किमि सिप्पर उप्पर लागि ॥

छं० ॥ १२१५ ॥

कबूतर ज्यों धर लोटन लोटि । परै चतुरंगिनि एकहि चोट ॥

---

(१) ए० कृ० को०—भरिग ।

(२) कृ० ए०—विचारिय, को०—उचारिय । *यह छन्द मोतीदाम मो० प्रति में नहीं है।

मचै भय भीति अकारिय बार। भयौ तब संभरि वार किंवार॥
छं० ॥ १२१६ ॥

सहस्सह च्यारि गिरै असवार। नग्यौ हय दाहिम बग्ग उपारि॥
झलमलि लोह अनी हक मेक। हयग्गय पाइल पारि अनेक॥
छं० ॥ १२१७ ॥

बही असि कुंत सरंजम दछ्छ। धरातर मंस चरं चष चछ्छ॥
भ्रमक्कत श्रोन चले परवाह। मनों नदि पावस मास अथाह॥
छं० ॥ १२१८ ॥

चमू असुराइन चौसठि पग्ग। दई सुत दाहर ठेलि अलग्ग॥
जहां जहं आइ पर्यौ नृप भार। तहां तह पारथ हथ्थ दिषार॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गहब्बह सेन करंतह चूर। दिष्यौ मफरद्द मियां मनसूर॥
चवद्दह सें तजि अस्व रुहिल्ल। परै कर सिंगिनि साइक चिल्ल॥
छं० ॥ १२२० ॥

कटिं कस कंध भुजा उर थूल। सधे तस पाइक वद्द अभूल॥
क्रमं करि साहिब दीन सलाम। गहे मन बेगम लुट्टि बिराम॥
छं० ॥ ११२१ ॥

कहैं सुष जीवत लेहु सुबद्धि। लंकापति जौं हनुवंत उदद्धि।
निजै मन आगम जानि मरन्न। पवंगम पागर काटि चरंन॥
छं० ॥१२२२ ॥

उपानह छंडिय चावंड राइ। पवन्नह वेग जवन्नह धाइ।
जिनं पथ भारत पार उतारि। तिनं हरि कौ उर ध्यान सुधारि॥
छं० ॥ ११२३ ॥

करे किलकार प्रकारिय संग। फुटी मुफरद्द हियै अरधंग॥
करष्षि कमान तज्यो सर मीर। लग्यौ उर मध्य कैमासह वीर॥
छं० ॥ १२२४ ॥

तिनें मनसूर पहुंचिय आय। छलंकरि पिट्ट कियौ असि घाइ।
कटे सिर दाहिम कट्टिव पग्ग। हयौ मनसूर पर्यौ कटि भग्ग॥
छं० ॥ १२२५ ॥

इसी कर मद्धि सुभै किरवान। जिसी सुतद्रोन कों दी सिवदान ॥
रही धप जीव सहाव कि ओर। धकें परि सिंधुर ढाल ढंढोरि ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

हिल्यौ पहिलै गज मारन राज। दृष्टावत सोव गयंदन आज ॥
गए घर कट्टन राजन लोह। लरै इन भंति सुन्याय समोह ॥
छं० ॥ १२२७ ॥

कमंध कियौ धपि ऊधस एम। मनौं फरसी हर अंधक जेम ॥
करें असतूति परे दुइ दीन। रितंमद चढ्ढि अछक्क सुपीन ॥
छं० ॥ १२२८ ॥

मिले रिन अंगन बीर बिताल। पुमी होइ नाचि वजावति गाल ॥
दिषे फलि कौतिग कोरि तेतीस। अपच्छर ईस कि पूरि जगीस ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

चवट्टिय तुट्टिय संपह पूरि। अपुट्टिय फौज फिरो सब सूर ॥
घनं घन जंगन के जितवार। तिनं तिन सुम्भर पारि पयार ॥
छं० ॥ १२३० ॥

संघारिय भारिय गोरिय सेन। सक्यौ नह कोइ सुम्मोरिय लेन ॥
करे घन उप्पर जैत पवार। दुअंतिय वार वजाइ कें सार ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

चवद्दह सें कटि षेत मसंद। पर्यौ धर दाहिम जंपिय चंद ॥
छं० ॥ १२३२ ॥

कवित्त ॥ च्यारि सहस असवार। मद्धि चामंड दहिम्मौ ॥
चौदह सें मफरद्द। मियां मन सूर रुहिल्लौ ॥
हूह हक्क किलक्कार। सीस तुट्टहि धर धावहि ॥
आनंदित अपछरा। आज इच्छावर पावहि ॥
चावंड राइ दाहर तनय। हर हारावलि सठ्यौ ॥
मफरद्द षान पीरोज सुअ। तेजवंत भिस्तिहि गयौ ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

जैतराय का वीरता के साथ काम आना।

पर्यौ जैत पांवार। ऊच नीचै छिति पूरिय ॥

ढाहे मीर मसंद । पंति पष्पलि[1] परि नूरिय ॥
सहस वीस इक अन्न । सकल आसुर परि सथरि ॥
हड्ड मंस कट्ठवसु । श्रोन गूदह तध्यं करि ॥
किलकंत जुध्य जोगिन नची । रची रध्य अच्छरि बरी ॥
डहकंत डक्क सुर बीर हर । रजिय गनन जंबुक ररी ॥

छं० ॥ १२३४ ॥

जैत के मुकाबले में ग्यारह हजार सेना के साथ शाह के भांजे का आना ।

सज्जिय जूह साहाव । रौद्र बज्री रिन संगिय ॥
परे पेषि पासार । पूरि असि छत्र उछंगिय ॥
यां ताजन सा तप्पि । पेलि गज जैत समौ अरि ॥
देषि दिष्ट प्रथिराज । कोपि तनताम थरथ्थरि ॥
हक्केव अप्प उप्पर जवन । भिरन अप्प जपै अटल[2] ॥
चंप्यो[3] सु गज्ज राजन्न जुरि । ताहि सार सधुंदि षल ॥

छं० ॥ १२३५ ॥

पद्धरी ॥ संमरिय राम ढिल्ली नरेस । दिधाय जाति उक्कसिन सेस ॥
बिरसाल बिंब सम प्रात रत्त । सम ललित लौंम सुष तेज तत्त ॥

छं० ॥ १२३६ ॥

थरकंत अहर फरकंत बांह । रोमंच अग मुक्कां उछाह ॥
उघ्घरिय भ्रकुठि त्रिकुटी करार । कोपे सुसार कर दंड धार ॥

छं० ॥ १२३७ ॥

उप्पारि वग्ग उभ्भारि पग्ग । सारथ्थ हंस सम लूर अग्ग ॥
लूरिमा मुख्य हंकारि हक्क । निघात जेम धावंत धक्क ॥

छं० ॥ १२३८ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुप्पलि ।
(२) मो०—अतुर ।
(३) ए० कृ० को०—भज्यो ।

हय छंडि दंति गहि दंत दंपि । सिर फेरानिंपि उभभार झंपि ॥
हुअ हल्ल चूर धूर हंस गज्ज । धर नंपि छोनि ताजन्न तज्जि ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

राजन्न पान ताजंन बंध । भानेज साह साहाब संध ॥
नव सहस मीर सम आय गज्जि । आतस्स जानि आहुत्ति जज्जि॥
छं० ॥ १२४० ॥

लग्गे सु घाव सम चाहुआन । पट पट्ट पग्ग गाजी पगान ॥
तुट्टति घाव जोसन्न होय । हल सूर सिलह होयं विभाय ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

आसन्न युद्ध लग्गे अपार । तुट्टंत सुधर भर मुझ्झि यार ॥
उड्डंत श्रोन तन उद्ध अत्ति । दव लग्गि जानि आयोस भत्ति॥
छं० । १२४२ ॥

देखियन जुद्ध दावन दनेव । नच्चंत नच्चि नारद्द भेव ॥
राजन्न लग्गि राजन्न मुष्प। चहुआन रज्जु संगी सुवष्प ॥
छं० ॥ १२४३ ॥

धर धार धरनि राजं न झारि । दल भग्गि फारि मनु फुट्टि पारि
फिरि आय राज उप्पारि पवार । अरि जित्ति राइ बुल्ले विचार ॥
छं० ॥ १२४४ ॥

जैतराव की मृत्यु पर पृथ्वीराज का दुःख करना ।

दूहा ॥ पर्‍यौ राव जैतह सु रन । पति अब्बू घन घाय ॥
सूर राय सोमेस सुत । करिय अप्प सिर छाय ॥
छं० ॥ १२४५ ॥

कुंडलिया ॥ हम दिय छत्र जुछांह कों । तुम लिय छत्र मरन्न ॥
हम दुर्जोधन जोधभय । तुम कलि करन करंन ॥
तुम कलि करन करन्न । हंकि उठि सिंध सिंघ पर ॥
झर उझ्झारि झंझोरि । तोरि गहि दंति दंत धर ॥
गौ वच्छां प्रति मोह । दोह लग्गौ सुदाह कह ॥
कहै राज प्रथिराज । छत्र हम दियौ छांह कह ॥
छं० ॥ १२४६ ॥

दूहा ॥ राजन अंचर छोरु करि । जैत प्रसंसन काज ॥
दिल्ली धर अग्गर दुहै । जुझ्झ पर्यौ धर आज ॥
छं० ॥ १२४७ ॥

गवरि हार उच्चिग अवनि । पुच्छिय दच्छ प्रबंध ॥
समर सुपन सुपन कि समर । आपु सुनै कविचंद ॥
छं० ॥ १२४८ ॥

खीचीं प्रसंग राय का युद्ध के लिये अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हस्ति पीत पष्पर्यौ । पीत चांवर गज गाहिय ॥
पीत टोप टट्टरिय । लोह हय चष्प सनाहिय ॥
सारि सिलह प्रज्जरिय । पीत बानावलि सोभित ॥
राज राव परसंग । षित्ति झुझ्झै परियां भति ॥
तनसार धार घटि भार घट । अवर लष्प वर पंच सै ॥
अनभंग बीर आइय न्त्रपति । सौस नवाइय सत्त सै ॥
छं० ॥ १२४९ ॥

शाही सेना के राजा के ऊपर आक्रमण करने पर प्रसंग राय का युद्ध करना और मारा जाना ।

गीतामालची ॥ विंटयौ मीरं राज धीरं अस्स हीरं असिसयं ।
गज्जे सनूरं सूर सूरं सा करूरं कस्सियं ॥
उंचे सुगातं मुष्ष रातं तेग तातं रोसए ॥
माते मसंदं अस्सि वंदं सा गिरद्दं गोसए ॥
छं० ॥१२५० ॥

विंटयौ राजं मीर गाजं सब्ब साजं संकुलं ॥
चौ अगति सैनं गज्जिगेनं अप्प तेनं उज्जलं ॥
वज्जे सुवाजं सिंग राजं जेर नाजं जंगयं ।
जंरियो गोरी झल्ल पोरी जुद्ध रोरीं रंगयं ॥
छं० ॥ १२५१ ॥

गज्जौ सुप्रानं चाहुआनं रत्त दानं रज्ज ए।
संभरी सीरं अप्प मीरं संगु हीरं गज्ज ए॥
हक्के मसंदं लेहु बंधं राज सद्दं संक्रमे।
देषे प्रसंगं स्तूर अंगं जुद्ध अंगं उम्भ्रमे॥

छं० ॥ १२५२ ॥

गज्जं सुराहं गज्ज गाहं रपै ढाहं रज्जए।
बाहंत मीरं बंधि तीरं नेह भीरं जे जए॥
लग्गे करारे अनी धारे पित्त पारे पग्गए।
बाजंत तारं षग्ग यारं जीह मारं जग्ग ए॥

छं०॥ १२५३ ॥

श्रोनं प्रवाहं पूर पाहं राह राहं रस्सए।
मारंन पानं सीर मानं राजधानं धस्स ए॥
देषे प्रसंगं संसु पग्गं आय अंगं अंग ए।
बाजे विहारं हार मारं रोहि आरं रिंगए॥

छं० ॥ १२५४ ॥

सेलं प्रहारं असि झारं सार सारं वज्ज ए।
झाक झरक्के धक्क धक्के दोय हक्के गज्ज ए॥
प्रसंग राजं बीर गाजं मीर साजं दुट्टए।
मल्हे प्रहारं तीन तारं झार झारं वुट्टए॥

छं० ॥ १२५५ ॥

चय बीर जुट्टे दुट्ठ दुट्ठे मिले रुट्टे मत्तए।
वे हथ्थ षंडं हथ्थ यंडं तुट्टि रुंडं गत्तए॥

छं० ॥ १२५६ ॥

दूहा ॥ दुने मीर षीची प्रसंग। सानि अनो अनमंस।
बाज षड्ड समुझि न परै। भयौ कीच पल मंस॥

छं० ॥ १२५७ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ राव परसंग । षग्ग षीची पति पुत्तौ[1] ॥
चोर और गजगाह । भार पारथ ज्यौं जुत्तौ ॥
से हथ्थे सें हथ्थ । गेंन गंध्रव किय गानह ॥
वरन इच्छ धरसिच्छ । द्रोह श्रोनह किय पानह ॥
संभरिय राव संभरि धरा । सघन घाय संमुह लरिय ॥
जिम जिम सुजुध्धिक्ष धरनि परिय । तिम तिम इंद्रासन टरिय ॥
छं० ॥ १२५८ ॥

बग्गरीराय की वीरता और उसका पांच मुसलमान सरदारों को मार कर मरना ।

मोतीदाम । पर्यो रन षीचिय राव प्रसंग । तिलत्तिल बीर सुबंटिय अंग ॥
घुसी भय मेछ गहक्किय ठान । क्रमे फिरि कुंडलि राजन ढान ॥
छं० ॥१२५९ ॥

घनं घन पष्षर पारस भीर । ढनक्किय घंट रनंक्किय तीर ।
हनं हन सद्द सुवज्जिय हाक । धरद्धर बज्जिय[2] षग्गनि धाक ॥
छं० ॥१२६०॥

षमंकहि षग्गरि संभरि राज । मनो घन मद्धि सु बीज बिराजि ॥
फडुप्फहि फेफ तडप्फहि मीर । [3]नचै तिन नद्द सुनद्धिय बीर ॥
छं० ॥१२६१ ॥

षलक्कहि षोनिय श्रोन[4] सपूर । बरै बर अच्छरि सुच्छरि सूर ॥
प्रबोधहि जोधहि गोरिय अप्प । करै प्रथुसिंघ समावरि थप्प ॥
छं० ॥ १२६२॥

गहक्किय गज्जि ससंदह राज । चले गुरु हक्कि गहक्किअ गाज ॥
नयो सिर सांइ सुबग्गरि वीर । मिल्यौ मनु कुंजर संक्कि कंठीर ॥
छं० ॥ १२६३ ॥

नष्यो हय संक्कि सु ताजिय तार । जप्यौ मुष रुच्चित उच्चित मार ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुत्तौ ।
(२) मो०—गज्जिय । (३) मो०—नचै तिन सद्दह मद्दह वीर ।
(४) मो०—श्रोनाहि ।

रुद्ध चव मीर मसंद सुढाह । पर्‌यौ हय षेत सुधाय अघाह ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

लयौ हयराज सुमार मसंद । दयो तब बग्गरि राय सुविंद ॥
चढ़े हय नंषिय राज प्रसंग । चढ्यौ हय ताम हुओ हय अंग ।
छं० ॥ १२६५ ॥

दयौ फुनि राज हए अरि बाज । चढे सोइ भंजिय बग्गुरि गाज ॥
दयौ फिर राज सु बाजह देव । कढे हय दस्स अनो अनि एव ॥
छं० ॥१२६६॥

टर्‌यो रनि बग्गरि घाय अघाय । हए दह पंच मसंद सुराइ ॥
.... ॥
छं० ॥ १२६७ ॥

कवित्त । पर्‌यो झुझिझ बग्गरिय । बहन झग्गरिय सुरंगिय ॥
सुरहलोक शिवलोक । लोक आरघ्य कुरंगिय ॥
बालप्पन जोवनह । बडे बड़पनह बड़ाइय ॥
समर राज प्रथिराज । बाज दस बेर चढाइय ॥
दिव दिवसु देव जैजै करहि । पुह पंजरि अच्छै धरनि ॥
तजि लोक लोक लोकन[1] सघन । बर्‌यौ देव मंडलि तरनि ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

शाही सेना का पृथ्वीराज को घेरना । सिंह प्रमार का आड़े आकर १५ झुंड सरदारों का मार कर आप मरना ।

भुजंगी॥ पर्‌यौ बग्गरी देषि गोरी नरिंद।भयौ राह रूपं ग्रस्यौ जानि इंद
कहैं सब्ब मीरं समं सह नंषे[2] । चितं आतपं जानि ग्रीषम्म धंषे ॥
छं० ॥ १२६९ ॥

धरे लेहु लेह्न सबै हिंदु राजं । चले षाल बंधे गुरं मीर गाजं ॥
धरे पारसं कुंडली षाहुआमं । मिले मीर हक्कें ढुके राज धानं ॥
छं० ॥ १२७० ॥

(१) ए० कृ० को०—लोकत ।
(२) ए० कृ० को०—तंषे ।

गज्जै नद्द गौसान भेरी भयंदं । रनं तूर पूरं नदे सिंघ नद्दं ॥
गजं बिंटयं राज मद्दं सुमत्तं । ठनक्के घनं घूघरं घंटयंतं ॥
छं० ॥ १२७१ ॥

षनक्के षितं पष्परं षान षानं । फिरं ढाल ढालं पताकं परानं ॥
झलक्कै सवें धीर वानैत वानं । कनं छन्न सद्दं बुलं चाहुआनं ॥
छं० ॥ १२७२ ॥

चमक्कै चमक्कं सनाहं सनाहं । किलंकार धकार उक्कार आहं ॥
गहै हथ्थ हथ्थं कमानं कमानं । धरे नेज षग्गो उचज्जे उपानं ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

वचे दीन दीनं सुरत्तं मसद्दं । झलक्कै मुषें मीर तेजं सुद्दंदं ॥
दिषे मीर राजे गिरंदे गहक्के । कढ़े चाहुआनं कुपालं लुहक्के ॥
छं० ॥ १२७४ ॥

दिषे राज पामार सिंघं समुष्षं । नयौ सांइ सीसं फिर्‌यो रिम्म रुष्षं॥
हनूमंत इष्टं जपै जाप तामं। क्रम्यौ सिंघ जेमं गजेदंति दामं ॥
छं० ॥ १२७५ ॥

मिल्यो धाय गज्जे गजे मीर जूहं । घटं धीर षंडे कलं मंचि कूहं॥
हने सिंघ पग्गं गुरं गज्जि गज्जं। हने सुंडि दंतं पयं कंध भज्जं॥
छं० ॥ १२७६ ॥

धमक्के धरा नाग नागं सभागं। भजै केवि चिक्कार छंडे विभागं॥
धकै वीर पांमार रूपं विरूरं । ढरै मीर सीसं धरन्नी करूरं॥
छं० ॥ १२७७ ॥

भ्रमै आवधं भूर सामुष्प मुष्पं । यलं अंबुजं पूरि सा सीस रुष्पं॥
करं अग्ग कट्टै तिनं वाहु त्रुट्टै । मुषं अग्गहै धरा नाम लुट्टै ॥
छं० ॥ १२७८ ॥

द्रिगं मंडि देषै सिरं तुट्टि तेषै । हयं मंस मीरं कटे सानि सेषै॥
भरक्केस भज्जै सकज्जै सुमीरं। करी मंभ्र पामार गज्जे कठीरं ॥
छं० ॥ १२७९ ॥

फिरै कुंडली तेंकतारं[1] करोरं। फिरै मीर जे मंमनों दंड धारं ॥

(१) ए० कृ० को०—तं कतारं।

लखै द्रिग्ग पासार सा मुक्कि वामं।मनौ प्रातमीरं ढकं मैन[1] तामं॥

छं० ॥ १२८० ॥

गजं बाज तुट्टै असी सिंघ सेसं । पलक्कै सुओनं परे पंड वेसं॥
भरक्के विभज्जै द्रिगं जेथ सथ्थे । रुवं भान सध्यान ग्रीपम्म रथ्थे॥

छं० ॥ १२८१ ॥

जबे देषियं सोह भाजंत सेनं । जपे तात मातं विरूरं सुबेनं॥
तबै षान राजन्न ताजन्न सेरं । अली षान आकूब हारंन हेरं॥

छं० ॥ १२८२ ॥

बली मीर रोसंन दोसंन दाहं।अलीषान आसन्नि अलीषां उमाहं
दहं पंच साहाब सायास वानं । वरं नेक सूरं समं प्रान यानं॥

छं० ॥ १२८३ ॥

विपल्ली जबे सिंघ साहाब सेनं। करे हक्क कम्मे दहं पंच तेनं॥
सयं आप सिंघ समं जुद्द लग्गे। सहा सार[2] आवद्द आवद्द जग्गे॥

छं० ॥ १२८४ ॥

दहं पंच मीरं पवें सिंह हथ्थें। सय सेन घायं अघायं समथ्थे

छं० ॥ १२८५ ॥

महावीर ज्यों भूत सेनं सुनंचै।सकै[3] छोनि नाही धरं ठाहि रंचै॥
तबै पेलयौ गज्ज गोरी सहाबं । हयौ षग्ग पासार भासुंड ताबं॥

छं० ॥ १२८६ ॥

कटे सुंड दंतं समं जार धारं। फिरयौ गज्ज भग्गौ विरग्गौ विरारं॥
धुक्यो घाय अघ्घाय सा सिंघ सारं। सिरं देव सुम्मन्न नंषे अपारं॥

छं० ॥१२८७ ॥

ढर्यौ अप्प सुभ्भाय तब्बे परन्नं। सुतं निरभयं निरभयं अप्प मन्नं।
पर्यो सिंघ पामर सामार बच्चै। षलं षेत ज्यों भूत भैरूं सुनच्चै॥

छं० ॥ १२८८ ॥

षुलै देषि सिंघं भभक्कं सुमीरं । रहे बान मानं फिरै फौज तीरं॥

(१) ए० कृ० को०—नैनं।

(२) ए० कृ० को०—मार।

स(३) मो०—समो छोनियं नाहि धर ठार ।

ढुर्यौ सिंघ ज्यो सिंघ छोनी सुषेतं। गहक्के सुमीरं रजेही रहेतं॥
छं० ॥१२८९॥

कवित्त । परत सिंघ आचिज्ज । विरद सांई भुज पंजर ॥
सुनहित कट्टौ जीह । नतरु रष्यौ सुष संजर ॥
ते कतार कुंडलिय । राम मंडली उलल्लिय ॥
दल दल सुष सुष चंद । इंद बर सरवर फुल्लिय ।
घनघाय अघाय निघाय अरि । सत सुभाय परतंग करि ॥
दल होत जोन जोतिहि तिनहि । मिलत सूर दिष्यौ सुहरि ॥
छं० ॥ १२९०॥

शाही सेना का और जोर पकड़ना और लोहाना का अग्रसर होकर लोह लेना ।

उत्तम संदह सत्त । इत सामंत अट्ठ परि ॥
घरिय वीह दिन वित्त । वहिय सलिता श्रोनह भर ॥
उभै ईस हुअ विभर । विरस हालाहल वित्तौ ॥
यक्क अंग समेत । करत जुद्दह तन रित्तौ ॥
दिष्यौ सु राजरन सीस पर। करत युद्ध हक्कत सुभर ॥
मोनदिय मीर मीरह समन। गहन राज दौरे दुआर ॥
छं० ॥१२९१॥

दूहा । आवत असीर अभीर द्वै । विन है गहन सुराज ॥
देषि लोहानौ दौरिपरि । ग्रहि असिवर गुर गाज ॥
छं० ॥ १२९२ ॥

लोहाना का खंड खंड होते हुए भी अतुल पराक्रम कर के अपने मारने वाले को मारकर मरना ।

भुजंगी ॥ तबै गज्जियं वीर आजानवाहं। मिल्यौ मीर अड्डो सुरं जुद्ध राहं॥
असी वक्क उब्भारि गज्जे निहंगं। लई अंस काजैं रजं कज्जि जंगं
छं० ॥ १२९३ ॥

लगै मीर सों धीर जुद्धं जुधारं । तवें आय अड्डे भरं साठि सारं॥

तिनै जुद्ध अनभूत सत्तौ अपारं। तिनं तेग वज्जे अरुझ्झे करारं॥
छं० ॥ १२९४ ॥

तवे संमरे दुष्ट आजान वाहं। सुपं उच्चर्यौ वीर मंचं विवाहं॥
तिनं हाक धाकं सुवज्जी विरूरं। मच्यौ जुद्ध आलुद्ध जूरं करूरं॥
छं० ॥ १२९५ ॥

सिरं तेक तुट्टेन उड्डंत दीसं। विना पंप पंषी परे नभ्भ सीसं॥
कटे मूल वाहं लषे उद्ध जानं। मनो आननं पंच चीलं चिरानं॥
छं० ॥ १२९६ ॥

दियौ तार तारी चवट्ठी अनंदी। दिषै वीर कौतिग्ग सारंग मंदी॥
झरं झार उझ्झार लाहं लुहानौ। किअं लक्त आलत प्राहार प्रानौ॥
छं० ॥ १२९७ ॥

परे मीर वीसं उभै अग्गिवानं। तवै आयसं संत तेगं उक्षानं॥
दिषै मोन दीनं जये दीनं रहं। समं राज दौरै गजे मेघ भद्दं॥
छं० ॥ १२९८ ॥

तिनं उंच गातं वरं उंच हाथं। अंग अंग तुट्टै तिन लात घातं॥
तवै आइयं अद्ध आजान वाहं। तिनं जुद्ध लग्यौ करूरं कराहं॥
छं० ॥ १२९९ ॥

मिले लोह लोहान सम्सन्न मीरं। उभै सूर साधम्म गज्जे गहीरं॥
उभै तेक उतंग उम्भारि भारं। मिले वीर तत्ते उभैं नेकतारं॥
छं० ॥ १३०० ॥

हयौ झाक तेकं सुउन्नै उनाही। उभै सीस तुट्टे परे भूमि याही॥
लग्गे वथ्थ हथ्थं वलं दून सक्कं। हयौ मीर कट्टारि लोहान धक्कं॥
छं० ॥ १३०१ ॥

पर्यौ मीर संमन्न भूमी भयानं। चढे देव कौतिग्ग देषंन जानं॥
तवै आय तेकं हयौ मोन दीनं। कटी मध्य तुट्टी दुअं भाग कीनं॥
छं० ॥ १३०२ ॥

धर्यौ अद्ध भागं धरन्नी सुएसं। उधं भाग कंठं लग्यौ काल भेसं॥
हयौ मोंनदी ताम कट्टारि जरं। धरा ताम नच्यौ महामेरु गूरं॥
छं० ॥ १३०३ ॥

परयौ जाम लोहान षंड धरन्नी । जयं सद्द भासंत सेना परंनी ॥
* * * * छं० ॥ १३०४ ॥

कवित्त । परयौ होय आजान । बाहु त्रयषंड धरन्नी ॥
जै जै जै जंपंत । सुष्प सब सेन परन्नी ॥
धनि धनि जंपि सुरेस । सु धुनि नारद उचारं ॥
करिग देव सब कित्ति । बुट्ठि नभ पुहुप अपारं ।
कौतिग्ग सूर थक्यौ सुरह । भइय टगट्टग भुम्म भरनि ।
आसंस करैं अच्छरि सयल । गयो भेदि मंडल तरनि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

लोहाना के बाद कमधुज्ज राजा का धावा करना ।

स्वामि षहु निज भ्रत । जानि कोप्यो कमधज्जं ॥
षग्ग आरुहि वर देह । आनि कुल अप्पन लज्जं ।
परे सु धन सोमंत । अग्ग देषे सुरतानं ।
सजे हयग्गय सूर । बीर वर बीर कमानं ॥
जुध करत राज दिष्यो दुहर[1] । अप्प मंच भैरव जप्यौ ॥
उभभारि षग्ग औडन उक्सि । करि किलक संमुह धप्यौ ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

आरज्ज सिंह का पराक्रम और एक मुसल्मान सरदार का उसे पिछे से आकर मारना ।

भुजंगी ॥ किलक्कार हक्कार क्रम्यौ कमद्धं । सथं भैरवं आय सौमंच वद्धं ॥
चलौ जोगिनी सथ्थ सद्दे भयानं । चढे आयसं सब्ब देषंत जानं ॥
छं० ॥ १३०७ ॥
भरं आरजं रूप देष्यौ अनूपं । किते नेन ढंके किते जुद्ध जुपं ॥
अरी जुद्द मध्धे क्रम्यौ षग्ग धारं । गजे सिंघ आवद्द वाहै अपारं ॥
छं० ॥ १३०८ ॥
वियं षंड वाजी नरं तेक तुट्टे । तरं जानि कव्वारिया कूट कुट्टे ॥
निजं पान षंडे करे बिब्बि षंडं । भजै गज्ज चिक्कार फुट्टै भसुंडं ॥
छं० ॥ १३०९ ॥

(१) ए० कृ० को०—सुहर ।

असीतार नंचंत वीरं चिघाई । नचै जोगिनी श्रोनघुंटै अघाई ॥
सहस्संच पंच पंचं सधे सहि दिष्यौ।चल्यो तथ्थ मग्गं जुद्ध तंजु रष्यौ॥
छं० ॥ १३१० ॥

जवें आय अड्डे सतं मीर एकं।मिल्यो मल्लि जुद्धं तिनं तंमि तेकं॥
करे लाघवं षग्ग वाहंत वेगं । सरं केवि तुट्टै धरं केवि रेगं ॥
छं० ॥ १३११ ॥

परे मीर षंड विषंडं धरन्नी । टगं टग्ग लग्गी जुधं जोय रन्नी ॥
सिरं तेग तुटंति उड्डंति दीसें । हरे बाय मानो फलं ताल जीसें ॥
छं० ॥ १३१२ ॥

परे पग्ग आयास तुटटी धरन्नी। मनो अच्छरी माल नंषै वरन्नी॥
परे पोल उड्डे जनची जुवासं । परें मानु जोतिष्प विन्नं अयासं॥
छं० ॥ १३१३ ॥

पलं कीच मच्चौ धरं श्रोन धारं । करै भैरवं मद्द मत्तौ फिकारं॥
परे वीस अग्गं दहं पंच मीरं । विए निक्करे पेत नट्टे सभीरं[1]॥
छं० ॥ १३१४ ॥

पर्यौ दिट्ठ आरज्ज साहाब सम्सं । मध्ये पंच साहस्स मीरं दुरम्मं॥
चल्यौ मार मारं जपे जीह तामं। भजै आसुरं सेन देषे दुरामं॥
छं ॥ १३१५ ॥

घंप्यौ साहि बाजीसनं मुष्प अप्पं । करीआरजं सिंघ जेगं सुधप्पं।
करं जच जभार षंडौ करूरं । भरक्कंत सेना करै भूर भूरं ॥
छं० ॥१३१६ ॥

दिष्यौ साह संमीप सारूप षानं। चपै अश्व आयौ चपी अस्सठानं॥
तमे आय पुट्ठी हए असि तामं।वरं सीस तुट्यौ फिर्यौ भूमि ठामं
छं० ॥ १३१७ ॥

सनंमुष्प साहाब संमीप मन्ने । बिना सीस धायौ करे षग्ग उन्ने ॥
हयौ षंड झाकं हयं कंध तुट्यौ।हयं जुत्त साहाब साभूमि लुट्यौ ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

---

(१) मो०—सरीरं ।

गिर्यौ भूमि आरज्ज सारज्ज सूरं । कुसम सुनवैं सिर देष भूनं ॥
छं० ॥ १३१९ ॥

सोमवार के युद्ध का विश्राम ।

दूहा ॥ मिले षान पट्ठान सब । ग्रहे षंचि लिय साहि ॥
भयौ स्रम्म विस्रम्म जुध । धनि धनि जंपिय[1] ताहि ॥
छं० ॥ १३२० ॥

योगनी और वेतालों का शिव के संमुख युद्ध की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ नह देवासुर जुद्ध । चंद तारका न होई ॥
नह पारथ भारथ समांन । राम रावन जुध जोई ॥
नह सुचि पुर त्रिपुरारि । देव दानव नन मानव ॥
समर सिंघ नारद[2] नरिंद । सतु कह्यै जुध जानव ॥
चामंड राइ बर जैतसी । समर सिंघ राजन्न बलि ॥
संग्राम जिम्म[3] भारथ्थ जित । [4]अमर सदा वलवेर कलि ॥
छं० ॥ १३२१ ॥

दूहा ॥ हथ्थ एक एकह विहथ । विहथ एक इक षंड ॥
दल राजन समुझि न परी । बाज राज चामंड ॥
छं० ॥१३२२ ॥

तव कुक्कम वज्जिग दसन । जसन जेम चितिनार ॥
कलह सुप्रिय मनमथ मथन । सुनि गवरिय[5] उर हार ॥
छं० ॥ १३२३ ॥

यक्ष का वीरों के शीस ले जाकर शिवजी को देना और मृत वीरों का पराक्रम कहना ।

कवित्त ॥ दच्छ सीस लै पंच । ईस अग्ग सुसपन्नौ ॥
समर सिंघ चामंड । जैत जद्दव बल दिन्नौ ॥
और विप्र भारथ्थ । सेन पुट्टौ सुलतानौ ॥

(१) ए० कृ० को०–जंपै । (२) ए० कृ० को०-रावल । (३) ए० कृ० को०-जिमि ।
(४) ए० कृ० को०-अमरहा बर तेज हुल्लि । (५) मो०-गरिय ।

दै दुवाह दुअ जुद्ध । जाह बोली सुर बानी ।
दिन अथ्थित निसि वर उदित । सर भग्गी दिव दीन भौ[1] ॥
सामंत सत्त षेतह परिग । एक समर रावर उभौ ॥
छं० ॥ १३२४ ॥

अह रयनि अंतरिय । जुद्ध वतरिय मंपत्तिय ॥
अट्ठ अट्ठ जोगिनिय । अट्ट बेताल विछन्तिय[2] ॥
जालंधर संसुपिय । ईस अग्गे इह कढ्ढियय ॥
भिरि जिते हिंदुअ तुरक । भारथ जो वित्तिय ॥

चामंड राय की तारीफ ।

चावंड राइ सिर समर सिर । सिर जद्दव कूंरभ बलि ॥
पांवार सीस पंचौ पतित । रुद्र माल गंठिय सुगलि ॥
छं० ॥ १३२५ ॥

महन सीह बल्लार । नाम जानौ रोहिल्लौ ॥
दल सोसन सुरतान । अग्ग अग्गें सु इकल्लौ ॥
ताइय धर झल्लरिय । सार हिंदू सर बुट्ठै ॥
पग पच्छा न फिरंत । षग्ग फेरें मुख उट्ठै ॥
षग भार मान तेतीसनौ । रुहिर भषै झल्लौरियौ ॥
कट्टिय कुलाह[3] कलहंत रह । ढकी ढाल ढंढोरियौ ॥
छं० ॥ १३२६ ॥

मारू महनंग राय की तारीफ ।

मारु रा महनंग । धक्कि नीसान दियंदे ॥
बर कंबर बंगाल । तरसि तोष्पर चढं दे ॥
समर सिंघ रावर सभीर । बीर पावस रा अग्गी ॥
सारप्पर षरप्परहि । तेग तेरह सें भग्गी ॥
कचरत्त षान ततार सों । वर बिचाल बोल्यौ समुष ॥
मुहि मरद जानि मिलि मरद हौ । हौं सुहिंदु तुअ मेछ रुष ॥
छं० ॥ १३२७ ॥

(१) मो०--सौ, मौ । (२) ए० कृ० को०--विवथ्थिय ।
(३) ए० कृ० को०--कहार ।

परत षान तत्तार । पूर १ मारू रा भग्गन ॥
हय कंधह दिय पाइ । उतरि वियकन्न सुमग्गन ॥
उंच गात वरहाथ । तेग लंबी उब्भारिय ॥
धात षंभ त्रिघघात । जानि कज्जरि कल्लारिय ॥
सर करिय तुट्टि फुट्टिय सुसिद । रुहिर धार संमुह ढरिय ॥
सोभियहि सुभट हिन्दू तुरक । जस जोगिनि जै जै करिय ॥
छं० ॥ १३२८ ॥

नाहर राय परिहार की तारीफ ।

इत नव सहस नरेस । उत्त षंधार ततारह ॥
इत गोरिय कुल सबल । उत्त नाहर परिहारह ॥
दुवै सेनपति सूर । पूर हंकार हवाइय ॥
इत संभरिय सहाय । उत्त षुरसान सहाइय ॥
मद मोष छुट्टि जुट्टिय बिसर । दुभ्भर[1] तेग लगिय सुभर ॥
श्रै उदर वृत्त लज्जिय सुभर । दुहुं नरिंद फुट्टिय जुसिर[2] ॥
छं० ॥ १३२९ ॥

जिहि सुष कूर कपूर । सुबर तंबोल प्रकासिय ॥
जिहि सुष स्रग मद वह । सुद्ध किसना गिर वासिय ॥
जिहि मुष रम्यह रम्य । अधर रसधरनि पराइन ॥
जिहि सुष हरिहर भजन । मुत्ति लभ्भय पाराइन ॥
सो सुष्ष परषि परिहार पर । षग ततार संमुह मिलिय ॥
सोइ साम काज हिन्दू तुरक । सो मुष षंड विहंड किय ॥
छं० ॥ १३३० ॥

यक्ष का रावल समरसिंहजी की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सित संदेह समुच्चरिय । कंध कुबेर सुबेर ॥
दिसि दस राय दलंत रहि ॥ समर समप्पन वेर ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

(१) मो०—दुतर । (२) को०—सुमिर

कवित्त । द्विपित राव दिल्लेस । देव मंगल पुर वासिय ॥
समर सिंघ रावर रव । अग्गें गृह गासिय ॥
मंच जंच तंचह छलंग । छित छेल वल जग्यौ ॥
भिरन लेक गोरियं ततारं । गज्जवि गल लग्यौ ॥
मंहि महन सीह उप्पर करन । हरन हार सिर मुक्कयौ ॥
चाचग्ग वीर हंडयह सुहय । धरनिधार धर धुक्कयौ ॥
छं० ॥ १३३२ ॥

परत ताहि परतंष्पि । वीर अद्दव जसु लिन्नौ ॥
जोति जगत उच्छरिय । महन सीहं दिट्ठ दिन्नौ ॥
कलि कलाप रंघरिय । राय बंसं छल तुट्टौ ॥
सन तिल तिल ह्वै मत्त । मरन जीवन पहि छुट्टौ ॥
सामंत राय सिर सिंघलय । कछु सुवार वीरह वहिय ॥
सित कंत तंत तिहि बार तब । विवरि विवरि अप्पह कहिय ॥
छं० ॥ १३३३ ॥

दूहा ॥ सुविधि ऐह हम कुल कलियं । कै सुनि दच्छन कान ॥
गुरजन गुर बंचत रहै । अमी पयंपि पुरान ॥
छं० ॥ १३३४ ॥

कवित्त ॥ एव देव सन्यास । सुगंध तारुनि व्रमचारियं ।
इन्द्रिय दल दलमलियं । पुरुष पर चरन न लारिय ॥
एकं सचल छचिय संध्रम्म । ध्रमंतं स्वामिं सुभ ॥
गुन गौ ग्रहं ग्रह धंजि । घीर यद्दिय सुनाद उभ ॥
मंडलिय मरद मेवार पहुं । मिलि प्रधान पुच्छिय प्रसन ॥
रिषि कहिय सच्चिय संमृत सकल । सुविधि वेद पढियं सु सुन ॥
छं० ॥ १३३५ ॥

दूहा ॥ तुमं वय उहिम मोर मन । जन रसे सरस न दिट्ट ॥
दस दस रंध बिरंध कथ । सुनहु सुनावन इट्ठ ॥
छं० ॥१३३६॥

---

(१) मो०—बंचिय ।

कवित्त ॥ बीर मंत्र बावरिग । राय दिष्षत देवग्गिरि ॥
समर सिंह रावल रवद्द । भिरनह बाहू बरि ॥
ते उधान मंडल नरिंद । छत्रंग छत्र धर ॥
सन्य ससी उड्डय गलग्ग । पूजिग गवरी बर ॥
सिर सिरह दीन सुरपति सुपति । विपति वीर गवरिय दलह ॥
तत्तार षान सुरतान छल । विषम बीर कंदल करह ॥
छं० ॥ १३३७ ॥

अन्यान्य मृत सरदारों के नाम और उनका पराक्रम ।

तब मुरंत हिंदुअ नरिंद । मुह किय मह नंसिय ॥
पारिहार परतष्षि । इष्षि मंडलह न हंसिय ॥
जुरि जुआन सारंग । अंग ठेलिय दल गोरिय ॥
उह समेछ सम सूर । रहत हिंदुअ वर जोरिय ॥
प्रिय प्रथम राव षीची षिज्यौ । षिग षिन षिन सारह भरिय ॥
अरू अंत दंत दंतीय तन । सुषति राव पुन्नर परिय ॥
छं० ॥ १३३८ ॥

दूहा ॥ षट अंसिय निसि षट घरिय । भरिय सुभूमि भयान ॥
पलचर चरवर विधु विनह । मुरत भूमि सुलतान ॥
छं० ॥ १३३९ ॥

एक सूर सामंत षट[1] । सह षग्गिगह षट दून ॥
बिंटि राज प्रथिराज कौं । फिरि पारस दिसि सून ॥
छं० ॥ १३४० ॥

कवित्त ॥ छक्कै सार नरिंद । षग्ग पारस दल सक्किय ॥
बर आतुर पतिसार । सैन चावद्दिसि मक्किय ॥
सबै सथ्थ प्रथिराज । रष्षि साईं दल ढुक्किय ॥
षग्ग मग्ग बोहिथ्थ । वीर अवसान न चुक्किय ॥
लोपंत लोह गोरी सुभर । पति अड्डो पति मेर भौ ॥
तम लग्गि धार धारह धनी । पर्‍यौ बीर सिर भंग भौ ॥
छं० ॥१३४१॥

(१) ए. कृ. को.-मत ।

सारंगराय के मारे जाने पर परिहार वीरों का पराक्रम करना।

घरत भोमि सारंग। गुरज वज्जिय सिर गोरिय॥
वज्ज्र वीर कर वज्ज्र। वज्ज्र अग्गे वर जोरिय॥
सस्त्र घात आघात। कट्टि कुट्ठर ग्रहि तारं॥
पव्वै पति तव विंटि। सेल्ल लगि असिवर भारं॥
परिहार परिग्गह सामि सम। फेरि राज पारस परिय॥
चहुआन वीर संमुह असुर। गह गह गोरी उच्चरिय॥
छं० ॥ १३४२ ॥

सुनि गह गह सुविहान। भाव भर मान रप्पि रथ॥
चरन अचल चल हथ्थ। चित निहि निह निहचल कथ॥
सस्त्र तेज जम जुत्त। दंत कढ्ढै मतवा रुन॥
दोउ अस्तुति उच्चार। पुहय नंषै सुरताउनि॥
पितभार भ्रम्म जल सामि कौ। धार असीधर धार वर॥
बुड्यौ विंव पामार भर। प्रकृति वुभ्कै नन अप्प कर॥
छं० ॥ १३४३ ॥

परत षेत पामार पान। वर धार धार चढि॥
वर द्रोपति जिम चीर। सत्त वेली सुरंग बढि॥
वर गौरी वै सेन। प्रंच क्रम मग्ग चलावै॥
परि पावस चहुआन। फिरत छिन मग्ग छुड़ावै॥
साध्रम्म मग्ग जिहि बंधयो। सो धार धार होय उत्तरिय॥
चंपयौ फेरि गोरी गरुअ। फेरि राज पारस परिय॥
छं० ॥ १३४४ ॥

दूहा॥ कटि मंडल सहसेन वर। उभै परिग्गह राज॥
गई आस गौरी गहन। गहन मोह गह आज॥
छं० ॥ १३४५ ॥

कवित्त॥ उभै बंध परिहार। सन दुहु मग्ग समाही॥
दल घघ्यौ प्रथिराज। बल न घघ्यौ बलघाई॥

बार बेर चहुआन । साहि मुष चढ़ि गज चढ्ढी ॥
बज्ज पट्ट तिन छीन । आय ब्रत्तर अंग बढ्ढी ॥
फिरि वाम मग्ग उभ्भौ न्रपति । है हक्कै चल्लै नही ॥
मधयान कंत कौ नीर ज्यौं । कछु अग्या भंजै जही ॥
छं० ॥ १३४६ ॥

परत मीर मारुत्त । वीर बज्जिय सुरतानह ॥
देव भूमि दस षान । जान जानीहि रसानह ॥
एक राय दस षान । धान घुंटिय धर षग्गह ॥
आसमान अच्छरिय । भयौ कोतूहल मग्गह ॥
सुर कहिय ससीहर आपनौ । अप अपलोक सुपन्नौ ॥
बर बीर बीर सित कंत सहु । जानि सुहागिन सुपन्नौ ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

सब हिन्दू या मुसलमान वीरों की बहादुरी ।

सारंग सारंग रूप । मिले दसषान महांमद ॥
यौं गज्जयौ गुर रन्न । जंत मुनि हक्क गरुअ सद ॥
षग बंबरि उच्छारि । ढारि हथ्थर पथ्थारं ॥
सार स्रोन झंझरिय । नष्प प्राक्रम्म सथ्थारं ॥
ताजीय कहं जगदीस दिय । सुष सुम्रद्धि संभर धनिय ॥
सवलोक लोक मंडल गयौ । धरकि हंस एकह मनिय ॥
छं० ॥ १३४८ ॥

षूब षान तत्तार । षूब मारू महनंसिय ॥
षूब षान आषूब । जेन सध्यौ रन गंसिय ॥
षूब ध्रम्म सामित्त । षूब सिर तेग प्रहारिय ॥
नाहर राय नरिंद । परिय पष्पर प्राहारिय ॥
अदिहार हिन्दु साहिब सुदिन । वह भोरी वह षेत मुअ ॥
ढालंक नेज नीसान ढरि । सेन सयन मंडी सुभुअ ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

दूहा ॥ गिरिजा गुन पुच्छिय गुपत । सुनिय सुपुप्प निधान ॥

जुद्ध धरिय लग्गिय लरत । चाहुआन सुरतान ॥

छं० ॥ १३५० ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध समाप्त ।

कवित्त ॥ दुतिय दिवस संग्रम । धाम धवरिय दिसि उत्तर ॥
देवराज दोलति षान । जुट्टिय रन दुस्तर ॥
दुओं राय सामित्त । मुंह मुंह झरि झरि आवध ॥
सिर सिर सिर तुट्टंत । तंति वज्जिय मुरगावध ॥
कथ कमल केलि कमला पतिय । दुअग दच्छि दुस्सह कथिय ॥
सुनि सुनि श्रवन्न भट धर जुगह । भुगति मंगि नंदि पारथिय ॥

छं० ॥ १३५१ ॥

सुवर वीर वन सिंघ । धीर जिहि धर उत्तारिय ॥
मिच्छवान सुरतान । लोह लाहौर उवारिय ॥
ता पौरुष परतष्पि । द्रुष्पि अष्पर कवि चंदह ॥
देवासुर दलन हिय । भिरिय मुअ पर भुज दंडह ॥
आवरत रीठि नन पिट्ठ दिय । पहर एक वज्जिय विषम ॥
जम जुरन हथ्थ लग्गिय न कछु । सूर मंडि मंडल सुषम ॥

छं० ॥ १३५२ ॥

रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना ।

नववति निसि नंसीय । बज्जि नीसान सवद्दिय ॥
हिंदवान सुरतान । हिंदु धर बर करि सिद्धिय ॥
गय भग्गिय अग्ग लह । सह्न संभरि संभरयौ ॥
षिन षिन जन जन जुरन । कीलि गोरिय घर घरयौ ॥
तद्दिन तुरंग मोहिल मरद । अरुन अरुन मंडल गहिय ॥
चुषकारि चित्त चिचंग पहु । बर विषान रंधह रहिय ॥

छं० । १३५३ ॥

गहकि सेन हिंदुअ नरिंद । चंप्यौ धरि आवध ॥
तब आए भर दुसह । सीस धारंत साइ उध ॥

सत्त सुभर सामंत। चेव भर रावर सिंघह ॥
तिन दिष्यौ प्रथिराज। जुद्ध रस रष्षत रिंघह ॥
नृप नांइ सीस अम्मर उकसि हक्कि सुलग्गे वीर रस ॥
उट्ठे सुलोह दुअ सांमि छर। एक्क तत्त अस्सिय उकसि ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पड़ना ।

विअष्षरी ॥ सोलंकी भीमह बर बीरं। पारिहार दच्छन रनधीरं ॥
कमधज्जह रयसिंघ महाभर। भाटी अचल अचल आवध भर ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

विजय राज बघ्घेल गुभभ्भग॥। मोलन सेंगर रत्त जुद्ध रघ ॥
मह्लन सायर अरसी सूरं। आए निज पति अग्ग करूरं ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

तीन सुभट रावर नमि सिंघं। आए पहु प्रथिराज उरंघं ॥
सिलहदार भापर बर अंगं। सुअन धाय दुज्जन छल जंगं ॥
छं० ॥ १३५७ ॥

षग्ग धार देदल षावासं। आयें चपि पहु जंगल पासं ॥
बीर करारे आवध बज्जे। भरहरि मीर अपुट्ठे भज्जे ॥
छं० ॥ १३५८ ॥

परिय भीर देषिय पहु सिंघं। दिय आयस प्रथिराज अरंघं ॥
गये सूर दह रावर चड्डे। आए षान साठि तमि अड्डे ॥
छं० ॥ १३५९ ॥

षां पिरोज नव राजन सूवं। आलम सालम फते अपूवं ॥
पीरन रेसन महबति मीरं। राजन ताजन हाजन पीरं ॥
छं० ॥ १३६० ॥

सोगन कालन हाजी गाजी। सेरन षोन गनी षां न्याजी ॥
हासन षां बिरहमषां षानं। गजनी षान दादुषां स्यानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

मुस्तफ षां उम्मर षां अत्तन । को जग षान जलाल समत्तन ॥
मीरन मीरन देगन दोसन । लाल नगालिब षान समोसन ॥

छं० ॥ १३६२ ॥

ए रन मीर एलची षानं । तोसुम मूसन सो सन बानं ॥
अलीषान सूरेम सुरेजं । सकत षान जलू षां जेजं ॥

छं० ॥ १३६३ ॥

कायम षान मीर आ महदी । ओसन षान जलेवस हद्दी ॥
मत्तो मार समर सी अग्गें । मनो कज्जि सिंघं सो लग्गे ॥

छं० ॥ १३६४ ॥

आवध आवध बज्जि अपारं । सेलहि सेल सों सारे सारं ॥
अस्सी भार कर पटा पहारं । धरब हार चढ्डिय पग धारं ॥

छं० ॥ १३६५ ॥

भूझे कंठ कंठ एकेकं । करे घाव छलि का छल केकं ॥
अंत अंत रुभभे सम सूरं । मानों कच्चर जुद्द करूरं ॥

छं० ॥ १३६६ ॥

केस उकस्से तुट्टे आवध । धर ऊपर भर करें महाजुध ॥
श्रौन प्रवाह-षलक्के षालं । फुरके फेफर तुट्टे बालं ॥

छं० ॥ १३६७ ॥

घरिय पंच जुद्धह परचारं । हिंदु मेछ घन परे पथारं ॥
साठि षान दस राय रवद्दं । परि धरनी क्रित करे रवद्दं ॥

छं० ॥ १३६८ ॥

आर्या ॥ यह रावर बर बीरं । सट्टिय षाम ठान भर धीरं ॥
भुभ्भे गये सुरेहं । रोहत रवि बिंब राय षुम्मानं ॥

छं० ॥ १३६९ ॥

दूहा ॥ भगी सेन सुरताम रन । गए पास बन षान ॥
देषि अप्प दोर्यो बिहसि । सज्जि सीस असमान ॥

छं० ॥ १३७० ॥

शाही सेना में से शाह के भांजे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ तब तज्जयौ षान षानौ करूरं । सुरत्तान भानेज जुद्धं जरूरं ॥
सहस्संच पंषं बरं बंधि फौजं । बचै बाच दीनं सुदीनं सरोजं ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

हहक्कारि गज्जे सुमीरं गुहीरं । करी सब्ब मानं सुरक्की कठीरं ॥
सनमुष्ष रा स्वामि चिषंगं कोटं । सहस्सं चिबीरं बरं बंधि ओटं ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मिले धाय दूनं उभै हिंदु मीरं । वकै उंच बाकं जुटै जुद्ध धीरं ॥
दुवं डारि ओडंन गज्जं गहीरं । घनं घाय अघ्घाय तुट्टै सरीरं ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

फरक्कंत फेफं सुभ्भंत अलुभ्भं । चलै श्रोन धारं षलक्कीच भुभ्भं ॥
परै अंग अंगं सुभट्टं सुरेसं । कटै गात गौरं अधं बाल बेसं ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

हहक्कंत हक्कंत धारं करूरं । उभै हथ्थ बथ्थं मिले सूर सूरं ॥
मचै बीर आवद्ध तारी चिघायं । उकस्संत कस्से छुलिक्का छुरायं ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

मिले दिट्ठ षानं षुमानं सऊरं । चलै सम्मरी मंग हक्के करूरं ॥
चढे ऊन दूनं भरं बीर रुपं । मिले बोल बोलं सुभै सब्ब जूपं ॥
छं० ॥ १३७६ ॥

हयौ षान षुम्मान संगी सऊरं । चले षंग सीसं हयं पग्ग सूरं ॥
समंजीन फट्टी हयं जीन जामं । धनं धन्य जंपंत आयास तामं ॥
छं० ॥ १३७७ ॥

फिरे आय पुट्टे सुषानं जमानं । हयं पग्ग लग्गं कटिं तुट्टि थानं ॥
भरै धार हंसेल लीनौ समुष्षं । हयौ ताम कट्टार नामुष्ष[1] कष्षं ॥
छं० ॥ १३७८ ॥

चली जोति षानं षुमानं अयासं । समं तेज तेजं समं सूर नामं ॥

(१) ए० कृ० को०—सुप्प ।

परे सहस त्रय मीर हिंदू सहस्सं । कटे मंडलं इन भर रूक रस्सं ॥
छं० ॥ १३७९ ॥

खानखाना के सिवाय अन्य १४ मीरों को मार कर समर सिंह जी का स्वर्गवासी होना ।

दूहा ॥ गचि त्राहत्त सुजुद्ध बर । तुटि पुट्टे सब सस्त्र ॥
अनो अन्न सममंस सुनि । किरच किरच बहु अस्त्र ॥
छं० ॥ १३८० ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ सिर सीस । छंद छलनी क्रित आसह ॥
इह अलुप्य नन भाप्य । हयं कूदति आरासह ॥
नन आई आचरन । आन अच्छरी उछंगह ॥
धर धरन्त तुटि तन्न । तान जोगिय भग्गा मह ॥
असवार सनाहति अस्सु बर । धार पार होइ उत्तरिय ॥
चित्रंग राइ रावर समर । बिहुन अस्त समझि न परिय ॥
छं० ॥ १३८१ ॥

जब दल षान ततार । मार मथ्थे परिहारं ॥
समर सिंघ अवलोकि । हयौ ओडन करिवारं[1] ॥
चपल हथ्थ बरमथ्थ । सीस तुत्यौ रडवंडह ॥
रुडं मुंड हुअ षंड । सुंड कट्टे दती बंडह ॥
परि टोप अग्ग बगतर जिरह । षां अपुठ्ठ भेरें भरां ॥
ढहि गजरोज साज झलपट भयौ । समर सिंघ पावक करां ॥
छं० ॥ १३८२ ॥

बर दिट्ठ मुट्ठि षंधार । षान नवरोज रिसानिय ॥
भिस्ति छंड़ि दोजिग परंत । तुच्छ अग्गैं हिंदवानिय ॥
वे भग्गिन मारूफ़ । गुलब गाजी सुनि संमन ॥
क्या काफर फरजंद[2] । फते पीरोज षां कंमन ॥
रे चमरेज गुंजार षां । पढ़ि कलमा मुष करिकहौं ॥
सुरतान आन चहुआन सम[3] । सब हिंदू एकत ग्रहौं ॥
छं० ॥ १३८३

(१) ए. कृ–को. फेरे । (२) ए. कृ. को.-फरइंदे । (३) ए. कृ० को०-कौं ।

दूहा ॥ समर सिंघ केते कतें । जहं तहं कहु मार ॥
गनैं कोन हयगय झरे । परेषान दस च्यार ॥ छं० ॥ १३८४ ॥

कवित्त ॥ *परे षान नवरोज । टूक टूकह तन तच्छिय ॥
जो भग्गिन मोरूफ । सार सुभ्भिय मुष अच्छिय ॥
परे षान गुल्लाब । समन रेचम मम रेजह ॥
गुंजार षान बाजी । समर सिंघ सें हथ्थ ढहि ॥
पीरोज षान मीयां मरद । वे ओडन घल्ले सु बथ ॥
चिचंग राव चावद्दिसा । चवै ईस अच्छरि सु कथ ॥
छं० ॥ १३८५ ॥

दूहा ॥ सिरदारह दस च्यार गिरि । समर सिंघ घन घाइ ॥
ह्व विहान उत्तरि परे । चढ्ढे पील मंगाय ॥ छं० ॥ १३८६ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि षान षुरसान । गुर बर जंमथ्थ उपदिय ॥
समर सिंघ मुष चहर । हिंदु मेछन मिलि जुट्टिय ॥
गिद्धिन पल संग्रहन । जुथ्थ लंबे रन आइय ॥
श्रोन परत निज्झरत । पच जुग्गिनि लै धाइय ॥
पल चरिय मेछ हिंदू सहर । अच्छरि मत्त अति जग्ग किय ॥
महदेव सीस बंधे गरां । काल झरपि लीनौ[1] नुजिय ॥
छं० ॥ १३८७ ॥

प्रिया कंत परदीप । लज्ज संकर गर बंधिय ॥
जिय वासुर दोइ च्यार । बहुरि कलिजुग्ग सुषद्धिय ॥
सोई लज्जा के कज्ज । रज्ज मुक्यौ रघुराइय ॥
रावन लंक विनास । लज्ज बंध्यौ सरिताइय ॥
लज्जां सु कज्ज नग देव न्रप । सीस कढ्ढि हथ्थां धरे ॥
इह कवित एक लष सरिस । लरनहार लज्जां भिरे ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

मोतीदाम ॥ पर्यौ धर रावर सावर धाइ । षयंपग पेग तनं मिछताइ ॥

* इस छन्द के चतुर्थ चरण से मालूम होता है कि बीच में कोई एक आध कवित्त छूट गया है केवल उसके पंचम या षष्ट चरन की यह एक पंक्ति शेष रह गई है ।

(१) मो०-लीयौ ।

घटसठ घाइ निघाय अघाइ । कटे कट युत्तर उत्तर नाइ ॥
छं० ॥ १३८९ ॥
उथ्यौ दल पां षुरसान अपार । मनो दधि गंग मिलान प्रचार ॥
अगें गजबाज चिकार हंकार । मंडी धर बाघुर घोर निकार ॥
छं० ॥ १३९० ॥
फरक्कत नेजनि नेत उतंग । मनौ रति राज विराजत दंग ।
झरै गज रत्त द्रवै गिरि घत्त । परै गन मोतिय आरति तत्त ॥
छं० ॥ १३९१ ॥
चमू चतुरंग चवै चवसट्ठि । बजावत ताल बिताल अतट्टि ।
धरे मह मीर महाभर भार । बजै पग कुंतनि तारनि तार ॥
छं० ॥ १३९२ ॥
सरथ्थर लुथ्थि अलुथ्थि पलथ्थि । झरप्फर गिद्ध तरफ्फर तथ्थि॥
उड़ै घन छिंछ लगें असमान । उठै जनु होरि फुलिंग प्रमान ॥
छं० ॥ १३९३ ॥
लगे बर सावध आवध वथ्थ । नचै धर मीर बिना धर मथ्थ ॥
जयज्जय सद्द सुबद्दहि एत । पर्यौ कटि रावर राइ सु षेत ॥
छं० ॥ १३९४॥
मिल्यौ प्रथिराज विराजत[1] रेन । पर्यौ गज सिंघ अबी हन सेन ।
कर्यौ पयपान धरी गज भाल । कढ़ै रथ कालिय नथ्थ गुपाल ॥
छं० ॥ १३९५ ॥
ढरै धर गज्ज बहै रत झार । निसातम भै चँप छुट्टि अपार ॥
हुए सम षानहि एहक सेर । उरप्पर ऊरध अद्ध विरेर ॥
छं० ॥ १३९६ ॥
मनों द्रुम राज लगे दोउ वीर । निकस्सय एमय पारनि सीर ॥
भरे अगतून तनं तन राज । लगे अहि धाय मनों तर राज ॥
छं० ॥ १३९७ ॥
लगी मुष संगिवि षान षँधार । बजावति मागध भेरि भँकार ॥
परे कर कुंत गहै कर षग्ग । महब्बह सेन वियं गज मग्ग ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

---

(१) ए० कृ० को०-बिराज बिरेन ।

परी गज कुंभनि कुंभनि तार। घयघ्घन बीज छुटी अतिभार ॥
इते परि सीस पुंतोर समेत। उते परि नोग सिंदूक समेत ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

भए षव कोदनि मीरनि मीर। लगे रवि ते घट बीरनि बीर ॥
लग्यौ न्रप रस्स भरझ्भर षग्ग। जगो जनु बीज घनं घन बग्ग ॥
छं० ॥ १४०० ॥

चलै रत बान चलै घन बुंद। गनं रज निद्धि अनुं मिटि दुंद ॥
गिरे दह दाह मसंद सु घाय। गिनै कुन नाम तिनैं अततादू ॥
छं० ॥ १४०१ ॥

पटा झट कुंतनि बाननि मान। परे गज कुंभति कुच्छ प्रमान ॥
परे कटि पट्टनि षंडनि षंड। फरस्स फिरत्त तरप्फर तुंड ॥
छं० ॥ १४०२ ॥

वियारिय दूरिति ओन अपार। मनों नषि धीमर जार मझार ॥
गहै इत उत्त सु गिद्धनि गिद्ध। मरालिय अंचि सिवाल अतिद्ध ॥
छं० ॥ १४०३ ॥

विचें सिर रूह तिरै सिर सार। तिरै मनु वारि बतक्कनि लार ॥
करै षवसट्टिनि मंगल चार। नचै नव नारद जुद्ध विहार।
छं० ॥ १४०४ ॥

कटे जुग तीन दहं नषस्सूर। रहै षवकठ्ठि सवें वर सूर ॥
.... । ... छं० ॥ १४०५ ॥

दूहा ॥ के सांई भर उप्परह। के भर उप्पर सांइ ॥
कटि मंडल हिंदू तुरक। हय गय घाय अघाइ ॥ १४०६ ॥

बाईं अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए।

रावर सिंघ रहंत रहि। साठि षान दसराइ ॥
परत मइन परिहार रन। मेछति सहस सवाइ ॥ छं० ॥ १४०७ ॥

भुजंगी ॥ परे साठि षानं दसं देह रायं। ढहे ढाल नेजानि नीसान ठायं ॥
छुटै मंत मैमंत दीसै दिसानं। चढी पंति पंषी परे पीलवानं ॥
छं० ॥ १४०८ ॥

उलोलंम आलंम छची छितानं । जुटे जोट जुट्टे भए भै भयानं ॥
रुप्यो रंघरी राव बाराह षेतं । रह्यौ रोह आपूव पानं सु जैतं ॥
छं० ॥ १४०९ ॥

भरै बान सन्नाह सुभ्भै सु देही । वियौ चष्य लष्यै अपे जानि सेही॥
गहै षग्ग धावै सु वाहै पचारै । लगै घाइ पुंडीर सांई सभारै ॥
छं० ॥ १४१० ॥

नियं भ्रंम रप्पै सदाव्रत गैही । हडुडुह षेलंत बालक्क जेही ॥
परी का भषै का जरै का हुतासं । अस्तूतीन तेंके घरं की अयासं॥
छं० ॥ १४११ ॥

कियं जुट्टि हड्डं रनं रत्त रत्ती । लही मुत्ति छचीन सुछिम्म गत्ती॥
फटे सेन दूनूं भरंगो उभारं । दिषें थान थानं जिसे प्रात तारं॥
छं० ॥ १४१२ ॥

म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेर जाने का वर्णन।

दूहा ॥ वाम अनी कंदल भयौ । सो जान्यों[१] दछिराज ॥
सित संदेह समुच्चरयौ । अवरन रुंध्यौ राज ॥
छं० ॥ १४१३ ॥

भुजंगी ॥ चंपी सेन दूनं चहूआन गोरी । वजे घाइ आवत्त असुरत्त जोरी
उवं घाइ छिंछं सु सोहै प्रकारं । मनो बीर रायं वसंतं सवारं॥
छं० ॥ १४१४ ॥

तुटे मंस अंसं चलं सूर सूरं । तिनं देषियं भंति कंती करूरं॥
वजे घाइ भांई मिटे जो निसानं । उडै गिद्ध सिद्धी सु पावै न जानं॥
छं० ॥ १४१५ ॥

उडै बीर बत्ती सु भारथ्थ जित्ती । मिसे मत्त मंतं लगे लोह तत्ती॥
.... छं० ॥ १४१६ ॥

रसावला ॥ इत्त अैसें भरी, सेन भग्गा परी ।
सोहि जा ढल्लरी, चोहुं पष्या फिरी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
राइ जा संभरी, लेहु, लेहडरी ।
ढिल्लि रा जंभिरी, उट्टियं अम्मरी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अप्पौं ।

नैन रत्तं रारी, षोलियं पंजरी ।
रुक्क रुक्कं तरी, जानि विज्जू झरी ॥ छं० ॥ १४१९ ॥
अद्ध अद्धं धरी, भूमि लुट्टै करी ।
वारि तुच्छं परी नेज चोरों सुरी ॥ छं० ॥ १४२० ॥
श्रोन रंगं तरी, देव देवं हरी ।
बरन अच्छी वरी, सुगति षोली दरी ॥ छं० ॥ १४२१ ॥
दोंन दोउंटरी, सामंतं चै परी । छं० ॥ १४२२ ॥

पृथ्वीराज को अपने को घिरा हुआ जान कर गुरुराम को कुंडल दान करना ।

कवित्त ॥ या रष्षै गुर राज । राज विग्रह सुष चायौ ॥
पंच इतं कुंडलिय । लषै द्रव्य कोरि सवायौ ॥
जा जोगिनिपुर देव । राज राषहु षहुआनिय ॥
सों काया बल भग्ग । संग छै हुं सुरतानीय ॥
दुज हस्त मंडि छंड्यौ तुरयौ । [1]सोरह मुद्ध विरुद्ध दिन ॥
छिन भंग देह विज्जुल छटा । दुष्ष न करहिं महंत मन ॥
छं० ॥ १४२३ ॥

गुरुराम का कुंडल लेकर चलना और सुलतान सेना का उसे घेर लेना ।

पानि मंडि लिय दान । सुक्ति भनि वेद मंच दिय ॥
मंच जाप आलपा । राज अंगह अभंग किय ॥
सार धार व्रिघघात । भेद छेदन [2]राज वप ॥
सिलहदार सारंग । सथ्थ किय इन्द्र देव जप ॥
वज्जंग पाट गाजीय सकति । घररि घंट गोरीय सुघर ॥
सुनि सद्द धक्क हुँगय सुरिय । सहस पंच उत्तरिय भर ॥
छं० ॥ १४२४ ॥

रहस पंच उत्तरिय । पान षुरसान सपत्तौ ॥
पट्टपच्छै पतिसाह । आय सुरतान सिपत्तौ ॥

(१) ए० कृ० को०-मोह रस विमुद्ध दिन । (२) मो० गाय ।

तीन वान पज्जून। मारि अंकुस नग फेरिय ॥
चक्रवान चतुरंग। जंपि चावद्दिसि घेरिय ॥
परि मिलछदार सारंग दे। गरुश्र पान गोरी गलिय ॥
उर उगति उरजि अच्छरि अछिनि। उर बंसी छिरदै वसिय ॥
छं० ॥ १४२५ ॥

कुंडलिया ॥ दिव कुंडल स्रस्वस्ति यपि। फिरि दप्पिन गुर राज ॥
सरन जानि इच्छौ सरन। स्वामि सु भुल्ल्यौ काज ॥
स्वामि सु भुल्ल्यौ काज। सु दल धायौ दल श्रोनद ॥
वरै न सत्रु समध्य। उभै वड गुज्जर द्रोनद ॥
उर चंप्यौ कट्टार। लेह छप्यह रन मंडलि ॥
विप्र जाति न्रप हेत। श्रपिय सवस्तिय दिय कुंडलि ॥
छं० ॥ १४२६ ॥

वहवल खां का गुरुराम का सिर उड़ा देना, गुरुराम का पड़ते पड़ते शाह के भांजे को मार गिराना।

कवित्त ॥ गुर ढिग कुंडलि देषि। पेषि वडवल्ल पान धपि ॥
द्रोपद सुत जिमि तेग। वेग भारी भनंग(१) भपि ॥
राम सीस लिय ईस। कमल विन पंजर कढ्ढयौ ॥
हथ्थ छेदि उर पान। पीठि पच्छै दल वढ्ढयौ ॥
वामंग हथ्थ अचरिज सुनहु। अरि कटि तें असिवर लियौ ॥
भानेज साहि साहावदी। हय समेत चव षंड कियौ ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

दूहा ॥ द्वै वंधव भानेज द्वै। द्वै दुष कीनौ साहि ॥
दुज कौ दुज प्रथिराज भय। गुरु विन बंदो काहि ॥
छं० ॥ १४२८ ॥

गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चात्ताप करना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। बाज तजिहौं पनि भुक्कौं ॥

(१) ए० कृ० को०—कनंक।

मुओ राम गुर राज । मंत कासों सिवि बुझ्झौ ॥
आज मुओ सोलेस । आज कैमासह झुझ्यौ ॥
आज कन्ह गोयंद । सूर सामंत न सुझ्झ्यौ ॥
इह जान दयौ कुंडल करन । उस जान्यौ गुर जाय घर ॥
कूरंभ कहै चहुआन सुनि । दुष्ष न करहि सहंत नर ॥

छं० ॥ १४२९ ॥

दूहा ॥ हम अब दुष्ष न सुष्ष मन । नह दिल्लिय धन धाय ॥
मोरें मेछ ससंद जुरि । इह लग्गी मन चाय ।

छं० ॥ १४३० ॥

पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना ।

भुजंगी॥मिले चाय चहुआन सुविहान गोरी।महा लंम जंघं रची जानि जोरी॥
तिनंकी उपम्मा कविचंद घट्टे । उभै झाट पीलं सटं दुष्ट भट्टे ॥

छं० ॥ १४३१ ॥

तिनं मझ्झ झग्गं सुवंकी चमक्के । कियं अेस चंदं बलं बान छक्के॥
धवै गिद्ध सिद्धी दुघ्घं चेस घग्गा । धनं रत्त धारं बरष्पन्न लग्गा ॥

छं० ॥ १४३२ ॥

निसानंक घायं घवाजं फुरक्के । लुटै सद्द तिन्नं बजै धार बक्के ॥
चली लालची जोगिनी पच छंडै । घुटै रुद्द रची सुरत्तीव कड्डै ॥

छं० ॥ १४३३ ॥

तुटै सीस भारी द्रयौ द्रोन नंचै । मनों बीर नट्टं सयं अंग रचै ॥
षिज्यौ षान तत्तार चंपै सयन्नं । छिपे साहि गोरी झुकै बीर तन्नं॥

छं० ॥ १४३४ ॥

कवित्त ॥ सकल सूर सामंत । परी पायस चहुआनं ॥
पेत हथ्थ चढ्यौ । तारि काढ्यौ सुरतानं ॥
षां ततार सारूण । एहि चतुरंग पलाइय ॥
विषम लोह वज्यौठयौ । बीर दर नंचि दधाइय ॥
तुटि वंध कमंध ननच्छिदर । धार धार धर उत्तरयौं ॥

पत्तेसु सगर सौभाग लव¹ । आसु ध्रुव मंडल चित्तर्‌यो ॥

छं० ॥ १४३५ ॥

गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना।

बद्द धारिय गुरु राम । सच सन्नाह कवच दिय ॥
लघ रुद्र। नर सिंघ । चरन चक्र भुज रष्टा किय ॥
पग पिंडी दग पिंड । बसे वैकुंठ जंघ वर ॥
रोम रवनि कटि रष्षि । गूढ़ गोविंद गदाधर ॥
चल उरद्द पात्र परजर्‌यो । भुज वामन कंठह हरी ॥
रूप रसन कान द्रिग केस वर । काल बंध इत्ती करी ॥

छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ सम पगंस सुगंस करि । पग अमग्ग चहुआन ॥
दिसि दच्छिन प्रथिराज पर । उसरि सेन सुविहान ॥

छं० ॥ १४३७ ॥

कवित्त ॥ प्रथु आवध छुट्टिए न । गुरज बज्जिय गुज्जर पर ॥
जनु पषान पर बुंद । रुंद लग्गिय दुज्जर धर ॥
टुटि टट्टर सिर ओन । छिछ्छ उट्ठे भुमि तुट्टिय ॥
दूर गिरद्द सन तंत । सद्दस आवध खौ छुट्टिय ॥
असुरेत धाय² इसत घरिय । लरियति जीय डरियति परिय ॥
धन सेन साधि गोरी गरुअ । तिरन तुंग तिनत्तर करिय ॥

छं० ॥ १४३८ ॥

रामराय बड़ गुज्जर और मीर पंचाइन का पराक्रम।

बड़ गुज्जर रा राम । ढान ढुट्टहि सुरतानह ॥
है गै नर बिच्छिन्न । आनि भगराज भगानह ॥
सबें सेनपति साधि । कंध कढ़िन झक झंक्कै
कुटिल द्रिष्ट जहं फिरै । सकल सिलि सिलह रुक्कै ॥

(१) ए०—असुक्रव मंडल नित्तसौ।

(२) ए० कृ० को०—आउ।

उम्मरिय उहकि जोगिन हँसै । जिम जिम धज बंबरि लसै ॥
दनु देव दच्छ गंध्रब्ब नन । सक्कति सूर कित्तिहि कसैं ॥
छं० ॥ १४३९ ॥

दूहा ॥ संत मंत के दंत पर । हनी संग वर राम ॥
कहै कार उकढै नहीं । वत्त कहंत भए ताम ॥
छं० ॥ १४४० ॥

कवित्त ॥ लष्प लष्प कहु गहिय । कठिन कुकास कुस वानिय ॥
सुरिन मीर मारंत । सोज संसारह जानिय ॥
सुर नर गन गंध्रब्ब । तिनहि लगि सत्त न छंड्यौ ॥
अंगद जिम अंकुरयौ । भीस जिय भारथ मंड्यौ ॥
उछे बहरनि हिंदू तुरक । धरह लाज सो विस्तरन ॥
करि उर हनंत तुट्टिय कटकि । सुरी संगि कारन कवन ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

सुहिन दोस यह देह । सु मेरौ बचन इक्क सुनि ॥
स्वामि काज संदेह । करत विसठार सबनि मन ॥
एक धरनि खरभरहि । एक गहि धरनि पछारै ॥
तीषे तरल तुषार । तिनहि तिनुका करि डारै ॥
न्त्रिम्मलिय संगि कुंजर डरह । तुम सु तेज अग्गर वहिय ॥
मन सुरिय राम रंजवि[1] मनह । रुहिर पीयत लुम्भि सुरहिय ॥
छं० ॥ १४४२ ॥

मोटक ॥ नचि नंचि नरे[2] जुथयं जुथयं । ततथे ततथे तह थान थयं ॥
अमिजं असिजं असि झंझलयं[3] । लुथि लुथिय उत्तथिय प्रलै पथयं ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

गज बोज फिरक्कि फिरै हथयं । गन गंध्रव जप्प कथै कथयं ॥
जुध भारथ पारथ जेम थयं । दिवि दिट्ठिय सोन सुनी अथयं ॥
छं० ॥ १४४४ ॥

(१) ए० कृ० को—रंजहि ।
(२) ए० कृ० को०—जुरे ।
(३) मो०—झझलियं ।

उड संबल लो उड्ता धययं । ठग ठग्गिय नेन निमेल ययं ॥
छं० ॥ १४४५ ॥

सुकुदंडासर॥सक साल सुमाल स चाल सुचाल छइंकि जमाल छलं मिलयं॥
अगिवान रवान विवान रूभान किवान रपान किसान जलं ॥
घर जा पढि़ मंच स लसंच ससस्त रनोगन रत्तिन छच छलं ॥
किल किंचित वीर सुमीरहि सीर गए रन भीर जलोज थलं ॥
छं० ॥ १४४६ ॥

किन नंकि तुरंग कुरंग कि आछ विछाछ सुविंतिभ भार भरं ॥
घटि कायर सिंघ गए दिव विद्य परें इत हिंदुअ मेछ धरं॥
.... छं० ॥ १४४७ ॥

कवित्त ॥ सुष निहारि छच धार। पर्यौ पंचो पंचानन ॥
गोरिय दल बल अच्यौ। चुंगल चंप्यौ मेछानन ॥
एक सार उर धरिय। एक धारछ उर धारिय ॥
एक मार सस्मार। एक झारछ उर झारिय ॥
वर बरनि विहसि दच्छि जु कयैं। रहसि रहसि पुच्छे जुरह ॥
घरि एक तरंगिनि रुक्कि जल। कमल जानि लच्छौ जु सर ॥
छं० ॥ १४४८ ॥

राज राव परसंग। देव यग्गरी बड़ गुज्जर ॥
षग्ग मग्ग अकलंक। सिंघ सांई भुज पंजर ॥
राज गुरू दुज राम। कलिय बंभन भय भंजन ॥
सिलहदार सारंग। सार सिंधुर भर गंजन ॥
छिति छच धार पंचाइनौ। सहस अद्ध अद्धेस सर ॥
सिव सुनि सुदच्छ अस्तुति करै। साषि भरै गिद्धिन ससर ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

एक गिद्धनी का संयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना।

पंन धारि दिय पच। कांन लग्गवि कर सायौ ॥
पंग पुचि किय पचि। बंचि संदेस सुनायौ ॥
अमिय गयौ कल चंद। कमल मंडिय सुमान सर ॥

गति गयंद गत इंद। रूप रति रंभ सुरगद्दर ॥
मति[1] मान बिनय लच्छी सहज। मोर पंछ केसो सरन ॥
छाहंत तार छक्कयौ छियो। उडै न हंस तुअ हंस बिन ॥
छं० ॥ १४५० ॥

संयोगिता का संकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का संक्षेप में वर्णन करना।

सोंधे सर न्त्रप फुट्टि। हंस पंजर दुष विद्धे ॥
इस लष्षां बरनेह। बीर संजुर आरुद्धे ॥
प्रीति छाउ उर हंस। हंस बिन हंस न उड्डै ॥
छिन पंजर परि भई। बाम कहि साया चड्डै ॥
संकैव हंत चल्लै नहीं। चित्त पंथ उत्तर गही ॥
हंसनी हंस औं हंस को। हंस इंस करती रही ॥
छं० ॥ १४५१ ॥

रे पल्लधार परिहार। हंसनी हंस हंस किय ॥
हंस परा भव गत्त। उडै पग्ग नहि सुक्किय ॥
सोइ हंस हंस सों नेह। हंस विन नेह न जोई ॥
सोह हंस सों बंध। हंस बिन मोह न होई ॥
आबुद्ध हंस हंसह सरस। सुन्यौ मोह छंड्यौ हियौ ॥
उड्डै न हंस न्त्रप हंस वर। जोल सुद्ध सुदह कियौ ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

पल्लधार परिहार। गुज्झ गांमार वार तिहि ॥
सु ग्रह नारि उर धारि। कहै संदेस वार इहि ॥
निबर पेस संचारिय। सबर संचार गल्ल लज्जिय ॥
छल बल बाल छुट्टै न। जानि जिस बाल सा लज्जिय ॥
तुअ काम नास केहरि कामल। सार धार चड्डै बिमल ॥
पल चारिय पाइ जोगिनि पुरह। कहै कारय गिद्धिनि सबाल ॥
छं० ॥ १४५३ ॥

(१) मो०—नन।

कुंडलिया ॥ जनम जानि अंतर मिलन । जोगिनि पुर्ह आवास ॥
जग्ग लगि बंध्यौ गरुअ । सठ परि गउरु पवास ॥
सठ परि गउरु पवास । जन्न मंडिय जानि संजोरह ॥
काम धाम धम्मानि । पार छंडिय परिहारह ॥
छत्र धार सुरतान । मारि सिरषां मनसुप्पह ॥
करहि देव वंदना । पग्ग पावास जनम कह ॥
छं० ॥ १४५४ ॥

दूहा ॥ इह कहंत कूरन वयन । उद्दै अनंदौ वीर ॥
चाहुआन उप्पर परिग । दोउ दीन अरु मीर ॥
छं० ॥ १४५५ ॥

गिद्धिनी का संयोगिता के महल में राजा का चमर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा संयोगिता का गिद्धिनी से हाल पूछना ।

कवित्त ॥ चमर जंग नीसान । पान वर बाग विछुट्टिय ॥
क्षुत्र[1] विहार चौराक । गोर जंबूरन छुट्टिय ॥
चौर ढार पा चिन्न । चौंर ढारत कर भग्गिय ॥
धर अंपर संचरिय । चंद करि मावसि उग्गिय ॥
गहि चुंग घरी इक सुभ्रमरिय । जोगिनी पुर जोगिनि विमल ॥
हिंडोल हेस संजोगि ग्रह । चमर डारि गिद्धनि समल ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

कुंडलिया ॥ छाहंतन कीनौ सषिन । दिषि गिद्धिनि हिंडोल ॥
चमर इष्षि चिंतनु कियौ । नग मोती अंमोल ॥
नग मोती अंमोल । सोहि तरुनी उर चंप्पौ ॥
इह सांई संदेस । समल गिद्धिन मुष जंप्पौ ॥
उदिक अघं आरम्भ । कह्यौ भारथ कथ कंतह ॥
चमर चंपि उर तरनि । सास कठुन हा हंतह ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

(१) ए० कृ० को०—मुंइ ।

गिद्धनी का आरंभ से युद्ध का वर्णन करना ।

त्रोटक ॥ पति वृत्त सुनंत संजोगि सती । ससली पछ गिद्धनि उछ मती ॥
उह कालिह कुह दिन कंद सभी । घटि एक घटं लहि रष्पिन ज्यौं॥
छं० ॥ १४५८ ॥

प्रथमं प्रथ कंत कथंत कथं । पुनि राय लधू नव राज सथं ॥
दिसि वाम उठी षुरसान अनी । तिनके मुष रावर सिंघ रनी ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

कर सिंगि जुगाग सुषी विगसी । पछिरे हिस हस्तम षां नगसी ॥
न सही प्रभु जंबुक की अरकें । धक धी धक धींग परयौ धरकें ॥
छं० ॥ १४६० ॥

गिरयौ षग' षान षुरेस गिरयौ । दुस पेंड दिवान ततार ढिरयौ ॥
विश्नि षेत रह्यौ षग षानि जिहां । से पान जुवान जहान तहां ॥
छं० ॥ १४६१ ॥

षग सेल झुलै उसला उछ पै । निरषानद सेल भुजा बल कें ॥
उर पार फुटें हुलसे निकसे । जनो पल्लव पौतिकि के विगसे ॥
छं० ॥ १४६२ ॥

जिन रावर राइ पुंडीर वरयौ । तिम पार नग्गडअ कोन रहयौ॥
मदुं पंच हजार तिलष्षि लिले । दस तीन दासंध उठंत पिलै ॥
छं० ॥ १४६३ ॥

सिर हकि सियाल सुगिद्धन सी । इति पथ्थ पाहौ ससली सरसी ॥
फुनि गिद्धनी त्याग चहै रहसी । जिम हिंदुअ सेछ भए विहसी ॥
छं० ॥ १४६४ ॥

दूहा ॥ ते सब मिलि बर जंपि कथ । रावर राज नरिंद ॥
सो वित्त भारथ्थ मे । सो वाहि दुष्य चनंद ॥
छं० ॥ १४६५ ॥

है चिरही भारथ्थ याय । जंपि सुगिद्धनि हुन्द ॥
सुनिय श्रवन भारथ्थ वाय । उड़ै हंस वर हुन्द ॥
छं० ॥ १४६६ ॥

(१) मो०—मग ।

कवित्त ॥ पिथ्थी कांत सुनि वत्त । जुद्ध तालंत समर कौ ॥
वर मनुष्य जांनंत । जान दानव चंदर कौ ॥
सिर तुट्टै धरि रन । ग्रीव नचि चलि वर भारिय ॥
सवै सेन सुरतान । पान संस्तुति उच्चारिय ॥
सिर तुट्टि कमंधन मटिक रन । सो चोपम वरदाय वर ॥
वर रूपत जिसौ गज्जे वरन । बरजोरी चुझ्झार वर ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

दूहा ॥ रुप कमंध रुद्ध वरन लिय । सीस ईस को दीय ॥
तन धारा धर उत्तरिय । पखचर सूपन कीय ॥ छं० ॥ १४६८ ॥
कहि गिल्लन समरी सुतहि । ज्यों वित्यौ भारथ्य ॥
समर वीर सध्धह परी । सुकहिन सुभर भर कथ्थ ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सुभर पाघार । सेन सुरतांन ढंढोरिय ॥
परि सुगौर नाहर नरिंद । दूर रष्यिय अजमेरिय ॥
पर्यौ दंध सुरकित्त । कंध रहिन कोबंध बलि ॥
परि खुमान कुम्भर सुबेर । सार सुरतान भज्जि मन ॥
रावर नरिंद सत[१] चन्द पदि । परि भग्गा भग्गा न कज ॥
तातारषान षुरसानपति । सुष पट्ठे श्राहुट्ठ रज ॥
छं० ॥ १४७० ॥

साटक ॥ श्राचिज्जौ चापिरुद्र रावल रनं सूपाल भूपालयं ॥
सारा कीत विपर्तयंत धरनी म्रियाकमं घातयं ॥
धारा धाव रु धुम धध धरनी एरं सुरत्तानयं ॥
गोरी सेन सिपार तुंग तरनी ताराय तारायनं ॥
छं० ॥ १४७१ ।

दंती दंत उमत्त मत्त उमत्ती सुगाई डुग्गाहनं ॥
ढालं ढाल उढाल भाल उलल म्म्माइडनं ॥
हायं हाय सु हंस हंस तुअगी जूले जटो जूटनं ॥
लूटा लूटि सुषग्ग पग्गं षचरं षद्धासि षायाननं[२] ॥
छं० ॥ १४७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सत । (२) ए० कृ०--सायइनं, को०-पायइमं ।

अंती अंत सु अंत रोह कलनं पुंगाय पुंचूमुटं ॥
रंभी रंभ सुरंभयाह वहयो वंराह रंभाहनं[1] ॥
चासं साय प्रपडं दैत लितयं गेठं समुद्रं नगी ॥
नेजं नेज सुनेत नैत किरयं दक्ष्मायं नुत्ती लगी ॥ छं० ॥१४७३॥
तव दूरा बड गुज्जराह दिरयं भोनं जिता सोनयं ॥
सारूरं[2] घर रंबि गोरिय घरं घर वाम्भितं मिडुरं ॥
ताप लगत दपंत छुडंसि पिलं दाला जिता वानयं ॥
सा वानं सुनि सिवछ दच्छ उदलं घोशासितं पंभरं ॥
छं० ॥ १४७४ ॥
तव भीमच्छ पुंडीर पावसरसं सिंघा हिनं दापरं ॥
पां पाना पुरसान जीति रुसयं हंसानि हुंछं उरं ॥
वोहंते कूरंभ परग परसयं पालानि पलौं हपं ॥
दै दै कंति दपंति हुंति उदधी न्यालं ति वायं पुरं ॥छं०॥१४७५॥
सा सुनयं चहुआन सील धुनयं सूली किलराइगं ॥
चोरं ढार सुधोल पानि उठयं समतस्य उच्चारयं ॥
सा सक तिंग रषंत लाद पुरयं दोसंत देवं मुरं ॥
जंगी जंग विछुट्टि छुट्टि भरयं पंहाय पायासनं ॥
छं० ॥ १४७६ ॥
चासर पुंगल पंपि चध्रद्धसियं एदं घटी गुरुयं ॥
सा जुडं प्रथिराग राजन दूवं सिकानि सें सत्तयं ॥
सै सुप्पं पुरसान पान भरियं षिंघान पिंडू हदं[3] ॥
साहं साहि सहाव गोरिय धरं फनाल भुजप्पायं ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

अरवखां उज्जवक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ सारे पाजस का गुमांन । आरब उजपक्किय ॥
पासबान सुरतान । सार लग्गौ नहछक्किय ॥
दह भारा कम्मान । तीन सायक तेरह सैं ॥

(१) ए०-समाहनं । (२) मो०-सामरं । (३) ए० कृ० को-हदं ।

अठारह सोहंत। पंध कढ़ै सुर हंसे ॥
तेहथ्थ करार हथ्थ को। लथ्थ राज घत्तन कहै ॥
हुसनंक मुसाहत[1] लंड़ि छय। तक्कि तक्कि संमुह रहै ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

सह तब्बे प्रथिराज। राज कै उद्दितोरन ॥
दिट्ठे दिट्ठ करूर। गिरे मरदां सुष जोरन ॥
बाई जत्तै आई। चाप कुंगल उचल्लट्टिय ॥
सारंगी सारंग। सीस वनसद्धि उपट्टिय ॥
चहुआन कमान करष्षि करि। अग्गिवान ठट्टर वह्यिय ॥
लगि घान पपान क्रिसान उड़ि। वहर नक्कि भक्की रह्यिय ॥
छं० ॥ १४७९ ॥

पृथ्वीराज की बानावली से यवन सेना का छिन्नभिन्न होना।

बीय वान सिंहूक। मद्धि सुरतान जान वहि ॥
वहबल षां ढिलरिय। सीस सिप्पर समेत ढहि ॥
तीय वान ताकंत। ओहि करि आलम गोइय ॥
बेद वान षुरसान। षान सुष मद्धि समोइय ॥
पंचमी धरत धरनिय धरकि। भरकि पुट्टि गोरिय सुभर ॥
अस उंच बाह अस्तुति करै। षूब षूब हिंदु सुहर ॥
छं० ॥ १४८० ॥

मोतीदाम ॥ धरै गुन पंच उभै इक तोन। रह्यो रुपिराज गुरू जिम द्रोन ॥
सुरंगिय भूमिय पत्थय श्रोन। तमी तमके मति घट्टित जोन ॥
छं० ॥ १४८१ ॥

समी सम जुद्ध विरुद्धनि भोन। क्रमे पहु पंजुलि अंमर गेन ॥
क्रमी क्रमि अच्छरि वाच्छरि ढोंन। बदै बर गिद्धनि संमर दोन ॥
छं० ॥ १४८२ ॥

मुरी घर गोरिय साहि सुदुट्ट। पराक्रम राज प्रथी पति रुट्ट ॥
छं० ॥ १४८३ ॥
....

(१) ए० कृ को०—मुसाइत ।

संयोगिता का कहना कि युद्ध का अंत कह ।

दूहा ॥ रन रुंध्यौ गिद्धनि कहै । सिद्धि संजोइय कंत ॥
समली स्याम सुलच्छनिय । जइ जिय कहि न्रप अंत ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

अस्तु गिद्धनी का सारे युद्ध का वृत्तांत कहना ।

हनूफाल ॥ कर करषि कोबंड बान । फटि थान अगिभर वोन ॥
बजि पंष तेज प्रमान । लगि उपल उडत क्रिसान ॥
छं० ॥ १४८५ ॥

जनु होरि जारिय अग्गि । लगि संजर उडि गय नग्ग ॥
दुति तोमरं सिंदूक । ढहि कंक जोगिनि कूक ॥
छं० ॥ १४८६ ॥

सुरतान बसंत सनूर । वह बल्ल ढल्लरि चूर ॥
चिय बान तक्कि करष्षि । घन सेन सिंध भरष्षि ॥
छं० ॥ १४८७ ॥

वरवह वेदहि सष्षि । वढि छुट्टि अंचि परष्षि ॥
षुरसान रदन सुषंडि । धर दसन इक्क सुमंडि ॥
छं० ॥ १४८८ ॥

धर धरनि पंचम बान । वहि पिट्ठियं सुरतान ॥
सुर असुर कौतिग कीन । दिन अवधि अनहि सुभीन ॥
छं० ॥ १४८९ ॥

गज मत्त जिहि सर फुट्टि । पटु प्रान तजि धर लुट्टि ॥
लषि दीह मन सुरपत्ति । वर वरनि अंत सुगत्ति ॥
छं० ॥ १४९० ॥

कर मच्छ करि भर पाज । रन विंटयौ प्रथिराज ॥
फिरि घेरियं न्रप मीर । जनु गिरन लागे बीर ॥
छं० ॥ १४९१ ॥

बल प्रबल करि करि सेन । रन रेन छहित गेन ॥
गज बंध गोरिय ताहि । रन सूर रनमुष चाहि ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

षुरसान षां गन चूरि। सनसुष्ष आमन पूरि ॥
मनु अनल अग्ग उतंग। चिहुं पास विंटित गंग॥
छं० ॥ १४९३ ॥

भर तेच्च छूट प्रकार। सधि इंद सनो सुनारि ॥
धरि कंध धनु न्रपघास। गड़ि कुलिस सुत नित तास ॥
छं० ॥ १४९४ ॥

दिव देव देवै रूप। अरि दलनि दलिय भूप ॥
जर जरधि दिपदित वह्नि। मनु संदिरा गिर मह्नि ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

गह पलन भर सुरतान। प्रिथिराज वधन प्रमान ॥
धरगेन सुर सुघ्घ छूर। तिय लोक चरपति सूर ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

कविचंद दंदन देषि। इह दइय रोस अलेषि ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

वीरभद्र का शिव से कहना कि सब सेना के मर जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया।

दूहा ॥ ससुष गरुह सिव घगु छंडि। बीर भद्र सम वीर ॥
रह्यौ एक संभरि धनी। लाज षोटलै धीर ॥
छं० ॥ १४९८ ॥

साटक ॥ कृष्पानं कृप्पोन मांनय पनं दति वंस पासज्जरं।
पुंजं कुंजर कूटि तूटि ससयं पौरस्स जा सिद्धरं[1] ॥
तरुनं तेज समान गैन-हनयं धृह्वीर घत्तं घनं।
सा षग्गं किरपान पत्त गह्वियं उब्भारि बंका दिनं ॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दूहा ॥ हे चिल्हिनि गिल्हन सुजग। धड सम धवल नरिंद ॥
औरं न पल पंषिन परै। अलप जलप्पय निंद ॥
छं० ॥ १५०० ॥

उड़ि पंषिनि अंषिनि निरषि। अषिल[2] अषंडल-लागि ॥

(१) ए० कृ० को०—सिद्धयं। (२) ए० को०—अष्पि।

घरी एक पाई प्रगटि। बीर बिभाई जागि॥
छं० ॥ १५०१ ॥

दूहा ॥ भय जु समर गिद्धिनि ससल। गदि षटपत्ति सहाय॥
षवधि कुंक बुद्दह सुबुधि। आदूय लहन बिभाइ॥
छं० ॥ १५०२ ॥

युद्ध की रात्रि को संयोगिता का एक डंकनी को स्वप्न में देखना।

कवित्त ॥ डंवर पप्प डंकिनिय। दसन एकय षधरानन॥
स्याम तिलक गुष्षियन। पंग पंधे कंधानन॥
उरध देस सिर लग्गि। नेन पंगिय कुल नंगिय॥
पिय आलिंगन लगग। पसर अंबर घटि ढंगिय॥
पुस्तक प्रसंग दच्य विहत। राजस्थनि संगहि अगन॥
वरवान बिरुत्ती पंचमी। सुनि सुन्दरि शुद्दहि रवन॥
छं० ॥ १५०३ ॥

डंकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना।

भुजंगी ॥ उबंजुद्ध दद्द दुगंपै बिभाई। जहां सेन छंच पती पातसाही॥
जहां सेत चोरं जु सौरं धिसाही। जहां वैरषं सेत ता गज्ज गाही॥
छं० ॥ १५०४॥

जहां सेत गज झंप गज मुक्ति झौरं। जहां पष्परी सेत मौजं हिलोरे॥
जहां सेतदासं सिता नेज झंडे। जहां सेत दंतीन आवद्ध मंडे॥
छं० ॥ १५०५ ॥

जहां सेत आरंभ पारंभ सेतं। जहां सेत ताजी सिता ग्रीव नेतं॥
जहां सेत उच्चारिवा सेत साजं। जहां सेत सारंगषी फौज राजं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

जहां सेत सिंदू सिता लागि वाजी। जहां सेत ढालं सुआलम्म गाजं॥
तहां नंपि वाजी घरे लाग राजं। छुटे रेषियं स्वत्ते स्वामि काजं॥
छं० ॥१५०७॥

पद्धरी ॥ भर भरत भार नृप सार सार। परहरत पलक मरकार अपार॥

थरहरत मेछ मुगल्ल हमीर। सरहरत सेस धर डरत धीर॥
छं० १५०८॥

फरहरत एक धर परत तुट्ठि। भरहरत रगत सिर गुरज फुट्ठि॥
हरहरत छुट्टि सत एक वेत। ढरहरत ढार ढरि लाग लेत॥
छं०॥ १५०९॥

तरपरत एक उप्पर चढंत। धरपरत कंध धर असि कढंत॥
परहरत धीर धावंत रुंड। पारंत चीह वकि बेन मुंड॥
छं०॥ १५१०॥

वरहरत वीर वर करन वार। भरहरत तुंग असिवर दुभार॥
उड्डंत सार वुड्डंत मीर। रुडंत अंत जल रत्त नीर॥
छं०॥ १५११॥

फारंत फरड हडमंस तुट्ठि। इम समर सूर तुअ नाथ जुट्टि॥
छं०॥ १५१२॥

पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ वज्रपात निरघात। धरनि कै अंबर तुट्टिय॥
दरिया दधि किय मथन। मद्धि गिरराज सहट्टिय॥
हनुअ द्रोन उप्पारि। आनि नंषिय किलंक तट॥
गोरवधन गोकुल कि नाथ। छंध्यौ कि नीर घट॥
दल धरकि सिरन सिप्पर लई। दैव कि किन उप्पर परै॥
ढंकिनिय कहै तुअ कंत इम। सू विहान अस्तुति करै॥
छं०॥ १५१३॥

पद्धरी॥ देषेव वान चहुआन च्यारि। प्राक्रम तास लब्भं न पार॥
कीनौ सुजुद्ध आलुद्ध तेम। उपमान मनहि आवै न नेम॥
छं०॥ १५१४॥

मन भयौ विकल गोरी नरिंद। भग्गै सुमीर भषषे रविंद॥
असि कसे मीर महमुंद ताम। आएव साकि कीनौ सलाम॥
छं०॥१५१५॥

(१) ए० कृ० को०—रकत।

उत्तंग अंग परचंड भूअ। भुज लहै कोरि एकेक जूअ ॥
हय उंच जाति एराक बंस। आरोहि तेन बाजी उधंस ॥
छं० ॥ १५१६ ॥

सम पूरि सिलह दोउ अंग आप[1]। अदभूत तेज षग षचि ताप ॥
कम्मान काल सिर धारि ढाल। पेषंत सेन भज्जै पराल ॥
छं० ॥ १५१७ ॥

बोलयौ गाजि सस गज्जनेस। चहुआन षान कट्टन[2] सरेस ॥
जंपयौ ताम गोरी सहाब। बिन हयैं कित्ति बढ्ढै सुआब ॥
छं० ॥ १५१८ ॥

हम बेर बेर इन गहे मुक्कि। करतार ताइ कढ्ढै सुसुक्कि ॥
संग्रहौ तुम्म जंगल नरेस। हम तेज ताप दैयौ असेस ॥
छं० ॥ १५१९ ॥

सुनि फिर्यौ सज्जि महमुंद मीर। [3]बंधन सुपानि चहुआन धीर ॥
सस आय पास हय तक्कि तार। प्रथिराज दिट्ठि दिट्ठौ करार ॥
छं० ॥ १५२० ॥

महमूद खां का राजा के साम्हने आना और राजा का उसे मार गिराना।

कवित्त ॥ निरषि राज प्रथिराज। दिट्ठ महमुंद करारिय ॥
मुट्ठि बान संडयौ। तक्कि ताजी उप्फारिय ॥
बथ्थ तथ्थ चिंतिय समथ्थ। चहुआन संनि मन ॥
धरिय साबद्ध सिंगिनिय। सुलल विषझाल काल फन ॥
नंषयौ तानि हिंदू बिहद। आवंतो सुर मार मनि ॥
षंचेवि हयौ केवर कहर। तुट्टै मद्धि निरुद्ध उन ॥
छं० ॥ १५२१ ॥

पुंष भाग परि अग्र। उड्डि आयाम षीनि पर ॥
लागि बान सपंष। मनो दिन हंस धरा ढरि ॥

(१) ए० कृ० को०-धार। (२) मो०—कट्टे।
(३) ए० कृ० को०—बंधनि सुपानि चहुआन धीर।

अग्रवान लगि उरनि। भयौ महमुंद सुरेसं ॥
बढ़ौ अंग विहंग। मनो बिल उरग प्रवेसं ॥
महमुंद विकल तन परि अवनि। जानि कि नट्टह लाग सजि ॥
धन धंन्य सयल जंपिय सकल। विकल चित्त विभ्रम्म रजि ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

कुंडलिया ॥ जिहि विध्यौ सुरतान दल। सो रुंध्यौ रन रप्पि ॥
गुरु गुरतानो वज्जिया। वीर विभाई भष्पि[1] ॥
वीर विभाई भष्पि। सेन नंच्यौ पतिसाही ॥
गजकंधां आरोह। दिट्ठ दिट्ठे सिरताही ॥
राजवान उज्जान। समर तक्यौ करि संध्यौ ॥
सो रुक्यौ रन राज। जनही पति साह सु बंध्यौ ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

महमूद के मरने पर ३१ मीर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ देष्यौ देव रस मद्दयत। रन उट्ठौ चहुआन ॥
फिरि घेर्यौ गोरी सयन। मनो नछ्छ नभान
छं० ॥ १४२४ ॥

कबित ॥ चिहुटे बाण विछुट्टि। दिट्ठि उन्निय मुठि भिन्निय ॥
कछु घन तारे घत्त। सगुन झंझारि वर धुन्निय ॥
कछु आवरदा सान। मास अट्ठा दिन उन्निय ॥
टोप सहित सिंदूक। छुट्टि भुम्मी रहि झुस्सिय ॥
अलि अलिय बंध लग्गिय कहर। धरधमंक सुच्छिय धरह ।
एकतीस षान सुरतान सम। धरनि राज गह गह भरह ॥
छं० ॥ १५२५ ॥

लेहु बंध तुम हिन्दु[2]। राव बाराह करन भष[3] ॥
पैगंमर कै पास। बान हिंसान भरन लष ॥
हथ्थ मंडि आरज्ज। लइ मांमा मह्हि छिन्निय ॥

(१) ए० कृ० को०—लष्पि। (२) ए० कृ० को०—हिन्दुअ तुम्म।
(३) ए०.नष।

ऊँचं दा जल षाय। तेक तिस ऊपर किन्निय॥
कै बार[1] हथ्थ दीया हिया[2]। अब सभ्भै पच्छो किया॥
इकतीस ससंद विसद्द फिरि। लेहु लेहु राजन जिया[3]॥
छं० ॥ १५२६ ॥

मीर सरदारों का कहना कि कमान रखदो। राजा का न मान कर वाण चलाना पर चूक जाना।

दूहा ॥ कहहि मेछ सुह अग्गरे। वे काफर फरजंद॥
बाह षान षुरसान की। सिंगिनि अप्पि नरिंद॥
छं० ॥ १५२७ ॥

सह्यौ न बोल सन्मुह हयो। बाह षान षुरसान॥
इह अपुब्ब संजोगि सुनि। दिन पलट्यौ चहुआन॥
छं० ॥१५२८ ॥

दिन पलट्यो पलट्यौ न मन। भुज बाहै सब सस्च॥
अरि भिंटन सिट्टै कवन। लिषयौ विधाता पच॥
छं० ॥ १५२९ ॥

श्लोक ॥ विधाता लेषितं यस्य। तन्न मुंचंति मानवाः॥
म्लेछानां बंधनं हस्ते। सुविहानं दिलेश्वरं॥
छं० ॥ १५३० ॥

'यत्र सुक्खं तत्र दुःखं। उभयोः प्राणबंधयोः॥
नही सुख्खं नही दुःखं। प्रानं जंबिधयो लयो॥
छं० ॥ १५३१ ॥

कवित्त ॥ जो पलटै सुंदरिय। पै जीय पालन पिय चायौ।
यों पलटौ प्रथिराज। सीस लग्गा गुन पायौ॥
पां षुरेस सुध षप्प। गोन क्रस पट्ट सहसपत॥
परो सीस कम्मान। पान लग्गी सस सो गत।

---

(१) ए०— वारि। (२) ए० कृ० को०—दीना किया।
(३) ए०-कृ० को०—हिया। (४) मो०-यहां सुक्खं नहं दुःखं।

गिरि भीर मीर पंतार सुगत। टरिय राज जिम गोपरी॥
जाले कि द्रोन बलिभद्र ने। सुत पर जद्दव सम्हरी॥

छं० ॥ १५३२ ॥

राजा का कटार निकालना और पकड़ा जाना।

एक बान कम्मान। साहि चहुआन कोप गहि॥
षां ततार लहु बंध। कढ्ढे सुरंग बहि॥
छोड़न नंषि नरिंद। वार कढ्ढिय कट्टारिय॥
दिन पलट्यौ चहुआन। हथ्थ छुट्टं नह तारिय॥
भावी विगत्ति भजंन घडन। दइ दुवाह इह न्रिम्मयौ॥
[1]पृथिराज गहन सुरतान कौ। मुष जंपन बर सुभ्भयौ॥

छं० ॥ १५३३ ॥

होलव्यता की प्रभूति वर्णन।

मरत बार दुरजोध। पानि संग्रहि रोरह वर॥
नल मुक्कै भट नट्ट। गोपि ग्राहत तन पंडर॥
मलह सिंह कछि स्रदंग। गूजर राव अंगन॥
स्रूर राह संग्रहन। दान छुट्टंत सो पुनि घन॥
राजेस स्रूर संभरि धनी। अरि वसि परि संचन सुगुर॥
सामंत स्रूर सब्बैं परैं। रह्यौ एक रूपे[2] पहर॥

छं० ॥ १५३४ ॥

पुंजापै जपहार। बलिय बंकट बध नौरौ॥
जोगिनपुरिय सनाह। देव देवर रन वौरो॥
दहिया जंगल राइ। चन्द्र सेनापति तारं॥
भारी भारथ राइ। अरक करिवर उच्छारं॥
ठंठरिय टाक चाटा चपल। चावद्दिसि रष्षे न्रपहि॥
देवतिय तुंग चहुआन प्रभु। विभाइ भोयन जपहि॥

छं० ॥ १५३५ ॥

रति वाहां सोभ्भंति। राइ जाजा गज चढ्ढे॥

(१) ए० कृ० को०—सुरतान गहन पृथिराज को।
(२) ए० कृ० को०—रूप्पौ।

गज उप्पर ढहि पर्यो। जाबु लुट्टिय जिय कहै।
कम्माला कालंक। बिरद बाहां जिस ऊपर॥
पहुपी नंगी ढाल। सूर सुद्धे जुग जुप्पर॥
सुरतान काम सद्दे समर। राज सथ्थ जहों बियन॥
अरिवान अ ओलो बोलनौ। बोलै डंकिनि याहि मन॥

छं०॥ १५३६॥

भूत होतव्यता का संकीर्तन।

लोहानो आजान बाह। पानी पति गट्टे॥
लहुआ लोलहु आइ। बीर वड्डां ही वट्टे॥
पानी पत्त सुअन्न। धंन बसतर बासंदे॥
हय हथ्थी चय बास। आस उप्पर आसं दे॥
अन्याय स्वामि स्वामां गहै। चामंडा वेरी भरन॥
बिभाई भीम भारथ भिरन। हय हन्ना अग्गें लरन॥

छं०॥ १५३७॥

दिन चवथ्थि चतरंग। सेत सुरतान निघुट्टिय॥
बिभ्भाई भारथ्थ। बान प्रथिराज विछुट्टिय॥
ढरिय ढाल बेहाल। परिय पध्धार सुनारं॥
धन धन धन चहुआन। देव सुरलोक उचारं॥
प्राक्रम्म कथ्थ संजोगि सुनि। इह दिप्पी दिप्पी न कहु॥
पारस पतंग दीपक जवन। चाहुआन क्रिस्सान सहु॥

छं०॥ १५३८॥

कारन राइ कुंडलिय। समर रावल वज्जीरं॥
अनहल पुर आभ्रन्न। राज रावत तिन भीरं॥
धोरै धुम्मिल देस। राइ कन्हर कन्हर वै॥
कूरंभी बलिभद्र। बंध आरज निड्डुर वै॥
सुरतान ढान ढुंढत फिरै। रन वज्जित प्रथिराज गहि॥
डंकिनिय दुसह दुज्जन समर। बोलिय चिट्रुम छंद कहि॥

छं०॥ १५३९॥

दूहा॥ दल सत्ता सामंत रन। दहनिय एक ससंद।

गहर कलह बल्लहनि सुनि । है संजोगि नरिंद ॥
छं० ॥ १५४० ॥

छिहि गुर पंच विपंच लहु । संत बिसोरह बंद ॥
हंकिनि डंवरु हहहहिय । रन हवि दुरगम छंद ॥
छं० ॥ १५४१ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ने वाले मीर योद्धाओं के नाम।

दुर्गम ॥ इवि छघ्य तघ्य असीसनं । गल कथन वथ्थ अहीयनं ॥
भर भरनि भर सुर भारनं । भुकि भु्मि होय मेछारनं ॥
छं० ॥ १५४२ ॥

धर धक्कि धमिक्किन धारनं । मिलि असुर व्वर प्रहारनं ॥
पहुमान मह मद आरनं । धकि जंग पान सुधारनं ॥
छं० ॥ १५४३ ॥

आलील आपुन पानयं । सारीर पां सुरतानयं ॥
पीरोज पान प्रमानयं । उज्जारि गाजी पानयं ॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अरि बाह ईसफ पानयं । नारिंग नोचम जानयं ॥
चहुआन गहि वथ्थानयं । अविहात भूप रिसानयं ॥
छं० ॥ १५४५ ॥

अलि अलूपान सपानयं । कासिम्म कायम पानयं ॥
धर पंथ सेरन संचवी । महमुंद जैन सुने दवी ॥ छं० ॥१४४६॥
विपरी तभर भिरि मीरने । मुहिमाम षान सुधीरने ॥
अलि आल आलम काम को । आकूब सामिस नाम को ॥
छं० ॥ १५४७॥

दूहा ॥ इलि गज्जहि अज्जम सुवन । भिरि भिर हिंदुअ मिच्छ ॥
आलम बिन हिंदु आलमहि । साहन सहु ग्रछ इच्छ ॥
छं० ॥ १५४८ ॥

नारंगि भैरौं भूत तन । अरि गिल आलम षान ॥
पुछि[1] पिरोज नौरोज नै । सुबर[2] चंप्यौ चहुआन ॥छं०॥१५४९॥

(१) ए० कृ० को०—पुष्टि । (२) ए० कृ० को०—सुवर ।

कवित्त॥ बान एक बाराह। षान ढाहे धर उप्पर॥
करन राय कलहंत। पिनक भिव्यौ सिर जुप्पर[1]॥
औहट्टी हम्मीर। बीर बिच्चौ बारुन बर॥
दस ससंद मसलिग। महंत आवलि करि उप्पर॥
सोवलिंग सिंघ पट्टन पती। सति सुमेर सुरतान सम॥
डंकनिय कहै संजोगि सुनि। संच पयंप्पौ सुमति हम॥
छं०॥ १५५०॥

वेलीद्रुम॥ डहडहति डंवरु डंकिनिय। कहकहति क्लाकह जोगिनिय॥
तहतहति तेग तरंगनिय। बहबहति बान विरुह्ननिय॥
छं०॥ १५५१॥

हरहरति बज्जन बज्जनिय। षलषलति श्रोन पलक्कनिय॥
धरधरनि सिर विन नंचियन। परपरति पंजुलि पंजियन॥
छं०॥ १५५२॥

कवि करत कलह न कज्जियन। रस निरति नोपुर रंजियन॥
अंति राज राजन अज्जियन।.... ....॥ छं०॥ १५५३॥
कसि साह मार ससंदयं। इसि पार पच्छति छंदयं॥
उड़ि[2] हंस हंसनि इंदयं। नत[3] अच्छरी प्रभु वंदयं॥
छं०॥ १५५४॥

डंकनी का मुसल्मान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना।

दूहा॥ छिति छची सह धरम। सुद्धह संन समूल॥
वीर इष्ट संभारि करि। संडि पग्ग सम सूल[4]॥ छं०॥ १५५५॥
गाथा॥ पति अग्गिनि विश्भाई। वित चतुरथी समर सा बुद्धं॥
पंचमि कलह सगुर श्रौर। कथि कविचंद साह निज धामं॥
छं०॥ १५५६॥

कवित्त॥ आजम षाँ इक बान। इक बानह भुञ्च मेरुं॥
एक बान मारिंगनेस। जंगिय कुल केरुं॥
छरचोर सन्नाल। नेज सांहि आकस्मोरिय॥

(१) मो०—सज्जू पर। (२) मो०—उड्ड।
(३) ए० कृ० को०—नन। (४) ए० कृ०—सूर।

दहै अरि अंकुरिय। तिष्प तोरन तन तोरिय॥
हिंडोल लोल छिन छिन फिरिग। कर कमान कंद्ल कारह॥
बारधि बिलोरि सुरतान दल। जदौं जाजु अतुलित बलह॥
छं०॥ १५५७॥

अतुलित महमद सहि मसंद। असु असन न रतिग॥
सतुलित सारथि कर कमंध। जंबूर बह्ं तगि॥
सतुलित मीरां सहिरवान। धुक्किय धर नंपिय॥
धरपरंत सामंत। मार मारह करि हंकिय॥
जग्गयो जाज आवाज सुनि। सजि परिंत गेवर घटिय॥
हय हय जुमह त्रिभुवन त्रिपुर। वर विमान कुलटह छुटिय॥
छं०॥ १५५८॥

पारि हारि पीपा प्रसिद्ध। सुरतान जु दिट्टिय॥
विहर कुंत सामंत। अंत अंतरिय सुनद्विय॥
पति पसाव पंडव जुरंत। हक्किय हक्कारिय॥
उल हल्ल हलकारि। कुंद वंदन उच्छारिय॥
बल विषम सुषम स्वामित मतह। हित सुराज रंज्यौ रनह॥
इय बाह बाह हिंदुअ तुरक। समर सरुच तुट्टिय तनह॥
छं०॥ १५५९॥

दूसासन दिट्टिय षंधार। आडौ पुर पारिय॥
केस साहि उर चंपि। बीर बंवरि उच्छारिय॥
षान आन चहुआन। बान वर धरनि पछारिय॥
रे हिंदू रे मुसलमान। भिरि भिरि पुक्कारिय॥
छंडौ जुगोइ छंडन जुगति। बर निसान वुल्लै मनह॥
सक सिंघ नाद सिंघह गुरिग। गहर गिंभ सिंघौ घनह॥
छं०॥ १५६०॥

घन घुरंत गोरिय सयन्न। पीरोज षान धपि॥
तिहि टट्टर तकि तेग। वेग झारिय झनंक झपि॥
षूब साहि साहाब। सनमान मुहन्निय॥

गहि गब्बर[1] परिवार । अस्त सम सल दुय अल्लिय ।
लीधब्ब धाम डिग[2] मह्र । हल्लुसंस सिंडिग असल ॥
बाजी बलिक कारि कुथ्थरिय । जनों षारिक पलहल सन ॥

छं० ॥ १५६१ ॥

आनल अन जंबूर । बीर विह्विग धर तुट्ट्यो ॥
तव वंकट बधनौर । राइ केहरि कर छुव्यौ ॥
गोरिय गज गुंजार । दल्लि हथ्थ हहकारिय ॥
छुल पुच्छै पच्छारि । बाय लगयौ बबकारिय ॥
गहनाय गरुअ गेंदर सुरिग । ढाल ढाल आलम डरिय ॥
बलि अष्ट बलिय ओनह अवनि । पति पविच कीनी धरिय ॥

छं० ॥ १५६२ ॥

जूनां चित्रह कूट । राम रावन भर भारौ ॥
समर सिंह की आन । साहि लग्यौ ग्रह कारौ ॥
दान मान छुट्टै न । गरुअ गेंवर गुरि हल्लिय ॥
आठ ग्रह उग्रहिय । राह धुति तेंवर पल्लिय ॥
पर पुट्टि दिट्ट नयनह पिसुन । बारर वर आय बुझ्है ॥
सुरतान षान पंजर वहिग[3] । जग हथ्थह जीवत रहै ॥

छं० ॥ १५६३ ॥

रसावला ॥ इति अंत कालनि इच्छ । सुरतान सुच्छिय गच्छि ॥
मै भीत जननिय लच्छि । परि भूय आवलि कच्छि ॥

छं० ॥ १५६४ ॥

इसि मानह षान कमान । लिय नंपि दै चहुआन ॥
परिवार पारस सुझ्झि । दस देव गति आवुझ्झि ॥

छं० ॥ १५६५ ॥

कवित्त ॥ इकतीसौ आसह । मारि मसंद महाभर ॥
दह सत्ता सामंत । हर जंगुरिग धरा भर ॥

(१) मो० ए० को०—पष्पर ।
(२) मो० ए० को०—मिडिग मिडिग ।
(३) मो० ए० को०—वहिर ।

है घायां कलहरिय। सोम जीवत उप्पारिय॥
अग्रासी अगिवान। राज बथ्थां पच्छारिय॥
ए बथ्थ परं दादिट्ठ मे। भग्गा भग्गा इन हर्‌यौ॥
सावन वदि पंचमि पंच कर। सांई मेछाइन धर्‌यौ॥
छं० ॥ १५६६ ॥

संयोगिता का डंकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह।

दूहा॥ हे डंकिन भष्पिन सुजन। मंस रुधिर सम अध्य॥
कहिन पराक्रम राज कौ। मीर समाहत वथ्य॥
छं० ॥ १५६७ ॥

कौ रामायन कपिवर। भारथ भीम न पुट्टि॥
पिष्य पराक्रम पथ्थ सम। भावी दैव न छुट्टि॥
छं० ॥ १५६८ ॥

सकल सूर सामंत रन। भए छिन भिन्न सरीर॥
उदधि विषम सज्ज्यौ नृपति। हय गय नरनि अरीर॥
छं० ॥ १५६९ ॥

पृथ्वीराज की वीरता प्रराक्रम और हस्तलाघवता का वर्णन।

मोतीदाम॥ रुप्यौ रन राज सुरज्जिय अच्छि। मनौं दसकंध सभा बलिवच्छ॥
रहे करि कुंडलि मिच्छ करेर। मनौं लघू पव्वय सेवहि मेर॥
छं० ॥ १५७० ॥

महा महि गोरि समुद्द सयन्न। मनो वड़वा नल रज्जि रयन्न॥
चिह्नं दिसि चंपहि बग्ग उठाय। ते दीप पतंग ज्यौं मध्य समाय॥
छं० ॥ १५७१ ॥

भरप्पहि बाज ज्यौं मीर भ,भार। लुहार जलं जिम बुड्डहि सार॥
गिहद्द जलद्द ज्यौं भद्रव सूर। तरप्फहि बीज ज्यों राज करूर॥
छं० ॥ १५७२ ॥

गही कर संगिनि संभरि वार। मनों दल दंगति दीसय सार॥

परें रिढ सुठि निहन्नत तक्कि । पराक्रम पिष्षि रहै सुर जक्कि ॥
छं० ॥ १५७३॥

भरीकर कन्न लगै तिन पार । धुकै धर यों भर ज्यों पहतार ॥
सविद्ध हयग्गय पष्पर घाइ । लगंत गिरंत फिनंग न पाय ॥
छं० ॥ १५७४ ॥

मयंद गयंद गिरै बल फारि । लगंत निषान गिरंत चिहारि ॥
ढलंतिय ढाल सुसुंड निहारि । मनों गिरि तैं गिरि सष वयारि ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

चलंत अनी लगि टोप सिरन्नि । मनों रवि उग्गि उरग्ग धरन्नि ॥
करी तनयं हय हंनत तक्कि । बगत्तर पष्पर झंक्कि सनक्कि ॥
छं० ॥ १५७६ ॥

मची धर धुंधि न सुझ्झय नेंन । श्रवन्न न सुन्निय सद्द सवेंन ॥
पहच्चरयं धर पल्लन सुक्कि । मनों दव दंगल[1] गोधर बुक्कि ॥
छं० ॥ १५७७ ॥

सिवाल रु स्वान ते अंत अलुझ्झि। मनों फंद पारधि पग्ग अरुझ्झि॥
रही कर सिंगिनि पुट्टिय तोन । जितत्तित उड्डत दिष्षिय श्रोन ॥
छं० ॥ १५७८ ॥

किरवान कटी सुमनों डुडवारि । नचौ कर जोगिनि पप्पर डार ॥
दुहथ्थ नहंनत हथ्थिनि सीस । मनों दस लग्गिय पव्वय दीस ॥
छं० ॥ १५७९ ॥

भसुंडनि दंतनि टूक उडंति । ससि अप्प मनों जल रत्त बुडंत ॥
उठै बहु छिंछ करी निधरन्न । मनों भार बहुति लनं धरन्न ॥
छं० ॥ १५८० ॥

घनं जिम वज्जहि घाय घनंकि । लगै तिन टंनन तच्छ छनंकि ॥
टुटे पग दैवार संगिय तज्जि । मनों वन दंड धनंजय रज्जि ॥
छं० ॥ १५८१ ॥

हनंतति तानति तामस सदि । मनों बगि मद्धह नंपन दंचि ॥

---

(१) मो०—[illegible] ।　　(२) [illegible] —[illegible] ।

किधौं छलकत गदा कर कीन। दुनौं दल दुंदुभि रावन भिन्न ॥
छं० ॥ १५८२ ॥

रची नव अच्छरि इच्छि वरान। जयज्जय जंपहि देव विमान ॥
चवंसठि नच्चिय रच्चिय रारि। रचे रस रच्चि घडं अटधार ॥
छं० ॥ १५८३ ॥

निरतहि नारद वज्जिय तंत। उभं यति माचन्न भूतनि भंति ॥
जुटे तब सरबन आयध हथ्थ। बढ्यौ बल राग समाहिय वथ्थ ॥
छं० ॥ १५८४ ॥

धरे पग हथ्थ हनंत धरन्न। रजक्क सिला पट पीटि वरन्न ॥
गहे भर नंषत हथ्थिन ठेलि। मनों मद गंध चलाइ चवेल ॥
छं० ॥ १५८५ ॥

सिर सों सिर द्वै कर हनत दीस। ज्यों जोगिय तुम्बर फोरत सीस ॥
वड़वा वढ़ि वाय सहाय ज्यौं दंग। [1]इसे न्रप इट्ट वलं रन रंग ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

सरै न ससंद सनमुष जंग। मनो दल दानव ज्यौं कपि पंग ॥

पृथ्वीराज का पकड़ कर हाथी पर बैठा गजनी ले जाना।

करी नति घेरन हथ्थिय गंस। सुत रावन ज्यौं चतुरानन पंसि।
छं० ॥ १५८७ ॥

परी चिहुं कोदह घेर नरिंद। कढे कर दंत ज्यौं भिहिय कंद ॥
सुलंत्रहि संकट सूर निसंधि। लियौ न्रप गोरिय साहि दुरंधि ॥
छं० ॥ १५८८ ॥

गजंभर ढाल बैठाय नरेस। चल्यौ गुरि गोरिय गज्जन देस ॥
छं० ॥ १५८९ ॥

दूहा ॥ ग्रहे राज गज्जन चल्यौ। तब रन रत्ता सूर ॥
अछे आवध वज्जि अत। संघारिग भर सूर ॥
छं० ॥ १५९० ॥

कवित्त। गहत राज प्रथिराज। भोम कंपिय पायालं ॥
भौ अंमर ग्रह पत्ति। पति अंमर मंतालं ॥

(१) मो०—इसे नूप इट्ट वलं च परंग।

नै अभंग सौ वंद। सत्त भग्गौ अस मग्गो ॥
चरन चंपि दर पार। बोज हिंदवान दिपग्गा ॥
हिंदवान एस भग्गे उसै। समरसिंह चहुआन वर ॥
कालंक रुकल प्रगव्यौ भुवी। दीअ अवनि कलि भग्ग धुर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

दूहा ॥ भग्गे दीय वियान वर। सत गग्गा बल भग्ग ॥
चाहुआन सुरतान कर। परग बोर लग्ग ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

गहि चहुआन नरिंद वर। षेत ढुंढि सुविहान ॥
भर प्रथिराज नरिंद कौ। गवन कीय ग्रह थान ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

भज्जि परी प्रथिराज ग्रहि। जमुन नीर दल सज्जि ॥
तदिन साहि गोरी ग्रहन। वज्जे संगल वज्जि ॥
छं० ॥ १५९४ ॥

पृथ्वीराज का बंधन सुनकर संयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना।

कवित्त। अनाचार परवर्यौ। पर्यौ यातिक सह भुक्भिय ॥
छाहुलि राइ हमीर। साइ दोही फिर बुक्भिय ॥
सिव केसव करि भेद। भेद करि देवह नयौ ॥
पंचतत्त प्रमएत। सत्त भजि साहस संध्यौ ॥
पहुपंग राइ पुत्रिय सुनहि। सुत्ति[1] बिलंब न दांत मिसि ॥
पट मास बीस वासर विहत। लहित सोममंडल सुहसि ॥
छं० ॥ १५९५ ॥

त्रोटक। हतिं हंतति हंतति हंत तिहं। डवरु डहकांतति जोगिनियं ॥
भवरी दर एंननि हंस तिनं। फुटि रंध्र दिसा पहुप्रान चिनं ॥
झलि झालिनि झालिनि सोह सियं। .... छं० ॥ १५९६ ॥
दिग तंत भ्रनंत सु संच मनं। छलही हलहंत सुरंत घनं ॥
छं० ॥ १५९७ ॥

---

(१) मो० सुति। (२) ए० कृ०-को० निहि।

पद्मा पद्मा सन आसनयं[1]। पिय पेम प्रबंध सुवासनयं ॥
भरि ध्यान उमा मनसास लयं। उडि सिद्धि अयासन आसनयं ॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कवित्त। संजोगिय आसनह। जीव जंजरिग जरिय गत ॥
पंजरीट खगराज। इंद गय हंस भ्रिंग पति ॥
अप्प अप्प अप्पियन। सपन जंमन दिठि अप्पन ॥
न्त्रिभै राज गत[2] काज। काज किन्नौ क्रम चप्पन ॥
चिंतिय सुचिंत डंकनि उड्डिय। पुडिय परंत परेव ग्रिह ॥
संचरिग जुद्ध सामंत दह। उगति बंध कविचंद कह ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

न मिटै लिपित लिलाट। लिष्यौ ब्रह्मासिर अप्पर[3] ॥
असुर गह्यौ प्रथिराज। सुनत संजोगि परिय धर ॥
चंद्र सूर ग्रहरिष्य। इंद्र सुर नर असुराइन ॥
सिध साधक मुनि राइ। मंत तंतिय तारायन ॥
को सकै अवर आरंभ करि। जो विधिना विधि गति भन्यौ ॥
निस्सान वात जुग जुग लगै। नह दिट्ठौ मिंटन[4] सुन्यौ ॥
छं० ॥ १६०० ॥

दूहा। बहु बिलाप सब मिलि करहि। नहि सुधि बुद्धि गियान ॥
प्रीय बचन अप्रीय सुनि। गये संजोगिय रान ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

प्रान जात नह पल लग्यौ। सुनि संदेस विराग ॥
सुनत बचन प्रियजन कु काल। धन्नि चिया तो भाग ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

दह सामंत परंत रन। ग्रह उग्रह न मरंत ॥
सत्त सुराजन ग्रहत जुध। मुरि मुरि मेछ मुरंत ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

(१) मो०—बासनयं। (२) ए०कृ० को०—गज।
(३) को०—इष्पर। (४) मो०—मितन।

पृथ्वीराज के पकड़ जाने पर शाह का पड़ाव साफ करना।

कवित्त। आनि गह्यौ प्रथिराज। टंट ठंठरिय ठुक्कि दल ॥
धंक्कि धार धाररिय। परत वार डह विरद बर ॥
हसम गरुअ गोरिय गुमान। सुअबल उप्पार्‍यौ ॥
सांई काज संग्राम काम। धरति तिल तिल करि डार्‍यौ ॥
सुरतोन अग्र अग्रह कियौ। सुर गह संभु न दिष्पयौ ॥
असमान आस असपत्ति अस। कसि कसि कंदल पिष्पयौ ॥
छं० ॥ १६०४ ॥

कासमीर कामरूअ। टंकि टंकह उप्पार्‍यौ ॥
भंड कराइ हमीर। धीर पच्छै पति पारौ ॥
साहि सब्ब गिल करत। तेग झंझरिय न झिल्लत ॥
छत्रि छत्रपति छत्र अस। भूभी गहि[1] मिल्लित ॥
आलंम लभ्भ आलम न हुअ। आभन असमानहि धरत ॥
रस रासि रसातल जाति गति। जौ न सूर इत्तौ करत ॥
छं० ॥ १६०५ ॥

पैज वलिय पाहार। देव दहिया दल पित्तह ॥
ओछस्सी ओछाय। घाय राजन इत उत्तह ॥
चाय गरुअ चहुआन। राइ देवत्तिय दिवानौ ॥
परत घाइ[2] घिंघ राइ। सहन तक्यौ सुरतानौ ॥
वड़ व्रत्ति गत्ति छत्रिन तनिय। कुल घटि वढ़ि न वषान कुय ॥
भंडार विधाता मुकति दिय। लुट्टन हार सुलुट्टि सुय[3] ॥
छं० ॥ १६०६ ॥

तव राजा गोरी जवाव। दीनौ हम्मीरां ॥
ओ हट्ठी गंभीर। राय पहु कर पहु भीरां ॥
सांमि साद चह्वाह। सांमि भ्रड्डा संनाही ॥
ना जानो में मिरछ। तेक कैसी मां वाही ॥

(१) ए० कृ० को०—महि।
(२) ए० कृ० को०—घाइ। (३) मो०—लिय।

रे राजपुत्त राजंग छल। पञ्जक भान रथ छंडि[1] रहि ॥
मंडलह भेद भेदिग भुञ्जन। उर अशोकु सब्बह सुकहि ॥
छं० ॥ १६०७ ॥

दूहा ॥ भर भिरि सुर मंडल भिदे। ग्रहि लीनौ सुरतान ॥
ए तीनो सोमंत ने। घर घल्लिय[2] सुविहान ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

कवित्त ॥ इह भाष्यौ संफुरिय। बात वज्जरिय दिसा दिस ॥
राइ कोलि चहुआन। समर वित्तयौ गसा गस ॥
नील गात पग पीत। भीत मेरिय भुंकारिय ॥
तं वरिया पहु फुट्टि। भास स्फुलिय संनारिय ॥
निग्रह्यौ राज सुरतान छल। रुधिर धार छवि उच्छरिय ॥
चहुआन अनावध आन नह। सु कविचंद भनियन धरिय ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

जिहि करिवर अरि जरहि। जर्यौ तिय कर तिहि कट्ठति ॥
जिहि संकति सुह सकति। सकति पंचि न सक छंडिति ॥
जिहिं वाना वरि पान। प्रान कंपहि मधु सिंधुर ॥
तिन मद सिंधुर सुंडि। डंड सिर छत्र चिपति पर ॥
जिसुष सहाव संमुहन सहि। तिहि सुप जंपत गह गहन ॥
प्रथिराज देव दुअ ननि ग्रह्यौ। रे छत्री गुर ग्रब्बहन ॥
छं० ॥ १६१० ॥

सूर गहन टरि गयौ। सूर गह भयौ राज तन ॥
भारथ भर वित्तयौ। मार उत्तर्यौ भुअन यन ॥
हर हरानि मंडयौ। सार संभरि[3] तन तुथ्यौ ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। बग्गह पल पुट्ठयौ ॥
संचरिग गरुह संसार सिर। परह संक ग्रम्भह भरिय ॥
घन घाय साहि चहुआन दिय। गज्जनेस दिसि संचरिय ॥
छं० ॥ १६११ ॥

(१) मो०—छोडि। (२) मो०—घर घल्यो ।
(३) ए० कृ० को०—संमरि

पृथ्वीराज को पकड़ कर शाह का गजनी जाना और इधर देवी के मंदिर से कविचंद का मुक्त होना।

गहि चाहुआन नरिंद। साह गज्जनै सपत्तौ ॥
थान रष्षि ढिल्ली प्रमान। साहि पीरोज प्रमतौ ॥
उत उतंग बाजिच। नहसहनाय सुभेरिय॥
जीति लियो चहुआन। दोउ दिष्पत दल फेरिय ॥
सुरतान गह्यो चहुआन बर। कवि छुट्टौ जालंध ते ॥
सपत्त सूर पत्तह दिल्ली। भौ कवि रत्त सुअं मतै ॥

छं० ॥ १६१२ ॥

दूहा ॥ तन मक्क्के बर ब्रह्म है। ब्रच्छ्य उतप्पत हार ॥
लगै न तरवर फिरि सुक्रम। फिरि लग्गै सो बार ॥

छं० ॥ १६१३ ॥

चौपाई ॥ सो दिष्टान्त सुतत प्रमानं। तर बर वीज तुटे धर थानं ॥
सुक्रम वीज लै विदुर बर चल्लै। कुक्रम गार सिरने कह पुल्लै ॥

छं० ॥ १६१४ ॥

ब्रह्म बीज के ब्रह्मह माई। ध्रम नीर रसु संत सर साई ॥
क्यों दिन ब्रत क्यों तपकर धारी। क्यों क्रम क्रम यूं करत पसारी ॥

छं० ॥ १६१५ ॥

कवित्त ॥ उर उकट्ठ तम दीह। सुनहि जौ काल प्रान रहि ॥
जब कुमत्त गतमत्त। बढतं गुन अंग दीप महि ॥
मोहन मत गजदेह। हरहि अंके मोए चित ॥
हरि कामलन मन भ्रमर। गाढ़ बंधिये एह मित ॥
पंच जैत बर लग्ग। बीर त्यापोसु जुड्ड दिन ॥
हरि पावस भृगुलता। बंध सुगति लहै न धन ॥

छं० ॥ १६१६ ॥

देवासुर उद्दंम। भयौ उद्दंमन भारथ ॥
गदा प्रब्र उधंम। दान उद्दंसन पारथ ॥

(१) ए०—रन। (२) मो०—विदुर। (३) ए० कृ० को०—गहुन।

सेख हिंदु उद्दम । भयौ गोरी चहुआनह ॥
सिरत पंच दिल पंच । रत्ति बित्तौ सुविहानह ॥
लिषिय बसिच्छ हिंदुअ बयत । चित्त छयग्गय अयुत इच्छ ॥
[1]संग्रास कायन कथ्थह तनी । कहिय चंद कव्वी सुइच्छ ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

दिल्ली में पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार पहुंचना और राजपूत रमणियों का सती होना ।

कुंडलिया ॥ चर आए ढिल्लिय नयर । दसमि सुदिन अंगार ॥
बुद्धवार[2] एकादसी । चली बरन सगदार ॥
चली बरन सगदार । सूर सामंत तीय वर ॥
सव परिगह प्रथिराज । भयौ मंगल मंगल भर ॥
पट सुरतिय चहुआन । अग्गि आलिंग अंगवर ॥
प्पदु बंधि संजोगि । जोग संजोग कहै चर ॥ छं० ॥ १६१८ ॥
गाथा ॥ संचाह संझ रयनी । नच्चति बिताह वीर वताहं ॥
दहकोह गिद्ध गोमं । रन यल यल रहिय पंच दीहाई ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

पृथा का रावल जी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतनियों का अपने पतियों के अस्त्रों के साथ सती होना ।

कवित्त ॥ निरषि निधन संजोगि । प्रिथी सज्जिय सु सामि सथ ॥
इक्कि हंस तत्तारि । बीर अवरिय प्रेम पथ ॥
साजि सकल श्रृंगार । हार मंडिय मुगतामनि ॥
रजि भूषन छय रोहि । जलज अच्छित उछारति[3] ॥
हैहया सह जंपत जगत । हरि हर सुर उच्चार वर ॥
सह गमन सिंघ रावर चले । तजि महि फूल[4] श्रीफल सुकर ॥
छं० ॥ १६२० ॥

प्रथा सथ्थ सह गवन । रवनि साजिय सुराज दह ॥
सघन कुसुम सुर बास । मिलिय मुष गुंज मुंज तह ॥

(१) ए० कृ० को०—संग्राम कथ्थ नथ्थह तनी ।　　(२) मो०—बंधवीर ।
(३) मो०-उछाराहि (　　(४) ए० कृ० को०—महिसुप ।

मुगता मनि उज्जार। झार आयौ सु समुज्जल ॥
अंग रष्षि दुअ सत्त। तिके आवरिय अप्पहल॥
विम्मान बान सुर अच्छरिय। पहु पंजलि पुज्जै सघन ॥
सुर रिष्प जष्प तंचिय धरन। काल कौतिग देषहि सुतन ॥
छं० ॥ १६२१ ॥

सहस पंच सह गवनि। अवर सामंत सूर भर ॥
चलिय सिलिय मन संधि। सकल निज नाह साह वर ॥
भूषन सबनि विराजि। साजि सिंगार सैल तन ॥
मन अनंत उद्धरिय। करिय हरि हरि जुदान दिय ॥
जहां जुयाल सुनि प्रिय गवन। न करि विरम्म मन धरिय धुअ ॥
धनि धन्य सद आयास हुअ। लषि कौतिग अनभूत भुअ ॥
छं० ॥ १६२२ ॥

चंदन मंदिर दार। रचिय वर दिग्घ लघ्घुद्दा ॥
विवह[1] कुसुम वर सोहि। सोहि पट बसन सुरह वर ॥
जिय जंदू नद दान। रथ्थ हय गय सुगता मनि ॥
विप्प वेद उच्चरहि। धेन सुरबर आयासनि ॥
किय[2] लोक लोक अंजुलि कुसुम। लजि विमान सुर सिर फिरहि ॥
संक्रमिय अप्प साहागवनि। मंक्षि गवन हव्विहि हरहि ॥
छं० ॥ १६२३ ॥

विविह तरुनि दिय दान। अवर सामंत सूर भर ॥
अप्प अस्स हय लीय। सिलिय रह हित धाम धर ॥
चित चिंतै रव रवनि। गवनि पावक प्रज्जारिय ॥
प्रम प्रीति किय प्रेम। नेम गेसह प्रति पारिय ॥
उज्जलिय झाल आयास मिलि। हर हर सुर हर गोम भौ ॥
जहं जहां सुवास निज कंत किय। तहं तहां निय पिय मिल्लन भौ॥
छं० ॥ १६२४ ॥

एकादस सें सत्त। पंच पंचास अधिकतर ॥

(१) ए० कृ० को०—विविह ।
(२) ए० कृ० को०—किय ।

सावन सुक्ख सुपष्य। बुद्ध एकादसि बासुर ॥
बज्र बिद्धि रोहिनी। करन बालव धिक तौ तल ॥
प्रहर सेप रस घटिय। आदि तिथि सकल पंच पख ॥
बिह्युरिय बत्त जुब्बह सयल। जोगिनि पुर बासुर बिषम ॥
संपत्ति थान सरि सतिअ जुरि[1]। रह सुरब्बि कीनौ बिरस ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

शाह का गजनी पहुंच कर पृथ्वीराज को हुजाब खां के सुपुर्द करना।

गहि चहुआन नरिंद। गयौ गज्जनै साहि घर ॥
दिक्खिय हय गय द्रव्य। ताहि तन इह सुअप्पिधर ॥
बरस अड्ड तस अड्ड। मुड कीनौ नयन्न बिन ॥
जम्म जम्म जुग अबरु। जाय प्रथिराज इछ पिन ॥
काइ कारै न्नपति समुझै मनह। अप उपाव सो बहु करय ॥
विधिना विचित्र निरम्यौ पटल। निमष न इक लिष्यित टरय ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

तब सुसाहि गज्जनय। ग्रहियं जंगल पति तानह ॥
हथ्थ समप्पि हुजाब। सुविधि रप्यौ बल मानह ॥
मैडिय कोट महल्ल। अप्पि दिसि दप्पिन धामह ॥
तहां रप्पिय प्रथिराज। सुबल रप्पक हहमामह ॥
बिप्रह सुरप्पि पारस्स दस। वेनिय दत्त दवे सुमुष ॥
नन करय राज आहार कछु। कहिय तेग हुज्जाब रुष ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है।

बिरदाबलि बिरदाइ। पाय अंदू कर ढीले ॥
तामस बुझ्झवन काज। बोलि मधु वचन रसीले ॥
गढ़ गिलोल गज बाग। लागि सकै न डरहि उर ॥

(१) ए० कृ० को०—सर सुनिय जुरि।

नीठ नीठ रष्षयौ। आनि उभ्भौ ज्जल ऊपर॥
नरवदा तट कज्जली सुबन। जूथ हस्तिनि संभरिय॥
पीय न उदक कविचंद कहि। मद सिंधुर जिम बलभरिय।
छं० ॥ १६२८॥

तव चिंतिय हुज्जाब। गयौ अप्पन गोरिय प्रति॥
किय सलास तिय वार। धरिय अंगुरि धनिय नति॥
कीय[1]अरज कर जोरि। सुनहु साहाब मन्नि धुअ॥
बिन अहार चहुआन। पष्प सारद्ध तीन हुअ॥
कलसलिय चित्त संभलि सुचिर। अप असुपति चहुआन गय॥
आरुह्यौ बिकट रस न्त्रिपति बर। दिट्ठौ दिट्ठ करूर मय॥
छं० ॥ १६२६ ॥

दूहा॥ प्रघुल पंभ साला प्रथुल। संकल प्रथुल परीभ॥
बन आरोहिय सिंघ जनु[3]। अनुक्रम कज्जे ईभ॥
छं० ॥ १६३० ॥

शाह का पृथ्वीराज की आंखें निकलवाने की आज्ञा देना।

कवित्त॥ चमक्कि चित्त साहाब। सुनिय चहुआन सु अघ्यह॥
बोलि हुजाब सुआव। सेष कालंन समघ्यह॥
तुम कहुहु चहुआन। नयन दिठ वंकन छंडय॥
जौ बंधन बंधियौ। तौइ संसुप द्रिग मंडय॥
सिर धारि बोल कानै फिरिय। सहस मीर मिलि अप्प वृग॥
भ्रम पारि तेन चहुआन गहि। बंधिय राजन कढ्ढि द्रिग॥
छं० ॥ १६३१ ॥

नेत्रहीन होजाने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मांगना।

भुजंगी॥ पर्यौ बंधनं गज्जनै मेछ हथ्थं। विचारै करी अप्प करतूति पिथ्थं॥
हन्यौ दासि के हेत कैमास बानं। गजं पून चामंड वेरी भगानं॥
छं० ॥ १६३२ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—गुदरि।
(२) ए० कृ० को०—दिष्षिय।　　(३) को०—मम।

बंधे कन्ह काका चष पट्ट गाढ़े । बिना दोस [1]पुंडीर से अक्ष काढे॥
बरज्जंत चंद चल्यौ ह्र कनौज। तहां स्वर सामंत कटि घट्टिफौज॥
छं० ॥ १६३३ ॥
लियें राज लोकं रसंतं सिकारं । अ्रसं केहरी कंद्रा खिष्य जारं ॥
रह्यौ गैर महलं लियें राजलोकं । कटे स्वर सामंत कीयौ न सोकं॥
छं० ॥ १६३४ ॥
भुलानौ सरूपं भयौ काम अंधं। निसा वासरं चित्त जानौं न संधं॥
दरब्बार मेटी अदब्बं बड़ाई । छरी ऊपरी सीस हम्मीर राई ॥
छं० ॥ १६३५ ॥
कारन्नं पुजारं प्रजा पौरि आई । वरहाइ प्रोहित्त से विस्सराई ॥
घड़ आय साहाय काजं पुमानं । गयौ चूकि अवसान सनमुष्प शानं ॥
छं० ॥ १६३६ ॥
भई बुद्धि विपरीति इह होनहारं । छलं पारि सुविहान चष्पं विकारं॥
पलट्यौ सुदीहं रही लग्गि तारी । भले राज गोविंद अग्गाप्रहारी ॥
छं० ॥ १६३७ ॥
सही फूल की फूलनी नाहि नाथं । तुरत्तं तरायौ जु मालीन हाथ॥
नही स्वर सामंत परिवार देसं । नही गज्ज बाजं भंडारं दिखेसं ॥
छं० ॥ १६३८ ॥
नहीं पंगजा प्रान तें अत्ति प्यारी। नही गोष मह्लिा इतं चित्तसार॥
नहीं चिग्ग अग्गें सुनंषे परद्दा। नहीं क्षोक हम्माम गरसी[2] सरद्दा ॥
॥ छं० ॥ १६३९ ॥
नही रेसमं के दुलीचे गिलम्मे । नहीं हिंगु बाटं सुवन्नं हिलम्मे॥
नहीं सीरषं रुप रंके उसीसा। नहीं पस्समी तक्किये पल्लिंग पोसा॥
छं० ॥ १६४० ॥
नहीं गद्दियं सुष्षरी ख्रपि जोरा। नहीं मेन बतीन के दीप जोरा॥
नहीं डंमरी योंन आवै सुगंधा। नहीं चौसरं फूल बंधे अबंधा॥
छं० ॥१६४१ ॥
नही मृग्ग नयनी चरन्नं तलासै। नहीं कूक कोका सबद्दं उलासै ॥

(१) ए० कृ० को ०—पून । (२) ए०—गरमी ।

नहीं पातुरं चातुरं न्रत्यकारी। नहीं ताल संगीत आलापचारी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

नहीं कथ्थकं सथ्थ जंपै कहानी। पयं सकरं ह्रत लग्गै सुहानी ॥
नहीं पासवानं षवासं हजूरी। सबे मंडली मेछ लग्गे करूरी ॥
छं० ॥ १६४३ ॥

नहीं रूपकं राग रंगं उचारं। सुनों कन्न सावद्द वंगं पुकारं ॥
नहीं चोस सौजं करूं लष्प दानं। नहीं भट्ट चंदं बिरद्दं बषानं ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

दष संजरी के रहे चौगिरद्दं। दवं दंग ज्यों लग्गि देही दरद्दं ॥
कहा हाल रेनं कुमारं धरत्ती। कहां कोन सों कोन आनै निरत्ती ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

निराधार आधार करतार तूं ही। बग्यौ संकटं आय मो जीव सोंही॥
कस्तौ कृद संगाय बृंदावनी कों। संभालो नहीं तौ कहा औधनी क्यों ॥
छं० ॥ १६४६ ॥

करै उंच नीचं कृतं दास काजैं। भए सारथी पारथं के न लाजै ॥
प्रभू रष्षि प्रारथ्थ में इंड साजै। प्रह्लाद भभ्भीषनं भूनिवाजै ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

त्रिया द्रूपदी सीत कों मेटि दुष्पं। गऊ गोप गोवर्द्धनं धारि रष्पं ॥
चरावंत धेनं बनं अग्गि लग्गी। करयौ पान दावनलं होय अग्गी॥
छं० ॥ १६४८ ॥

हन्यौ कंस राजं दियौ उग्रसेनं। प्ररयौ पारधी फंद में कढ्ढि एनं ॥
पहाए पजावै मंजारी कुमारं। उग्गारे इसैं दास केइ हजारं ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

न्रपं आठ सें बीस हज्जार पासें। जरा सिंध कौ बंदी में ते निकासें॥
रषे कुंवरीकं परीषत्त चेनं। अजामेल उद्धारि राजीव नेनं ॥
छं० ॥ १६५० ॥

भए अर्जुनं नारदं आप दीनं। नलं कूबरं फेरि सा रूप कीनं ॥
हन्यौ पन्नगं नंद कों मग्ग जाते। दई गत्ति गंधर्व कों लात घाते ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

दुजं दीन गोदान फिरि पच्छ आयं। गिरे कूपकं न्रिग्ग स्वग्गं बसायं॥
स्वयं पूतनो विप्र दाता तिराई। गऊतम्म नारी सिला कीनि पाई॥
छं० ॥ १६५२ ।

पढ़ावंत सूआ सुरं रघुराई। गनिक्का गयन्नं विमानं चढाई॥
जरासंध पोजी किये अग्र फौजं। तिरे तीकमं तक्कि चरनं सरोजं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

जरा नाम व्याघात करि घात पग्गे। मुकंदं मुकत्ती दई तीर लग्गे॥
पवारै गिनाऊं कहां लग्गि तोरे। करों वीनती इत्तनी हथ्थ जोरैं॥
छं० ॥ १६५४ ॥

विसार्यौ न विश्वंभरं विश्व सारौ। अना अप्पराधं अहं क्यो विसार्यौ॥
अबे होय निरदै न देपौ तमासौ। ग्रह्यौ ग्राह ज्यों गज्जसाई निकार्यौ॥
छं० ॥ १६५५ ॥

विनां राज आजं सरै कौन काजं। निबाहौ विरुद्धं गरीबं निवाजं॥
सदाई कहाऔ करुन्ना निधानं। करौ आय साहाय कहि चाहुआन॥
छं० ॥ १६५६ ॥

करुन्ना करे फेरि अथ्यौ संभार्यौ। हरै पित्त धृम्मं दियौ सों विचार्यौ॥
ग्रह्यौ बार वेरां सु आलम वंदी। श्रिया मान अभिमान नष्यो निकंद॥
छं० ॥ १६५७ ॥

ग्रह्यौ तेन दिल्लेसुरं काल गत्तं। इवं मेघनादं हनूमान तत्तं॥
तिनं लंक जाली प्रजाली लकालं। ग्रह्यौ साहि गोरी तिनं काल चालं॥
छं० ॥ १६५८ ॥

पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना।

गाथा—संभरि पाले सवदं, संभरि दीन श्री धरं सुपनं॥
ब्रह्मा विश्णु महेसं, मूरती तीन एकयं देवं॥
छं० ॥ १६५९ ॥

पद्धरी ॥ संभरि परि पति सबद्दं। संभरि जेपि श्रीधरं रामं॥
सुपनंतर दे संभं। समझायौ आय राइ दिल्लेसं॥
छं० ॥ १६६० ॥

पद्धरी ॥ दिन द्रग्ग भयौ चहुआन रोन । मन मंझि रोस सुझिझ्झग परान ॥
उद्दास रोस घुंटहि नरिंद । आहार पान जल तजिग निंद ॥
छं० ॥ १६६१ ॥

रजनी सुअंत महुरत्त वंभ । देषंत दरस सुपनंत सिंभ ॥
आरोहि वृषभ सिर पंच तुंग । अंवरं उद्ध सरि चर्म्म अंग ॥
छं० ॥ १६६२ ॥

उर रुंड उरग कंठ कालकूट । रजिभाल चंद बुध जटाजूट ॥
इह बाह पूरि आवद्ध अप्प । रज्जिय विभूति भ्रमि पार तप्प ॥
छं० ॥ १६६३ ॥

त्रैनेत तुंड प्रति वर विसाल । वडवान मद्धि झलकंत झाल ॥
इह रूप आय उच्चर्‌यौ[1] ईस । मम मन्निवेद चहुआन जीस ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

आहारि अन्न मति छोड़ पीन । छुट्टौ सराप पूरब मचीन[2] ॥
आहारि अन्न मति छंडि मंद । उद्धरै आय तुहि भट्ट चंद ॥
छं० ॥ १६६५ ॥

पारन्न परहि तुअ अग्र प्रान । मम करहु पान वल आसलान ॥
इम कहि ईस हुअ अंतध्यान । जग्गयौ राज सोभर[3] विहान ॥
छं० ॥ १६६६ ॥

शाह का वेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज को भोजन कराने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ सौ विद्दानु सुविहान । बोलि हज्जूर हुजाबह ॥
वेनीदत्त सुविप्र । आय सनमुष्प सितावह ॥
दिय आयस साहाव । रहौ तुम राजन पासह ॥
सो उपाय तुम करो । भषे जिम अन्न उदासह ॥
आए सु उभै राजन प्रति । वेनीदत्त सुविहि कहि ॥
प्रथिराज अहारो अन्न रस । हम जप्पै तुम पान इह ॥
छं० ॥ १६६७ ॥

(१) ए०-उच्चर्‌यौ । (२) ए० कृ० को०—पूरब मवीन । (३) ए० कृ० को०—सोभर ।

वेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना।

दूहा ॥ तब वेनी दत विप्र कहि। सुनि बंधन सुविहान ॥
अन्न पसाव राजन करौ। आस सांस चहुआन ॥छं०॥१६६८॥

कवित्त ॥ तब चिंते चितराज। संभु बर बोल संभारिय ॥
मानि कियो आहार। तिने सब परिकर सारिय ॥
दस बंभन रहै पास। चिन तर[1] भोम सुधारिय ॥
करे पाक विधि विप्र। विविध व्यंजन रस कारिय ॥
जल उस्न राज असनान किय। बर रोहिय धौतह वसन ॥
करि ध्यान संभु जप नित्ति किय। आहारे अन्नह व्यसन ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इहि विधि विति चहुआन रहि। बर सेज्या सुभयान ॥
वत्त पुरान कवित्त प्रति। सुनहि वचन गुर ग्यान ॥छं०॥१६७०॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना।

चोटक ॥ इति दछ्य कथा सुकथी कथियं। अलिकावलि अंग नमं सथयं ॥
भव राजित धूम्ररसं धुनियं। तन जग्गित रोम रोमावलियं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

कर डोरुअ डक्क डहक्क कियं। विथुरे सिर अर्क कुसुंम हियं ॥
उनमत्त पहुप्प पराग कियं। बड़वा नल नैंन झलं मलयं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

गल चंद लिलाट अमी षिसयं। पुनि डंमर डोरु पुने उचियं ॥
सिर गंग सिरोहिय कै धसियं। सिव आनब देषि लिवा हंसियं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

पुनि बघ्घ चरम्म करीम जियं। पुछ उच्चत नंदिय के वछयं ॥
चुहकारत भेष लग्यो अछियं। इय चंद कवी कविता कथियं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—तन।

दूहा ॥ पहिचान्यौ तिहि चंद कवि । वीर भद्र सम वीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जंगलिय । अब धरनि न रष्षै धीर ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

वीर भद्र पहिचान रज । पुछिछ बत चहुआन ॥
कथ भारथ पारथ सुमथु[1] । किम वित्यौ सुरतान ॥
छं० । १६७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार कहना ।

भुजंगी॥ बजी हक्क दिग धक्क दुहु कोद मीरं।गही बग्ग दौड़ अग्ग न्त्रिप वीर मीरं॥
तुटै गेनं गुरग्गैर होय घोर सोरं। फटै धरनि दर राय बर राइ जोरं ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सीसं।तरं तरकि भर भरकि मन भुवनदीसं॥
पर्यौ त्रिकुट गढ कूट लंकेस थानं। करषि विकट दनुमाल भय चालपानं ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

बरकि सान्ह कर करकि घन घोर पब्बं । झरनि सम झमझार गहि चक्क गब्बं ॥
ठव्यौ सागरं आगरं पब्ब पत्ती । इसी उट्ठि चहुआन अनि आन गत्ती ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

पर्यौ सिंध धर तुट्टि आघाट बाजं । चिहुं ओर सुरतान नीसान गाजं॥
मनों पंजरं बान हनुमान ओपै । घनं घाय सोमेस तन वीर कोपै ॥
छं० ॥ १६८० ॥

त्रिहू[2] बाह सामंत साधट्ट कट्टै । छतं छक्क उड़ि छिंद[3] भुम्म भीर पट्टै ॥
सुनें ईस उम्मा बलीभद्र कथ्थें । भरं भीष्मं द्रोन भारथ्थ पथ्थें ॥
छं० ॥ १६८१ ॥

पर्यौ कुंभ दल महि चहुआन ऐसौ । घिरे बंनरं वीर नीरद्धि जैसौ ॥
परे पंच शिवमाल जरि कंठ दृप्पे । तहां चंद टट्टो उरं माल दिप्पे ॥
छं० ॥ १६८२ ।

बलीभद्र जैतं जदों जाम सिंघं । भरं चामंड पावसं वीर बंधं ।

(१) मो०—ज्ञि प्रभु । (२) ए० कृ० को०—त्रिहु बाह साहेब सामंत कट्टे ।
(३) ए० कृ० को०—छीन ।

बेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करने को कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना ।

दूहा ॥ तब बेनी दत विप्र कहि । सुनि बंधन सुविहान ॥
अन्न पसाव राजन करौ । आस सांस चहुआन ॥छं०॥१६६८॥

कवित्त ॥ तब चिंते चितराज । संभु बर बोल संभारिय ॥
मानि कियो आहार । तिने सब परिकर सारिय ॥
दस बंभन रहे पास । चिन तर[1] भोम सुधारिय ॥
करे पाक विधि विप्र । विविध ब्यंजन रस कारिय ॥
जल उस्न राज असनान किय । बर रोहिय धौतह वसन ॥
करि ध्यान संभु जप नित्ति किय । आहारे अन्नह व्यसन ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इहि विधि विति चहुआन रहि । बर सेज्या सुभथान ॥
बत्त पुरान कवित्त प्रति । सुनहि बचन गुर ग्यान ॥छं०॥१६७०॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना ।

चोटक ॥ इति दछ्य कथा सुकथी कथियं । अलिकावलि अंग नमं सययं ॥
भव राजित धूअरसं धुनियं । तन जग्गित रोम रोमावलियं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

कर डोरुअ डक्क डहक्क कियं । विथुरे सिर अर्क कुसुंम हियं ॥
उनमत्त पहुप्प पराग कियं । बड़वा नल नैंन भलं मलयं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

गल चंद लिलाट अमी षिसयं । पुनि डंमर डौंरु पुने उचियं ॥
सिर गंग सिरोहिय कै धसियं । सिव आनब देषि लिवा हंसियं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

पुनि बघघ चरम्म करीम जियं । पुछ उच्चत नंदिय के वछयं ॥
चुहकारत भेष लग्यो अछियं । इय चंद कवी कविता कथियं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

(१) ए० कृ० को०—तन ।

दूहा ॥ पहिचान्यौ तिहि चंद कवि । बीर भद्र सम बीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जंगलिय । अब धरनि न रष्षै धीर ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

वीर भद्र पहिचान रज । पुछ्छि बत चहुआन ॥
कथ भारथ पारथ सुमथु[1] । किम वित्यौ सुरतान ॥
छं० । १६७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जाने का समाचार कहना ।

भुजंगी॥ बजी हक्क दिग धक्क दुहु कोद मीरं। गही बग्ग होइ अग्ग न्रिप बीर मीरं॥
तुटै गेन गुरग्गैर होय घोर सोरं। फटै धरनि दर राय बर राइ जोरं ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सीसं। तरं तरकि भर भरकि मन भुवनदीसं॥
पर्यौ चिकुट गढ कूट लंकेस थानं। करप्रि विकट हनुमाल मय चालपानं॥
छं० ॥ १६७८ ॥

बरकि कान्ह कर करकि घन घोर पब्बं। झरनि रुम झमझार गहि चक्क गब्बं॥
ठव्यौ सागरं आगरं पब्ब पत्ती। इसी उट्ठि चहुआन अनि आन गत्ती ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

पर्यौ सिंध धर तुट्टि आघाट वाजं। चिहुं ओर सुरतान नीसान गाजं॥
मनों पंजरं बान हनुमान ओपै। घनं घाय सोमेस तन वीर कोपै ॥
छं० ॥ १६८० ॥

चिह्न[2] बाह सामंत साधट्ट कट्टै। छतं छक्क उड़ि छिंछ[3] भुअ भीर पट्टै ॥
सुनें ईस उम्मा बलीभद्र कथ्थे। भरं भीष्मं द्रोन भारथ्थ पथ्थें ॥
छं० ॥ १६८१ ॥

पर्यौ कुंभ दल मद्धि चहुआन ऐसौ। घिरे बंनरं वीर नीरद्धितैसौ ॥
परे पंच शिवमाल जरि कंट दुष्षे। तहां चंद ठट्टौ उरं माल दिष्षे ॥
छं० ॥ १६८२ ॥

बलीभद्र जैतं जदों जाम सिंघं। भरं चांमंड षावसं वीर बंधं ।

(१) मो०–कि प्रभु । (२) ए० कृ० को०—चिहु बाह मावंत सामंत कट्टै ।
(३) ए० कृ० को०—सीस ।

रनं बग्गरी देव गुर राज रामं। हनू लोह लोहान छौहान तामं ॥
छं० ॥ १६८३ ॥

परस्संग भारथ्थ पूजा पहारं। घटं चाट संग्राम बंकट्ट धारं ॥
कारन कुंडली राइ अनभंग भारे। जुरे जाजु आवाज चयलोक नारे ॥
छं० ॥ १६८४ ॥

अरें सुंपुलै सोषियं स्रोन कंठं। परीहार पीपा हरं माल सठं ॥
परे सत्त दह स्हर सामंत षग्गे। ग्रहं भान जिम मीर चिहुकोद लग्गे ॥
छं० ॥ १६८५ ॥

सुनिय चंद क्ष्रिहलेंन जल उरह सोषं। गहे दिष्षि समदेव सुरतान घोषं ॥
छं० ॥ १६८६ ॥

दूहा ॥ कहै बीर हिन्दू तुरक[1]। सुनि कविचंद सुजान ॥
बदि सावन पंचमि दिवस। गह्यौ मेछ चहुआन ॥छं०॥१६८७॥

युद्ध में मृत सामंत एवं रावत योद्धाओं की नामावली।

पद्धरी ॥ सुनि चंद भट्ट कहै भद्र बीर। परि सुभट स्हर चहुआन धीर ॥
पति चित्र कोट परि समर राव। दस तीन सहस अरि करन घाव ॥
छं० ॥ १६८८ ॥

चामंड राव परि दंड दाह। जदु जाम झुझ आजान बाह ॥
कूरंभ राव बलिभद्र बीर। पामार जैत झुझ्झि पग्ग धीर ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

परसंग राइ षीची प्रचंड। बग्गरी देव अरि पारि ठंडि ॥
परि राज काज गुर राम राज। सक सिलह दार सारंग साज ॥
छं० ॥ १६९० ॥

परि पन्न धार परिहार षेत। [2]गुज्जरह राम परि स्वामिहेत ॥
साहाब सेन करि स्हम सोम। दिषि प्रात तार जनुयान थाम ॥
छं० ॥ १६९१ ॥

सुरि मुगध षेत जिन स्वामि जीन। बिन जुद्ध बुद्ध को[3] बुद्ध हीन ॥
संकरह सिंघ मोरी सुराव। बिन लोह छोह छंड्यौ पराव ॥
छं०॥ १६९२ ॥

(१) मो०—चरित। (२) ए० कृ० को०-परि जुज्झि जुद्ध राजि स्वामि हेत।
(३) ए० कृ० को०—कौ।

जगमन्न राव धंधेर [1]सांम। सस सथ्थ षेत छंड्यौ पराम ॥
निकर्‌यौ राव हाडा सुमेर। हम्मीर सुतन तन लोह भेर ॥
छं० ॥ १६९३ ॥

गष्परह राव सारंग देव। निकस्यौ पंच हय कट्टि तेव ॥
चालुक्क वंभ वर भान साह। हय अट्ठ कट्टि गुर गिम्म गाह ॥
छं० ॥ १६९४ ॥

रनसट्टि घाव वींध्यौ जुअंग। उप्पारि लीन जब बित्त जंग ॥
परिहार वीर[2] आयौ सुपुट्टि। रन बीर सुतन करि तिथ्थ तुट्टि ॥
छं० ॥ १६९५ ॥

सुध्यौ सुषेत नर पुट्टि आय। उप्पारि षेत भर वेकजाइ ॥
सर सत्त रह्यौ रन चाहुआन। तिन कह्यौ सुक्रम अदभुत्त पान ॥
छं० ॥ १६९६ ॥

गुर राम अंग अनभंग कीन। ननभेदि सस्त्र सब अंग तीन ॥
संग्रह्यौ मेछ हिंदू नरिंद। कट परे असुर हय गय सुभिंद ॥
छं० ॥ १६९७ ॥

सत्र सहस्र वीस परिहंदु सेन। दुअ लष्प मिच्छ कटि षित्त तेन ॥
अनि सुनिय कथ्थि जे कहिय दच्छ। सुनि चंद श्रवन धर पर्‌यौ मुच्छि॥
छं० ॥ १६९८ ॥

दुहा ॥ करि जुहार ढिल्लिय नयर। मुक्कि नयर जुगिनेस ॥
जस भावी तस न्त्रिस्सयौ। करिन वीर अंदेसु ॥छं०॥ १६९९ ॥

राजा का वचन सुनकर कवि का मूर्छित होकर गिर पड़ना।

सुनिय बत्त कविचंद न्त्रिप। तन मन कंप्यौ ताम ॥
पर्‌यौ बिकल धुक्किय धरनि। कट्टि मूल तर जाम ॥
छं० ॥ १७०० ॥

वीरभद्र का कवि को प्रबोध करके समझाना।

कवित्त ॥ कवि आश्वासित वीर। बाहु धरि धरनि उठायौ ॥
मुष आरोहिग पान। ग्यान गुर तथ्थ सुनायौ ॥
न करि दुष्ष हो भट्ट। काल गति कठिन दुरिय जय ॥

(१) ए० कृ० को०–ठेंरे। (२) ए० कृ० को०–धीर।

तुहि रुक्यो जालप्प । काज न्रिप काज अरिय तय ॥
तुहि भयो इष्ट आभिग्गु जे । साइ क्रित कारन आनि जिय ॥
संचरहु दिल्लि मारग सुकवि । करहु राज उद्धारनिय ॥
छं० ॥ १७०१ ॥

कवि का कहना कि मैं बाल स्नेह के कारण विकल हूं ।

कहै ताम कविचंद । अहो बीराधि बीर सुनि ॥
हम मनुच्छ मय मोह । उदधि बुड्डै सुतत्त तुनि ॥
हमहि राज इकबास । सथ्थ उतपन्न संग सदि ॥
नेह बंध बंधियै । करिय अति प्रीति राज रिदि ॥
सामंत सकल अति प्रेम तर । वाल नेह उर धुर कियौ ॥
बलिभद्र नेह संसार सुप । किम सुनेह छंडै जियौ ॥
छं० ॥ १७०२ ॥

बीरभद्र का कवि से कहना कि अब चिंता न करके राजा का उद्धार कर ।

तव हंसि जंप्पो वलिभद्र । अहो बरदाय मोह मय ॥
कहौं ज्ञान अति आदि । उअर संग्रहो सोय सय ॥
तुम उतपन संग राज । षपति होय है जुराज संग ॥
तुम सहाव सम्मान । आय बंध्यो सुब्रह्म अंग ॥
मम करहमोह चिंता चतुर । धरहु अथ्थ गुर ग्यान हिय ॥
तुम चलो सु कवि जोगिनि पुरह । करहु राज उद्धार दिय ॥
छं० ॥ १७०३ ॥

दूहा ॥ कहै सु कवि गुर बीर सुनि । जिहि आदि अंत जुति संग ॥
नेह गंठि रस रंजियो । किम चुक्कै चित रंग ॥
छं० ॥१७०४ ॥

बीरभद्र का कवि को प्राचीन इतिहासों का प्रमाण देकर समझाना कि एक दिन सब का अंत होता है होनी अमिट है अस्तु शोक न करके कर्तव्य पालन करो ।

(१) ए० कृ० को०-मन ।

कवित्त ॥ परम हंस फल बंस । राम वाचिष्ट मंत्र सुनि ॥
अवधि राज रघुवीर । नटिय सभ मंडि छत्र धूनि ॥
छिन नरिंद लहि निंद । भयौ चंडाल परस तहं ॥
न छुअ न छुअ सुहित्त । सुहि सु लग्यौ कलंक इह ॥
जाग्रत जोग दिग्यौ सुपन । नकरि चंद सनमंध दुष ॥
संचरिय लोक सोकह वसन[1] । कह कविंद्र लम्भिय समुष[2] ॥
छं० ॥ १७०५ ॥

सोक लोक संसार । [3]मिटै आव सर ब्रत्त कह ॥
तुअ जुगिंद जट पुत्र । ग्यान गोरष्प तत्त लह ॥
हो मनुच्छ माया समंद । तिर तह तन बुड्डिय ॥
हरि तरंड लागंत । कोह कंदल सों जुड्डिय ॥
वीराधि बीर जंपहि सगुरु । जहां सुजीव दुष्षन लहैं ॥
देवाधि क्रम्म पुब्लय कमल । सो सिव पुत्र सच्चिय[4] कहैं ॥
छं० ॥ १७०६ ॥

जग्य करन भूपति त्रसंग । वाचिष्ट बुलायौ ॥
विश्वामित्र सों समर । पग्यौ अंटो नह आयौ ॥
नेंम रिष्य मष मंडि । सुन्यौ वाचिष्ट लोपि गुरु ॥
श्राप दियौ करि कोप । भयौ चंडाल भूप डरु ॥
तप जोर च्योर दिस लोक रचि । विश्वामित्र पद इंद्र दिय ॥
कही वीरभद्र कविचंद सम । च्यार जुग्ग लगि अमर किय ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

विश्वामित्र तिहि रचिय । सात तरबर लय मानुष ॥
प्रात समय जिम कुसुम । प्रफुलि तन पाय महा सुष ॥
नव रस करत विलास । धरे उर अंदर मच्छर ॥
संझ परत कुम्हिलात । कहत वहु जिए संवछर ॥
तुम तौ नरिंद राजस भुगति । बहुत दिवस मृत लोक महि ॥
संताप सोक माया तजहु । वीरभद्र समझाय कहि ॥
छं० ॥ १७०८ ॥

(१) ए० कृ० को०—मवन । (२) मो०-सुम्प ।
(३) ए० कृ० को०—मिटै आवन सर व्रत कह । (४) ए०-सच्चिय ।

एक भूप रेवंत। तास पुत्री रेंवंती ॥
पर नावन की बार। सद्दा मो धनुर व इंती ॥
ब्रह्म अग्ग लै जाय। रह्यौ जभी सुघरीय दुत्र ॥
तिहि घट काके गिनत। लाष छचीस बरष भय ॥
ते परन नरिंद कविचंद सुनि। काल आनि इक दिन हरिय ॥
सोमंत सूर न्नप मोह तजि। बीर भद्र इम उच्चरिय ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

पिप्पलाज रिषराज। करत कैलास तुंग तप ॥
पुत्र हेत मन आनि। गयौ ब्रह्मा रेपन अप ॥
होइ प्रसन्न कह्यौ संगि। तोहि इछावर अप्पहु॥
तिहि अप्पिय मुह अचल। राज कछु वस्त समप्पहु॥
हंसि कहिय मात साविच तब। पुत्र भजन भगवान करि ॥
संसार सकल काचौ अवर। ताहि छंडि आतम उधरि ॥
छं० ॥ १७१० ॥

बीरभद्र का कवि के सिर पर हाथ रखकर मुल गुरु मंत्र देना।

दूहा ॥ तव हथ्थ धर्‌यौ सिर भट्ट कै। षल बंधन कविनथ्थ ॥
तब चिकाल सुभ्‌झिय मनह। गहि जोगिनिपुर पथ्थ ॥
छं० ॥ १७११ ॥

कवित्त ॥ तब कहै बीर वविचंद। ग्यान गुर कहैं गहौ उर ॥
नालि एक संषनी। मझि दस लोपि गम्मि गुर ॥
तिहि संपूरन रस भर्‌यौ। ब्रह्म रंध्रह सधि आसन ॥
उलटि कमल उद्धर्‌यौ। बंधि तारी सुर सासन॥
प्रज्जारि जोति प्रग्गट कर्‌यौ। चढ्यौ तेन आयास दुति ॥
छुट्टौ सुमोह भव पास सह। भिलिय अप्प हरि आस जुति[1] ॥
छं०॥ १७१२॥

---

(१) ए०-क०-को०-हुति।

आसन मूल उधारि । हंस ससि हर जुरि बंधहु ॥
बिसर रोकि द्रिग जोरि । अग्र नासिक द्रिग संधहु ॥
सबद एक धुनि रूप । सद्धिता जोग प्रगासहु ॥
चमकि चमकि घन गरजि । किरनि पिक्षौ न अयासहु ॥
झलकंत नैन अग्रे सुमनि । निकट निरंजन एह नित ॥
गुर अप्प तत्त ग्यानहि गहौ । जिम छंडौ मन मोह मत ॥

छं० ॥ १७१३ ॥

कविचन्द का मोह दूर होकर प्रसन्न चित्त होजाना ।

दूहा ॥ तब रंज्यौ कविचंद चित । उर लख्यौ अविनास ॥
जान्यौ कारन अप्प जिय । उर आनंद्यौ तास ॥

छं० ॥ १७१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रावल समरसी प्रमुष सामंत मोच्छ, हमीर बंधने राजा बल पराक्रम कथनो नाम राजाग्रहनं चंद दिल्ली आगमनो नांम छाछठवों प्रस्ताव समाप्तः ॥ ६६ ॥

